# पवित्र कुरान

पैगम्बर मुहम्मद को बताया गया

ईश्वर के एक विनम्र सेवक द्वारा संपादित

# सूरा 1: ٱلْفَاتِحَة‎ (अल-फ़ातिहा) - उद्घाटन

(1) अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है।

(2) प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

(3) अत्यन्त दयावान, अत्यन्त दयावान।

(4) क़यामत के दिन का मालिक.

(5) हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझसे ही सहायता माँगते हैं।

(6) हमें सीधे मार्ग पर चलाओ,

(7) उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की है, न कि उनका जो तेरा क्रोध अर्जित करते हैं और न उनका जो भटक जाते हैं।

# सूरा 2: ٱلْبَقَرَة‎ (अल-बकराह) - गाय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) यह वह किताब है जिसमें कोई संदेह नहीं, यह मार्गदर्शन है डर रखनेवालों के लिए।

(3) जो लोग ग़ैब पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम की और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च किया।

(4) और जो लोग उसपर ईमान लाए जो तुम्हारी ओर उतारा गया और जो तुमसे पहले उतारा गया और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

(5) वही लोग अपने रब की ओर से मार्गदर्शन पर हैं और वही लोग सफल होंगे।

(6) निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए कोई बात नहीं, चाहे तुम उन्हें सचेत करो या न सचेत करो, वे ईमान नहीं लाएँगे।

(7) अल्लाह ने उनके दिलों और कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दा है। उनके लिए बड़ी यातना है।

(8) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए, किन्तु वे ईमान वाले नहीं।

(9) वे अल्लाह को और ईमानवालों को धोखा देना चाहते हैं, किन्तु वे अपने आप को ही धोखा देते हैं और वे इसे समझते भी नहीं।

(10) उनके दिलों में रोग है, अतः अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया और झूठ बोलने के कारण उनके लिए दुखद यातना है।

(11) और जब उनसे कहा जाता है कि धरती में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम तो बस सुधारक हैं।

(12) निस्संदेह वही लोग बिगाड़ पैदा करनेवाले हैं, किन्तु वे इसे नहीं समझते।

(13) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी उसी तरह ईमान लाओ जिस तरह लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख ईमान लाए हैं? निस्संदेह वे ही मूर्ख हैं, किन्तु वे नहीं जानते।

(14) और जब वे ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए। फिर जब वे अपने दुष्टों के साथ अकेले होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो केवल उपहास कर रहे थे।

(15) अल्लाह उनका उपहास करता है और उन्हें उनकी अवज्ञा में लम्बा समय देता है, जिससे वे अन्धे होकर भटकते रहें।

(16) यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले गुमराही मोल ले ली, अतः न तो उनका कोई लेन-देन लाभदायक हुआ और न वे मार्ग पाए।

(17) उनकी मिसाल उस व्यक्ति के समान है जिसने आग जलाई, फिर जब उसने उसके चारों ओर प्रकाश कर दिया तो अल्लाह ने उनका प्रकाश छीन लिया और उन्हें अंधकार में छोड़ दिया, यहाँ तक कि वे कुछ न देख सके।

(18) बहरे, गूंगे, अंधे - अतः वे फिर नहीं लौटेंगे।

(19) या वह आकाश से आनेवाली ऐसी वर्षा है जिसमें अँधेरा, गरज और बिजली है। वे मृत्यु के भय से गरजने से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ कानों में डाल लेते हैं। किन्तु अल्लाह इनकार करनेवालों को घेरे हुए है।

(20) बिजली उनकी आँखों को छीन लेने ही वाली है, जब कभी वह उन्हें रास्ता दिखाती है तो वे उसी पर चलते हैं, किन्तु जब अँधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। यदि अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और देखने की शक्ति छीन लेता। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(21) ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले वालों को पैदा किया, ताकि तुम डरपोक बनो।

(22) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना और आकाश को छत बनाया और आकाश से वर्षा बरसाई फिर उसके द्वारा तुम्हारे लिए फल पैदा किए। अतः तुम अल्लाह के समकक्ष किसी को न ठहराओ, जबकि तुम जानते हो।

(23) और यदि तुम उस बात में संदेह में हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है तो उसके जैसी एक सूरा ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने गवाहों को बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।

(24) फिर यदि तुम ऐसा न करोगे - और तुम ऐसा कदापि न कर सकोगे - तो उस आग से डरो जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गयी है।

(25) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर जब उन्हें उनमें से कोई फल दिया जाएगा तो वे कहेंगे, "यही तो हमें पहले दिया गया था।" और वह उन्हें सदृश्य रूप में दिया गया है। और उनके लिए वहाँ पाकीज़ा पत्नियाँ होंगी और वे उसमें सदैव रहेंगे।

(26) निस्संदेह अल्लाह किसी मच्छर या उससे भी छोटे जानवर की मिसाल देने से नहीं डरता। और जो लोग ईमान लाए हैं, वे जानते हैं कि यह उनके रब की ओर से सत्य है। किन्तु जो लोग इनकार करते हैं, वे कहते हैं, "अल्लाह ने इस मिसाल से क्या चाहा?" वह इसके द्वारा बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को मार्ग दिखाता है। और वह केवल अवज्ञाकारी लोगों को गुमराह करता है।

(27) जो लोग अल्लाह से किया हुआ वचन तोड़ देते हैं, और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे तोड़ देते हैं, और धरती में बिगाड़ फैलाते हैं। वही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं।

(28) तुम अल्लाह का इनकार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम बेजान थे, फिर उसने तुम्हें जिलाया, फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जिलाएगा, फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।

(29) वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती में जो कुछ है उसे पैदा किया, फिर आकाश की ओर प्रस्थान किया और सात आकाश बनाए, और वह हर चीज़ को जाननेवाला है।

(30) और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती पर एक प्रतिनिधि बनाऊँगा। उन्होंने कहा कि क्या तुम उस पर ऐसा व्यक्ति बिठाओगे जो उसमें फ़साद फैलाए और खून बहाए, जबकि हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझे पवित्र ठहराते हैं? उसने कहा कि मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(31) और उसने आदम को सब नाम सिखाए। फिर फ़रिश्तों को दिखाकर कहा, "यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ।"

(32) उन्होंने कहा, "पवित्र है तू! हमको तो बस वही ज्ञान है जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।"

(33) उसने कहा, "ऐ आदम! उन्हें उनके नाम बताओ।" फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बता दिए तो कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी हुई बातों को जानता हूँ? और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।"

(34) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया, परन्तु इबलीस ने इनकार किया और अहंकारी हो गया और इनकार करनेवालों में से हो गया।

(35) और हमने कहा, "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और उसमें से जहाँ से चाहो, खूब खाओ। लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, नहीं तो तुम अत्याचारियों में सम्मिलित हो जाओगे।"

(36) किन्तु शैतान ने उन्हें उसमें से निकाल दिया और जिस स्थिति में वे थे, उससे दूर कर दिया। और हमने कहा, "तुम सब एक दूसरे के शत्रु बनकर उतरो। फिर धरती में तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधि तक रहने का स्थान और भोजन-स्थल होगा।"

(37) फिर आदम को उसके रब की ओर से कुछ बातें प्राप्त हुईं, तो उसने उसकी तौबा स्वीकार कर ली। वास्तव में वही तौबा स्वीकार करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

(38) हमने कहा, "तुम सब लोग वहाँ से उतर जाओ। फिर जब मेरी ओर से तुम्हारे पास मार्गदर्शन आ जाएगा, तो जो कोई मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, तो न तो उसे कोई भय होगा और न वह शोकाकुल होगा।

(39) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे उसी में सदैव रहेंगे।

(40) ऐ इसराइल की सन्तान! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुमपर किया है और मेरा वचन पूरा करो कि मैं तुम्हारा वचन पूरा करूँगा और मुझसे ही डरो।

(41) और जो कुछ मैंने उतारा है उसपर ईमान लाओ, जो उसकी पुष्टि करता है जो तुम्हारे पास है और तुम उसका इनकार करनेवाले पहले न बनो और मेरी आयतों को थोड़े से मूल्य में न बदलो और मुझसे ही डरते रहो।

(42) और सत्य को असत्य से न मिलाओ और सत्य को न छिपाओ, जबकि तुम उसे जानते हो।

(43) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रुकूआ करनेवालों के साथ रुकूआ करो।

(44) क्या तुम लोगों को सदाचार का आदेश देते हो और किताब पढ़ते समय अपने आपको भूल जाते हो? फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

(45) और धैर्य और नमाज़ के द्वारा सहायता चाहो, और यह अत्यंत कठिन है, परन्तु आज्ञाकारी लोगों के लिए।

(46) जो इस बात पर विश्वास रखते हैं कि वे अपने रब से मिलेंगे और उसी की ओर पलटकर जायेंगे।

(47) ऐ इसराइल की सन्तान! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुमपर किया और यह कि मैंने तुम्हें समस्त संसारों पर वरीयता दी।

(48) और उस दिन से डरो जब कोई प्राणी किसी प्राणी के लिए कुछ भी न बचेगा, न उससे कोई सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी, न उससे कोई प्रतिदान लिया जाएगा और न उनकी सहायता की जाएगी।

(49) और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से बचाया, जो तुम्हें बुरी यातना दे रहे थे - तुम्हारे बेटों को मार रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी।

(50) और याद करो जब हमने तुम्हारे लिए सागर को दो भागों में बाँट दिया और तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन की क़ौम को तुम्हारे देखते-देखते डुबा दिया।

(51) और याद करो जब हमने मूसा से चालीस रातों का समय निर्धारित किया था, फिर तुमने उसके पश्चात बछड़े को पूज लिया, यद्यपि तुम अत्याचारी थे।

(52) फिर हमने इसके पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ हो जाओ।

(53) और याद करो जब हमने मूसा को किताब और प्रमाण प्रदान किया था, ताकि तुम मार्ग पा लो।

(54) और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुमने बछड़े को पूजने में अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तो अपने पैदा करनेवाले के पास तौबा करो और अपने आपको क़त्ल कर दो। यही तुम्हारे पैदा करनेवाले के नज़दीक तुम्हारे लिए बेहतर है। फिर उसने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली। निस्संदेह वह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

(55) और याद करो जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा! हम तुम्हारा विश्वास कदापि न करेंगे जब तक अल्लाह को प्रत्यक्ष न देख लें। तो तुमको बिजली ने ले लिया और तुम देखते ही रह गये।

(56) फिर हमने तुम्हें तुम्हारे मरने के पश्चात जीवित किया, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाएँ।

(57) और हमने तुमपर बादलों की छाया की और तुमपर मन्ना और बटेर उतारी, "हमने जो सुस्वादु चीज़ें तुम्हें रोज़ी दी हैं, उनमें से खाओ।" और उन्होंने हमपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे।

(58) और याद करो जब हमने कहा था कि इस नगर में प्रवेश करो और इसमें से जहाँ चाहो, खूब खाओ और द्वार से सजदा करते हुए प्रवेश करो और कहो कि हमारा बोझ उतार दो। तो हम तुम्हारे पापों को तुम्हारे लिए क्षमा कर देंगे और अच्छे कर्म करनेवालों को अधिक पुण्य प्रदान करेंगे।

(59) किन्तु जिन्होंने अत्याचार किया, उन्होंने उससे भिन्न बात कही, जो उनसे कही गई थी। अतः हमने अत्याचार करने वालों पर आकाश से यातना उतारी, क्योंकि वे अवज्ञाकारी थे।

(60) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा, "अपनी लाठी पत्थर पर मारो।" फिर उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और हर क़ौम को अपना-अपना पानी मालूम हो गया। "अल्लाह की रोज़ी खाओ और पियो और ज़मीन पर फ़साद न फैलाओ।"

(61) और याद करो जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा! हम एक प्रकार का भोजन सहन नहीं कर सकते। अतः अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमारे लिए धरती से हरी सब्ज़ियाँ, खीरे, लहसुन, दालें और प्याज़ पैदा करे। मूसा ने कहा कि क्या तुम बेहतर चीज़ को कम चीज़ से बदलोगे? मिस्र में जाओ, वहाँ जो कुछ तुम माँगोगे वह तुम्हें मिलेगा। और वे अपमान और निर्धनता में डूबे हुए थे और अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे। यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और नबियों को अधर्म से मारा। यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और अवज्ञाकारी थे।

(62) जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी या ईसाई या साबिई थे, जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें उनके रब के पास बदला मिलेगा। उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(63) और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम्हारे ऊपर पहाड़ को उठाया कि जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे दृढ़ता से ग्रहण करो और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम डरपोक बनो।

(64) फिर उसके बाद तुम फिर गये, यदि अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दया तुमपर न होती तो तुम घाटे में पड़ जाते।

(65) और तुम उन लोगों को तो जानते ही हो जिन्होंने तुममें से सब्त के दिन के सम्बन्ध में अवज्ञा की, और हमने उनसे कहा, "तुम तुच्छ समझे जानेवाले बन्दर बन जाओ।"

(66) और हमने उसको उन लोगों के लिए जो पहले थे और जो उनके बाद आए, रोकनेवाली यातना बना दिया और उन लोगों के लिए शिक्षा बना दिया जो अल्लाह से डरते हैं।

(67) और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारा उपहास करते हो? मूसा ने कहा कि मैं अज्ञानियों में शामिल होने से अल्लाह की शरण चाहता हूँ।

(68) उन्होंने कहा, "अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमें स्पष्ट कर दे कि वह क्या है।" मूसा ने कहा, "वह कहता है, 'वह न बूढ़ी है, न कुंवारी, बल्कि दोनों के बीच की है।' अतः जो आदेश तुम्हें दिया गया है, करो।"

(69) उन्होंने कहा, "अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमें दिखाए कि उसका रंग कैसा है।" उसने कहा, "वह कहता है, 'वह एक पीली गाय है, जिसका रंग चमकीला है, जो देखनेवालों को अच्छी लगती है।'"

(70) उन्होंने कहा, "अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमें स्पष्ट कर दे कि वह क्या है। हमें तो सभी गायें एक-सी दिखाई देती हैं। और यदि अल्लाह चाहेगा तो हम अवश्य मार्ग पा लेंगे।"

(71) उसने कहा, "वह कहता है, 'यह गाय न तो हल चलाने के लिए प्रशिक्षित है और न ही खेत सींचने के लिए, यह पूरी तरह से स्वस्थ है और इसमें कोई दोष नहीं है।'" उन्होंने कहा, "अब तुम सत्य लेकर आए हो।" इसलिए उन्होंने उसे ज़बह कर दिया, किन्तु वे उसे ज़बह नहीं कर सके।

(72) और याद करो जब तुमने एक व्यक्ति को क़त्ल किया और उसके विषय में झगड़ने लगे, किन्तु अल्लाह को वह बात उजागर करनी थी जो तुम छिपा रहे थे।

(73) अतः हमने कहा, "इसमें से कुछ उस मरे हुए व्यक्ति पर मारो।" इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझ सको।

(74) फिर उसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गए, पत्थरों जैसे या उनसे भी अधिक कठोर हो गए। कुछ पत्थर ऐसे हैं जिनसे नहरें फूट पड़ती हैं, कुछ ऐसे हैं जो फट जाते हैं और पानी निकल आता है, और कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनजान नहीं है।

(75) क्या तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे लिए ईमान ले आएँ, हालाँकि उनमें से एक गिरोह अल्लाह की वाणी सुनता था, फिर उसे तोड़-मरोड़ देता था, इसके पश्चात कि वे उसे समझ चुके थे, जबकि वे जानते थे?

(76) और जब वे ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं, "हम ईमान लाए।" फिर जब वे एक-दूसरे के साथ अकेले होते हैं तो कहते हैं, "क्या तुम उनसे उस विषय में बात करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है, ताकि वे तुम्हारे रब के सामने उसके विषय में तुमसे बहस करें?" तो क्या तुम तर्क नहीं करते?

(77) क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं?

(78) और उनमें कुछ अनपढ़ भी हैं जो किताब को नहीं जानते, परन्तु वे केवल कल्पना करते हैं।

(79) तो विनाश है उन लोगों पर जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उसका मूल्य थोड़ा-सा ले लें। विनाश है उन पर उस बात पर जो उनके हाथों ने लिखी है और विनाश है उन पर उस बात पर जो उन्होंने कमाई है।

(80) और वे कहते हैं, "जहन्नम हमें कुछ ही दिनों के लिए छूएगी।" कह दो, "क्या तुमने अल्लाह से कोई वचन लिया है? निश्चय ही अल्लाह अपना वचन कभी नहीं तोड़ता। या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?"

(81) हाँ, जो व्यक्ति बुराई करेगा और उसका पाप उसे घेर लेगा, वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(82) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(83) और याद करो जब हमने बनी इसराईल से वचन लिया कि "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप और नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो। और लोगों से अच्छी बातें बोलो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।" फिर तुममें से कुछ लोगों के सिवा और कुछ नहीं रहे और तुम इनकार करते रहे।

(84) और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया था कि "एक दूसरे का ख़ून न बहाओ और एक दूसरे को अपने घरों से न निकालो।" फिर तुमने प्रत्यक्षतः इस बात को स्वीकार किया।

(85) फिर तुम ही लोग हो जो एक दूसरे को मार रहे हो और अपने लोगों के एक गिरोह को उनके घरों से निकाल रहे हो, और उनके विरुद्ध पाप और अत्याचार में सहयोग कर रहे हो। और यदि वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आएँ तो तुम उनसे छुड़ौती ले लेते हो, यद्यपि उन्हें निकालना तुम पर हराम था। तो क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और एक हिस्से पर इनकार करते हो? फिर तुममें से जो लोग ऐसा करते हैं, उनका बदला सांसारिक जीवन में अपमान के अतिरिक्त और क्या है? और क़ियामत के दिन वे कठोरतम यातना की ओर वापस भेजे जाएँगे। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनजान नहीं है।

(86) यही वे लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले में सांसारिक जीवन ख़रीदा है। अतः न तो उनपर यातना हल्की की जाएगी और न उनकी सहायता की जाएगी।

(87) और हमने मूसा को किताब दी और उसके बाद रसूल भेजे। और मरयम के बेटे ईसा को हमने स्पष्ट प्रमाण दिए और पवित्र आत्मा से उसकी सहायता की। लेकिन क्या ऐसा नहीं है कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास ऐसी चीज़ लेकर आया जो तुम्हारी आत्माएँ नहीं चाहती थीं, तो तुम अहंकार करते रहे। और एक गिरोह को तुमने झुठलाया और एक गिरोह को क़त्ल कर दिया।

(88) उन्होंने कहा, "हमारे दिल तो बंधे हुए हैं।" किन्तु अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उनपर लानत की है। फिर वे बहुत कम ईमान लाए।

(89) और जब उनके पास अल्लाह की ओर से किताब आई, जो उस चीज़ की पुष्टि करती है जो उनके पास थी, हालाँकि इससे पहले वे इनकार करने वालों पर विजय की प्रार्थना करते थे, फिर जब उनके पास वह चीज़ आई जिसे वे पहचानते थे, तो उन्होंने उसका इनकार कर दिया। अतः इनकार करनेवालों पर अल्लाह की लानत है।

(90) कैसी बुरी बात है वह जिसके लिए उन्होंने अपने आपको बेच दिया कि वे उस चीज़ को कुफ़्र कर दें जो अल्लाह ने अवतरित की है, ताकि अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपनी कृपा नाज़िल करे। तो वे क्रोध पर क्रोध पाकर लौटे। और इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना है।

(91) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उसपर ईमान लाओ तो वे कहते हैं कि हम तो उसी पर ईमान लाते हैं जो हमारी ओर उतारा गया। और जो कुछ उसके बाद आया है उसे वे झुठलाते हैं, हालाँकि वह सत्य है, जो उनके पास है उसकी पुष्टि करता है। कहो कि यदि तुम ईमान वाले हो तो तुमने अल्लाह के नबियों को पहले क्यों क़त्ल किया?

(92) और मूसा तुम्हारे पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आये थे, फिर उसके पश्चात तुमने बछड़े को पूजने का निर्णय किया, और तुम अत्याचारी थे।

(93) और याद करो जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम्हारे ऊपर पहाड़ को उठाया और कहा, "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़ता से ग्रहण करो और सुनो।" उन्होंने कहा, "हम सुनते हैं और अवज्ञा करते हैं।" और उनके दिलों ने उनके इनकार के कारण बछड़े की पूजा को ग्रहण कर लिया। कह दो, "यदि तुम ईमान वाले हो, तो तुम्हारा ईमान तुम्हें जो आदेश देता है, वह कितना बुरा है।"

(94) कह दो, "यदि आख़िरत का घर अल्लाह के पास केवल तुम्हारे लिए है और लोगों के लिए नहीं है, तो यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु की कामना करो।"

(95) किन्तु वे कभी भी इसकी कामना नहीं करेंगे, क्योंकि उनके हाथों ने जो कुछ किया है, वह सत्य है। अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

(96) और तुम उन्हें जीवन का सबसे अधिक लोभी पाओगे, उन लोगों से भी अधिक जो अल्लाह का साझी ठहराते हैं। उनमें से कोई चाहे कि उसे एक हजार वर्ष का जीवन दे दिया जाए, किन्तु यदि उसे लम्बी आयु दे दी जाए, तो भी वह उस यातना से कुछ नहीं हटेगा। और अल्लाह देख रहा है जो कुछ वे करते हैं।

(97) कह दो, "जो कोई जिब्रील का शत्रु है, वही है जिसने अल्लाह की अनुमति से इसे तुम्हारे दिलों पर उतारा है, जो इससे पहले की बातों की पुष्टि करता है और मार्गदर्शन और शुभ सूचना है ईमान वालों के लिए।"

(98) जो कोई अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का शत्रु होगा, तो निश्चय ही अल्लाह इनकार करनेवालों का शत्रु है।

(99) और हमने तुम्हारी ओर स्पष्ट प्रमाण वाली आयतें अवतरित की हैं, और उन्हें झुठलानेवाला तो केवल अवज्ञाकारी ही है।

(100) क्या यह नहीं कि जब भी वे कोई वचन लेते थे तो उनमें से एक गिरोह उसे तोड़ देता था, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

(101) और जब अल्लाह की ओर से एक रसूल उनके पास उसकी पुष्टि करने आया जो उनके पास थी, तो जिन लोगों को किताब दी गई थी उनमें से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया, मानो वे जानते ही नहीं।

(102) और उन्होंने सुलैमान के समय शैतानों की कही हुई बातों का अनुसरण किया। सुलैमान ने इनकार नहीं किया, बल्कि शैतानों ने इनकार किया। उन्होंने लोगों को जादू सिखाया और वह भी जो बाबुल में हारूत और मारूत नामक दो फ़रिश्तों पर अवतरित हुआ। लेकिन वे दोनों फ़रिश्तें किसी को तब तक नहीं सिखाते थे जब तक वे यह न कहें कि हम एक आज़माइश हैं, इसलिए इनकार न करो। और उन्होंने उनसे वह सीखा जिसके ज़रिए वे पति और उसकी पत्नी के बीच अलगाव पैदा करते हैं। लेकिन वे इसके ज़रिए अल्लाह की अनुमति के बिना किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। और वे वह सीखते हैं जो उन्हें नुकसान पहुँचाता है और उन्हें लाभ नहीं पहुँचाता। लेकिन वे निश्चित रूप से जानते थे कि जिसने इसे खरीदा है, उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। और बुरा है वह जिसके लिए उन्होंने अपने आप को बेचा, काश वे जानते।

(103) यदि वे ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो अल्लाह की ओर से उन्हें बहुत अच्छा प्रतिफल मिलता, यदि वे जानते।

(104) ऐ ईमान वालो! "रईना" न कहो, बल्कि "उन्ज़ुरना" कहो और सुनो। और इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना है।

(105) न किताबवालों में से इनकार करनेवाले और न मुश्रिक यह चाहते हैं कि तुम्हारे रब की ओर से तुमपर कोई भलाई अवतरित हो। किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है अपनी दया के लिए चुन लेता है, और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(106) हम किसी आयत को न तो रद्द करते हैं और न उसे भुलाते हैं, परन्तु उससे अच्छी या उसके समान कोई दूसरी आयत निकाल देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है?

(107) क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न तो कोई संरक्षक है और न सहायक?

(108) या तुम अपने रसूल से पूछना चाहते हो, जैसा कि मूसा से पूछा गया था? और जो व्यक्ति ईमान को कुफ़्र से बदल लेगा, वह मार्ग से भटक गया।

(109) किताबवालों में से बहुत से लोग चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के बाद वे तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर दें, क्योंकि वे अपने ही ईर्ष्या के कारण ऐसा चाहते हैं, जबकि सत्य उनपर स्पष्ट हो चुका है। अतः क्षमा करो और ध्यान न दो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना आदेश दे दे। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(110) नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और जो भलाई तुम अपने लिए करोगे, उसे अल्लाह के पास पाओगे। निस्संदेह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देख रहा है।

(111) और वे कहते हैं, "जन्नत में कोई प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वह व्यक्ति जो यहूदी या ईसाई हो।" यह उनकी मनगढ़ंत बात है। कह दो, "यदि तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो।"

(112) हाँ, जो व्यक्ति इस्लाम में अपना मुख अल्लाह के आगे कर देगा, और वह अच्छा कर्म करनेवाला भी होगा, तो उसका बदला उसके रब के पास है, और न उनपर कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(113) यहूदी कहते हैं कि ईसाइयों के पास कोई सच्चा आधार नहीं है, और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों के पास कोई सच्चा आधार नहीं है, हालाँकि वे दोनों ही किताब पढ़ते हैं। इस प्रकार अज्ञानी लोग वही कहते हैं जो वे कहते हैं। परन्तु अल्लाह क़ियामत के दिन उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिस पर वे मतभेद करते रहे हैं।

(114) और उनसे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह का नाम उसकी मस्जिदों में लेने से रोकते हैं और उनके विनाश का प्रयास करते हैं। उनके लिए तो बस डर के मारे ही उनमें प्रवेश करना उचित है। उनके लिए दुनिया में अपमान है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है।

(115) और अल्लाह ही का है पूरब और पश्चिम। फिर तुम जिधर भी मुँह करो, उधर ही अल्लाह का मुख है। निस्संदेह अल्लाह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

(116) वे कहते हैं, "अल्लाह ने पुत्र बनाया है।" वह महान है, बल्कि आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। सभी उसके आज्ञाकारी हैं।

(117) आकाशों और धरती का जन्मदाता है। जब वह किसी काम का निर्णय करता है तो उससे केवल यही कहता है कि "हो जा।" तो वह हो जाती है।

(118) जो लोग नहीं जानते वे कहते हैं कि अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी प्रकार उनसे पहले के लोगों ने भी उनकी बातों के समान बातें कही थीं। उनके दिल एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। हमने निशानियाँ स्पष्ट रूप से उन लोगों के लिए प्रकट कर दी हैं जो विश्वास में दृढ़ हैं।

(119) निश्चय ही हमने तुम्हें सत्य के साथ शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है। और तुमसे जहन्नम वालों के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा।

(120) और यहूदी और ईसाई कभी भी तुम्हारा साथ नहीं देंगे जब तक कि तुम उनके धर्म पर न चलो। कह दो, "अल्लाह का मार्ग ही मार्ग है।" यदि तुम उनके पीछे लग जाओ, उसके पश्चात जो ज्ञान तुम्हारे पास आ चुका है, तो अल्लाह के विरुद्ध न तुम्हारा कोई रक्षक है और न सहायक।

(121) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे सही-सही पढ़कर सुनाते हैं। वही लोग उस पर ईमान लाते हैं। और जो कोई उसका इनकार करेगा, वही लोग घाटे में पड़ेंगे।

(122) ऐ इसराइल की सन्तान! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुमपर किया और यह कि मैंने तुम्हें समस्त संसारों पर वरीयता दी।

(123) और उस दिन से डरो जब कोई प्राणी किसी प्राणी के लिए कुछ भी न बचेगा और न उससे कोई बदला लिया जाएगा और न उसे कोई सिफ़ारिश लाभ पहुँचाएगी और न कोई सहायता दी जाएगी।

(124) और याद करो जब इबराहीम को उसके रब ने हुक्म देकर आज़माया तो उसने उन्हें पूरा किया। (अल्लाह ने) कहा, "मैं तुम्हें लोगों का सरदार बनाऊँगा।" (इबराहीम ने) कहा, "और मेरी संतान में से कौन?" (अल्लाह ने) कहा, "मेरे अहद में ज़ालिम शामिल नहीं हैं।"

(125) और याद करो जब हमने घर को लोगों के लिए वापसी का स्थान और सुरक्षा का स्थान बनाया था। और इबराहीम के खड़े होने के स्थान से नमाज़ का स्थान बना लो। और हमने इबराहीम और इसमाईल को आदेश दिया कि, "मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और इबादत करने वालों और रुकू और सजदा करने वालों के लिए शुद्ध करो।"

(126) और याद करो जब इबराहीम ने कहा कि "ऐ मेरे रब! इस नगर को सुरक्षित बना दे और इसके निवासियों को फलों की रोज़ी दे। जो उनमें से अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए।" (अल्लाह ने) कहा, "और जो इनकार करेगा, मैं उसे थोड़े समय के लिए सुख प्रदान करूँगा, फिर उसे आग की यातना की ओर धकेलूँगा, और वह स्थान बहुत बुरा है।"

(127) और याद करो जब इबराहीम और इसमाईल घर की नींव रख रहे थे, "ऐ हमारे रब! हमसे यह स्वीकार कर। निस्संदेह, तू ही सुननेवाला, जाननेवाला है।

(128) ऐ हमारे रब! हमें अपना मुसलमान बना और हमारी सन्तान में से एक मुसलमान समुदाय बना। हमें हमारे कर्म बता और हमारी तौबा क़बूल कर। निस्संदेह तू तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

(129) हे हमारे पालनहार! तू उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेज जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और उन्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा दे और उन्हें पवित्र करे। निस्संदेह, तू ही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(130) और इबराहीम के दीन से कौन विमुख हो सकता है, परन्तु वह जो अपने आप को मूर्ख बनाए, और हमने उसे संसार में चुन लिया था, और वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से होगा।

(131) जब उसके रब ने उससे कहा कि आज्ञाकारी हो जाओ तो उसने कहा कि मैं सारे संसार के रब के आगे आज्ञाकारी हो गया हूँ।

(132) और इबराहीम ने अपने बेटों को यही आदेश दिया और याकूब ने भी कहा, "ऐ मेरे बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही धर्म चुन लिया है। अतः तुम मुसलमान रहते हुए ही मरना।"

(133) क्या तुम उस समय के साक्षी हो जब याकूब की मृत्यु निकट आ पहुंची, जबकि उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे पश्चात तुम किसकी उपासना करोगे? उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पूज्य और तुम्हारे पूर्वजों इबराहीम और इसमाईल और इसहाक के पूज्य की उपासना करेंगे। हम एक ही पूज्य हैं। हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

(134) वह एक ऐसी जाति थी जो गुज़र चुकी है। उसे जो कुछ उसने कमाया है, उसका परिणाम मिलेगा और तुम्हें भी जो कुछ तुमने कमाया है, उसका परिणाम मिलेगा। और तुमसे यह नहीं पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे।

(135) वे कहते हैं, "यहूदी या ईसाई बन जाओ, तो तुम मार्ग पाओगे।" कह दो, "बल्कि हम तो इबराहीम के धर्म पर चलते हैं, जो सत्य का समर्थक था और वह मुश्रिकों में से न था।"

(136) कह दो, "हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और जो कुछ हमारी ओर अवतरित हुआ है, और जो कुछ इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी सन्तान पर अवतरित हुआ है, और जो कुछ मूसा और ईसा को दिया गया और जो कुछ पैग़म्बरों को उनके रब की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।"

(137) अतः यदि वे उसी बात पर ईमान लाएँ जिस पर तुम ईमान लाए हो तो वे मार्ग पा गए, किन्तु यदि वे मुँह मोड़ लें तो वे केवल झगड़ रहे हैं। उनके मुक़ाबले में अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है। और वह सब कुछ सुनता, जानता है।

(138) कह दो, "हमारा धर्म अल्लाह का है। फिर धर्म में अल्लाह से अच्छा कौन है? हम तो उसी के बन्दे हैं।"

(139) कह दो, "क्या तुम अल्लाह के विषय में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वही हमारा रब भी है और तुम्हारा भी रब है? हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं। और हम उसके प्रति सच्चे हैं।"

(140) या तुम कहते हो कि इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याकूब और उनकी सन्तान यहूदी या ईसाई थे? कहो, "क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह?" और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह से अपनी गवाही छिपाए? और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।

(141) वह एक ऐसी जाति है जो गुज़र चुकी है। उसे जो कुछ उसने कमाया है, उसका परिणाम मिलेगा और तुम्हें भी जो कुछ तुमने कमाया है, उसका परिणाम मिलेगा। और तुमसे यह नहीं पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे।

(142) लोगों में से मूर्ख लोग कहेंगे, "किस चीज़ ने उन्हें उनके क़िबले से रोक दिया, जिस ओर वे रुख़ करते थे?" कह दो, "पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर ले चलता है।"

(143) और इस प्रकार हमने तुम्हें एक न्यायप्रिय समुदाय बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाह रहो और रसूल तुम पर गवाह रहे। और जिस क़िबले की ओर तुम मुँह करके खड़े थे, उसे हमने सिर्फ़ इसलिए बनाया था कि हम स्पष्ट कर दें कि कौन रसूल का अनुसरण करेगा और कौन अपनी एड़ियों के बल फिर जाएगा। और यह तो केवल उन्हीं के लिए कठिन है जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है। और अल्लाह तुम्हें कदापि तुम्हारे ईमान से वंचित नहीं करता। निस्संदेह अल्लाह लोगों के प्रति अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(144) हमने तुम्हारा चेहरा आसमान की तरफ़ मुड़ते हुए देखा है। और हम तुम्हें ज़रूर उस क़िबले की तरफ़ मोड़ेंगे जिससे तुम राज़ी होगे। तो अपना चेहरा मस्जिदुल हराम की तरफ़ मोड़ो। और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपना चेहरा उसी तरफ़ मोड़ो। बेशक जिन लोगों को किताब दी गई है, वे अच्छी तरह जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़ है। और जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।

(145) और यदि तुम उन लोगों के पास, जिन्हें किताब दी गई है, हर निशानी ले आओ, तो भी वे तुम्हारे क़िबले का अनुसरण न करेंगे और न तुम उनके क़िबले का अनुसरण करोगे और न वे एक दूसरे के क़िबले का अनुसरण करेंगे। अतः यदि तुम उनके इच्छाओं का अनुसरण करो, इसके पश्चात कि जो ज्ञान तुम्हारे पास आ चुका है, तो निश्चय ही तुम अत्याचारियों में से होगे।

(146) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे (अर्थात् पैगम्बर मुहम्मद को) इस प्रकार जानते हैं, जैसे वे अपने बेटों को जानते हैं। किन्तु उनमें से कुछ लोग सत्य को जानते हुए भी उसे छिपाते हैं।

(147) सत्य तुम्हारे रब की ओर से है। अतः तुम कदापि संदेह करनेवालों में न हो जाओ।

(148) हर एक के लिए एक दिशा है, जिस ओर वह रुख करता है। अतः भलाई की ओर दौड़ो। तुम जहाँ कहीं भी हो, अल्लाह तुम सबको एक साथ बाहर निकालेगा। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(149) अतः तुम जहाँ से भी निकलो, अपना मुँह मस्जिदे हराम की ओर करो, निस्संदेह यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं है।

(150) और जहाँ से भी तुम नमाज़ के लिए निकलो, अपना मुँह मस्जिद हराम की तरफ़ करो। और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपना मुँह मस्जिद हराम की तरफ़ करो, ताकि लोगों के पास तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई दलील न रहे, सिवाय उन लोगों के जो ज़ालिम हैं। तो उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ और ताकि तुम सीधे मार्ग पर चलो।

(151) जिस प्रकार हमने तुम्हारे बीच तुममें से ही एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता था और तुम्हें पवित्र बनाता था और तुम्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता था और तुम्हें वह बातें सिखाता था जो तुम नहीं जानते थे।

(152) अतः तुम मुझे याद करो, मैं भी तुम्हें याद करूँगा और मेरे प्रति कृतज्ञता दिखाओ और मुझे झुठलाओ नहीं।

(153) ऐ ईमान वालो! धैर्य और नमाज़ के द्वारा सहायता चाहो। निस्संदेह अल्लाह धैर्य रखनेवालों के साथ है।

(154) और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उनके विषय में यह न कहो कि वे मुर्दा हैं, बल्कि वे जीवित हैं, किन्तु तुम उन्हें जानते नहीं।

(155) और हम अवश्य ही भय, भूख, धन, प्राण और फलों की हानि से तुम्हारी परीक्षा लेंगे। अतः धैर्यवानों को शुभ सूचना दे दो।

(156) जब उनपर कोई मुसीबत आती है तो वे कहते हैं, "हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौटकर जानेवाले हैं।"

(157) वही लोग हैं जिनपर उनके रब की ओर से कृपा और दयालुता है और वही लोग मार्ग पर हैं।

(158) निस्संदेह सफ़ा और मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं। अतः जो व्यक्ति घर की ओर हज करे या उमरा करे, तो उसके लिए कोई गुनाह नहीं कि वह उन दोनों के बीच चले। और जो कोई नेकी का काम करे, तो निस्संदेह अल्लाह क़दर करनेवाला, जाननेवाला है।

(159) निश्चय ही जिन लोगों ने हमारी उतारी हुई स्पष्ट निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाया, इसके पश्चात कि हमने उसे लोगों पर किताब में स्पष्ट कर दिया, अल्लाह की ओर से भी उन्हीं पर लानत है और लानत करनेवाले भी उन पर लानत करते हैं।

(160) परन्तु जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और स्पष्ट कर दें, तो मैं उनकी तौबा स्वीकार करूँगा और मैं ही तौबा स्वीकार करने वाला, अत्यन्त दयावान हूँ।

(161) निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और वे इनकार ही की स्थिति में मर गए, उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और लोगों की लानत है।

(162) वे उसी में सदैव रहेंगे, उनसे न यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी।

(163) और तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वह अत्यन्त दयावान, अत्यन्त दयावान है।

(164) निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना में, रात और दिन के आने-जाने में, समुद्र में चलने वाली नावों में, लोगों के लिए लाभ पहुँचाने वाली चीज़ में, और जो अल्लाह ने आकाश से वर्षा बरसाई, उसके द्वारा धरती को उसके प्राणहीन हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान किया, और उसमें प्रत्येक गतिमान प्राणी को फैला दिया, और आकाश और धरती के बीच हवाओं और बादलों को नियंत्रित करना, ये सब उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

(165) और लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के अलावा दूसरों को अपना बराबर मानते हैं। वे उनसे उसी तरह प्रेम करते हैं जिस तरह अल्लाह से करना चाहिए। लेकिन जो लोग ईमान लाए हैं, वे अल्लाह से ज़्यादा प्रेम करते हैं। और यदि वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया है, विचार करें कि जब वे यातना देखेंगे तो उन्हें निश्चय हो जाएगा कि सारा अधिकार अल्लाह का है और अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

(166) और जब वे लोग, जिनका अनुसरण किया गया था, उनसे अलग हो जायेंगे जो उनका अनुसरण करते थे, और वे यातना देख लेंगे और उनसे सम्बन्ध टूट जायेंगे,

(167) जो लोग पीछे चले गए वे कहेंगे, "काश! हमें एक और मौका मिलता तो हम उनसे विमुख हो जाते, जिस तरह उन्होंने हमसे विमुख हो गए।" इस प्रकार अल्लाह उन्हें उनके कर्म दिखा देगा, उनके लिए पश्चाताप के रूप में। और वे कभी भी आग से निकलने वाले नहीं।

(168) ऐ लोगो! धरती में जो कुछ हलाल और अच्छा है, उसमें से खाओ और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। निस्संदेह वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(169) वह तो बस तुम्हें बुराई और अनैतिकता का आदेश देता है और अल्लाह पर ऐसी बातें कहने का जो तुम नहीं जानते।

(170) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है, उसका अनुसरण करो तो कहते हैं कि हम तो उसी का अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। यद्यपि उनके बाप-दादा कुछ भी नहीं समझते थे और न वे मार्ग पर थे।

(171) जिन लोगों ने इनकार किया उनकी मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जो उस चीज़ पर चिल्लाता है जो कुछ सुनती नहीं, परन्तु पुकारती और चिल्लाती है। वे बहरे, गूंगे और अंधे हैं, अतः वे कुछ नहीं समझते।

(172) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! हमने जो सुपाच्य चीज़ें तुम्हें प्रदान की हैं, उनमें से खाओ और अल्लाह का आभार मानो, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

(173) उसने तुमपर केवल मुर्दा, खून, सूअर का माँस और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को समर्पित की गई वस्तुएँ हराम की हैं। किन्तु जो व्यक्ति विवश हो जाए, और न चाहे और न सीमा का उल्लंघन करे, तो उसपर कोई पाप नहीं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(174) जो लोग अल्लाह की उतारी हुई किताब को छिपाते हैं और उसे थोड़े से मूल्य पर बेच देते हैं, वे अपने पेट में केवल आग ही डालते हैं। और अल्लाह क़ियामत के दिन उनसे बात नहीं करेगा और न उन्हें पवित्र करेगा। और उनके लिए दुखद यातना है।

(175) यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन को पथभ्रष्टता से और क्षमा को यातना से बदल दिया। वे आग की खोज में कितने धैर्यवान हैं!

(176) यह इसलिए कि अल्लाह ने सत्य के साथ किताब उतारी है, और जो लोग किताब में मतभेद करते हैं, वे बहुत बड़े मतभेद में हैं।

(177) नेकी वह नहीं है कि तुम अपना मुँह पूरब या पश्चिम की ओर फेर लो, बल्कि नेकी वह है जो अल्लाह, अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाए और माल चाहे उससे प्रेम ही क्यों न हो, रिश्तेदारों, अनाथों, मुहताजों, मुसाफ़िरों, माँगनेवालों और गुलामों को आज़ाद करने में दे, नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे, वादा पूरा करे और जब वादा करे, और निर्धनता, कठिनाई और युद्ध में धैर्य रखे। वही लोग सच्चे हैं और वही लोग नेक हैं।

(178) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! तुम्हारे लिए हत्यारों के बदले में सज़ा अनिवार्य है - स्वतंत्र के बदले स्वतंत्र, दास के बदले दास और स्त्री के बदले स्त्री। फिर जो व्यक्ति अपने भाई से कुछ चूक जाए, तो उसके लिए उचित बदला है और उसे अच्छे कर्मों के साथ बदला दिया जाना चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से एक राहत और दयालुता है। फिर जो इसके बाद भी अवज्ञा करेगा, उसके लिए दुखद यातना है।

(179) और ऐ समझ वालो! तुम्हारे लिए बदला है प्राणों की रक्षा, ताकि तुम डरपोक बनो।

(180) जब तुममें से कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु के निकट पहुँच जाए और वह धन छोड़ जाए तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह अपने माता-पिता और निकट सम्बन्धियों के लिए उचित रीति से वसीयत करे। यह नेक लोगों पर अनिवार्य है।

(181) फिर जो व्यक्ति वसीयत को सुनने के पश्चात उसमें परिवर्तन करे, तो पाप तो केवल उसी पर है जिसने उसमें परिवर्तन किया हो। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(182) किन्तु यदि कोई व्यक्ति उत्तराधिकारी से किसी गुमराही या पाप का भय रखे और जो कुछ उनके बीच है उसे सुधार ले तो उस पर कोई पाप नहीं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(183) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए हैं जिस प्रकार तुमसे पहले लोगोंपर अनिवार्य किए गए थे, ताकि तुम डरपोक बनो।

(184) एक निश्चित संख्या में दिन उपवास करो। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो, तो उसे उतने ही दिन उपवास करने चाहिए। और जो लोग सामर्थ्य रखते हों, उन पर एक फ़क़ीर को खाना खिलाने के बदले में फ़िदया है। और जो स्वेच्छा से अधिक दान करे, उसके लिए यह बेहतर है। लेकिन रोज़ा रखना तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते।

(185) रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरआन अवतरित हुआ, जो लोगों के लिए मार्गदर्शन और मार्गदर्शन की स्पष्ट निशानियाँ और प्रमाण है। अतः जो कोई इस महीने का चाँद देख ले, वह रोज़ा रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो, तो उतने ही दिन और रोज़े रखे। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, कष्ट नहीं चाहता और चाहता है कि तुम इस अवधि को पूरा करो और अल्लाह की उस बात पर उसकी तसबीह करो, जिसकी उसने तुम्हें हिदायत दी है। और शायद तुम कृतज्ञ हो जाओ।

(186) और जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे विषय में पूछते हैं, तो मैं निकट ही हूँ। जब कोई मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी पुकार सुनता हूँ। अतः उन्हें चाहिए कि वे मेरी पुकार स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएँ, ताकि वे मार्ग पाएँ।

(187) रोज़े से पहले की रात को तुम्हारे लिए अपनी बीवियों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है। वे तुम्हारे लिए वस्त्र हैं और तुम उनके लिए वस्त्र हो। अल्लाह जानता है कि तुम अपने आपको धोखा दे रहे थे, अतः उसने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली और तुम्हें क्षमा कर दिया। अतः अब तुम उनसे सम्बन्ध बनाओ और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है, उसे चाहो। और खाओ-पीओ यहाँ तक कि सुबह का सफ़ेद धागा तुम्हारे लिए रात के काले धागे से अलग न हो जाए। फिर सूर्यास्त तक रोज़ा पूरा करो। और जब तक तुम मस्जिदों में इबादत के लिए ठहरे रहो, उनसे सम्बन्ध न बनाओ। ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं, अतः इनके निकट न जाओ। इस प्रकार अल्लाह लोगों के लिए अपने आदेश स्पष्ट करता है, ताकि वे डरपोक बनें।

(188) और एक दूसरे के धन को अन्यायपूर्वक न खाओ और न उसे हाकिमों के पास भेजो, ताकि वे तुम्हारी सहायता करें कि तुम लोगों के धन का कुछ भाग पाप में उड़ा दो, यद्यपि तुम जानते हो कि यह अवैध है।

(189) वे तुमसे नये चाँद के विषय में पूछते हैं। कह दो, "ये लोगों के लिए समय की माप हैं और हज के लिए।" घरों में पीछे से प्रवेश करना धर्म नहीं है, परन्तु धर्म वह है जो अल्लाह से डरे। घरों में उनके द्वारों से प्रवेश करो। और अल्लाह से डरो, ताकि तुम सफल हो सको।

(190) जो लोग तुमसे युद्ध करें, तुम अल्लाह के मार्ग में उनसे युद्ध करो, किन्तु अतिक्रमण न करो। निस्संदेह अल्लाह अतिक्रमण करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(191) और जहाँ कहीं भी तुम उन्हें पाओ, उन्हें क़त्ल कर दो और जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है, वहाँ से भी उन्हें निकाल दो। फ़ितना क़त्ल से भी बदतर है। और मस्जिदे हराम में उनसे न लड़ो जब तक कि वे वहाँ तुमसे न लड़ें। फिर अगर वे तुमसे लड़ें तो उन्हें क़त्ल कर दो। यही इनकार करनेवालों का बदला है।

(192) फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(193) उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रह जाए और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो अत्याचारियों के अलावा कोई आक्रमण नहीं है।

(194) हराम के महीने में युद्ध करना हराम के महीने में किए गए अत्याचार के बदले है और हर तरह की बुराई के बदले बदला है। तो जिसने तुमपर अत्याचार किया हो, तुम भी उसपर वैसा ही अत्याचार करो जैसा उसने तुमपर अत्याचार किया है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है।

(195) और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों से विनाश में न पड़ो और भलाई करो, निस्संदेह अल्लाह नेक लोगों को प्रिय है।

(196) और अल्लाह के लिए हज और उमराह पूरा करो। फिर अगर तुम रोके जाओ तो जो आसानी से मिल जाए, वह कुर्बानी का जानवर कर लो। और जब तक कुर्बानी का जानवर वध की जगह पर न पहुँच जाए, तब तक अपने सिर के बाल न मुँड़ाओ। और तुममें से जो कोई बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो, तो उसे रोज़े या सदक़ा या क़ुर्बानी के रूप में फ़िदया देना चाहिए। और जब तुम निश्चिंत हो जाओ, तो जो कोई उमराह करके हज करे, तो वह जो आसानी से मिल जाए, वह कुर्बानी का जानवर कर लो। और जो जानवर न पा सके, तो वह हज के दौरान तीन दिन का रोज़ा रखे और जब घर वापस आए, तो सात दिन का रोज़ा रखे। ये पूरे दस दिन हुए। ये उन लोगों के लिए है, जिनके घरवाले मस्जिदुल हराम के इलाके में न हों। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देनेवाला है।

(197) हज के महीने जाने-माने महीने हैं, फिर जिसने उनमें हज अनिवार्य कर लिया, उसके लिए हज के दौरान न तो यौन-संबंध रखना है, न अवज्ञा और न ही विवाद करना। और जो भी अच्छा काम तुम करोगे, अल्लाह उसे जानता है। और रोज़ी-रोटी कमाओ, लेकिन सबसे अच्छी रोज़ी अल्लाह का डर है। और ऐ समझ वालों, मुझसे डरो।

(198) यदि तुम अपने रब से अनुग्रह की आशा करो तो तुम्हारे लिए कोई पाप नहीं है। किन्तु जब तुम अरफात से प्रस्थान करो तो मशअर हराम में अल्लाह को याद करो। और उसे याद करो, जिस प्रकार उसने तुम्हें मार्ग दिखाया है। इससे पहले तुम पथभ्रष्ट लोगों में से थे।

(199) फिर तुम उस स्थान से चले जाओ जहाँ से सब लोग चले गये हैं और अल्लाह से क्षमा प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(200) और जब तुम अपने कर्म पूरे कर लो तो अल्लाह को उसी तरह याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते थे या उससे भी बढ़कर। और लोगों में से कोई ऐसा भी है जो कहता है कि "ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में जगह दे" और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

(201) किन्तु उनमें से कुछ लोग कहते हैं कि "ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी अच्छाई प्रदान कर और आख़िरत में भी अच्छाई प्रदान कर और हमें आग की यातना से बचा ले।"

(202) जो कुछ उन्होंने किया है, उसमें से उन्हें हिस्सा मिलेगा और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेनेवाला है।

(203) और अल्लाह को गिने हुए दिनों में याद करो। फिर जो दो दिन में जल्दी करे, उस पर कोई गुनाह नहीं और जो तीसरे दिन तक विलम्ब करे, उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उस व्यक्ति के लिए है जो अल्लाह से डरता है। अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

(204) और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जिनकी बातें सांसारिक जीवन में तुम्हें अच्छी लगती हैं और जो कुछ उसके दिल में है उसपर वह अल्लाह को साक्षी बनाता है, फिर भी वह बड़ा विरोधी है।

(205) और जब वह चला जाता है तो धरती में उत्पात मचाने और फसलों और पशुओं को नष्ट करने का प्रयास करता है, और अल्लाह उत्पात को पसन्द नहीं करता।

(206) और जब उससे कहा जाता है कि "अल्लाह से डरो" तो वह पाप पर गर्व करने लगता है। उसके लिए जहन्नम की आग ही काफ़ी है और उसका विश्रामस्थान भी कितना बुरा है।

(207) और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपने आपको बेच डालते हैं। और अल्लाह अपने बन्दों पर अत्यन्त दयावान है।

(208) ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरी तरह प्रवेश करो और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

(209) फिर यदि तुम इसके पश्चात कि तुम्हारे पास स्पष्ट प्रमाण आ चुके हैं, पथभ्रष्ट हो जाओ तो जान लो कि अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(210) क्या वे इसके सिवा और कुछ नहीं चाहते कि अल्लाह बादलों की ओट लेकर उनके पास आए और फ़रिश्ते भी, फिर फ़ैसला हो जाए और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटकर जाते हैं।

(211) इसराईल की संतान से पूछो कि हमने उन्हें कितनी निशानियाँ दी हैं। और जो कोई अल्लाह के अनुग्रह को उसके आने के पश्चात कुफ़्र से बदल दे, तो निस्संदेह अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

(212) इनकार करनेवालों के लिए सांसारिक जीवन सुन्दर है और वे ईमानवालों का उपहास करते हैं। किन्तु जो लोग अल्लाह से डरते हैं, वे क़ियामत के दिन उनसे ऊपर होंगे। अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के रोज़ी देता है।

(213) लोग एक ही दीन के थे, फिर अल्लाह ने नबियों को शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा और उनके साथ सत्य के साथ किताब उतारी, ताकि लोगों के बीच उन बातों का फ़ैसला कर दे जिनमें वे मतभेद कर रहे थे। और इस पर मतभेद केवल उन्हीं लोगों ने किया जिन्हें यह दी गई थी, जबकि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे, और वे आपस में ईर्ष्या के कारण मतभेद कर रहे थे। और अल्लाह ने अपनी अनुमति से उन लोगों को मार्ग दिखाया जो ईमान लाए थे, और उन बातों के विषय में जिनमें वे मतभेद कर रहे थे। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर ले चलता है।

(214) क्या तुम समझते हो कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे, जबकि तुम पर अभी ऐसी मुसीबत नहीं आई जो तुमसे पहले गुज़र चुके लोगों पर आई थी? वे निर्धनता और कठिनाई से घिरे और घबरा गए, यहाँ तक कि उनके रसूल और उनके साथ ईमान लानेवाले कहने लगे, "अल्लाह की सहायता कब होगी?" निस्संदेह अल्लाह की सहायता निकट है।

(215) वे तुमसे पूछते हैं कि उन्हें क्या ख़र्च करना चाहिए? कह दो, "जो कुछ तुम अच्छा ख़र्च करोगे, वह माता-पिता, सम्बन्धियों, अनाथों, मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए है। और जो कुछ तुम अच्छा करोगे, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।"

(216) तुमपर युद्ध का आदेश दिया गया है, यद्यपि वह तुम्हारे लिए अप्रिय है। किन्तु सम्भव है कि तुम किसी चीज़ से घृणा करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और सम्भव है कि तुम किसी चीज़ से प्रेम करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है, किन्तु तुम नहीं जानते।

(217) वे तुमसे आदरपूर्ण महीने के विषय में पूछते हैं कि उसमें युद्ध करना क्या है? कह दो कि उसमें युद्ध करना बड़ा पाप है, किन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना और कुफ़्र करना और मस्जिद हराम में प्रवेश न करना और उसके लोगों को वहाँ से निकाल देना अल्लाह के निकट इससे भी बड़ा पाप है। और फ़ितना हत्या से भी बड़ा है। और वे तुमसे युद्ध करते रहेंगे, यहाँ तक कि यदि वे समर्थ हुए तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर देंगे। और तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिर जाए और काफ़िर की दशा में मर जाए, तो ऐसे लोगों के कर्म संसार और आख़िरत में व्यर्थ हो गए और वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(218) निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया, वही लोग अल्लाह की दया की आशा रखते हैं, और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(219) वे तुमसे शराब और जुए के विषय में पूछते हैं। कह दो, "इनमें बड़ा पाप है और लोगों के लिए लाभ भी है। किन्तु उनका पाप उनके लाभ से बड़ा है।" और वे तुमसे पूछते हैं कि उन्हें क्या ख़र्च करना चाहिए। कह दो, "ज़रूरत से ज़्यादा।" इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट करता है, ताकि तुम सोचो।

(220) और वे तुमसे अनाथों के विषय में पूछते हैं। कह दो, "उनके लिए सुधार ही उत्तम है। और यदि तुम अपने मामलों को उनके मामलों में मिला दो, तो वे तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह बिगाड़नेवाले को बिगाड़नेवाले से भली-भाँति जानता है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें कष्ट में डाल देता। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

(221) और मुश्रिक स्त्रियों से विवाह न करो जब तक वे ईमान न लाएँ। और ईमानवाली दासी मुश्रिक से बेहतर है, चाहे वह तुम्हें पसंद ही क्यों न हो। और मुश्रिक पुरुषों से विवाह न करो जब तक वे ईमान न लाएँ। और ईमानवाली दासी मुश्रिक से बेहतर है, चाहे वह तुम्हें पसंद ही क्यों न हो। वे लोग आग की ओर बुलाते हैं, जबकि अल्लाह अपनी अनुमति से जन्नत और क्षमा की ओर बुलाता है। और वह लोगों के लिए अपनी आयतें स्पष्ट करता है, ताकि वे याद करें।

(222) और वे तुमसे मासिक धर्म के विषय में पूछते हैं। कह दो, "यह बुरी बात है। अतः मासिक धर्म के समय पत्नियों से दूर रहो। और जब तक वे पवित्र न हो जाएँ, उनके पास न जाओ। फिर जब वे पवित्र हो जाएँ, तो जहाँ से अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है, वहाँ से उनके पास चले जाओ। निस्संदेह अल्लाह तौबा करनेवालों को पसन्द करता है और पवित्रता रखनेवालों को पसन्द करता है।"

(223) तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिए बीज बोने का स्थान हैं। अतः तुम अपनी खेती के स्थान पर जिस तरह चाहो आओ और अपने लिए अच्छा काम करो। अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उससे अवश्य मिलोगे। और ईमान वालों को शुभ सूचना दे दो।

(224) और अल्लाह की क़सम को नेक काम करने, अल्लाह से डरने और लोगों के बीच शांति स्थापित करने के विरुद्ध बहाना न बनाओ। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(225) अल्लाह तुमपर तुम्हारी अनजाने में की गयी कसमों के कारण दोष नहीं डालता, बल्कि वह तुमपर उस चीज़ के कारण दोष डालता है जो तुम्हारे दिलों ने की हो। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है।

(226) जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की क़सम खा लें, उनके लिए चार महीने का इंतज़ार है। फिर यदि वे फिर आएँ, तो निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(227) और यदि वे तलाक़ का निश्चय कर लें तो अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(228) तलाकशुदा औरतें तीन अवधि तक प्रतीक्षा में रहती हैं, और यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखती हैं, तो उनके लिए यह वैध नहीं है कि वे अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों को अपने गर्भ में छिपाएँ। और यदि वे सुलह करना चाहें, तो उनके पतियों को इस अवधि में उन्हें वापस ले लेने का अधिक अधिकार है। और उनके लिए भी वैसा ही हक़ है, जैसा उनसे अपेक्षा की जाती है, जैसा कि उचित है। लेकिन पुरुषों को उनसे एक सीमा अधिक प्राप्त है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(229) तलाक़ दो बार होती है। फिर या तो उसे उचित तरीक़े से रखो या उसे अच्छे तरीक़े से छोड़ दो। और जो कुछ तुमने उन्हें दिया है उसमें से कुछ लेना तुम्हारे लिए हलाल नहीं है, सिवाय इसके कि दोनों को यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं में नहीं रह पाएँगे। लेकिन अगर तुम्हें डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं में नहीं रह पाएँगे, तो जिस चीज़ से वह अपने आपको छुड़ाए, उसमें उन दोनों में से किसी पर कोई गुनाह नहीं। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं, इसलिए इनका उल्लंघन न करो। और जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करता है, वही लोग ज़ालिम हैं।

(230) और यदि उसने उसे तलाक दे दिया हो तो वह उसके लिए वैध नहीं है जब तक कि वह उसके अलावा किसी अन्य पति से विवाह न कर ले। और यदि दूसरा पति उसे तलाक दे दे या मर जाए तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि वे एक दूसरे के पास लौट आएं, यदि वे समझते हों कि वे अल्लाह की सीमाओं के भीतर रह सकते हैं। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं, जिन्हें वह उन लोगों के लिए स्पष्ट करता है जो जानते हों।

(231) और जब तुम स्त्रियों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो या तो उन्हें उचित शर्तों पर रोक लो या उचित शर्तों पर छोड़ दो। और उन्हें हानि पहुँचाने के इरादे से न रखो, ताकि वे अत्याचार करें। और जो ऐसा करेगा, उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। और अल्लाह की आयतों को मज़ाक में न लो। और अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो तुम पर उतरी है और जो किताब और हिकमत तुम पर उतारी गई है, जिसके ज़रिए वह तुम्हें निर्देश देता है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(232) और जब तुम स्त्रियों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, यदि वे आपस में किसी स्वीकार्य आधार पर सहमत हो जाएं। यह उस व्यक्ति के लिए निर्देश है जो तुममें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए। यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम और पवित्र है। और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

(233) जो कोई भी दूध पिलाना चाहे, वह माताएँ अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिला सकती हैं। पिता पर उनके खाने-पीने और पहनावे का दायित्व है, जो उचित हो। किसी व्यक्ति पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डाला जा सकता। किसी माँ को उसके बच्चे के कारण और किसी पिता को उसके बच्चे के कारण कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचाई जानी चाहिए। और पिता के वारिस पर भी पिता के समान ही दायित्व है। और यदि वे दोनों आपसी सहमति से और सलाह-मशविरा करके दूध छुड़ाना चाहें, तो उनमें से किसी पर कोई दोष नहीं। और यदि तुम चाहो कि तुम्हारे बच्चे किसी दूसरे से दूध पिलाएँ, तो इसमें भी तुम पर कोई दोष नहीं, बशर्ते कि तुम उचित कीमत अदा करो। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसे देख रहा है।

(234) और जो लोग तुममें से मर जाएँ और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे चार महीने और दस दिन तक प्रतीक्षा करें। फिर जब वे अपनी अवधि पूरी कर लें, तो जो कुछ वे अपने साथ उचित रीति से करें, उसमें तुमपर कोई दोष नहीं। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरी तरह परिचित है।

(235) तुम पर कोई गुनाह नहीं है कि तुम औरतों के सामने शादी का प्रस्ताव रखो या जो कुछ तुम अपने मन में छिपाते हो, अल्लाह जानता है कि तुम उसे मन में रखोगे। लेकिन उनसे गुप्त रूप से वादा न करो, सिवाय इसके कि कोई बात ठीक से कहो। और जब तक तय की गई अवधि समाप्त न हो जाए, तब तक विवाह का संकल्प न करो। और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बातें जानता है। अतः उससे डरते रहो। और जान लो कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है।

(236) यदि तुम उन स्त्रियों को तलाक दे दो जिन्हें तुमने छुआ नहीं है और न उनपर कोई दायित्व निर्धारित किया है, तो इसमें तुमपर कोई दोष नहीं। परन्तु उन्हें प्रतिदान दो - धनवान को उसकी क्षमता के अनुसार और निर्धन को उसकी क्षमता के अनुसार - जो उचित हो उसके अनुसार प्रतिदान दो। यह नेक लोगों पर दायित्व है।

(237) और यदि तुम उन्हें छूने से पहले तलाक दे दो और तुमने उन पर कोई दायित्व निर्धारित कर दिया है, तो जो कुछ निर्धारित किया है उसका आधा दे दो। ऐसा न हो कि वे अपना अधिकार छोड़ दें या जिसके हाथ में विवाह का अनुबंध है वह उसे छोड़ दे। और त्याग करना धर्म के अधिक निकट है। और आपस में अनुग्रह को न भूलो। निस्संदेह अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसे देख रहा है।

(238) नमाज़ों का ध्यान रखो, विशेष रूप से बीच की नमाज़ का और अल्लाह के सामने आज्ञाकारी होकर खड़े रहो।

(239) और यदि तुम्हें भय हो तो पैदल या सवार होकर नमाज़ पढ़ो, फिर जब तुम सुरक्षित हो जाओ तो अल्लाह को याद करो, क्योंकि उसने तुम्हें वह सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे।

(240) और जो लोग तुममें से मरकर अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो उनकी पत्नियों के लिए वसीयत है कि एक साल तक उन्हें घर से निकाले बिना गुजारा भत्ता दिया जाए। फिर यदि वे अपनी इच्छा से घर से निकल जाएँ तो जो कुछ वे अपने साथ करें, उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(241) और तलाक़शुदा स्त्रियों के लिए भी उचित चीज़ के अनुसार प्रावधान है - यह नेक लोगों पर अनिवार्य है।

(242) इसी प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है, ताकि तुम बुद्धि का प्रयोग करो।

(243) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो हज़ारों की संख्या में मौत के डर से अपने घरों से निकले थे? अल्लाह ने उनसे कहा, "मर जाओ।" फिर उसने उन्हें जीवित कर दिया। अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

(244) और अल्लाह के मार्ग में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

(245) कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे, ताकि वह उसे कई गुना बढ़ा दे? और अल्लाह ही है जो रोकता है और प्रचुरता प्रदान करता है, और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

(246) क्या तुमने मूसा के पश्चात बनी इसराईल के समूह को नहीं देखा, जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा कि "हमारे पास एक राजा भेज दीजिए, हम अल्लाह के मार्ग में लड़ेंगे।" उसने कहा कि "यदि तुम पर युद्ध अनिवार्य कर दिया जाता तो क्या तुम युद्ध से रुक जाते?" उन्होंने कहा कि "और हम अल्लाह के मार्ग में क्यों न लड़ें, जबकि हम अपने घरों और अपनी संतानों से निकाले जा चुके हैं?" फिर जब उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया तो उनमें से कुछ को छोड़कर वे मुँह मोड़ बैठे। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

(247) और उनके नबी ने उनसे कहा, "अल्लाह ने तुम्हारे पास साऊल को बादशाह बनाकर भेजा है।" उन्होंने कहा, "वह हम पर कैसे बादशाही कर सकता है, जबकि हम उससे ज़्यादा बादशाही के हकदार हैं और उसे कोई माल भी नहीं दिया गया?" उसने कहा, "अल्लाह ने उसे तुम पर तरजीह दी है और उसे ज्ञान और कद में बहुत बढ़ा दिया है। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी बादशाही देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर ग़ालिब और जाननेवाला है।"

(248) और उनके नबी ने उनसे कहा, "उसके राज्य का एक लक्षण यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक आएगा, जिसमें तुम्हारे रब की ओर से आश्वासन होगा और जो कुछ मूसा और हारून के परिवार ने छोड़ा था, उसमें से कुछ बचा हुआ होगा, जिसे फ़रिश्तों द्वारा उठाया जाएगा। निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, यदि तुम ईमानवाले हो।"

(249) और जब साऊल सैनिकों के साथ आगे बढ़ा तो उसने कहा, "अल्लाह एक नदी के ज़रिए तुम्हारी परीक्षा लेगा। जो कोई उसमें से पिएगा वह मेरा नहीं है और जो कोई उसे नहीं चखेगा वह मेरा है, सिवाय उसके जो उसे अपनी मुट्ठी में भर ले।" लेकिन उनमें से कुछ को छोड़कर सभी ने उसमें से पीया। फिर जब वह और उसके साथ ईमान लाने वाले लोग नदी पार कर गए तो उन्होंने कहा, "आज हमारे पास गोलियत और उसकी सेना के मुक़ाबले में कोई ताकत नहीं है।" लेकिन जो लोग इस बात से आश्वस्त थे कि वे अल्लाह से मिलेंगे उन्होंने कहा, "अल्लाह की अनुमति से कितने ही छोटे गिरोहों ने बड़े गिरोह पर विजय प्राप्त की है। और अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है।"

(250) और जब वे गोलियत और उसकी सेना का सामना करने के लिए निकले तो उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब! हम पर धैर्य का प्रकाश डाल और हमारे कदमों को स्थिर कर और इनकार करनेवालों पर हमें विजय प्रदान कर।"

(251) फिर उन्होंने अल्लाह की अनुमति से उन्हें पराजित कर दिया और दाऊद ने गोलियत को मार डाला और अल्लाह ने उसे राज्य और नबूवत प्रदान की और जो चाहा उसे सिखाया। और यदि अल्लाह कुछ लोगों को दूसरों के माध्यम से न रोकता तो धरती बिगड़ जाती। किन्तु अल्लाह सारे संसार के लिए बड़ा दयालु है।

(252) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हारे समक्ष सत्यवत् पढ़कर सुनाते हैं। और निश्चय ही तुम रसूलों में से हो।

(253) ये रसूल हैं, हमने उनमें से कुछ को दूसरों से श्रेष्ठ बनाया। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिनसे अल्लाह ने बात की और उनमें से कुछ को उसने उच्च दर्जा दिया। और हमने मरयम के बेटे ईसा को स्पष्ट प्रमाण प्रदान किए और हमने उसे पवित्र आत्मा से सहायता प्रदान की। यदि अल्लाह चाहता तो उनके बाद आनेवाली पीढ़ियाँ स्पष्ट प्रमाणों के आ जाने के बाद आपस में न लड़तीं। परन्तु उन्होंने मतभेद किया और उनमें से कुछ ईमान लाए और कुछ इनकार करने लगे। यदि अल्लाह चाहता तो वे आपस में न लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है, करता है।

(254) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! जो कुछ हमने तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई लेन-देन होगा, न कोई मित्रता होगी और न कोई सिफ़ारिश होगी। और जो इनकार करनेवाले हैं, वही अत्याचारी हैं।

(255) अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वव्यापी, सबका पालनहार है। उसे न तो तंद्रा आती है, न नींद। जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह सब उसी का है। कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उससे सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके बाद होगा, और वे उसके ज्ञान की किसी चीज़ को घेर नहीं सकते, सिवाय उसके जो वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाशों और धरती पर फैली हुई है, और उनकी रक्षा उसे थकाती नहीं। और वह सर्वोच्च, महान है।

(256) धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं होगी। सही रास्ता गलत से अलग हो गया है। तो जो व्यक्ति तागूत को झुठलाए और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने सबसे विश्वसनीय सहारा पकड़ लिया, जिसमें कोई टूटन नहीं है। और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(257) अल्लाह ईमान वालों का मित्र है। वह उन्हें अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है। और जो लोग इनकार करते हैं, उनके मित्र तग़ूत हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की ओर ले जाते हैं। वही लोग आग में पड़नेवाले हैं। वे उसमें सदैव रहेंगे।

(258) क्या तुमने उस व्यक्ति को नहीं देखा जिसने इबराहीम से उसके रब के विषय में झगड़ना शुरू किया, क्योंकि अल्लाह ने उसे राज्य प्रदान किया था? जब इबराहीम ने कहा, "मेरा रब जीवन देने वाला और मारने वाला है।" तो उसने कहा, "मैं जीवन देता हूँ और मारता हूँ।" इबराहीम ने कहा, "अल्लाह सूर्य को पूरब से निकालता है, तो तुम भी उसे पश्चिम से निकालो।" तो इनकार करनेवाला चकित हो गया, और अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(259) या एक व्यक्ति जो एक ऐसी बस्ती के पास से गुज़रा जो उजड़ चुकी थी। उसने कहा, "अल्लाह इसके मरने के बाद इसे कैसे ज़िंदा करेगा?" अतः अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मरने दिया, फिर उसे उठाया। उसने कहा, "तुम कितने दिन तक रहे?" उस व्यक्ति ने कहा, "मैं एक दिन या एक दिन का कुछ भाग ही रहा हूँ।" उसने कहा, "बल्कि तुम सौ वर्ष तक रहे हो। अपने खाने-पीने को देखो, उसमें समय के साथ कोई बदलाव नहीं आया है। और अपने गधे को देखो। और हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बनाएँगे। और इस गधे की हड्डियों को देखो, हम उन्हें कैसे पालते हैं और फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं।" और जब उसे सब स्पष्ट हो गया, तो उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"

(260) और जब इबराहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है? अल्लाह ने कहा कि क्या तू ईमान नहीं लाया? उसने कहा कि हाँ, बस इतना कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए। अल्लाह ने कहा कि चार पक्षी ले लो और उन्हें अपने पास रख लो। फिर उनमें से एक-एक हिस्सा हर पहाड़ी पर रख दो। फिर उन्हें बुलाओ। वे शीघ्रता से तुम्हारे पास आएँगे। और जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(261) जो लोग अल्लाह के मार्ग में अपने माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल उस बीज के समान है जिसमें से सात बालियाँ निकलती हैं, और हर बाली में सौ दाने होते हैं। और अल्लाह जिसके लिए चाहता है, उसे कई गुना बढ़ा देता है। और अल्लाह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

(262) जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, फिर जो ख़र्च किया है उसके बाद नसीहतें या कोई और तकलीफ़ नहीं पहुँचाते, उनके लिए उनके रब के पास बदला है और न उनको कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(263) अच्छी बात कहना और क्षमा करना, उस दान से उत्तम है जो उसके बाद बुराई करता है। और अल्लाह निरपेक्ष, अत्यन्त सहनशील है।

(264) ऐ ईमान लाने वालों! अपने दान को नसीहतों और तकलीफ़ों से व्यर्थ न करो, जैसा कि वह व्यक्ति करता है जो अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान नहीं रखता। उसकी मिसाल एक चिकने पत्थर की तरह है जिस पर मिट्टी पड़ी हो और उस पर बारिश की बौछार हो और वह पत्थर उखड़ जाए। वे अपनी कमाई में से कुछ भी नहीं बचा सकते। और अल्लाह इनकार करनेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

(265) और जो लोग अल्लाह की प्रसन्नता और अपने लिए प्रतिफल की खोज में अपने माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल उस बाग़ की तरह है जो ऊँचे स्थान पर है और जिस पर बारिश हो जाए तो वह दुगनी मात्रा में फल देता है। और अगर उस पर बारिश न भी हो तो एक बूँद भी काफ़ी है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

(266) क्या तुममें से कोई यह चाहेगा कि उसके पास खजूर और अंगूरों का एक बाग़ हो जिसके नीचे नहरें बहती हों और जिसमें वह हर प्रकार का फल खाए? फिर वह बुढ़ापे से पीड़ित हो और उसके बच्चे कमज़ोर हों और वह बाग़ आग से भरा बवंडर से टकराए और जल जाए। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट करता है, ताकि तुम सोचो।

(267) ऐ ईमान लाने वालों! जो कुछ तुमने कमाया है उसमें से और जो कुछ हमने तुम्हारे लिए धरती से पैदा किया है उसमें से ख़र्च करो। और जो कम है उस पर ध्यान न दो, जबकि तुम उसे आँख मूंदकर ही निकाल सकते हो। और जान लो कि अल्लाह निरपेक्ष, प्रशंसनीय है।

(268) शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और तुम्हें व्यभिचार का आदेश देता है, जबकि अल्लाह तुमसे अपनी ओर से क्षमा और अनुग्रह का वादा करता है। और अल्लाह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

(269) वह जिसे चाहता है बुद्धि प्रदान करता है, और जिसे बुद्धि प्रदान की गई, उसे बहुत-सी भलाई प्रदान की गई, और बुद्धि वाले ही कोई स्मरण नहीं रखते।

(270) और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे या मन्नतें करोगे, अल्लाह उसे जानता है और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

(271) यदि तुम अपने दान को प्रकट कर दो तो वह अच्छा है, किन्तु यदि तुम उसे छिपाओ और उसे मोहताजों को दे दो तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है, और वह तुम्हारे कुछ पापों को तुमसे दूर कर देगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरी तरह परिचित है।

(272) ऐ नबी, उनके मार्गदर्शन की ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं है, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मार्गदर्शन देता है। और जो भी नेक काम तुम करोगे, वह तुम्हारे ही लिए है। और तुम अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ही खर्च करते हो। और जो भी नेक काम तुम करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

(273) ख़ैरात उन ग़रीबों के लिए है जो अल्लाह के मार्ग में रोके गए हैं, ज़मीन में चलने-फिरने में असमर्थ हैं। अज्ञानी व्यक्ति उन्हें उनके रोके जाने के कारण आत्मनिर्भर समझेगा, किन्तु तुम उन्हें उनकी निशानियों से पहचान लोगे। वे लोगों से आग्रहपूर्वक माँगते नहीं हैं। और जो कुछ भी तुम अच्छा ख़र्च करते हो, अल्लाह उसे जानता है।

(274) जो लोग रात और दिन अपने माल ख़र्च करते हैं, चाहे छुपकर या खुलेआम, उन्हें अपने रब के पास बदला मिलेगा, और न उनको कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(275) जो लोग ब्याज खाते हैं, वे उस तरह खड़े नहीं रह सकते जैसे शैतान ने उन्हें पागल बना दिया हो। ऐसा इसलिए क्योंकि वे कहते हैं कि व्यापार ब्याज की तरह है। अल्लाह ने व्यापार को वैध ठहराया है और ब्याज को हराम किया है। अतः जो व्यक्ति अपने रब की ओर से नसीहत पा ले और फिर बाज़ आ जाए, तो उसका मामला अल्लाह के हाथ में है। फिर जो व्यक्ति फिर से ब्याज लेने लगे, वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(276) अल्लाह ब्याज को मिटा देता है और दान में वृद्धि प्रदान करता है। और अल्लाह प्रत्येक पापी अविश्वासी को पसन्द नहीं करता।

(277) निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी, उनके लिए उनके रब के पास बदला है और न उनपर कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(278) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा ब्याज बाकी है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमानवाले हो।

(279) और यदि तुम ऐसा न करो तो जान लो कि अल्लाह और उसके रसूल की ओर से तुम्हारे विरुद्ध युद्ध है। फिर यदि तुम तौबा कर लो तो तुम्हारा मूलधन तुम्हें मिल जाएगा। न तुम कोई अत्याचार करोगे और न तुम पर कोई अत्याचार होगा।

(280) और यदि कोई व्यक्ति कठिनाई में हो तो उसे आराम के समय तक टाल देना चाहिए। फिर यदि तुम दान करो तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम जानो।

(281) और उस दिन से डरो जब तुम अल्लाह की ओर पलटे जाओगे। फिर प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का बदला दिया जाएगा और उनपर कोई अत्याचार न किया जाएगा।

(282) ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी निश्चित अवधि के लिए कोई क़र्ज़ लो तो उसे लिख लो। और कोई लेखक तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक उसे लिखे। कोई लेखक लिखने से इन्कार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया है। अतः वह लिखे और जिस पर दायित्व है, वह लिख दे। और उसे अपने रब अल्लाह से डरना चाहिए और उसमें से कुछ भी न छोड़ना चाहिए। लेकिन अगर दायित्व वाला व्यक्ति कम समझ वाला या कमज़ोर या स्वयं लिखवाने में असमर्थ हो, तो उसके संरक्षक को चाहिए कि वह न्यायपूर्वक लिख दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों को गवाह बना लो। और अगर दो पुरुष उपलब्ध न हों, तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिनमें से तुम गवाह के रूप में स्वीकार करते हो, ताकि अगर स्त्रियों में से एक भूल करे, तो दूसरी उसे याद दिला दे। और जब गवाहों को बुलाया जाए, तो उन्हें इन्कार न करना चाहिए। और उसे लिखने में थकना नहीं चाहिए, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, उसकी निश्चित अवधि तक। यह अल्लाह के निकट अधिक न्यायपूर्ण और प्रमाण के रूप में अधिक सशक्त है और तुम्हारे बीच संदेह को रोकने वाला अधिक है, सिवाय इसके कि जब वह कोई सीधा लेन-देन हो जो तुम आपस में करते हो। यदि तुम न लिखो तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं। और जब कोई समझौता करो तो गवाहों को बुलाओ। किसी लिखने वाले को या किसी गवाह को कोई तकलीफ़ न पहुँचाई जाए। क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी अवज्ञा है। और अल्लाह से डरो। अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(283) और यदि तुम यात्रा में हो और कोई लिखनेवाला न मिले तो ज़मानत ले लो। और यदि तुममें से कोई किसी को सौंप दे तो चाहिए कि जिसे सौंप दिया गया है वह अपनी अमानत पूरी करे और अपने रब अल्लाह से डरे। और गवाही न छिपाओ, क्योंकि जो कोई उसे छिपाएगा, उसका दिल अवश्य ही पापी है। और अल्लाह जानता है कि तुम क्या कर रहे हो।

(284) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। चाहे तुम अपने भीतर की बातें प्रकट करो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(285) रसूल उसपर ईमान लाए जो उनके रब की ओर से उनपर उतरा और ईमान वाले भी। वे सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए। और कहते हैं, "हम उसके रसूलों में से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते।" और वे कहते हैं, "हम सुनते हैं और मानते हैं। ऐ हमारे रब! हम तुझसे क्षमा चाहते हैं और तेरी ही ओर जाना है।"

(286) अल्लाह किसी जीव को उसकी सामर्थ्य के अनुसार ही भार देता है। जो कुछ उसने अर्जित किया है, उसका परिणाम उसे भुगतना ही है और जो कुछ उसने अर्जित किया है, उसका परिणाम उसे भुगतना ही है। "ऐ हमारे रब, यदि हम भूल जाएँ या भूल कर बैठें, तो तू हमें दोषी न ठहरा। ऐ हमारे रब! हम पर वैसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले वालों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डाल जिसे उठाने की हमारी सामर्थ्य न हो। और हमें क्षमा कर दे और हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर। तू ही हमारा रक्षक है। अतः हमें इनकार करनेवालों पर विजय प्रदान कर।"

# सूरा 3: آلِ عِمْرَان‎ (Āl ʿइमरान) - इमरान का परिवार

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) अल्लाह - उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित, पालनहार है।

(3) उसने तुमपर सत्य रूप से किताब उतारी, जो उससे पहले की किताबों की पुष्टि करती है और उसने तौरात और इंजील अवतरित की।

(4) इससे पहले भी उसने लोगों के मार्गदर्शन के लिए मार्ग प्रशस्त किया था और उसने कसौटी भी उतारी थी। निस्संदेह जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उनके लिए कठोर यातना है। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रतिशोध लेने वाला है।

(5) अल्लाह से कुछ भी छिपा नहीं है, न धरती में और न आकाश में।

(6) वही है जो तुम्हारे गर्भों को अपनी इच्छानुसार बनाता है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(7) वही है जिसने तुम्हारे पास किताब उतारी। उसमें कुछ आयतें हैं जो स्पष्ट हैं, वही किताब का आधार हैं और कुछ अस्पष्ट हैं। फिर जिन लोगों के दिलों में भटकाव है, वे उसमें से अस्पष्ट आयतों का अनुसरण करेंगे, वे मतभेद और अर्थ की खोज में लगे रहेंगे। लेकिन अल्लाह के सिवा कोई उसका अर्थ नहीं जानता। और जो लोग ज्ञानी हैं, वे कहते हैं, "हम इस पर ईमान लाए हैं। सब कुछ हमारे रब की ओर से है।" लेकिन समझ रखनेवाले ही किसी को शिक्षा देंगे।

(8) "ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को भटकने न दे, इसके पश्चात कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है और हमें अपनी ओर से दया प्रदान कर। निस्संदेह तू ही देनेवाला है।"

(9) "ऐ हमारे रब! तू लोगों को एक दिन के लिए इकट्ठा करेगा, जिसमें कोई संदेह नहीं। निस्संदेह अल्लाह अपने वादे से कभी इनकार नहीं करता।"

(10) निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया, न तो उनका माल और न उनकी संतान अल्लाह के मुक़ाबले में उनके काम आ सकेगी, और वही लोग आग के ईंधन हैं।

(11) जैसे फ़िरऔन की क़ौम और उनसे पहले वालों की रीति थी। उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के कारण उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

(12) उन लोगों से कह दो जिन्होंने इनकार किया, "तुम अवश्य पराजित किये जाओगे और जहन्नम की ओर एकत्र किये जाओगे। और वह विश्राम-स्थल बहुत बुरा है।"

(13) तुम्हारे लिए एक निशानी हो चुकी है उन दो गिरोहों में जो आपस में भिड़े, एक अल्लाह के मार्ग में लड़नेवाला और दूसरा इनकार करनेवालों का। उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि वे अपनी संख्या से दुगुने हैं। किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है, सहायता प्रदान करता है। निश्चय ही इसमें दूरदर्शिता रखनेवालों के लिए बड़ी शिक्षा है।

(14) लोगों के लिए सुन्दर है वह चीज़ जिससे वे प्रेम करते हैं - स्त्रियाँ और बेटे, ढेर सारा सोना और चाँदी, बढ़िया घोड़े, गाय और जोती हुई ज़मीन। यही सांसारिक जीवन का आनन्द है, किन्तु अल्लाह के पास इसका अच्छा प्रतिफल है।

(15) कह दो, "क्या मैं तुम्हें इससे भी अच्छी बात बताऊँ? जो लोग अल्लाह से डरते हैं, उनके लिए उनके रब के निकट ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे, और पवित्र पत्नियाँ और अल्लाह की ओर से स्वीकृति।" अल्लाह अपने बन्दों को देखनेवाला है।

(16) जो कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए। अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमें आग की यातना से बचा ले।"

(17) धैर्य रखनेवाले, सत्यनिष्ठ, आज्ञाकारी, ख़र्च करनेवाले और सूर्योदय से पहले क्षमा मांगनेवाले।

(18) अल्लाह गवाही देता है कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, और फ़रिश्ते और ज्ञान वाले भी गवाही देते हैं। वह न्याय के साथ सृष्टि को चला रहा है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(19) निस्संदेह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम है। और जिन लोगों को किताब दी गई, उन्होंने ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात ही आपस में ईर्ष्या के कारण मतभेद किया। और जो व्यक्ति अल्लाह की आयतों को झुठलाए, तो निश्चय ही अल्लाह शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है।

(20) फिर यदि वे तुमसे झगड़ें तो कह दो, "मैंने भी अल्लाह के आगे समर्पण कर दिया है और मेरे अनुयायी भी।" और उन लोगों से कह दो जिन्हें किताब दी गई और उन लोगों से भी जो अज्ञानी थे, "क्या तुमने भी समर्पण कर दिया है?" यदि वे समर्पण कर दें तो वे सीधे मार्ग पर हैं। फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो तुम पर तो बस चेतावनी देने का दायित्व है। अल्लाह अपने बन्दों को देखनेवाला है।

(21) जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं और नबियों को अधर्म से मारते हैं और लोगों में से न्याय करनेवालों को क़त्ल करते हैं, उन्हें दुखद यातना की ख़बर दे दो।

(22) यही वे लोग हैं जिनके कर्म संसार और आख़िरत में अकारथ हो गये और उनका कोई सहायक नहीं।

(23) क्या तुम उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच फ़ैसला कर दे, फिर उनमें से एक गिरोह मुँह फेर लेता है और इनकार करता है।

(24) यह इसलिए कि वे कहते हैं कि "हमको आग नहीं छूएगी, परन्तु थोड़े ही दिन।" और वे अपने धर्म में उन बातों के कारण धोखे में पड़ गए जो वे घड़ रहे थे।

(25) फिर क्या होगा जब हम उन्हें एक ऐसे दिन के लिए इकट्ठा करेंगे जिसमें कोई संदेह नहीं और प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उनपर कोई अत्याचार न किया जाएगा?

(26) कह दो, "ऐ अल्लाह! राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहता है राज्य प्रदान करता है और जिससे चाहता है राज्य छीन लेता है। तू जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है नम्र बनाता है। तेरे हाथ में भलाई है। निस्संदेह, तू हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(27) तू ही रात को दिन में लाता है, और दिन को रात में लाता है; तू ही जीवित को मरे हुओं में से निकालता है, और तू ही मरे हुओं को जीवित में से निकालता है। और तू जिसे चाहता है, बिना हिसाब के उसे भोजन देता है।”

(28) ईमानवालों को चाहिए कि वे ईमानवालों से बढ़कर काफ़िरों को अपना मित्र न बनाएँ। और जो कोई ऐसा करे, अल्लाह के पास उसका कुछ नहीं, सिवाय इसके कि वह उनसे सावधानी से बचने की कोशिश करे। और अल्लाह तुम्हें अपने विषय में सचेत करता है, और अल्लाह ही की ओर जाना है।

(29) कह दो, "तुम अपने दिलों में जो कुछ है उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।"

(30) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों को अपने सामने उपस्थित पायेगा और अपने बुरे कर्मों को अपने सामने पायेगा, तो वह चाहेगा कि काश उसके और उस बुरे कर्मों के बीच कोई दूरी होती। अल्लाह तुम्हें अपने विषय में सचेत करता है और अल्लाह अपने बन्दों के प्रति दयावान है।

(31) कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरे पीछे आओ। अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(32) कह दो, "अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो।" फिर यदि वे मुँह मोड़ लें, तो निश्चय ही अल्लाह इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(33) निस्संदेह अल्लाह ने आदम और नूह को और इबराहीम के घराने और इमरान के घराने को सारे संसारों पर चुन लिया।

(34) कुछ लोग एक दूसरे से संतान पैदा करते हैं, अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(35) याद करो जब इमरान की पत्नी ने कहा कि मेरे पालनहार! मैंने अपनी कोख में जो कुछ है, उसे तेरे लिए समर्पित कर दिया है। अतः तू इसे मुझसे स्वीकार कर ले। निस्संदेह तू ही सुननेवाला, जाननेवाला है।

(36) फिर जब उसने उसे जन्म दिया तो बोली, "ऐ मेरे रब! मैंने एक लड़की को जन्म दिया है।" और जो कुछ उसने जन्म दिया, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता था। और नर मादा जैसा नहीं होता। "और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसके लिए और उसकी सन्तान के लिए निकाले हुए शैतान से तेरी शरण माँगती हूँ।"

(37) अतः उसके रब ने उसे स्वीकार कर लिया और उसे अच्छे ढंग से बड़ा किया और उसे ज़करियाह के अधीन कर दिया। जब भी ज़करियाह उसके पास नमाज़ के कमरे में आता तो उसके पास रोज़ी पाता। उसने कहा, "ऐ मरियम! यह तुम्हारे पास कहाँ से आया है?" उसने कहा, "यह अल्लाह की ओर से है। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बिना हिसाब के रोज़ी देता है।"

(38) इस पर ज़करियाह ने अपने रब को पुकारा और कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से एक अच्छी संतान प्रदान कर। निस्संदेह, तू ही प्रार्थना का सुननेवाला है।"

(39) अतः फ़रिश्तों ने उसे पुकारा, जबकि वह कमरे में नमाज़ पढ़ रहा था, "अल्लाह तुम्हें यूहन्ना की शुभ सूचना देता है, जो अल्लाह की ओर से आए हुए वचन की पुष्टि करनेवाला, आदरणीय, परहेज़गार और नेक लोगों में से एक नबी है।"

(40) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मैं कैसे लड़का पैदा कर सकता हूँ, जबकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है?" उसने कहा, "वह अल्लाह है, वह जो चाहता है, करता है।"

(41) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी बना दे।" उसने कहा, "तेरी निशानी यह है कि तू तीन दिन तक लोगों से इशारे के बिना बात न करेगा। और अपने रब को खूब याद कर और शाम और सुबह में उसकी तसबीह किया कर।"

(42) और याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया है और तुम्हें पवित्र बनाया है और तुम्हें सारे संसार की स्त्रियों पर चुना है।

(43) ऐ मरयम! अपने रब की आज्ञा मानो और सजदा करो और रुकूआनेवालों के साथ रुकूआ करो।

(44) यह उस ग़ैब की ख़बर से है जो हम तुम्हारी ओर वह़्यी करते हैं। और तुम उनके साथ नहीं थे जब उन्होंने अपने-अपने क़लम चलाये कि उनमें से मरियम के मामले में कौन ज़िम्मेदार होगा और न तुम उनके साथ थे जब उन्होंने झगड़ा किया।

(45) याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरयम! अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से एक बात की शुभ सूचना देता है, जिसका नाम मरयम का बेटा मसीह ईसा होगा, जो दुनिया और आख़िरत में प्रतिष्ठित होगा और अल्लाह के समीप पहुँचाए जानेवालों में से होगा।

(46) वह पालने में और परिपक्वता में लोगों से बात करेगा और धर्मी लोगों में से होगा।

(47) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मैं कैसे संतान उत्पन्न करूँगी, जबकि मुझे किसी पुरुष ने छुआ ही नहीं?" (फ़रिश्ते ने) कहा, "वह अल्लाह है, जो चाहता है पैदा करता है। जब वह कोई काम तय करता है तो उससे बस इतना ही कहता है, 'हो जा', तो वह हो जाता है।

(48) और वह उसे लेखन और ज्ञान और तौरात और इंजील सिखाएगा

(49) और उसे इसराइल की सन्तान के पास एक रसूल बनाओ, जो कहेगा, "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी जैसी आकृति बनाता हूँ। फिर उसमें फूंकता हूँ, तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जाती है। मैं अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ और मुर्दों को जिलाता हूँ - अल्लाह की अनुमति से। और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या रखते हो। इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, यदि तुम ईमानवाले हो।

(50) और मैं तौरात की पुष्टि करने आया हूँ जो मुझसे पहले आ चुकी है और जो कुछ तुमपर हराम किया गया था उसमें से कुछ तुम्हारे लिए हलाल कर दूँगा। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ। अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(51) निस्संदेह अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है। अतः उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।

(52) फिर जब ईसा को लगा कि वे उसे नकार देंगे तो उसने कहा, "अल्लाह के मार्ग में मेरे सहायक कौन हैं?" शिष्यों ने कहा, "हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाही देते हैं कि हम मुसलमान हैं।

(53) ऐ हमारे रब! जो कुछ तूने अवतरित किया, हम उसपर ईमान लाए और रसूल का अनुसरण किया। अतः हमें भी गवाहों में शामिल कर ले।

(54) और उन्होंने योजना बनाई, किन्तु अल्लाह ने योजना बनाई, और अल्लाह सर्वोत्तम योजना बनानेवाला है।

(55) याद करो जब अल्लाह ने कहा कि ऐ ईसा! मैं तुम्हें ले जाऊँगा और अपनी ओर उठाऊँगा और तुम्हें इनकार करनेवालों से शुद्ध करूँगा और जो लोग तुम्हारे अनुयायी होंगे उन्हें कयामत के दिन तक इनकार करनेवालों पर वरीयता प्रदान करूँगा। फिर तुम्हें मेरी ओर लौटना है और मैं तुम्हारे बीच उस बात का फ़ैसला कर दूँगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो।

(56) और जिन लोगों ने इनकार किया, मैं उन्हें संसार और आख़िरत में कठोर यातना दूँगा और उनका कोई सहायक न होगा।

(57) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, अल्लाह उन्हें उनका पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता।

(58) यही वह है जो हम तुम्हारे समक्ष अपनी आयतें और स्पष्ट संदेश सुनाते हैं।

(59) निस्संदेह ईसा की मिसाल अल्लाह के निकट आदम जैसी है। उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर उससे कहा, "हो जा।" तो वह हो गया।

(60) सत्य तुम्हारे रब की ओर से है। अतः तुम संदेह करनेवालों में न हो जाओ।

(61) फिर जो कोई इस विषय में तुमसे झगड़ने लगे, इसके पश्चात कि ज्ञान तुम्हारे पास आ चुका है, तो कह दो कि आओ, हम अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी स्त्रियों को और तुम्हारी स्त्रियों को, अपने आपको और अपने आपको बुलाएँ, फिर तुम सब मिल कर दुआ करो और झूठ बोलनेवालों पर अल्लाह की लानत भेजो।

(62) निस्संदेह यही सच्ची कथा है और अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(63) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को भली-भाँति जानता है।

(64) कह दो, "ऐ किताबवालो! हमारे और तुम्हारे बीच न्यायसंगत बात पर आओ कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करेंगे, न उसके साथ किसी को साझी ठहराएँगे और न अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब ठहराएँगे।" फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "गवाह रहो कि हम आज्ञाकारी हैं।"

(65) ऐ किताबवालो! तुम इबराहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो, जबकि तौरात और इंजील उसके पश्चात ही अवतरित हुई? फिर क्या तुम तर्क नहीं करते?

(66) और तुम वही लोग हो जो उस विषय में झगड़ते हो जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान है, फिर तुम उस विषय में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं? अल्लाह तो जानता है, परन्तु तुम नहीं जानते।

(67) इबराहीम न तो यहूदी था और न ईसाई, बल्कि वह एक सच्चा, मुसलमान (अल्लाह का आज्ञाकारी) व्यक्ति था और वह मुश्रिकों में से न था।

(68) निश्चय ही इबराहीम के सबसे अधिक योग्य लोग वे हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया और यह नबी और वे लोग जो ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का मित्र है।

(69) किताबवालों में से एक गिरोह चाहता है कि वह तुम्हें गुमराह कर दे, किन्तु वे स्वयं अपने आप ही गुमराह करते हैं और उन्हें इसका एहसास भी नहीं होता।

(70) ऐ किताबवालो! तुम अल्लाह की आयतों को क्यों झुठलाते हो, जबकि तुम स्वयं उनकी सच्चाई पर गवाह हो?

(71) ऐ किताबवालो! तुम सत्य को असत्य में क्यों मिलाते हो और सत्य को क्यों छिपाते हो, जबकि तुम उसे जानते हो?

(72) और किताबवालों में से एक गिरोह कहता है कि जो कुछ ईमानवालों पर दिन के आरम्भ में अवतरित हुआ, उसपर ईमान लाओ और उसके अन्त में उसका इन्कार करो, शायद वे फिर कुफ़्र की ओर लौट जाएँ।

(73) और उनपर भरोसा न करो, परन्तु उनपर जो तुम्हारे धर्म पर चले।" कह दो, "मार्ग तो अल्लाह का मार्ग है। क्या तुम डरते हो कि जैसे तुम्हें दिया गया है, वैसा ही किसी को दे दिया जाए या वे तुम्हारे रब के सामने तुमसे झगड़ने लगें?" कह दो, "सच्ची कृपा अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है प्रदान करता है। अल्लाह सर्वव्यापक, तत्वदर्शी है।"

(74) वह जिसे चाहता है अपनी दया के लिए चुन लेता है और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(75) और किताबवालों में से कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसे बहुत सारा माल सौंप दो तो वह उसे तुम्हें लौटा देगा। और उनमें से कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसे एक सिक्का सौंप दो तो वह उसे तुम्हें नहीं लौटाएगा, जब तक कि तुम उसके सामने खड़े न रहो। यह इसलिए कि वे कहते हैं, "अज्ञानियों के मामले में हम पर कोई गुनाह नहीं।" और वे अल्लाह पर झूठ बोलते हैं, हालाँकि वे जानते हैं।

(76) किन्तु जो व्यक्ति अपना वचन पूरा करे और अल्लाह से डरे, तो अल्लाह भी डर रखनेवालों को प्रिय है।

(77) निस्संदेह जिन लोगों ने अल्लाह के वचन और अपनी क़समों को थोड़े से मूल्य में बदल दिया, उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा और क़ियामत के दिन अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और न उनकी ओर देखेगा और न उन्हें शुद्ध करेगा। उनके लिए दुखद यातना है।

(78) और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी ज़बानों से किताब में फेरबदल करते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब में से है, जबकि वह किताब में से नहीं है। और वे कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है," हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं है। और वे अल्लाह पर झूठ बोलते हैं, हालाँकि वे जानते हैं।

(79) यह किसी मनुष्य के लिए नहीं कि अल्लाह उसे किताब और अधिकार और नबूवत प्रदान करे, फिर वह लोगों से कहे कि "अल्लाह के बजाय मेरे ही बन्दे बन जाओ।" बल्कि वह कहे कि "तुमने जो किताब सिखाई है और जो पढ़ा है, उसके कारण प्रभु के पवित्र विद्वान बनो।"

(80) और न वह तुम्हें आदेश देता कि फ़रिश्तों और नबियों को अपना पालनहार बनाओ। क्या वह तुम्हें इसके पश्चात कुफ़्र का आदेश देता कि तुम ईमान ला चुके हो।

(81) और याद करो जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और तत्वदर्शिता से देता हूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो उसकी पुष्टि करे जो तुम्हारे पास है, तो तुम उस पर ईमान लाओ और उसका साथ दो। तब अल्लाह ने कहा कि क्या तुमने मेरा वचन स्वीकार कर लिया है? उन्होंने कहा कि हमने उसे स्वीकार कर लिया है। उसने कहा कि तो तुम गवाही दो। मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।

(82) फिर जो इसके पश्चात् भी मुँह फेरे, तो वही लोग बड़े अवज्ञाकारी हैं।

(83) तो क्या वे अल्लाह के धर्म के अतिरिक्त कुछ और चाहते हैं? हालाँकि आकाशों और धरती में जितने लोग हैं, वे सब उसी की आज्ञा पालन कर चुके हैं, चाहे स्वेच्छा से या विवश होकर। और उसी की ओर वे लौटकर जानेवाले हैं।

(84) कह दो, "हम अल्लाह पर ईमान लाए और जो कुछ हमारी ओर अवतरित हुआ उसपर और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याकूब और उनकी सन्तान पर अवतरित हुआ और जो कुछ मूसा और ईसा को और नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान किया गया उसपर भी। हम उनमें से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।"

(85) और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को चाहेगा, तो उससे वह कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह आख़िरत में घाटे में पड़ने वालों में से होगा।

(86) अल्लाह उन लोगों को कैसे मार्ग दिखाएगा जिन्होंने अपने ईमान के पश्चात इनकार कर दिया, जबकि वे देख चुके थे कि रसूल सच्चा है और उनके पास स्पष्ट निशानियाँ आ चुकी हैं? अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(87) ऐसे लोगों का बदला यह है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और लोगों की लानत है।

(88) वे उसी में सदैव रहेंगे, उनसे न यातना हल्की की जाएगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी।

(89) परन्तु जो लोग इसके पश्चात् तौबा कर लें और सुधार कर लें, निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(90) निस्संदेह जिन लोगों ने ईमान लाने के पश्चात इनकार किया, फिर कुफ़्र में वृद्धि करते गए, उनकी तौबा कदापि स्वीकार नहीं की जायेगी। वही लोग भटके हुए हैं।

(91) जो लोग इनकार कर गए और इनकार ही की दशा में मर गए, उनमें से किसी से धरती का पूरा सोना भी स्वीकार नहीं किया जाएगा, यदि वह उससे अपना प्रायश्चित करना चाहे। ऐसे लोगों के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक नहीं होगा।

(92) तुम कदापि धर्म-सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकोगे, जब तक कि तुम अपनी प्रिय वस्तुएँ ख़र्च न करो। और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

(93) इसराइल की संतान के लिए हर प्रकार का भोजन हलाल था, सिवाय उस चीज़ के जिसे इसराइल ने तौरात के अवतरित होने से पहले अपने लिए हराम कर लिया था। कह दो, "तो अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसे पढ़ो।"

(94) फिर जो कोई इसके पश्चात् अल्लाह पर झूठ घड़ ले, तो वही लोग अत्याचारी हैं।

(95) कह दो, "अल्लाह ने सत्य कहा है। अतः तुम इबराहीम के धर्म का अनुसरण करो, जो सत्य की ओर झुका हुआ था। वह मुश्रिकों में से न था।"

(96) निस्संदेह लोगों के लिए जो पहला घर स्थापित किया गया वह मक्का में है, जो बरकतवाला और समस्त संसार के लिए मार्गदर्शन है।

(97) उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, जैसे इबराहीम का खड़ा होना। और जो कोई उसमें प्रवेश करेगा, वह सुरक्षित रहेगा। और लोगों की ओर से अल्लाह के लिए घर की ओर हज करना अनिवार्य है, जो कोई वहाँ तक पहुँचने का मार्ग खोज ले। और जो कोई इनकार करे, तो अल्लाह संसार से निरपेक्ष है।

(98) कह दो, "ऐ किताबवालो! तुम अल्लाह की आयतों को क्यों झुठलाते हो? हालाँकि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसपर साक्षी है।"

(99) कह दो, "ऐ किताबवालो! तुम ईमानवालों को अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो, और उसमें कुटिलता चाहते हो, जबकि तुम स्वयं गवाह हो? और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं है।"

(100) ऐ ईमान लाने वालों! यदि तुम उन लोगों में से किसी गिरोह की बात मानोगे जिन्हें किताब दी गई थी, तो वे तुम्हारे ईमान के पश्चात तुम्हें फिर से इनकार करने पर मजबूर कर देंगे।

(101) और तुम कैसे इनकार कर सकते हो, जबकि अल्लाह की आयतें तुम्हारे पास पढ़ी जा रही हैं और तुम्हारे बीच उसका रसूल भी मौजूद है। और जो व्यक्ति अल्लाह को मज़बूती से थामे रहा, वह सीधे मार्ग पर चला गया।

(102) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए और अल्लाह के आज्ञाकारी होकर ही मरो।

(103) और सब लोग अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो और आपस में फूट न डालो। और अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो तुम पर हुई। जब तुम दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों को मिला दिया और तुम उसके फ़ज़ल से भाई-भाई हो गए। और तुम आग के गड्ढे के किनारे पर थे, तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम राह पाओ।

(104) और तुम्हारे बीच से एक समुदाय निकले जो भलाई की ओर बुलाए, भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके। वही लोग सफल होंगे।

(105) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो स्पष्ट प्रमाणों के आ जाने के पश्चात भी विभेद करते रहे, और उनके लिए बड़ी यातना है।

(106) जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद हो जायेंगे और कुछ चेहरे काले हो जायेंगे। फिर जिन लोगों के चेहरे काले हो जायेंगे, उनसे कहा जायेगा, "क्या तुम अपने ईमान के पश्चात कुफ़्र करते रहे? तो अब उस कुफ़्र के कारण यातना चखो जो तुम करते रहे।"

(107) किन्तु जिन लोगों के चेहरे सफेद हो गए, वे अल्लाह की दया से युक्त हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(108) ये अल्लाह की आयतें हैं, हम इन्हें तुम्हारे सामने सत्य-सत्य सुनाते हैं, और अल्लाह संसार पर कोई अन्याय नहीं चाहता।

(109) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और अल्लाह ही की ओर सब कुछ लौटकर आता है।

(110) तुम लोगों के लिए सर्वोत्तम समुदाय हो। तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो। यदि किताबवाले ईमान लाते तो उनके लिए अच्छा होता। उनमें से कुछ लोग ईमानवाले भी हैं, किन्तु उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

(111) वे तुम्हें कुछ कष्ट पहुँचाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं पहुँचा सकते। और यदि वे तुमसे लड़ें तो तुम्हें पीठ दिखा देंगे, फिर उनकी सहायता न की जाएगी।

(112) वे जहाँ कहीं भी पहुँचे अपमानित किये गये, सिवाय अल्लाह की ओर से एक रस्सी और लोगों की ओर से एक रस्सी के। और उन्होंने अल्लाह की ओर से अपने ऊपर क्रोध उत्पन्न किया और वे दरिद्रता में पड़ गये। यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया और नबियों को अकारण क़त्ल किया। यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और अवज्ञाकारी रहे।

(113) वे सब एक समान नहीं हैं, बल्कि किताबवालों में एक समुदाय ऐसा भी है जो रात के समय खड़े होकर अल्लाह की आयतें पढ़ता है और सजदा करता है।

(114) वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए और भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं और भलाई के लिए तत्पर रहते हैं। और यही लोग नेक लोगों में से हैं।

(115) और जो भलाई वे करेंगे, वह उनसे कदापि नहीं छीनी जाएगी, अल्लाह डर रखनेवालों को भली-भाँति जाननेवाला है।

(116) निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया, न तो उनका माल और न उनकी सन्तान अल्लाह के मुक़ाबले में उनके काम आ सकेगी, और वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे उसी में सदैव रहेंगे।

(117) जो कुछ वे सांसारिक जीवन में खर्च करते हैं, उसकी मिसाल उस पाले वाली हवा के समान है जो उन लोगों की फसल पर वार करती है जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया हो, और उसे नष्ट कर देती है। अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, बल्कि वे अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।

(118) ऐ ईमान लाने वालों! अपने सिवा किसी को अपना मित्र न बनाओ। वे तुम्हें किसी भी प्रकार की हानि से नहीं बचाएँगे। वे चाहते हैं कि तुम पर कोई मुसीबत आए। उनके मुँह से तो घृणा निकल चुकी है, किन्तु जो कुछ उनके दिलों में छिपा है, वह उससे कहीं अधिक है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ स्पष्ट कर दी हैं।

(119) देखो, तुम उनसे प्रेम करते हो, किन्तु वे तुमसे प्रेम नहीं करते, और तुम किताब पर ईमान रखते हो, पूरी किताब पर। और जब वे तुमसे मिलते हैं, तो कहते हैं, "हम ईमान लाए हैं।" फिर जब अकेले होते हैं, तो क्रोध में तुम पर उँगलियाँ काटते हैं। कह दो, "अपने क्रोध में मर जाओ। निस्संदेह अल्लाह सीनों के अन्दर की बात को भली-भाँति जानता है।"

(120) यदि कोई भलाई तुम्हें छूती है तो वे दुःखी हो जाते हैं और यदि कोई हानि तुम्हें पहुँचती है तो वे प्रसन्न हो जाते हैं। किन्तु यदि तुम धैर्य रखो और अल्लाह से डरते रहो तो उनकी चाल तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकेगी। निस्संदेह अल्लाह उनकी करनी को घेरे हुए है।

(121) और (याद करो ऐ नबी!) जब तुम सुबह अपने घरवालों से विदा हुए ताकि ईमानवालों को युद्ध के लिए उनके ठिकानों पर भेज दो। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(122) जबकि तुममें से दो गिरोह हिम्मत हार बैठे, किन्तु अल्लाह उनका सहयोगी था। अतः ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

(123) और अल्लाह ने तुम्हें बद्र में विजय प्रदान की, जबकि तुम संख्या में कम थे। अतः अल्लाह से डरते रहो, संभवतः तुम कृतज्ञता दिखाओगे।

(124) याद करो जब तुमने ईमानवालों से कहा था कि क्या तुम्हारे लिए यह पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्तों को भेजकर तुम्हारी सहायता करे?

(125) यदि तुम धैर्य रखो और अल्लाह का भय मानो, और शत्रु क्रोध में तुम पर आक्रमण करे, तो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए पाँच हज़ार चिन्ह वाले फ़रिश्तों को भेज देगा।

(126) अल्लाह ने इसे तुम्हारे लिए केवल शुभ सूचना बना दिया है और ताकि इसके द्वारा तुम्हारे दिलों को शांति मिले। और सफलता केवल अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(127) ताकि वह इनकार करनेवालों में से एक गिरोह को काट डाले या उन्हें दबा दे, फिर वे निराश होकर लौट जाएँ।

(128) यह निर्णय तुम्हारे लिए नहीं है कि वह उन्हें मार डाले या क्षमा कर दे या दण्ड दे। निस्संदेह वे अत्याचारी हैं।

(129) और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है दण्ड देता है। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(130) ऐ ईमान वालो! ब्याज को दोगुना करके न खाओ, बल्कि अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।

(131) और उस आग से डरो, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गयी है।

(132) और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो, ताकि तुमपर दया की जाए।

(133) और अपने रब की ओर से क्षमा की ओर जल्दी करो और एक जन्नत की ओर जो आकाश और धरती जितनी बड़ी है, जो डर रखने वालों के लिए तैयार की गई है।

(134) जो सुख-दुःख में ख़र्च करते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं। अल्लाह अच्छे कर्म करनेवालों को प्रिय है।

(135) और जो लोग जब कोई व्यभिचार करते हैं या अपने ऊपर कोई अत्याचार करते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं। अल्लाह के सिवा कौन पापों को क्षमा कर सकता है? और जो कुछ उन्होंने किया है, उस पर वे जानते हुए भी अड़े नहीं रहते।

(136) उन्हीं लोगों के लिए उनके पालनहार की ओर से क्षमा और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे और अच्छा है अच्छे कर्म करनेवालों का बदला।

(137) ऐसी ही परिस्थितियाँ तुमसे पहले भी हो चुकी हैं। अतः तुम धरती में घूमो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा हुआ।

(138) यह क़ुरआन लोगों के लिए स्पष्ट कथन है और अल्लाह का भय माननेवालों के लिए मार्गदर्शन एवं शिक्षा है।

(139) अतः तुम निर्बल न हो जाओ और शोकाकुल न हो। यदि तुम ईमानवाले हो तो तुम ही श्रेष्ठ हो।

(140) यदि तुम्हें कोई घाव लग भी जाए तो जैसा घाव तो लोगों को लग ही चुका है। और हम इन दिनों में लोगों के बीच अदल-बदल करते रहते हैं, ताकि अल्लाह ईमानवालों को प्रत्यक्ष कर दे और तुममें से शहीदों को अपने लिए बना ले। और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता।

(141) और ताकि अल्लाह ईमानवालों को पवित्र करे और इनकार करनेवालों को विनष्ट कर दे।

(142) क्या तुम समझते हो कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी तक तुममें से युद्ध करनेवालों को प्रत्यक्ष नहीं किया है और न ही धैर्य रखनेवालों को प्रत्यक्ष किया है?

(143) और तुमने शहादत की कामना की थी, इससे पहले कि तुम उससे सामना करते, और तुमने उसे देख लिया, जबकि तुम देखते ही रह गये।

(144) मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं, उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, तो अगर वह मर जाएँ या मारे जाएँ तो क्या तुम अपनी एड़ियाँ उलट देते? और जो अपनी एड़ियाँ उलट देता है, वह अल्लाह को कुछ नहीं पहुँचा सकता, बल्कि अल्लाह कृतज्ञता दिखानेवालों को बदला देता है।

(145) और किसी की मृत्यु अल्लाह की अनुमति के बिना नहीं हो सकती, और वह किसी निश्चित आदेश के अनुसार मर सकता है। और जो व्यक्ति संसार का प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उसमें से प्रदान करेंगे और जो व्यक्ति आख़िरत का प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उसमें से प्रदान करेंगे। और हम कृतज्ञता दिखाने वालों को प्रतिफल प्रदान करेंगे।

(146) और कितने ही नबी हुए और उनके साथ बहुत से धर्मगुरुओं ने भी युद्ध किया, किन्तु वे अल्लाह के मार्ग में जो कुछ उन्हें कष्ट पहुँचा, उससे कभी हिम्मत नहीं हारे और न वे कमज़ोर पड़े और न झुके। और अल्लाह धैर्यवानों को प्रिय है।

(147) और उनकी बातें तो बस इतनी ही थीं कि वे कहते थे कि "ऐ हमारे रब! हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमारे मामलों में जो कुछ ग़लत हुआ है उसे क्षमा कर दे और हमारे क़दम जमा दे और इनकार करनेवालों पर हमें विजय प्रदान कर।"

(148) अतः अल्लाह ने उन्हें संसार का बदला भी प्रदान किया और आख़िरत का भी अच्छा बदला प्रदान किया। और अल्लाह नेक लोगों को प्रिय है।

(149) ऐ ईमान लाने वालों! यदि तुम इनकार करनेवालों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उलटे पाँव लौटा देंगे और तुम घाटे में रहोगे।

(150) निस्संदेह अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक है और वही सर्वोत्तम सहायक है।

(151) और हम इनकार करनेवालों के दिलों में उस चीज़ के कारण भय भर देंगे, जिसका उन्होंने अल्लाह के साथ साझीदार ठहराया है, जिसका अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। और उनका ठिकाना आग है और अत्याचारियों का ठिकाना बहुत बुरा है।

(152) और अल्लाह ने अपना वादा तुमसे पूरा किया था, जबकि तुम उसकी अनुमति से उनको मार रहे थे। यहाँ तक कि जब तुमने हिम्मत खो दी और आदेश के बारे में विवाद करने लगे और अवज्ञा की, इसके बाद कि उसने तुम्हें वह दिखा दिया था जिसे तुम पसन्द करते हो। तुममें से कुछ लोग संसार चाहते हैं और कुछ लोग आख़िरत चाहते हैं। फिर उसने तुम्हें उनसे दूर कर दिया, ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले। और उसने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह ईमानवालों के लिए फ़ायदा देने वाला है।

(153) याद करो जब तुम भाग रहे थे और किसी की ओर देखे बिना चढ़ रहे थे, जबकि रसूल तुम्हें पीछे से बुला रहा था। तो अल्लाह ने तुमपर मुसीबत पर मुसीबतें बरसाईं, ताकि तुम उस पर शोक न करो जो तुमसे छूट गई और जो तुमपर आ पड़ी। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(154) फिर संकट के पश्चात उसने तुमपर तंद्रा के रूप में निश्चिंतता उतारी। उसने तुम्हारे एक गिरोह को काबू में कर लिया, जबकि दूसरे गिरोह ने अपने-अपने मन में चिंताग्रस्त होकर अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ सोचा, अज्ञानता का विचार किया, और कहा, "क्या इस मामले में हमारे लिए कुछ करना शेष है?" कह दो, "यह मामला तो अल्लाह के अधिकार में है।" वे अपने मन में ऐसी बातें छिपाते हैं, जो वे तुम्हारे सामने प्रकट नहीं करेंगे। वे कहते हैं, "यदि हम इस मामले में कुछ कर सकते होते, तो हममें से कुछ लोग यहीं मारे न जाते।" कह दो, "यदि तुम अपने घरों के भीतर भी होते, तो भी मारे जाने वाले लोग अपनी मृत्युशैया पर निकल आते।" ताकि अल्लाह तुम्हारे सीने में जो कुछ है, उसे परख ले और तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह सीने में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है।

(155) निश्चय ही तुममें से जो लोग उस दिन पीछे हट गए जिस दिन दोनों सेनाओं का आमना-सामना हुआ, तो शैतान ने ही उन्हें पीछे हटा दिया, क्योंकि वे कुछ पाप कर बैठे थे। किन्तु अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया है। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, सहनशील है।

(156) ऐ ईमान लाने वालों! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इनकार किया और अपने भाइयों के बारे में, जब वे धरती में यात्रा करते या युद्ध करने निकलते, कहते थे कि यदि वे हमारे साथ होते तो न मरते और न मारे जाते। अतः अल्लाह उनके दिलों में इस बात को अफसोस का कारण बना देता है। और अल्लाह ही जीवन देने वाला और मारने वाला है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

(157) और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की क्षमा और दया उससे कहीं उत्तम है जो कुछ वे इकट्ठा करते हैं।

(158) और चाहे तुम मर जाओ या मारे जाओ, अल्लाह की ओर एकत्र किये जाओगे।

(159) अतः अल्लाह की दया से तुमने उनके साथ नरमी बरती। यदि तुम कठोर होते और कठोर हृदय वाले होते तो वे तुम्हारे आस-पास से चले जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो और उनसे सलाह मशविरा करो। फिर जब तुम निर्णय कर लो तो अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा करनेवालों को प्रिय है।

(160) यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो कोई तुमपर विजय नहीं पा सकेगा, किन्तु यदि वह तुम्हें छोड़ दे तो उसके पश्चात कौन है जो तुम्हारी सहायता कर सके? ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

(161) किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि वह विश्वासघात करे। और जो विश्वासघात करेगा, वह क़ियामत के दिन अपनी कमाई लेकर आएगा। फिर प्रत्येक प्राणी को उसके किए का पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा।

(162) तो क्या जो व्यक्ति अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में लगा हो, वह उस व्यक्ति के समान है जो अल्लाह के प्रकोप को अपने ऊपर ले आए और जिसका ठिकाना जहन्नम हो? और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(163) अल्लाह के निकट वे भिन्न-भिन्न श्रेणी के हैं और जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।

(164) निश्चय ही अल्लाह ने ईमानवालों पर बड़ा उपकार किया, जब उसने उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें अपनी आयतें पढ़कर सुनाता था, उन्हें पवित्र बनाता था और उन्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता था, यद्यपि इससे पहले वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

(165) जब तुमपर कोई विपत्ति आयी, यद्यपि तुम उससे दुगुनी विपत्ति डाल चुके थे, तो तुम कहने लगे, "यह कहाँ से आयी?" कह दो, "यह तो तुम्हारे ही कारण है।" निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(166) और जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, उस दिन जो कुछ तुमपर हुआ, वह अल्लाह की अनुमति से हुआ, ताकि वह ईमानवालों को स्पष्ट कर दे।

(167) और ताकि वह उन लोगों को स्पष्ट कर दे जो मुनाफ़िक़ हैं। उनसे कहा गया था कि आओ, अल्लाह के मार्ग में लड़ो या बचाव करो। उन्होंने कहा कि यदि हमें मालूम होता कि लड़ाई होगी तो हम तुम्हारा अनुसरण करते। वे उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र के निकट थे, क्योंकि वे अपने मुँह से ऐसी बातें कह रहे थे जो उनके दिलों में नहीं थीं। और अल्लाह उन बातों को भली-भाँति जानता है जो वे छिपाते हैं।

(168) जो लोग अपने भाइयों के विषय में बैठे हुए कहते थे कि यदि वे हमारी बात मानते तो मारे न जाते। कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को टाल लो।

(169) और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो, बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।

(170) वे उस पर प्रसन्न हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से प्रदान किया है। और वे उन लोगों के विषय में शुभ सूचना प्राप्त कर रहे हैं जो उनके पश्चात् शहीद होंगे, जो अभी तक उनके साथ नहीं आये। कि न तो उनपर कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(171) उन्हें अल्लाह की ओर से अनुग्रह और अनुग्रह की शुभ सूचना मिलती है और इस बात की भी कि अल्लाह ईमानवालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देता।

(172) जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल की पुकार स्वीकार की, इसके पश्चात कि उनपर कोई विपत्ति आई, तो उनमें से जिन लोगों ने अच्छे कर्म किए और अल्लाह से डरते रहे, उनके लिए बड़ा प्रतिफल है।

(173) जिनसे लोगों ने कहा कि "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठे हुए हैं। अतः उनसे डरो।" किन्तु इससे उनका ईमान और बढ़ गया। उन्होंने कहा कि "हमारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है और वही सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"

(174) अतः वे अल्लाह की कृपा और अनुग्रह लेकर लौटे, उन्हें कोई हानि न पहुँची और वे अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में लगे रहे, और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(175) यह तो शैतान ही है जो अपने समर्थकों से डराता है। अतः उनसे न डरो, यदि तुम ईमानवाले हो तो मुझसे ही डरो।

(176) और तुम उन लोगों से दुःखी न हो जो कुफ़्र में जल्दी कर रहे हैं। निस्संदेह वे अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह तो चाहता है कि उन्हें आख़िरत में कोई हिस्सा न दे। और उनके लिए बड़ी यातना है।

(177) निस्संदेह जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीदा है, वे अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, और उनके लिए दुखद यातना है।

(178) और जो लोग इनकार करने लगे, वे यह न समझें कि हमने उनकी अवधि बढ़ा दी है, यह उनके लिए अच्छा है। हम तो बस उनके लिए अवधि बढ़ा देते हैं, ताकि वे पाप में और अधिक बढ़ जाएँ और उनके लिए अपमानजनक यातना है।

(179) अल्लाह ईमानवालों को उस हालत में नहीं छोड़ेगा जिस हालत में तुम हो, जब तक कि वह बुराई को भलाई से अलग न कर दे। और अल्लाह तुम पर परोक्ष को प्रकट नहीं करेगा। किन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है। अतः तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ। और यदि तुम ईमान लाए और उससे डरते रहे तो तुम्हारे लिए बड़ा प्रतिफल है।

(180) और जो लोग अल्लाह ने अपनी नेमत से जो कुछ दिया है, उसे रोककर रखते हैं, वे कभी यह न समझें कि यह उनके लिए अच्छा है। बल्कि यह उनके लिए बुरा है। क़ियामत के दिन जो कुछ उन्होंने रोककर रखा है, उसी से उनकी गर्दनें बंध जाएँगी। और आकाशों और धरती का उत्तराधिकार अल्लाह ही का है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरी तरह वाकिफ़ है।

(181) अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि "अल्लाह तो निर्धन है और हम धनवान हैं।" जो कुछ उन्होंने कहा और जो कुछ उन्होंने अधर्म से नबियों को मारा, उसे भी हम लिख लेंगे और कहेंगे कि "जहन्नम की यातना का मज़ा चखो।

(182) यह तुम्हारे हाथों द्वारा किए गए कार्यों के कारण है और इसलिए भी कि अल्लाह अपने बन्दों पर कभी अत्याचार नहीं करता।

(183) वे लोग हैं जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने हमसे वादा किया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँगे जब तक कि वह हमारे लिए कोई ऐसी क़ुरबानी न लाए जिसे आग भस्म कर दे। कह दो कि मुझसे पहले भी तुम्हारे पास स्पष्ट प्रमाण लेकर रसूल आ चुके हैं और वे भी जिनका तुम वर्णन करते हो। तो यदि तुम सच्चे हो तो तुमने उन्हें क्यों मारा?

(184) फिर यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, जो स्पष्ट प्रमाणों, लिखित नियमों और प्रकाशमान किताब के साथ आये थे।

(185) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। और तुम्हें अपना पूरा बदला क़ियामत के दिन ही दिया जाएगा। अतः जो व्यक्ति आग से निकलकर जन्नत में प्रवेश पा गया, उसने अपनी इच्छा पूरी कर ली। और सांसारिक जीवन तो बस भ्रम के आनन्द के अतिरिक्त और क्या है?

(186) निश्चय ही तुम अपने मालों और अपने आप में परीक्षा में पड़ोगे। और जो लोग तुमसे पहले किताब प्राप्त कर चुके हैं और जो लोग अल्लाह का साझी ठहराते हैं, उनसे भी तुम बहुत बुरा-भला सुनोगे। किन्तु यदि तुम धैर्य रखो और अल्लाह से डरते रहो, तो यह निश्चय ही निश्चय करने योग्य बातों में से है।

(187) और याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से वचन लिया जिन्हें किताब दी गई थी कि "तुम उसे लोगों के सामने स्पष्ट कर दो और उसे छिपाओ नहीं।" किन्तु उन्होंने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसे थोड़े से मूल्य पर बदल दिया। और जो कुछ उन्होंने खरीदा वह बहुत बुरा है।

(188) और यह कदापि न समझो कि जो लोग अपने कर्मों पर प्रसन्न होते हैं और चाहते हैं कि उस कर्म पर भी प्रशंसा की जाए जो उन्होंने नहीं किया, उन्हें यातना से सुरक्षित न समझो, बल्कि उनके लिए दुखद यातना है।

(189) और अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती का साम्राज्य और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(190) निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना और रात और दिन के आने-जाने में बहुत सी निशानियाँ हैं, बुद्धि वालों के लिए।

(191) जो लोग खड़े, बैठे या करवट लेकर अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना पर विचार करते हैं, (कहते हैं) कि "हमारे पालनहार! तूने इसे अकारण नहीं पैदा किया। तू महान है। अतः हमें आग की यातना से बचा ले।

(192) ऐ हमारे पालनहार! जिस किसी को तूने आग में डाला, उसे अपमानित कर दिया और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

(193) ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की ओर बुलाते हुए सुना कि अपने रब पर ईमान लाओ, और हम ईमान ले आये। ऐ हमारे रब! अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमसे हमारे कुकर्म दूर कर दे और हमें नेक लोगों के साथ मृत्यु प्रदान कर।

(194) ऐ हमारे रब! जो वादा तूने अपने रसूलों के द्वारा हमसे किया था, वह हमें प्रदान कर और क़ियामत के दिन हमें अपमानित न कर। निस्संदेह तू अपने वादे से कभी इनकार नहीं करता।

(195) और उनके रब ने उनको उत्तर दिया कि मैं तुममें से किसी भी कामगार का काम व्यर्थ नहीं जाने दूँगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। तुम सब एक दूसरे के ही हो। अतः जो लोग हिजरत करके चले गए या अपने घरों से निकाले गए या मेरे मार्ग में उन्हें कोई कष्ट पहुँचाया गया या उन्होंने युद्ध किया या वे मारे गए, तो मैं अवश्य ही उनसे उनके कुकर्मों को दूर कर दूँगा और उन्हें अल्लाह की ओर से ऐसे बाग़ों में प्रवेश दूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और अल्लाह के पास सबसे अच्छा बदला है।

(196) तुम संसार भर में काफ़िरों की बेरोकटोक आवाजाही से धोखा न खाओ।

(197) वह तो बस एक छोटा-सा सुख है, फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह ठिकाना भी बुरा है।

(198) किन्तु जो लोग अपने रब से डरते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे, यह अल्लाह की ओर से एक सुविधा है और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह अच्छे लोगों के लिए है।

(199) और निश्चय ही किताबवालों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह पर और जो कुछ तुम्हारी ओर उतारा गया और जो कुछ उन पर उतारा गया, उसपर ईमान लाए, और अल्लाह के आज्ञाकारी बने रहे। वे अल्लाह की आयतों को थोड़े से मूल्य पर नहीं बदलते। ऐसे लोगों को अपने रब के पास अपना बदला अवश्य मिलेगा। निस्संदेह अल्लाह बहुत शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

(200) ऐ ईमान वालो! धैर्य रखो और स्थिर रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।

# सूरा 4: ٱلنِّسَاء‎ (अन-निसा') - महिलाएं

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों में से बहुत से मर्द और औरतें निकालीं। और अल्लाह से डरो, जिसके ज़रिए तुम एक दूसरे से पूछते हो और नाते-रिश्तेदारी का सम्मान करो। निस्संदेह अल्लाह तुम पर नज़र रखता है।

(2) अनाथों को उनका माल दे दो और जो अच्छा है उसके बदले में ख़राब माल न दो और उनका माल अपने माल में न मिलाओ। निस्संदेह यह बहुत बड़ा पाप है।

(3) अगर तुम्हें डर हो कि तुम अनाथों के साथ न्याय नहीं कर पाओगे, तो उन स्त्रियों से विवाह कर लो जो तुम्हें अच्छी लगें, दो, तीन या चार। और अगर तुम्हें डर हो कि तुम न्याय नहीं कर पाओगे, तो एक से विवाह कर लो या जो तुम्हारे दाहिने हाथ की हों, उनसे विवाह कर लो। यह अधिक अच्छा है, ताकि तुम अन्याय न करो।

(4) औरतों को उनका मेहर उदारता से दो, फिर अगर वे उसमें से कुछ भी तुम्हें दे दें तो उसे खुशी-खुशी और सहजता से ले लो।

(5) अपनी संपत्ति, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीविका का साधन बनाया है, कमज़ोर लोगों को न दो, बल्कि उससे उन्हें रोज़ी दो, उन्हें पहनाओ और उनसे अच्छी बातें बोलो।

(6) अनाथों को यहाँ तक परखते रहो कि वे विवाह योग्य हो जाएँ। फिर यदि तुम उनमें विवेक का भाव देखो तो उनका माल उन्हें दे दो। उनके बड़े होने की आशा में उसे जल्दी-जल्दी और अत्यधिक न खाओ। जो धनवान हो उसे चाहिए कि वह (शुल्क लेने से) परहेज़ करे और जो निर्धन हो वह अपनी इच्छानुसार ले। जब तुम उनका माल उन्हें दो तो गवाहों को बुलाओ। और हिसाब-किताब के लिए अल्लाह ही पर्याप्त है।

(7) पुरुषों के लिए माता-पिता और निकट संबंधियों द्वारा छोड़ी गई संपत्ति में से हिस्सा है, और महिलाओं के लिए माता-पिता और निकट संबंधियों द्वारा छोड़ी गई संपत्ति में से हिस्सा है, चाहे वह थोड़ा हो या अधिक - एक निर्धारित हिस्सा।

(8) जब बंटवारे के समय अन्य रिश्तेदार, अनाथ या जरूरतमंद मौजूद हों, तो उनकी ज़रूरतें पूरी करो और उनसे अच्छी बातें बोलो।

(9) वे लोग डरें, जैसे कि यदि वे अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ गए होते, तो उनके लिए डरते। अतः उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए और न्याय की बातें बोलनी चाहिए।

(10) जो लोग अनाथों का माल अन्यायपूर्वक खाते हैं, वे अपने पेटों में आग ही भरते हैं, फिर वे आग में जलाये जायेंगे।

(11) अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान के विषय में निर्देश देता है कि लड़के के लिए दो लड़कियों के बराबर हिस्सा हो। यदि केवल बेटियाँ हों, दो या अधिक, तो उनके लिए दो-तिहाई हिस्सा है और यदि केवल एक हो, तो उसके लिए आधा। माता-पिता के लिए, यदि मृतक के बच्चे हों, तो प्रत्येक को विरासत का छठा हिस्सा मिलता है। यदि मृतक के कोई संतान न हो और माता-पिता ही एकमात्र वारिस हों, तो माँ को एक तिहाई हिस्सा मिलता है। यदि मृतक के भाई-बहन हों, तो माँ को किसी वसीयत या ऋण के बाद छठा हिस्सा मिलता है। तुम नहीं जानते कि उनमें से तुम्हारे माता-पिता या तुम्हारी संतान, लाभ के मामले में तुम्हारे सबसे निकट कौन है। यह अल्लाह की ओर से एक आदेश है। निस्संदेह अल्लाह जाननेवाला, तत्वदर्शी है।

(12) यदि तुम्हारी पत्नियाँ संतानहीन हों तो जो कुछ छोड़ती हैं, उसका आधा हिस्सा तुम्हारे लिए है। यदि उनके बच्चे हों तो जो कुछ वे छोड़ती हैं, उसका चौथाई हिस्सा तुम पाओगे, चाहे कोई वसीयत हो या ऋण। यदि तुम्हारे बच्चे न हों तो जो कुछ तुम छोड़ती हो उसका चौथाई हिस्सा उन्हें मिलेगा। यदि तुम्हारे बच्चे हों तो जो कुछ तुम छोड़ती हो उसका आठवाँ हिस्सा उन्हें मिलेगा, चाहे कोई वसीयत हो या ऋण। यदि कोई पुरुष या स्त्री बिना माता-पिता या संतान के मर जाए, लेकिन उसका एक भाई या बहन हो तो प्रत्येक को छठवाँ हिस्सा मिलेगा। यदि वे दो से अधिक हों तो वे बिना किसी हानि के किसी वसीयत या ऋण के साथ एक तिहाई हिस्सा बाँटेंगे। यह अल्लाह का आदेश है। अल्लाह जाननेवाला, सहनशील है।

(13) ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं। जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, वह ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उनमें सदैव रहेगा। यही बड़ी सफलता है।

(14) जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करेगा, तो उसे अल्लाह आग में डाल देगा, तथा वह उसमें सदैव रहेगा। उसके लिए अपमानजनक यातना है।

(15) यदि तुम्हारी स्त्रियों में से कोई कोई बदचलनी करे तो अपने में से चार गवाह ले आओ, यदि वे गवाही दे दें तो उन स्त्रियों को घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि उनकी मृत्यु हो जाए या अल्लाह उनके लिए कोई दूसरा मार्ग निर्धारित कर दे।

(16) यदि तुममें से दो लोग ऐसा करें तो उन दोनों को दण्ड दो। फिर यदि वे तौबा कर लें और सुधार कर लें तो उन्हें छोड़ दो। निस्संदेह अल्लाह तौबा स्वीकार करनेवाला, दयावान है।

(17) अल्लाह के निकट तौबा तो केवल उन्हीं लोगों की स्वीकार योग्य है जो अज्ञानतावश कोई पाप कर बैठें, फिर शीघ्र ही तौबा कर लें। यही वे लोग हैं जिनकी तौबा अल्लाह तौबा स्वीकार करेगा। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(18) किन्तु जो लोग बुरे कर्म करते रहते हैं, उनकी तौबा स्वीकार नहीं की जाती, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आ जाती है, तो वह कहता है कि अब मैं तौबा करता हूँ। और न वे लोग जो इस दशा में मरें कि वे काफ़िर ही हों। उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(19) ऐ ईमान वालो! स्त्रियों को उनकी इच्छा के विरुद्ध उत्तराधिकारी बनाना तुम्हारे लिए वैध नहीं है। उन्हें कष्ट न दो ताकि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है उसमें से कुछ ले लो, जब तक कि वे कोई स्पष्ट व्यभिचार न कर बैठें। उनके साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि तुम उनसे घृणा करते हो तो सम्भव है कि तुम उस चीज़ से घृणा करते हो जिसमें अल्लाह ने बहुत अच्छाई रखी है।

(20) यदि तुम एक पत्नी के बदले दूसरी पत्नी रखना चाहो और उनमें से किसी को बहुत अधिक दे दो, तो उसमें से कुछ मत लो। क्या तुम उसे अन्याय और स्पष्ट पाप समझोगे?

(21) तुम इसे कैसे ले सकते हो, जबकि तुम एक दूसरे में समा चुके हो और उन्होंने तुमसे एक गंभीर वचन ले लिया है?

(22) और तुम उनसे विवाह न करो जिनसे तुम्हारे पिता विवाह कर चुके हों, परन्तु जो पहले हो चुका हो, वह तो व्यभिचार है, घृणित है और बुरी रीति है।

(23) तुमपर हराम कर दी गयी हैं तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी खालाएँ, तुम्हारी खालाएँ, तुम्हारे भाई की बेटियाँ, तुम्हारी बहन की बेटियाँ, तुम्हारी दूध पिलानेवाली माताएँ, तुम्हारी दूध पिलानेवाली बहनें, तुम्हारी पत्नियों की माताएँ, तुम्हारी सौतेली बेटियाँ जो तुम्हारी पत्नियों से पैदा हुई हों, जिनसे तुमने विवाह कर लिया है - और यदि तुमने विवाह नहीं किया है, तो तुमपर कोई पाप नहीं - और तुम्हारे बेटों की पत्नियाँ जो तुम्हारी अपनी संतान हैं, और यह भी कि तुम दो बहनों को एक साथ रखो, सिवाय उस स्थिति के जब पहले से ही ऐसा हो चुका हो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(24) और विवाहित स्त्रियाँ भी हराम हैं, सिवाय उन स्त्रियों के जो तुम्हारे दाहिने हाथों में हों। यह अल्लाह का तुम पर आदेश है। इनके अतिरिक्त भी सब कुछ तुम्हारे लिए हलाल है, बशर्ते कि तुम उन्हें अपने माल से प्राप्त करो, और पवित्रता की इच्छा रखो, न कि अवैध संभोग की। अतः जो कुछ तुम उनसे प्राप्त करो, उसका उचित प्रतिफल उन्हें दो। और जो कुछ तुम आपस में सहमत होकर कर लो, उसमें तुम पर कोई दोष नहीं। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(25) तुममें से जो कोई स्वतंत्र ईमानवाली स्त्रियों से विवाह करने में समर्थ न हो, वह उन ईमानवाली दासियों से विवाह कर ले, जो तुम्हारे दाहिने हाथों में हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है। तुम एक दूसरे के हो। उनके घरवालों की अनुमति से उनसे विवाह करो और उन्हें उचित रीति से उनका हक़ दो। पवित्र बनो, व्यभिचारी न हो और न गुप्त प्रेमी हो। यदि वे विवाह के पश्चात व्यभिचार करें, तो उन्हें स्वतंत्र स्त्रियों के दंड का आधा भाग मिलेगा। यह उन लोगों के लिए है, जो पाप से डरते हैं। परन्तु धैर्य रखना तुम्हारे लिए बेहतर है। अल्लाह क्षमाशील, दयावान है।

(26) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए स्पष्ट रीति से स्पष्ट करे, और तुम्हें उन लोगों की भलाई की ओर मार्ग दिखाए जो तुमसे पहले आए हैं, और तुम्हारी तौबा स्वीकार करे। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(27) अल्लाह तुम्हारी तौबा स्वीकार करना चाहता है, किन्तु जो लोग अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक भटक जाओ।

(28) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए कठिनाइयाँ हलकी कर दे, क्योंकि मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है।

(29) ऐ ईमान वालो! एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ, बल्कि वैध व्यापार के ज़रिए आपसी सहमति से खाओ। और न एक दूसरे को क़त्ल करो। निस्संदेह अल्लाह तुमपर दया करनेवाला है।

(30) जो व्यक्ति अत्याचार और अन्याय के साथ ऐसा करेगा, हम उसे अवश्य आग में झोंक देंगे, यह अल्लाह के लिए सरल है।

(31) यदि तुम उन बड़े पापों से बचोगे, जो तुम्हारे लिए हराम किये गये हैं, तो हम तुम्हारे छोटे पापों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें उत्तम द्वार में प्रवेश देंगे।

(32) और जो कुछ अल्लाह ने तुममें से किसी को दूसरे से श्रेष्ठ बनाया है, उसकी कामना न करो। पुरुषों के लिए उनके कर्मों में से हिस्सा है और स्त्रियों के लिए उनके कर्मों में से हिस्सा है। अल्लाह से उसका अनुग्रह माँगो। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(33) हमने प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके माता-पिता और सम्बन्धियों द्वारा छोड़ी गई वस्तुओं के वारिस नियुक्त कर दिए हैं। जिन लोगों से तुमने वचन लिया है, उन्हें उनका हक़ दो। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है।

(34) पुरुष स्त्रियों के रक्षक हैं, अल्लाह ने उन्हें जो दिया है और जो वे अपने मालों से खर्च करते हैं, उसी से। सदाचारी स्त्रियाँ आज्ञाकारी होती हैं, वे अपनी अनुपस्थिति में उन चीज़ों की रक्षा करती हैं, जिनकी रक्षा अल्लाह चाहता है। और जिन लोगों से तुम्हें अहंकार का भय है, उन्हें समझाओ। फिर यदि वे अड़े रहें, तो उन्हें बिस्तर पर छोड़ दो। और यदि आवश्यक हो, तो उन्हें मार डालो। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानें, तो उनके विरुद्ध कोई उपाय न खोजो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, महान् है।

(35) यदि तुम्हें उनके बीच मतभेद का भय हो तो एक मध्यस्थ उसके घराने से और एक मध्यस्थ उसकी घराने से नियुक्त करो। यदि वे दोनों मेलमिलाप चाहें तो अल्लाह उनके बीच मेलमिलाप करा देगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, ख़बर रखनेवाला है।

(36) अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ। माँ-बाप, नातेदार, अनाथ, मुहताज, निकटस्थ पड़ोसी, दूरस्थ पड़ोसी, अपने साथ रहनेवाले, मुसाफिर और अपने अधिकार में रहनेवाले लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो। निस्संदेह अल्लाह अहंकारी और डींग हांकनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(37) जो लोग कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी का आदेश देते हैं और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से दिया है, उसे छिपाते हैं। हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

(38) और जो लोग लोगों को दिखाने के लिए अपने माल ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न अन्तिम दिन पर। और जिस किसी का साथी शैतान हो, वह कितना बुरा साथी है।

(39) यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएँ और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करें, तो उनपर क्या हानि होगी? अल्लाह तो उन्हें भली-भाँति जानता है।

(40) निस्संदेह अल्लाह कण भर भी अत्याचार नहीं करता, और यदि कोई अच्छा कर्म हो तो उसे बढ़ा देता है और अपने पास से बड़ा प्रतिफल देता है।

(41) फिर जब हम प्रत्येक समुदाय से एक गवाह ले आएँगे और तुम्हें भी इनके विरुद्ध गवाह बनाकर ले आएँगे, तो कैसा रहेगा?

(42) जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इनकार किया और रसूल की अवज्ञा की, चाहेंगे कि धरती उन्हें ढक दे, और वे अल्लाह से कोई बात न छिपा सकेंगे।

(43) ऐ ईमान वालो! नशे में नमाज़ के पास न जाओ जब तक कि तुम जान न लो कि क्या कह रहे हो और न नापाकी की हालत में - सिवाय सफ़र में - जब तक कि तुम नहा न लो। अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच से आया हो या तुमने औरतों से संबंध बना लिया हो और पानी न पा सके तो साफ़ मिट्टी तलाश करो और उससे अपने चेहरों और हाथों पर मसह करो। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, बड़ा बख्शनेवाला है।

(44) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया था, कि वे गुमराही मोल ले रहे थे और चाहते थे कि तुम मार्ग से भटक जाओ?

(45) अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जाननेवाला है। अल्लाह ही सहायक के रूप में काफ़ी है और अल्लाह ही सहायक के रूप में भी काफ़ी है।

(46) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उनके अर्थ से अलग करके कहते हैं कि "हम सुनते हैं और अवज्ञा करते हैं" और "सुनो और न सुनो" और "रायना" इस प्रकार वे अपनी ज़बान को टेढ़ा करके कहते हैं और धर्म पर कलंक लगाते हैं। यदि वे कहते कि "हम सुनते हैं और अवज्ञा करते हैं" और "हमारे समझने का इंतज़ार करो" तो यह उनके लिए बेहतर और उचित होता। किन्तु अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उन पर लानत की है, अतः वे थोड़े से लोगों के अतिरिक्त किसी और को ईमान नहीं लाते।

(47) ऐ तुम जो किताब प्राप्त हुए हो! जो कुछ हमने अवतरित किया है उसपर ईमान लाओ, जो तुम्हारे पास है उसकी पुष्टि करता है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और उन्हें पीछे की ओर फेर दें या उनपर लानत करें, जैसा कि हमने सब्त के उल्लंघन करने वालों पर लानत की थी। अल्लाह का आदेश सदैव पूरा होता है।

(48) निस्संदेह अल्लाह अपने साथ किसी को साझी ठहराने को क्षमा नहीं करता, परन्तु जिसके लिए चाहता है उससे कम को क्षमा कर देता है। और जिस व्यक्ति ने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया, उसने बहुत बड़ा पाप गढ़ लिया।

(49) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने आप को पवित्रता का दावा करते हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है पवित्रता प्रदान करता है। और उनपर एक सूत के बराबर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।

(50) देखो, वे अल्लाह पर कैसी-कैसी झूठी बातें गढ़ते हैं। खुले पाप के लिए तो यही काफ़ी है।

(51) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक अंश दिया गया था, जो अंधविश्वास और झूठी उपासना पर ईमान लाते हैं और इनकार करनेवालों के विषय में कहते हैं कि "ये लोग ईमानवालों से अधिक मार्ग पर हैं।"

(52) वही लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है और जिसपर अल्लाह लानत करे तो तुम उसके लिए कोई सहायक नहीं पाओगे।

(53) या उनका राज्य में कोई हिस्सा है? फिर यदि ऐसा होता तो वे लोगों को खजूर के दाने के बराबर भी न देते।

(54) या वे लोगों से उस चीज़ के कारण ईर्ष्या करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से प्रदान की है? हमने इबराहीम के घराने को किताब और तत्वदर्शिता प्रदान की थी और उन्हें एक बड़ा राज्य प्रदान किया था।

(55) उनमें से कुछ लोग उसपर ईमान लाए और कुछ लोग उससे विमुख हो गए। और जहन्नम की आग ही काफी है।

(56) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें आग में झोंक देंगे। जब भी उनकी खालें पूरी तरह से जल जाएँगी, हम उनकी जगह दूसरी खालें डाल देंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(57) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में प्रवेश देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे, वहाँ उनके लिए पवित्र पत्नियाँ होंगी और हम उन्हें सघन छाया में प्रवेश देंगे।

(58) निस्संदेह अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानत (भरोसे) उन्हीं को दो जिनके हक में है और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्याय के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह जो कुछ तुम्हें निर्देश देता है वह बहुत अच्छा है। निस्संदेह अल्लाह सुनने, देखनेवाला है।

(59) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो और जो लोग तुममें से उच्चाधिकारी हैं उनकी आज्ञा मानो। यदि तुम किसी बात पर मतभेद करते हो तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर मोड़ दो, यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो। यही सर्वोत्तम और अच्छा परिणाम देने वाला है।

(60) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो कहते हैं कि वे उसपर ईमान लाए हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया और जो तुमसे पहले उतारा गया? वे चाहते हैं कि किसी कानून को झूठे देवताओं की ओर मोड़ दें, हालाँकि उन्हें आदेश दिया गया था कि वे उसका इन्कार करें। और शैतान उन्हें बहुत दूर भटकाना चाहता है।

(61) जब उनसे कहा जाता है कि "अल्लाह की अवतरित हुई चीज़ और रसूल की ओर आओ" तो तुम देखते हो कि मुनाफ़िक़ लोग तुमसे मुँह फेर लेते हैं।

(62) फिर जब उनपर कोई विपत्ति आ पड़ेगी, उनके हाथों के कामों के कारण, तो वे तुम्हारे पास अल्लाह की सौगंध खाकर आएंगे कि "हमने तो केवल अच्छा आचरण और समझौता चाहा था।"

(63) यही वे लोग हैं जिनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। अतः तुम उनसे मुँह फेर लो, उन्हें नसीहत करो और उनसे गहरी बात कहो।

(64) हमने जो भी रसूल भेजा है, वह केवल अल्लाह की अनुमति से आज्ञापालन के लिए भेजा है। यदि जब वे अपने ऊपर अत्याचार कर बैठें तो तुम्हारे पास आते और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करते और रसूल भी उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करते तो वे अल्लाह को तौबा स्वीकार करने वाला, दयावान पाते।

(65) किन्तु तुम्हारे रब की शपथ! वे कभी ईमान नहीं लाएँगे, जब तक कि वे तुमसे उस विषय में निर्णय न करा दें, जिस पर वे आपस में झगड़ते रहते हैं, फिर जो कुछ तुमने निर्णय किया है, उससे अपने मन में कुछ भी कष्ट न पाएँ और पूरी तरह से आज्ञाकारी हो जाएँ।

(66) यदि हम उनपर आदेश देते कि "अपने आपको मार डालो" या "अपने घरों से निकल जाओ" तो उनमें से कुछ के अतिरिक्त वे ऐसा न करते। किन्तु यदि वे वही करते जो उन्हें आदेश दिया गया था तो यह उनके लिए अधिक अच्छा होता और वे अधिक सुरक्षित रहते।

(67) तो हम उन्हें अपनी ओर से बड़ा प्रतिफल प्रदान करते।

(68) और हम उन्हें सीधा मार्ग दिखा देते।

(69) जो कोई अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिनपर अल्लाह ने अनुग्रह किया है - नबियों, हक़ पर दृढ़ रहने वालों, शहीदों और नेक लोगों के साथ। और अच्छे साथी वे ही हैं।

(70) यह अल्लाह की ओर से अनुग्रह है और अल्लाह ही सर्वज्ञ है, उसके लिए पर्याप्त है।

(71) ऐ ईमान वालो! अपनी सावधानी बरतो और या तो समूह बनाकर निकलो या सब मिलकर निकलो।

(72) तुममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो देर से आते हैं, फिर जब तुमपर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं, "अल्लाह ने मुझपर उपकार किया कि मैं उनके बीच नहीं था।"

(73) किन्तु यदि अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास कोई अनुग्रह आ जाए तो वह कहेगा, मानो तुम्हारे और उसके बीच कभी कोई स्नेह था ही नहीं, "काश! मैं उनके साथ होता तो मुझे बड़ी सफलता प्राप्त होती।"

(74) अल्लाह के मार्ग में उन लोगों को लड़ना चाहिए जो आख़िरत के लिए दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं। जो कोई अल्लाह के मार्ग में लड़ेगा और मारा जाएगा या जीत हासिल करेगा, तो हम उसे बड़ा बदला देंगे।

(75) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में और उन मज़लूम पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए नहीं लड़ते जो कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! हमें इस अत्याचारी लोगों के शहर से निकाल ले और अपने पास से हमारे लिए कोई संरक्षक और अपने पास से हमारे लिए कोई सहायक नियुक्त कर दे।"

(76) जो लोग ईमान लाए हैं वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं और जो लोग इनकार करते हैं वे झूठे पूज्यों के मार्ग में लड़ते हैं। अतः तुम शैतान के सहयोगियों से लड़ो। निस्संदेह शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है।

(77) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि "अपने हाथ रोको, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।" फिर जब उनपर युद्ध का आदेश दिया गया तो उनमें से एक गिरोह लोगों से उतना ही डरने लगा जितना अल्लाह से डरना चाहिए, बल्कि उससे भी ज़्यादा। वे कहने लगे कि "ऐ हमारे रब! तूने हमपर युद्ध का आदेश क्यों दिया? क्या ही अच्छा होता कि तू उसे हमारे लिए थोड़े समय के लिए टाल देता।" कह दो कि "दुनिया की खुशियाँ थोड़ी हैं और आख़िरत उस व्यक्ति के लिए बेहतर है जो अल्लाह से डरता है। तुमपर एक सूत के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

(78) तुम जहाँ कहीं भी रहो, मौत तुम्हें पकड़ लेगी, चाहे तुम ऊँचे-ऊँचे भवनों में ही क्यों न रहो। यदि उनपर कोई भलाई आती है तो वे कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। और यदि उनपर कोई बुराई आती है तो वे कहते हैं कि यह तुम्हारी ओर से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है। तो फिर उन लोगों को क्या हो गया है कि वे कोई बात समझ नहीं पाते?

(79) जो कुछ भी भलाई तुम्हारे पास पहुँचती है वह अल्लाह की ओर से है और जो कुछ भी तुम पर मुसीबत आती है वह तुम्हारे अपने कारण से है। हमने तुम्हें लोगों की ओर रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह ही साक्षी के लिए काफ़ी है।

(80) जिसने रसूल की आज्ञा का पालन किया, उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया, किन्तु जिन लोगों ने मुँह फेर लिया, हमने तुम्हें उनपर संरक्षक बनाकर नहीं भेजा।

(81) वे कहते हैं, "हम आज्ञापालन का वचन देते हैं।" किन्तु जब वे तुम्हारे पास से चले जाते हैं तो उनमें से एक गिरोह रात में तुम्हारे कहे अनुसार षडयंत्र रचता है। वे रात में जो कुछ भी षडयंत्र रचते हैं, अल्लाह उसे लिख लेता है। अतः तुम उनसे मुँह फेर लो और अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह ही सब कामों का निपटारा करने के लिए पर्याप्त है।

(82) क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो वे उसमें बहुत अधिक विरोधाभास पाते।

(83) जब उनके पास सुरक्षा या भय के बारे में कोई सूचना आती है, तो वे उसे फैला देते हैं। यदि वे उसे रसूल या अपने बीच के किसी अधिकारी के पास पहुँचा देते, तो जो लोग सही निष्कर्ष निकाल सकते हैं, वे उसे अवश्य जान लेते। यदि तुमपर अल्लाह की अनुकंपा और उसकी दयालुता न होती, तो तुम शैतान का अनुसरण करते, सिवाय कुछ लोगों के।

(84) अतः, अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो। तुम अपने ही प्रति उत्तरदायी हो। ईमान वालों को प्रोत्साहित करो कि अल्लाह काफ़िरों की शक्ति को रोक दे। अल्लाह शक्ति में बड़ा है और दण्ड में अधिक शक्तिशाली है।

(85) जो कोई अच्छे काम के लिए सिफ़ारिश करेगा, उसके लिए भी कुछ हिस्सा होगा और जो कोई बुरे काम के लिए सिफ़ारिश करेगा, उसके लिए भी कुछ हिस्सा होगा। अल्लाह हर चीज़ पर निगरानी रखने वाला है।

(86) जब कोई तुम्हें सलाम करे तो तुम भी उससे बेहतर सलाम करो या कम से कम उसी तरह सलाम करो। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब रखनेवाला है।

(87) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। वह तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। अल्लाह से बढ़कर सच्चा कौन है?

(88) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ों के मामले में दो गिरोह हो गए हो? अल्लाह ने उन्हें उनकी करनी के बदले फिर गुमराही में डाल दिया है। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह ने उन्हें गुमराह कर दिया है और तुम उन्हें मार्ग दिखाओ? जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, तुम उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते।

(89) वे चाहते हैं कि जिस प्रकार वे इनकार करते हैं उसी प्रकार तुम भी इनकार कर दो, ताकि तुम भी एक जैसे हो जाओ। उनमें से किसी को अपना मित्र न बनाओ, जब तक कि वे अल्लाह के मार्ग में देश-विमुख न हो जाएँ। फिर यदि वे मुँह मोड़ लें, तो उन्हें पकड़ लो और जहाँ कहीं पाओ, क़त्ल कर दो। उनमें से किसी को अपना मित्र या सहायक न बनाओ।

(90) परन्तु वे लोग जो किसी ऐसे समुदाय से शरण लें जिसके साथ तुम्हारे बीच संधि हो चुकी हो, या वे लोग जो तुम्हारे पास इस मन से आएं कि वे न तो तुमसे युद्ध करें और न ही अपने लोगों से। यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुमपर अधिकार दे देता और वे अवश्य ही तुमसे युद्ध करते। अतः यदि वे तुमसे दूर हो जाएं और तुमसे युद्ध न करें और तुम्हारे सामने शांति का प्रस्ताव रखें तो अल्लाह ने उनके विरुद्ध तुम्हारे लिए कोई कारण नहीं बनाया।

(91) तुम कुछ ऐसे लोगों को पाओगे जो तुमसे और उनकी क़ौम से सुरक्षा चाहते हैं। जब भी उन्हें कुफ़्र की ओर लौटाया जाता है तो वे फिर उसी में गिर पड़ते हैं। यदि वे तुमसे दूर न हों और न तुम्हारे सामने शांति का प्रस्ताव रखें और न अपने हाथ थामे रहें तो उन्हें पकड़ लो और जहाँ कहीं भी पाओ क़त्ल कर दो। उनके विरुद्ध हमने तुम्हें स्पष्ट अधिकार दे दिया है।

(92) मोमिन का यह अधिकार नहीं कि वह किसी मोमिन को भूल से क़त्ल कर दे। जो व्यक्ति भूल से किसी मोमिन को क़त्ल कर दे, तो उसे चाहिए कि एक मोमिन गुलाम को आज़ाद करे और मृतक के घरवालों को मुआवज़ा दे, सिवाय इसके कि मृतक उसे ख़ैरात के रूप में दे दे। यदि मृतक उन लोगों में से हो जो तुमसे युद्ध कर रहे हों और वह मोमिन हो, तो एक मोमिन गुलाम को आज़ाद कर दो। और यदि वह उन लोगों में से हो जिनके साथ तुम्हारा संधि हो, तो उसके घरवालों को मुआवज़ा दो और एक मोमिन गुलाम को आज़ाद कर दो। और जो व्यक्ति [गुलाम न पा सके या उसे ख़रीद न सके] उसे अल्लाह की ओर से तौबा के रूप में लगातार दो महीने रोज़े रखने चाहिए। अल्लाह जाननेवाला, तत्वदर्शी है।

(93) जो व्यक्ति जानबूझ कर किसी ईमानवाले की हत्या करे, तो उसका दण्ड जहन्नम है, उसमें वह सदैव रहेगा। अल्लाह उस पर क्रोधित हुआ, उसपर लानत की और उसके लिए बड़ी यातना तैयार कर रखी है।

(94) ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के मार्ग में निकलो तो अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करो और जो कोई तुम्हें सलाम करे उससे यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो, क्योंकि तुम सांसारिक लाभ की कामना करते हो। अल्लाह के पास बहुत-सी लूट है। तुम भी पहले ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी कृपा की। अतः अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करो। निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे कर्मों से परिचित है।

(95) जो ईमान वाले ठहरे हुए हैं, वे और जो लोग अपने मालों और जानों से अल्लाह के मार्ग में जिहाद करते हैं, वे एक समान नहीं हैं। अल्लाह ने अपने मालों और जानों से जिहाद करने वालों को पीछे रह जाने वालों पर क्रमशः वरीयता दी है। अल्लाह ने सभी को अच्छे-अच्छे प्रतिफल का वादा किया है, किन्तु अल्लाह ने पीछे रह जाने वालों पर जिहाद करने वालों को बड़ा प्रतिफल दिया है।

(96) और उसकी ओर से उच्च पद तथा क्षमा और दया है। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(97) जिन लोगों को फ़रिश्ते इस हालत में मार डालते हैं कि वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं, तो फ़रिश्ते पूछेंगे, "तुम किस हालत में थे?" वे कहेंगे, "हम धरती में अत्याचार किए गए।" फ़रिश्ते कहेंगे, "क्या अल्लाह की धरती इतनी विस्तृत नहीं थी कि तुम उसमें घरबार छोड़कर चले जाते?" ऐसे लोगों के लिए तो जहन्नम ही ठिकाना है, वह कितना बुरा ठिकाना है।

(98) परन्तु उन अत्याचारग्रस्त पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर, जो कोई योजना नहीं बना सकते और न वे किसी मार्ग पर चलने वाले हैं।

(99) ऐसे लोगों से यह आशा की जाती है कि अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, क्षमाशील है।

(100) जो व्यक्ति अल्लाह के मार्ग में हिजरत करेगा, वह धरती में बहुत से स्थान और समृद्धि पाएगा। जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत करके अपने घर से निकले और फिर उसे मृत्यु आ जाए, तो उसका बदला अल्लाह के ऊपर अनिवार्य हो गया। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(101) जब तुम धरती में यात्रा करो तो तुमपर कोई दोष नहीं कि नमाज़ को क़स्र कर लो, यदि तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुमपर आक्रमण कर देंगे। निस्संदेह, काफ़िर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

(102) जब तुम उनके बीच में हो और उन्हें नमाज़ पढ़ाओ तो एक गिरोह तुम्हारे साथ खड़ा हो और वह अपने हथियार उठाए रहे। जब वह सजदा कर लें तो वह तुम्हारे पीछे हो और दूसरा गिरोह, जिसने अभी तक नमाज़ नहीं पढ़ी है, आगे आए और वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, एहतियात बरतें और अपने हथियार उठाए रहें। जो लोग इनकार करते हैं वे चाहते हैं कि तुम अपने हथियार और सामान को भूल जाओ, ताकि वे एक ही बार में तुम पर टूट पड़ें। लेकिन अगर तुम बारिश से परेशान हो जाओ या बीमार हो जाओ और अपने हथियार नीचे रख दो तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं है, लेकिन एहतियात बरतो। निस्संदेह अल्लाह ने इनकार करने वालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

(103) जब तुम नमाज़ से पूरी कर लो तो खड़े, बैठे या लेटे हुए अल्लाह को याद करो। फिर जब तुम स्थिर हो जाओ तो नमाज़ फिर से पढ़ो। निस्संदेह ईमान वालों पर नमाज़ के लिए निश्चित समय निर्धारित किए गए हैं।

(104) शत्रु का पीछा करते समय कमज़ोर न पड़ो। यदि तुम कष्ट में पड़ोगे तो वे भी कष्ट में पड़ेंगे। किन्तु तुम अल्लाह से ऐसी आशा रखते हो जिसकी वे आशा नहीं रखते। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(105) हमने तुम्हारी ओर सत्य रूप में यह किताब अवतरित की है, ताकि तुम लोगों के बीच उसी के अनुसार निर्णय करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और तुम धोखेबाज़ों की ओर से वकील न बनो।

(106) अल्लाह से क्षमा याचना करो, निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(107) और जो लोग अपने आप को धोखा देते हैं, उनके पक्ष में बहस न करो। निस्संदेह अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो हमेशा धोखा देने वाला पापी हो।

(108) वे लोगों से अपनी नीयत छिपाते हैं, किन्तु अल्लाह से वे नहीं छिपा सकते। जब वे रात में ऐसी बातें करते हैं, जिनसे अल्लाह सहमत नहीं होता, तो वह उनके साथ होता है। जो कुछ वे करते हैं, अल्लाह उसकी सीमा में है।

(109) और तुम वही हो जो सांसारिक जीवन में उनके पक्ष में तर्क करते हो, किन्तु क़ियामत के दिन उनके लिए अल्लाह से तर्क कौन करेगा, अथवा उनका प्रतिनिधि कौन होगा?

(110) जो व्यक्ति कोई अत्याचार करे या अपने ऊपर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा मांगे तो वह अल्लाह को अत्यन्त क्षमाशील, दयावान पाएगा।

(111) जो व्यक्ति पाप करता है, वह स्वयं ही उसे अर्जित करता है। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(112) जो व्यक्ति कोई अपराध या पाप करके किसी निर्दोष व्यक्ति पर उसका आरोप लगाता है, उसने अपने ऊपर बदनामी और स्पष्ट पाप ले लिया है।

(113) यदि तुमपर अल्लाह की कृपा और उसकी दयालुता न होती तो उनमें से एक गिरोह तुम्हें गुमराह करने पर उतारू हो जाता। वे अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते और वे तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह ने तुम्हारे पास किताब और तत्वदर्शिता अवतरित की और तुम्हें वह सिखाया जो तुम नहीं जानते थे। अल्लाह का तुमपर बड़ा अनुग्रह है।

(114) उनकी बहुत सी बातों में कोई भलाई नहीं, परन्तु उन लोगों के लिए जो दान या भलाई या लोगों के बीच मेल-मिलाप का आदेश देते हैं। जो व्यक्ति अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ऐसा करेगा, उसे हम अवश्य बड़ा प्रतिफल देंगे।

(115) जो व्यक्ति मार्गदर्शन के स्पष्ट हो जाने के पश्चात रसूल का विरोध करेगा और ईमान वालों के मार्ग के अतिरिक्त किसी अन्य मार्ग पर चलेगा, तो हम उसे वह मार्ग अपनाने देंगे जो उसने चुना है और उसे जहन्नम में डाल देंगे, वह कितना बुरा ठिकाना है।

(116) निस्संदेह अल्लाह अपने साथ किसी को साझी ठहराने को क्षमा नहीं करता, परन्तु जिसके लिए चाहता है उससे कम को क्षमा कर देता है। और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया, वह बहुत भटक गया।

(117) वे उसके सिवा किसी औरत को नहीं पुकारते, बल्कि वे तो एक विद्रोही शैतान को ही पुकारते हैं।

(118) जिसपर अल्लाह ने लानत की है, उसने कहा, "मैं तेरे बन्दों से अवश्य एक निश्चित हिस्सा लूँगा।

(119) मैं उन्हें गुमराह कर दूँगा, उनमें पाप की इच्छाएँ जगा दूँगा, उन्हें चौपायों के कान काटने का आदेश दूँगा, और उन्हें अल्लाह की रचना में परिवर्तन करने का आदेश दूँगा।" जिस व्यक्ति ने अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना मित्र बनाया, उसने स्पष्ट रूप से हानि उठायी।

(120) शैतान उनसे वादा करता है और उनमें इच्छाएँ जगाता है, किन्तु शैतान उनसे धोखे के अतिरिक्त और कोई वादा नहीं करता।

(121) उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, फिर वे उससे निकलने का कोई रास्ता न पाएँगे।

(122) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे जन्नतों में प्रवेश देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है। फिर अल्लाह से बढ़कर सच्चा वचन कौन कह सकता है?

(123) न तो तुम्हारी इच्छा से ऐसा होगा और न किताबवालों की इच्छा से। जो कोई बुरा करेगा, उसे उसका बदला मिलेगा और वह अल्लाह के अतिरिक्त न कोई संरक्षक पाएगा और न कोई सहायक।

(124) जो कोई भी अच्छे कर्म करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, ईमान वाला हो, वही जन्नत में प्रवेश करेगा और उनपर खजूर के दाने के बराबर भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।

(125) दीन में उससे अच्छा कौन हो सकता है जो अल्लाह के प्रति समर्पित हो, भले कर्म करनेवाला हो और इबराहीम के दीन पर चले, और सत्य की ओर झुका रहे? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था।

(126) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

(127) वे तुमसे स्त्रियों के विषय में आदेश माँगते हैं। कह दो, "अल्लाह तुम्हें उनके विषय में आदेश देता है और जो कुछ तुम्हारे लिए किताब में पढ़ा गया है उसके विषय में भी, उन अनाथ लड़कियों के विषय में जिन्हें तुम उनका हक नहीं देते और फिर भी उनसे विवाह करना चाहते हो, और उन बच्चों के विषय में जो अत्याचार का शिकार हैं, और यह कि तुम अनाथों के अधिकारों की रक्षा न्याय के साथ करो।" तुम जो भी अच्छा काम करोगे, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

(128) यदि कोई स्त्री अपने पति से दुर्व्यवहार या मनमुटाव से भयभीत हो, तो यदि वे आपस में मेल-मिलाप कर लें, तो इसमें कोई दोष नहीं, क्योंकि मेल-मिलाप ही सर्वोत्तम है। आत्माएँ स्वार्थी होती हैं, किन्तु यदि तुम अच्छे कर्म करो और अल्लाह का भय रखो, तो जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे भली-भाँति परिचित है।

(129) तुम पत्नियों के बीच कभी भी पूर्ण न्याय नहीं कर सकोगे, चाहे तुम ऐसा करने का प्रयास भी करो। अतः एक के प्रति पूरी तरह से झुक न जाओ और दूसरी को अधर में न छोड़ दो। यदि तुम सुधार कर लो और अल्लाह का भय मानो तो निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(130) फिर यदि वे अलग हो जाएँ तो अल्लाह अपनी प्रचुरता से उनमें से प्रत्येक को समृद्ध कर देगा। और अल्लाह अत्यन्त व्यापक, तत्वदर्शी है।

(131) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। हमने तुमसे पहले जो लोग किताब प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें और तुमको भी आदेश दिया है कि अल्लाह से डरो। फिर यदि तुम इनकार करो तो जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह सब अल्लाह ही का है। अल्लाह अत्यन्त निःसंकोच, प्रशंसनीय है।

(132) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और अल्लाह ही उसका संरक्षक है।

(133) हे लोगो! यदि वह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला दे, और अल्लाह इस पर पूर्ण रूप से सामर्थ्य रखता है।

(134) जो कोई संसार का बदला चाहे तो अल्लाह के पास संसार और आख़िरत का बदला है। और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है।

(135) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए न्याय के पक्ष में गवाही देते रहो, चाहे वह तुम्हारे अपने विरुद्ध हो, या तुम्हारे माता-पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध। चाहे कोई अमीर हो या गरीब, अल्लाह उन दोनों से ज़्यादा हक़दार है। इसलिए अपनी इच्छाओं का अनुसरण न करो, नहीं तो तुम भटक जाओगे। और यदि तुम टेढ़ी-मेढ़ी बातें करते हो या इनकार करते हो, तो निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली-भाँति परिचित है।

(136) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल पर, उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी। और जिस किसी ने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अन्तिम दिन को झुठलाया, वह बहुत भटक गया।

(137) जो लोग ईमान लाए, फिर इनकार किया, फिर ईमान लाए, फिर इनकार किया, फिर कुफ़्र में और अधिक बढ़ गए, अल्लाह उन्हें न क्षमा करेगा और न उन्हें कोई मार्ग दिखाएगा।

(138) मुनाफ़िक़ों को ख़बर दे दो कि उनके लिए दुखद यातना है।

(139) जो लोग ईमान वालों के स्थान पर काफ़िरों को अपना मित्र बनाते हैं, क्या वे उनके द्वारा सम्मान चाहते हैं? निश्चय ही सम्मान अल्लाह ही के लिए है।

(140) और तुमपर किताब में यह बात उतारी जा चुकी है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का झुठलाया जा रहा है या उनका उपहास किया जा रहा है तो उनके साथ न बैठो जब तक कि वे कोई दूसरी बात न करने लगें। नहीं तो तुम भी उनके समान हो जाओगे। निश्चय ही अल्लाह मुनाफ़िक़ों और इनकार करनेवालों को जहन्नम में इकट्ठा करेगा।

(141) वे लोग तुम्हारी प्रतीक्षा करते हैं। फिर यदि तुम अल्लाह की ओर से कोई सफलता प्राप्त कर लेते हो तो कहते हैं, "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" फिर यदि इनकार करनेवाले सफल हो जाते हैं तो कहते हैं, "क्या हम तुमपर विजय प्राप्त नहीं कर पाए थे? और हमने तुम्हें ईमानवालों से सुरक्षित नहीं रखा था?" क़ियामत के दिन अल्लाह तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा। अल्लाह इनकार करनेवालों को ईमानवालों पर कोई मार्ग नहीं देगा।

(142) निश्चय ही कपटाचारी लोग यह समझते हैं कि वे अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, किन्तु अल्लाह उन्हें धोखा दे रहा है। जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो सुस्ती से खड़े होते हैं, लोगों को अपना परिचय देते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते, परन्तु थोड़ा-सा करते हैं।

(143) वे उनके बीच में डोलते रहेंगे, न उनमें से होंगे और न उनमें से। और जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे, तुम उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकोगे।

(144) ऐ ईमान वालो! ईमान वालों के स्थान पर काफ़िरों को अपना मित्र न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने विरुद्ध कोई खुला मामला बना लो?

(145) निश्चय ही कपटाचारी लोग आग की निचली गर्त में होंगे, फिर तुम उनका कोई सहायक न पाओगे।

(146) परन्तु जो लोग तौबा कर लें, सुधार करें, अल्लाह को थामे रहें और अल्लाह के लिए अपने धर्म में निष्ठावान रहें, वही लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा।

(147) यदि तुम कृतज्ञता दिखाओ और ईमान लाओ, तो अल्लाह तुम्हारी यातना में क्या करेगा? निस्संदेह अल्लाह कृतज्ञता दिखानेवाला, सर्वज्ञ है।

(148) अल्लाह बुराई का ज़िक्र खुलेआम करना पसंद नहीं करता, परन्तु वह व्यक्ति जो ज़ुल्म का शिकार हो। और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है।

(149) यदि तुम कोई नेकी प्रकट करो या उसे छिपाओ या किसी अपराध को क्षमा कर दो, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, प्रभुत्वशाली है।

(150) जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इनकार करते हैं और अल्लाह और उसके रसूलों के बीच भेद करना चाहते हैं, और कहते हैं कि हम कुछ लोगों पर ईमान लाए और कुछ पर इनकार करते हैं, और बीच का रास्ता अपनाना चाहते हैं,

(151) वही लोग सच्चे इनकार करनेवाले हैं और हमने इनकार करनेवालों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

(152) किन्तु जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी के बीच कोई भेद नहीं किया, उन्हें अल्लाह शीघ्र ही उनका प्रतिफल प्रदान करेगा। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(153) किताबवाले तुमसे कहते हैं कि तुम उनके पास आकाश से कोई किताब उतार लाओ। किन्तु उन्होंने मूसा से तो इससे भी बड़ी माँग की, जबकि उन्होंने कहा, "हमें अल्लाह दिखाओ।" तो उनके अत्याचार के कारण उनपर बिजली गिर पड़ी। फिर उन्होंने बछड़े को पूजने का निर्णय किया, जबकि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे। फिर हमने उसे क्षमा कर दिया और मूसा को स्पष्ट प्रमाण प्रदान किया।

(154) और हमने उनसे वचन लेने के लिए पहाड़ को उनके ऊपर उठा दिया, और उनसे कहा, "दरवाजे से विनम्रतापूर्वक प्रवेश करो।" और हमने उनसे कहा, "सब्त के दिन अतिक्रमण न करो।" और हमने उनसे एक गंभीर वचन ले लिया।

(155) अतः यह उनके वचन भंग करने, अल्लाह की आयतों का इनकार करने, नबियों की नाहक़ हत्या करने और यह कहने के कारण हुआ कि "हमारे दिलों पर मुहर लगा दी गई है।" बल्कि अल्लाह ने उनके इनकार के कारण उनपर मुहर लगा दी है। अतः वे केवल थोड़े से लोग ही ईमान लाते हैं।

(156) और उनके कुफ़्र के कारण और मरयम पर बड़ी बदनामी करने के कारण,

(157) और उनके यह कहने पर कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह को, अल्लाह के रसूल को, क़त्ल कर दिया है। और न तो उन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि उन्हें ऐसा ही दिखाया गया। निस्संदेह, जो लोग इस पर मतभेद करते हैं, वे इसके विषय में संदेह में हैं। उन्हें इसके विषय में कोई ज्ञान नहीं है, सिवाय अनुमान के, और उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया।

(158) बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया, और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(159) और किताबवालों में से कोई ऐसा नहीं जो मरने से पहले उसपर ईमान न लाए और क़ियामत के दिन वह उनपर गवाह होगा।

(160) यहूदियों के अत्याचार के कारण हमने कुछ अच्छी खाने की चीज़ों को उनपर हराम कर दिया, जो उनके लिए हलाल थीं। और इस कारण कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह के मार्ग से रोक दिया।

(161) और उनके द्वारा ब्याज लेने के कारण, जबकि उन्हें इससे रोका गया था और लोगों के धन को अन्यायपूर्वक खाने के कारण। और हमने उनमें से इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(162) किन्तु उनमें से जो लोग ज्ञानी और ईमान वाले हैं, वे उसपर ईमान लाए हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो तुमसे पहले उतारा गया है। और जो लोग नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं, उन्हें हम बड़ा प्रतिदान देंगे।

(163) और हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार प्रकाशना की है जिस प्रकार नूह और उसके पश्चात् आनेवाले नबियों की ओर प्रकाशना की थी। और हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याकूब, उनकी सन्तान, ईसा, अय्यूब, योना, हारून और सुलैमान की ओर भी प्रकाशना की थी और दाऊद को हमने ज़बूर प्रदान की थी।

(164) और कुछ ऐसे रसूल भी भेजे जिनके विषय में हम तुमसे पहले ही कह चुके हैं और कुछ ऐसे रसूल भी भेजे जिनके विषय में हमने तुमसे नहीं कहा। और अल्लाह ने मूसा से सीधे बात की।

(165) हमने रसूलों को शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा, ताकि लोगों को रसूलों के पश्चात अल्लाह के विरुद्ध कोई तर्क न रहे। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(166) अल्लाह उसपर गवाही देता है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है। उसने उसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं। और अल्लाह के लिए गवाही काफ़ी है।

(167) निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, वे बहुत दूर भटक गये।

(168) निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और अत्याचार किया, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें कोई मार्ग दिखाएगा।

(169) परन्तु जहन्नम का मार्ग, जिसमें वे सदैव रहेंगे, और यह अल्लाह के लिए सरल है।

(170) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से रसूल सत्य लेकर आ चुका है। अतः तुम ईमान लाओ। यह तुम्हारे लिए अच्छा है। फिर यदि तुम इनकार करो तो जो कुछ आकाशों और धरती में है, वह सब अल्लाह ही का है। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(171) ऐ किताबवालो! अपने धर्म में ज़्यादती न करो और अल्लाह पर हक़ के सिवा कुछ न कहो। मरयम के बेटे ईसा मसीह तो बस अल्लाह के रसूल और उसके कलाम थे जो उसने मरयम की तरफ़ भेजे और उनकी तरफ़ से रूह थे। तो तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ। और "तीन" न कहो। रुक जाओ। यही तुम्हारे लिए बेहतर है। निस्संदेह अल्लाह एक ही पूज्य है। वह बेटा होने से कहीं बढ़कर है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। और अल्लाह ही सब कामों का फ़ैसला करने के लिए काफ़ी है।

(172) न मसीह अल्लाह का बन्दा बनने से इन्कार करेंगे और न उसके निकटवर्ती फ़रिश्ते। और जो कोई उसकी बन्दगी से इन्कार करेगा और अहंकार करेगा, तो अल्लाह उन सबको अपने पास इकट्ठा कर लेगा।

(173) फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें अल्लाह उनके पूरे-पूरे पुरस्कार देगा और अपने अनुग्रह से उन्हें अतिरिक्त प्रदान करेगा। और जो लोग अवज्ञाकारी और अहंकारी रहे, उन्हें वह दुखद यातना देगा। फिर वे अल्लाह के सिवा अपने लिए न कोई संरक्षक पाएंगे और न सहायक।

(174) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है और हमने तुम्हारी ओर एक स्पष्ट प्रकाश अवतरित किया है।

(175) अतः जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उससे जुड़े रहे, उन्हें वह अपनी दयालुता और अनुग्रह में प्रवेश देगा और उन्हें अपनी ओर सीधा मार्ग दिखाएगा।

(176) वे तुमसे कोई नियम पूछते हैं। कह दो, "अल्लाह तुम्हें उस व्यक्ति के बारे में नियम देता है, जिसके न तो कोई वंशज हो और न ही कोई पूर्वज। यदि कोई व्यक्ति बिना संतान के मर जाए, परन्तु उसकी एक बहन हो, तो जो कुछ वह छोड़ गया है, उसका आधा उसे मिलेगा। और यदि वह मर जाए और उसकी कोई संतान न हो, तो भी वह उससे आधा भाग पाएगा। और यदि दो बहनें हों, तो जो कुछ वह छोड़ गया है, उसका दो-तिहाई उन्हें मिलेगा। और यदि भाई-बहन दोनों हों, तो पुरुष को दो स्त्रियों का भाग मिलेगा।" अल्लाह तुम्हारे लिए स्पष्ट कर देता है, ताकि तुम पथभ्रष्ट न हो जाओ। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

# सूरा 5: **ٱلْمَائِدَة‎ (अल-माइदा)** - द स्प्रेड टेबल

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ ईमान वालो! अपने वादे पूरे करो। तुम्हारे लिए चौपाये हलाल हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जाएँ। लेकिन जब तुम इबादत की हालत में हो तो शिकार करना जायज़ नहीं है। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, वही तय करता है।

(2) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की पवित्र निशानियों, आदरणीय महीने, क़ुरबानी के जानवरों, मालाओं और अपने रब की कृपा और प्रसन्नता की तलाश में आने वालों का उल्लंघन न करो। लेकिन जब तुम पवित्रता की रस्में पूरी कर लो तो शिकार करो। उन लोगों की नफ़रत, जिन्होंने तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोक दिया था, तुम्हें उल्लंघन की ओर न ले जाए। नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद करो, लेकिन गुनाह और अत्याचार में एक दूसरे की मदद न करो। और अल्लाह से डरो, निस्संदेह अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

(3) तुम पर हराम है मुर्दा, ख़ून, सूअर का माँस और अल्लाह के सिवा किसी और का माँस; गला घोंटा हुआ, मारा हुआ, ऊँचाई से गिरा हुआ, सींग मारे हुए या जंगली जानवरों द्वारा खाया हुआ जानवर - जब तक कि तुम उन्हें ठीक से ज़बह न कर सको - और वेदियों पर [मूर्तियों के लिए] क़ुर्बानी किया हुआ जानवर और तीरों से गोश्त बाँटना। यह बड़ी नाफ़रमानी है। आज इनकार करनेवाले तुम्हारे दीन को नुकसान पहुँचाने से निराश हो गए हैं। तो तुम उनसे मत डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे दीन के तौर पर इस्लाम को तुम्हारे लिए चुन लिया। फिर जो कोई भूख से मजबूर हो जाए और गुनाह करने का इरादा न करे - तो निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

(4) वे तुमसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल है? कह दो, "तुम्हारे लिए हर अच्छी और पवित्र चीज़ हलाल है और जो शिकारी जानवर तुम्हारे लिए पकड़ते हैं, जिन्हें तुमने प्रशिक्षित किया है, जैसा कि अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है। तो जो कुछ वे तुम्हारे लिए पकड़ते हैं, उसमें से खाओ और उस पर अल्लाह का नाम लो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है।"

(5) आज तुम्हारे लिए हर अच्छी और पाक चीज़ हलाल कर दी गई है। जिन लोगों को किताब दी गई है उनका खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। तुम्हारे लिए हलाल है ईमान वालों में से पाक औरतें और उन लोगों में से पाक औरतें जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई है, जबकि तुमने उन्हें उनका हक़ दे दिया है। वे पाक-साफ़ रहना चाहती हैं, न कि व्यभिचार और न ही कोई छुपकर प्यार करना। और जो शख्स ईमान से इन्कार करेगा तो उसके सारे काम व्यर्थ हो जाएँगे और आख़िरत में वह घाटे में रहेगा।

(6) ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो अपने चेहरे और हाथों को कोहनियों तक धो लो, अपने सिर पर मसह करो और अपने पैरों को टखनों तक धो लो। और अगर तुम बहुत नापाकी की हालत में हो तो खुद को पाक-साफ़ कर लो। लेकिन अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच करके आया हो या तुमने औरतों से समागम किया हो और पानी न पा सके तो पाक मिट्टी तलाशो और उससे अपने चेहरे और हाथों पर मसह करो। अल्लाह तुम्हें तकलीफ़ नहीं देना चाहता बल्कि वह तुम्हें पाक-साफ़ करना चाहता है और तुम पर अपनी नेमत पूरी करना चाहता है ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

(7) और अल्लाह की उस अनुकंपा को याद करो जो उसने तुमपर की है और उस वचन को भी जो उसने तुमपर बाँधा है, जबकि तुमने कहा कि हम सुनते हैं और मानते हैं। और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह दिलों के अन्दर की बातें भली-भाँति जानता है।

(8) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए न्यायी गवाह बनकर डटे रहो और किसी क़ौम की नफ़रत तुम्हें अन्यायी न बना दे। न्याय करो, यही नेकी के ज़्यादा निकट है। और अल्लाह से डरते रहो, निस्संदेह अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(9) अल्लाह ने उन लोगों से, जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, क्षमा और बड़े प्रतिफल का वादा किया है।

(10) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग जहन्नम में पड़नेवाले हैं।

(11) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो उसने तुम पर की, जबकि कुछ लोग तुमपर हाथ बढ़ाने को थे, किन्तु अल्लाह ने उनके हाथ तुमपर से रोक दिए। और अल्लाह से डरते रहो और ईमान वालों को अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए।

(12) अल्लाह ने बनी इसराइल से वचन लिया और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त किए। अल्लाह ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ। यदि तुम नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, उनकी सहायता करो और अल्लाह को अच्छा ऋण दो तो मैं अवश्य ही तुम्हारे पापों को तुमसे दूर कर दूँगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में प्रवेश दूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। किन्तु तुममें से जो इसके बाद भी इनकार करेगा, वह अवश्य ही सीधे मार्ग से भटक गया।"

(13) लेकिन जब उन्होंने अपना वादा तोड़ा, तो हमने उन पर लानत की और उनके दिलों को कठोर बना दिया। वे शब्दों को उनके उचित स्थान से तोड़-मरोड़ कर बोलते हैं और जो कुछ उन्हें याद दिलाया गया था, उसका कुछ हिस्सा भूल गए हैं। और तुम उनमें से थोड़े को छोड़कर, हमेशा छल करते रहोगे। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उनकी बुराइयों को नज़रअंदाज़ कर दो। निस्संदेह अल्लाह अच्छे काम करनेवालों को प्रिय है।

(14) और जिन लोगों ने कहा कि हम ईसाई हैं, उनसे हमने वचन ले लिया, किन्तु जो कुछ उन्हें याद दिलाया गया था, उसमें से वे भूल गए। अतः हमने उनके बीच क़ियामत के दिन तक के लिए शत्रुता और द्वेष उत्पन्न कर दिया। और अल्लाह उन्हें बता देगा कि वे क्या करते रहे।

(15) ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, ताकि वह किताब में से बहुत सी बातें जो तुम छिपाते थे और बहुत सी बातों से बचते थे, उन्हें स्पष्ट कर दे। अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास एक प्रकाश और स्पष्ट किताब आ चुकी है।

(16) जिसके द्वारा अल्लाह अपनी प्रसन्नता चाहनेवालों को शांति के मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है और अपनी अनुमति से उन्हें अंधकारों से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है और उन्हें सीधे मार्ग पर लाता है।

(17) जो लोग कहते हैं कि अल्लाह मरयम के बेटे मसीह है, वे लोग कुफ़्र करनेवाले हैं। कह दो कि यदि अल्लाह मरयम के बेटे मसीह को या उसकी माँ को या धरती में रहनेवाले सभी लोगों को विनष्ट कर दे, तो उसे कौन रोक सकता है? आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, उसका राज्य अल्लाह ही का है। वह जो चाहता है, पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(18) यहूदी और ईसाई कहते हैं, "हम अल्लाह की संतान और उसके प्रिय हैं।" कहो, "फिर वह तुम्हारे पापों पर तुम्हें क्यों दण्ड देता है? बल्कि तुम तो उसके बनाए हुए लोगों में से मनुष्य हो। वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है दण्ड देता है। आकाशों और धरती और जो कुछ उनके बीच है, उसका राज्य अल्लाह ही का है और ठिकाना उसी की ओर है।"

(19) ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है ताकि वह तुम्हारे लिए बातें स्पष्ट करे, एक ऐसे दौर के बाद जब रसूल नहीं आए, ताकि तुम न कहो कि हमारे पास न तो कोई शुभ सूचना देनेवाला आया और न ही कोई सचेत करनेवाला। बल्कि तुम्हारे पास एक शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला आया है। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(20) और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह ने तुमपर जो उपकार किया उसे याद करो, जब उसने तुममें पैगम्बर बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया।

(21) ऐ मेरी क़ौम! उस पवित्र भूमि में प्रवेश करो जिसे अल्लाह ने तुम्हें सौंपा है, और पीछे न हटो, नहीं तो तुम घाटे में रह जाओगे।

(22) उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! इसमें बहुत शक्तिशाली लोग हैं। हम इसमें प्रवेश नहीं करेंगे जब तक कि वे इसे छोड़ न दें। यदि वे इसे छोड़ दें तो हम प्रवेश करेंगे।"

(23) जो लोग डरते थे उनमें से जिनपर अल्लाह ने अनुग्रह किया था, दो व्यक्तियों ने कहा, "उनके पास द्वार से प्रवेश करो। जब तुम उसमें प्रवेश कर जाओगे तो सफल हो जाओगे। और यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह पर भरोसा रखो।"

(24) उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! जब तक वे लोग उसमें रहेंगे, हम उसमें प्रवेश नहीं करेंगे। अतः तुम और तुम्हारा रब जाओ और युद्ध करो। हम तो यहीं बैठे हुए हैं।"

(25) मूसा ने कहा, "ऐ मेरे रब! मैं तो अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमें अवज्ञाकारी लोगों से अलग कर दे।"

(26) उसने कहा, "फिर तो उनपर चालीस वर्ष तक का समय हराम कर दिया गया है, जिसमें वे धरती में भटकते रहेंगे। अतः तुम अवज्ञाकारी लोगों पर शोक न करो।"

(27) और उन्हें आदम के दो बेटों का वृत्तान्त सुनाओ, जबकि उन दोनों ने क़ुर्बानी की, उनमें से एक की क़ुर्बानी स्वीकार हुई और दूसरे की नहीं। तो उसने कहा, "मैं अवश्य तुम्हें मार डालूँगा।" उसने कहा, "अल्लाह केवल नेक लोगों को क़ुर्बानी स्वीकार करता है।

(28) यदि तुम मुझे मारने के लिए मुझ पर हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें मारने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। वास्तव में मैं अल्लाह से डरता हूं, जो सारे संसार का रब है।

(29) मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे और अपने गुनाहों का बोझ उठाओ, फिर तुम आग में पड़नेवालों में से होगे। और यही अत्याचारियों का बदला है।

(30) और उसके जी ने उसे अपने भाई की हत्या की अनुमति दे दी, अतः उसने उसे मार डाला और घाटे में चला गया।

(31) फिर अल्लाह ने एक कौवा ज़मीन में खोजता हुआ भेजा ताकि उसे बताए कि अपने भाई की बेइज़्ज़ती को कैसे छिपाया जाए। उसने कहा, "हाय! क्या मैं इस कौवे की तरह नहीं हुआ और अपने भाई की लाश को नहीं छिपाया?" और वह पछतानेवालों में से हो गया।

(32) इसी कारण हमने बनी इसराइल पर यह आदेश दिया कि जो कोई किसी प्राणी को मारे, सिवाय किसी प्राण के लिए या धरती में किसी गड़बड़ी के कारण, तो मानो उसने पूरी मानवजाति को मार डाला। और जो किसी को बचाए, तो मानो उसने पूरी मानवजाति को बचा लिया। और हमारे रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे। फिर उनमें से बहुत-से लोग उसके बाद भी पूरे देश में अवज्ञाकारी रहे।

(33) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध करते हैं और धरती में फ़साद फैलाने का प्रयास करते हैं, उनकी सज़ा बस यही है कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए या सूली पर चढ़ा दिया जाए या उनके हाथ-पैर काट दिए जाएँ या उन्हें धरती से निकाल दिया जाए। यह उनके लिए दुनिया में अपमान की बात है और आख़िरत में भी उनके लिए बड़ी सज़ा है।

(34) परन्तु वे लोग जो तौबा कर लें, इससे पहले कि तुम उन्हें पकड़ लो। और जान लो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(35) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी निकटता तलाश करो और उसके मार्ग में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो सको।

(36) निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया, यदि उनके पास धरती में जो कुछ है और उसके समान कुछ भी हो, जिससे वे क़ियामत के दिन की यातना से बच सकें, तो भी उनसे वह स्वीकार न किया जाएगा, और उनके लिए दुखद यातना है।

(37) वे अवश्य चाहेंगे कि आग से निकल जाएँ, किन्तु वे उससे कभी नहीं निकल सकेंगे। उनके लिए स्थायी यातना है।

(38) चोर हो या चोर, अल्लाह की ओर से उनके कर्मों के कारण उनके हाथ काट दो, यह उनके लिए दंड की बात है। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(39) किन्तु जो व्यक्ति अपने अत्याचार के पश्चात् तौबा कर ले और सुधार कर ले, तो अल्लाह उसकी ओर क्षमा कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(40) क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहता है यातना देता है और जिसे चाहता है क्षमा कर देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(41) ऐ रसूल! तुम उन लोगों को दुखी न करो जो इनकार में जल्दी करते हैं, जो मुँह से तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, परन्तु उनके दिल ईमान नहीं लाए, और यहूदियों में से जो झूठ सुनते हैं, और दूसरे लोगों की सुनते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आए, वे शब्दों को उनकी जगह से परे तोड़-मरोड़ कर कहते हैं, "यदि तुम्हें यह दिया जाए तो ले लो, और यदि तुम्हें यह न दिया जाए तो सावधान रहो।" परन्तु जिस व्यक्ति के लिए अल्लाह फ़ितना चाहे, उसके लिए तुम अल्लाह के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकते। यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह शुद्ध नहीं करना चाहता। उनके लिए संसार में अपमान है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी यातना है।

(42) वे झूठ के बड़े शौकीन और हराम की चीज़ों के भक्षक हैं। अतः यदि वे तुम्हारे पास आएँ तो उनके बीच फ़ैसला कर दो या उनसे मुँह फेर लो। और यदि तुम उनसे मुँह फेर लो तो वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यदि तुम फ़ैसला करो तो उनके बीच न्याय से फ़ैसला करो। निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।

(43) फिर वे तुम्हारे पास फ़ैसले के लिए क्यों आते हैं, जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का फ़ैसला है? फिर उसके बाद भी वे मुँह फेर लेते हैं, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं।

(44) हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था। जो नबी आज्ञाकारी थे, उन्होंने यहूदियों के लिए उसी के आधार पर फ़ैसला किया और उसी तरह रब्बियों और विद्वानों ने भी उसी के आधार पर फ़ैसला किया जो अल्लाह की किताब से उन्हें सौंपा गया था और वे उस पर गवाह भी थे। अतः लोगों से मत डरो, बल्कि मुझसे डरो और मेरी आयतों को थोड़े से मूल्य पर न बदलो। और जो व्यक्ति अल्लाह की उतारी हुई आयतों के अनुसार फ़ैसला न करे, वही लोग इनकार करनेवाले हैं।

(45) और हमने उनके लिए इसमें आदेश दे दिया कि "जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और ज़ख्म के बदले सज़ा है।" फिर जो कोई ख़ैरात करे तो उसके लिए यह प्रायश्चित है। और जो कोई अल्लाह की नाज़िल के अनुसार फ़ैसला न करे तो वही लोग ज़ालिम हैं।

(46) और हमने उन्हीं के पदचिन्हों पर मरयम के बेटे ईसा को भेजा, जो तौरात में उनसे पहले आई बातों की पुष्टि करते हैं और हमने उन्हें इंजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था और जो तौरात में उससे पहले आई बातों की पुष्टि करता है, ताकि वे नेक लोगों के लिए मार्गदर्शन और शिक्षा दें।

(47) और अक़ील इंजील वालों को चाहिए कि वे अल्लाह की भेजी हुई किताब के अनुसार फ़ैसला करें। और जो व्यक्ति अल्लाह की भेजी हुई किताब के अनुसार फ़ैसला न करे, तो वही लोग अवज्ञाकारी हैं।

(48) और हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ यह किताब अवतरित की है, जो इससे पहले वाली किताब की पुष्टि करती है और उस पर कसौटी है। अतः उनके बीच उसी के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने अवतरित किया है और जो सत्य तुम्हारे पास आया है उससे हटकर उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो। हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक नियम और एक विधि निर्धारित की है। यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता, किन्तु जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाई की ओर दौड़ पड़ो। तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौटना है और वह तुम्हें उस विषय में बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे थे।

(49) और उनके बीच अल्लाह की भेजी हुई बातों के अनुसार फ़ैसला करो और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो और उनसे बचते रहो कि कहीं वे तुम्हें अल्लाह की भेजी हुई बातों में से किसी चीज़ से भटका न दें। और यदि वे मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तो बस यही चाहता है कि उनके कुछ पापों से उन्हें पीड़ा पहुँचाए। और निश्चय ही लोगों में बहुत से लोग अवज्ञाकारी हैं।

(50) तो क्या वे अज्ञानता का न्याय चाहते हैं? परन्तु जो लोग विश्वास में दृढ़ हों, उनके लिए न्याय करने में अल्लाह से अच्छा कौन है?

(51) ऐ ईमान वालो! यहूदियों और ईसाइयों को अपना मित्र न बनाओ। वे एक दूसरे के मित्र हैं। और तुममें से जो कोई उनका मित्र बने, तो वह उनमें से ही है। निश्चय ही अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

(52) तो तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है, वे उनके पास जल्दी-जल्दी आ रहे हैं और कह रहे हैं कि "हमें डर है कि कहीं कोई मुसीबत हम पर न आ पड़े।" किन्तु सम्भव है कि अल्लाह अपनी ओर से विजय या कोई निर्णय ले आए और वे उस बात पर पछताने लगें, जो वे अपने मन में छिपा रहे थे।

(53) और जो लोग ईमान लाए वे कहेंगे, "क्या यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की शपथ खाकर कहा था कि हम तुम्हारे साथ थे?" उनके कर्म व्यर्थ हो गए और वे घाटे में पड़ गए।

(54) ऐ ईमान लानेवालो! तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरे, अल्लाह उनके बदले में एक ऐसी क़ौम पैदा करेगा, जिससे वह प्रेम करेगा और जो उससे प्रेम करेंगे, जो ईमानवालों के प्रति नम्र होंगे, इनकार करनेवालों पर प्रबल होंगे, वे अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे और किसी निंदा करनेवाले की निंदा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह का अनुग्रह है, वह जिसे चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

(55) तुम्हारा कोई सहायक नहीं है, परन्तु अल्लाह और उसका रसूल और वे लोग जो ईमान लाए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और रुकूअ करते हैं।

(56) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का सहयोगी हो और जो लोग ईमान लाए, वे अल्लाह के गिरोह के लोग हैं, तो वही प्रभुत्वशाली होंगे।

(57) ऐ ईमान लानेवालो! जो लोग तुम्हारे धर्म को उपहास और मज़ाक बना रहे हैं, उन्हें अपना मित्र न बनाओ, उनमें से जो तुमसे पहले किताब प्राप्त कर चुके हैं और न इनकार करनेवालों में से। और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम ईमानवाले हो।

(58) और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे उसे उपहास और मज़ाक समझते हैं, यह इसलिए कि वे बुद्धि से काम नहीं लेते।

(59) कह दो, "ऐ किताबवालो! क्या तुम हमपर इसलिए नाराज़ हो कि हम अल्लाह पर और जो कुछ हमारी ओर अवतरित हुआ और जो पहले अवतरित हुआ, उसपर ईमान लाए और इस कारण कि तुममें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं?"

(60) कह दो, "क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह की ओर से इससे भी बुरा बदला क्या है? वे लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की और जिनपर उसका क्रोध भड़का और उन्हें बन्दर और सूअर और झूठे देवताओं का बन्दा बना दिया। वही लोग अधिक बुरे स्थान पर हैं और सीधे मार्ग से भटके हुए हैं।"

(61) और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं। किन्तु वे कुफ़्र लेकर ही प्रवेश करते हैं और उसी के साथ वापस भी जाते हैं। जो कुछ वे छिपा रहे थे, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

(62) और तुम उनमें से बहुतों को पाप, अत्याचार और हराम की ओर बढ़ते देखते हो। कितना बुरा है वह काम जो वे कर रहे हैं।

(63) रब्बी और धार्मिक विद्वान उन्हें पापपूर्ण बातें कहने और हराम चीज़ों को खाने से क्यों नहीं रोकते? वे जो कुछ कर रहे हैं वह कितना बुरा है।

(64) और यहूदी कहते हैं, "अल्लाह का हाथ ज़ंजीरों से बंधा हुआ है।" उनके हाथ ज़ंजीरों से बंधे हुए हैं और वे जो कुछ कहते हैं, उसके कारण लानत है। बल्कि उसके दोनों हाथ फैले हुए हैं। वह जो चाहता है, ख़र्च करता है। और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, वह उनमें से बहुतों को अवज्ञा और कुफ़्र में बढ़ा देगा। और हमने उनके बीच क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और द्वेष फैला दिया है। जब भी वे युद्ध की आग जलाते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे सारे देश में फ़साद फैलाते रहते हैं। और अल्लाह फ़साद फैलानेवालों को पसन्द नहीं करता।

(65) और यदि अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम उनसे उनके गुनाह दूर कर देते और उन्हें सुख के जन्नतों में दाखिल कर देते।

(66) और यदि वे तौरात और इंजील और जो कुछ उनके रब की ओर से उन पर उतारा गया है, उसपर क़ायम रहते तो वे अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से भी भोजन करते। उनमें से एक उदार समुदाय भी है, किन्तु उनमें से बहुत से लोग बुरे कर्म करते हैं।

(67) ऐ रसूल! जो कुछ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उतरा है, उसे पहुँचा दो। यदि तुम ऐसा न करो तो तुमने उसका संदेश नहीं पहुँचाया। अल्लाह तुम्हें लोगों से सुरक्षित रखेगा। निस्संदेह अल्लाह इनकार करनेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

(68) कह दो कि ऐ किताबवालो! जब तक तुम तौरात और इंजील और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, उसपर क़ायम न रहो, तब तक तुम किसी चीज़ पर टिके नहीं रह सकते। और जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है, वह उनमें से बहुतों को अवज्ञा और कुफ़्र में बढ़ा देगा। अतः तुम इनकार करनेवाले लोगों पर शोक न करो।

(69) जो लोग ईमान लाए और जो लोग उनसे पहले यहूदी या साबी या ईसाई थे, जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(70) हमने बनी इसराईल से वचन लिया था और उनकी ओर रसूल भेजे थे। जब भी उनके पास कोई रसूल ऐसी चीज़ लेकर आता था जो उनकी आत्माएँ नहीं चाहती थीं, तो वे एक गिरोह को झुठलाते थे और दूसरे गिरोह को क़त्ल कर देते थे।

(71) और उन्होंने सोचा कि उनपर कोई अज़ाब नहीं आएगा, अतः वे अंधे और बहरे हो गए। फिर अल्लाह ने उनकी क्षमा प्रदान की, फिर उनमें से बहुत-से अंधे और बहरे हो गए। और अल्लाह देख रहा है जो कुछ वे कर रहे हैं।

(72) जो लोग कहते हैं कि अल्लाह मरयम का बेटा मसीह है, जबकि मसीह ने कहा है कि ऐ इसराइल की सन्तान! अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। निस्संदेह जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया, उसके लिए अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(73) निश्चय ही वे लोग इनकार करनेवाले हैं, जो कहते हैं कि "अल्लाह तीन में से तीसरा है।" और एक ही पूज्य के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। यदि वे अपनी बातों से बाज़ न आएं तो उनमें से जो इनकार करनेवाले हैं, उनपर अवश्य दुखद यातना आ पड़ेगी।

(74) तो क्या वे अल्लाह की ओर तौबा न करेंगे और उससे क्षमा न माँगेंगे? निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(75) मरयम के बेटे मसीह तो बस एक रसूल थे, उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी माँ भी सत्य की पक्षधर थीं। वे दोनों खाना खाते थे। देखो, हम उनके लिए आयतें कैसे खोल-खोलकर बयान करते हैं, फिर देखो, वे कैसे धोखे में पड़े हैं।

(76) कह दो, "क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी बन्दगी करते हो जो न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सकती है और न कोई लाभ, जबकि अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है?"

(77) कह दो, "ऐ किताबवालो! अपने धर्म में सत्य से अधिक सीमा न लांघो और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो इससे पहले पथभ्रष्ट हो चुके हैं और बहुतों को पथभ्रष्ट कर चुके हैं और मार्ग से भटक गए हैं।"

(78) दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से बनी इसराईल में से जिन लोगों ने इनकार किया उनपर लानत है। यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और अवज्ञाकारी बने रहे।

(79) वे एक दूसरे को अत्याचार से नहीं रोकते थे, जो वे कर रहे थे। कितना बुरा था वह कार्य जो वे कर रहे थे।

(80) तुम देखते हो कि उनमें से बहुत-से लोग इनकार करनेवालों के मित्र बन बैठे हैं। और जो कुछ उन्होंने अपने लिए निकाला है, वह कितना बुरा है, क्योंकि अल्लाह उनसे क्रोधित हो गया है और वे सदैव यातना में रहेंगे।

(81) और यदि वे अल्लाह और पैग़म्बर पर और जो कुछ उनकी ओर अवतरित हुआ उस पर ईमान लाते, तो उन्हें अपना मित्र न बनाते। किन्तु उनमें से बहुत-से लोग अवज्ञाकारी हैं।

(82) तुम ईमान वालों से सबसे अधिक शत्रुता रखने वालों को पाओगे, यहूदी और वे लोग जो अल्लाह का साझी ठहराते हैं, और तुम ईमान वालों से सबसे अधिक प्रेम करने वालों को पाओगे, जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं। यह इसलिए कि उनमें काहिनों और संन्यासियों का वास है और इसलिए कि वे अहंकारी नहीं हैं।

(83) और जब वे सुनते हैं जो रसूल की ओर अवतरित हुआ है, तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसू से भर जाती हैं , उसके कारण जो उन्होंने सत्य को पहचान लिया है। वे कहते हैं, "ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं। अतः हमें गवाहों में शामिल कर ले।"

(84) और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास आया है उस पर ईमान क्यों न लाएँ? और हमें आशा है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ प्रवेश देगा।

(85) अतः अल्लाह ने उन्हें उनके कथन के कारण ऐसे बाग़ प्रदान किये जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे। और यही अच्छे कर्म करनेवालों का बदला है।

(86) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग जहन्नम में पड़नेवाले हैं।

(87) ऐ ईमान वालो! जो अच्छी चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उन्हें हराम न करो और न ज़्यादती करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(88) और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक रोज़ी दी है, उसमें से खाओ और अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

(89) अल्लाह तुमपर तुम्हारी व्यर्थ की क़समों के कारण दोष नहीं लगाता, बल्कि वह तुमपर उन क़समों के कारण दोष लगाता है जो तुमने मानी थीं। तो उसका प्रायश्चित यह है कि तुम अपने परिवार को जो खिलाते हो या उन्हें कपड़ा पहनाते हो, उसमें से दस मुहताजों को खिलाओ या एक गुलाम को आज़ाद करो। लेकिन जो व्यक्ति उसे न दे सके, तो उसे तीन दिन का रोज़ा रखना चाहिए। जब तुम क़सम खा लो, तो यही क़समों का प्रायश्चित है। लेकिन अपनी क़समों की रक्षा करो। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

(90) ऐ ईमान लाने वालों! नशा, जुआ, पत्थर की वेदियाँ और शकुन-बाण, ये सब शैतान की बनाई हुई गंदगी हैं। अतः इनसे बचो, ताकि तुम सफल हो सको।

(91) शैतान तो बस यही चाहता है कि नशे और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच दुश्मनी और द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे। तो क्या तुम बाज़ नहीं आते?

(92) अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो और डरो। यदि तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो कि हमारे रसूल पर तो बस स्पष्ट सूचना देने का दायित्व है।

(93) जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनपर कुछ भी गुनाह नहीं उस चीज़ के बारे में जो उन्होंने खायी। यदि वे अल्लाह से डरें और ईमान लाए और अच्छे कर्म करें, फिर अल्लाह से डरें और ईमान लाएँ, फिर अल्लाह से डरें और अच्छे कर्म करें। और अल्लाह अच्छे कर्म करनेवालों को पसन्द करता है।

(94) ऐ ईमान लाने वालों! अल्लाह अवश्य ही तुम्हारी परीक्षा लेगा उस शिकार से जो तुम्हारे हाथों और भालों की पहुँच में हो, ताकि अल्लाह उन लोगों को प्रत्यक्ष कर दे जो उससे डरते हैं। फिर जो इसके पश्चात भी अवज्ञा करेगा, उसके लिए दुखद यातना है।

(95) ऐ ईमान लाने वालों! जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार को न मारो। और तुममें से जो कोई जानबूझ कर उसे मारे तो उसकी सज़ा क़ुर्बानी के जानवर के बराबर है, जैसा कि तुममें से दो न्यायप्रिय लोग तय करें, या तो काबा में क़ुरबानी करके या प्रायश्चित करके, या ज़रूरतमंदों को खाना खिलाकर या रोज़े रखकर, ताकि वह अपने कर्म का फल चख सके। अल्लाह ने जो बीत गया उसे माफ़ कर दिया है, लेकिन जो फिर से लौटेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह प्रभुत्वशाली और बदला लेने वाला है।

(96) समुद्र का शिकार और उसका भोजन तुम्हारे लिए हलाल है, ताकि तुम और मुसाफिर दोनों इसका सेवन कर सको। लेकिन थल का शिकार तुम्हारे लिए हराम है, जब तक तुम एहराम की हालत में हो। और अल्लाह से डरो, जिसकी ओर तुम एकत्र किये जाओगे।

(97) अल्लाह ने लोगों के लिए पवित्र घर काबा बनाया और हराम महीनों और क़ुर्बानी के जानवरों और हारों को पवित्र बनाया। ताकि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(98) जान लो कि अल्लाह अत्यन्त कठोर दण्ड देनेवाला है और निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(99) रसूल पर तो बस सूचना देने का ही दायित्व है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।

(100) कह दो, "बुराई और भलाई एक समान नहीं हो सकती, यद्यपि बुराई की अधिकता तुम्हें प्रभावित कर सकती है।" अतः ऐ बुद्धि वालों, अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको।

(101) ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में न पूछो जो अगर तुम्हारे सामने पेश कर दी जाएँ तो तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाएँगी, लेकिन अगर तुम उनके बारे में इस दौरान पूछोगे कि क़ुरआन अवतरित हो रहा है तो वे तुम्हारे सामने पेश कर दी जाएँगी। अल्लाह ने जो कुछ बीत गया उसे क्षमा कर दिया है और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, सहनशील है।

(102) तुमसे पहले भी कुछ लोगों ने ऐसे ही प्रश्न पूछे थे, फिर वे उनके कारण इनकार करनेवाले हो गये।

(103) अल्लाह ने न तो बहीरा, न सायबा, न वसीला, न हाम अवतरित की है, किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, वे अल्लाह पर मिथ्या बातें गढ़ते हैं और उनमें से अधिकतर लोग बुद्धि नहीं लगाते।

(104) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जो अल्लाह ने उतारी है और रसूल की ओर, तो कहते हैं कि हमारे लिए वही काफ़ी है जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया, हालाँकि उनके बाप-दादा कुछ भी नहीं जानते थे और न वे सीधे मार्ग पर थे।

(105) ऐ ईमान वालो! तुम पर स्वयं अपने लिए ज़िम्मेदारी है। जो लोग भटक गए, वे तुम्हें कुछ नहीं पहुँचा सकते, जबकि तुम मार्ग पर आ गए। तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौटना है। फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

(106) ऐ ईमान वालो! जब तुममें से कोई वसीयत के समय मृत्यु के निकट पहुँच जाए, तो तुममें से दो धर्मी लोगों की गवाही ली जानी चाहिए, या यदि तुम धरती से होकर यात्रा कर रहे हो और मृत्यु की विपत्ति तुम पर आ पड़े, तो बाहर से दो लोगों की गवाही ली जानी चाहिए। नमाज़ के बाद उन्हें रोक लो, और यदि तुम्हें संदेह हो तो वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ, "हम इसे मूल्य के बदले में नहीं लेंगे, चाहे वह हमारा निकट सम्बन्धी ही क्यों न हो, और हम अल्लाह की गवाही से नहीं रुकेंगे। निश्चय ही हम पापियों में से हो जाएँगे।"

(107) फिर यदि यह पाया जाए कि उन दोनों ने पाप किया है, तो उनके स्थान पर दो और लोगों को खड़ा कर देना चाहिए, जो हलाल हक़ वालों में से सबसे निकट के हों। और वे अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उनकी गवाही से सच्ची है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की। निश्चय ही हम अत्याचारियों में से हो जाएँगे।

(108) अधिक सम्भावना यह है कि वे उसके अनुसार गवाही दें, या उन्हें भय हो कि उनकी शपथों के पश्चात् कोई और शपथ न ले ले। और अल्लाह से डरो और सुनो, अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

(109) जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा और कहेगा कि "तुम्हें क्या जवाब मिला?" वे कहेंगे कि हमें कुछ भी ज्ञान नहीं, निस्संदेह तू ही परोक्ष को जाननेवाला है।

(110) जिस दिन अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा! अपने ऊपर और अपनी माँ पर मेरे उपकार को याद करो, जबकि मैंने तुम्हें पवित्र आत्मा के द्वारा सहारा दिया और तुम पालने में और वयस्क अवस्था में लोगों से बात करते थे। और जब मैंने तुम्हें लेखन और ज्ञान और तौरात और इंजील की शिक्षा दी और जब तुमने मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी के समान एक आकृति बनाई, फिर उसमें फूंक मारी, तो वह मेरी अनुमति से पक्षी बन गई और तुमने मेरी अनुमति से अंधे और कोढ़ी को अच्छा किया और जब तुमने मेरी अनुमति से मुर्दों को निकाला और जब मैंने बनी इसराईल को रोक दिया कि तुम उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए और उनमें से इनकार करनेवाले कहने लगे कि यह तो बस खुला जादू है।"

(111) और याद करो जब मैंने अपने शिष्यों की ओर वह़्यी भेजी कि मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए। अतः तुम गवाही दो कि हम आज्ञाकारी हैं।

(112) याद करो जब उनके शिष्यों ने कहा कि ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा रब आकाश से भोजन से सजी हुई मेज़ उतार सकता है? ईसा ने कहा कि यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरो।

(113) उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे दिलों को तसल्ली हो जाए और जान लें कि तूने हमारे साथ सच्चा व्यवहार किया है और तू उसके गवाहों में से हो।"

(114) मरयम के बेटे ईसा ने कहा, "ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आकाश से एक मेज़ उतार दे, जो हमारे लिए एक उत्सव हो - हमारे पहले लोगों के लिए और हमारे बाद वालों के लिए - और तेरी ओर से एक निशानी हो। और हमें रोज़ी दे। निस्संदेह तू ही सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।"

(115) अल्लाह ने कहा, "मैं इसे तुमपर अवश्य उतारूँगा। फिर जो कोई इसके बाद तुममें से इनकार करेगा, तो मैं उसे ऐसी सज़ा दूँगा, जैसी मैंने संसार में किसी को नहीं दी।"

(116) और उस दिन से डरो जब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा पूज्य बना लो?" वह कहेगा, "हे प्रभु! मुझे वह बात कहने का अधिकार नहीं है जिसका मैं हक़ नहीं रखता। यदि मैं कहता तो तू उसे जान लेता। तू जानता है जो कुछ मेरे भीतर है, और मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे भीतर है। निस्संदेह, तू ही परोक्ष को जाननेवाला है।"

(117) मैंने उनसे केवल वही कहा जो तूने मुझे आदेश दिया कि अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। जब तक मैं उनके बीच था, उनपर साक्षी था, फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उनपर निगरानी करनेवाला हो गया, और तू ही हर चीज़ पर साक्षी है।

(118) यदि तू उन्हें दण्ड दे तो वे तेरे बन्दे हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे तो तू ही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(119) अल्लाह कहेगा, "यह वह दिन है जब सच्चे लोग अपनी सच्चाई से लाभ उठाएँगे।" उनके लिए जन्नत के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे, अल्लाह उनसे प्रसन्न होगा और वे उससे। यही बड़ी सफलता है।

(120) अल्लाह ही का राज्य है आकाशों और धरती का और जो कुछ उनमें है उसका। और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

# सूरा 6: **ٱلْأَنْعَام‎ (अल-अनआम)** - पशुधन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और अँधेरे और प्रकाश को स्थापित किया। फिर भी जिन लोगों ने इनकार किया, वे अपने रब के बराबर लोगों को ठहराते हैं।

(2) वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और एक अवधि निर्धारित कर दी। उसके पास एक निश्चित समय है, फिर भी तुम संदेह में पड़े रहते हो।

(3) वही अल्लाह है जो आकाशों में है और धरती में है। वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो, और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(4) जब भी उनके पास उनके रब की ओर से कोई निशानी आती है तो वे उसे झुठला देते हैं।

(5) जब सत्य उनके पास आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया, किन्तु शीघ्र ही वे जान जायेंगे कि वे किस बात का उपहास कर रहे थे।

(6) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितनी नस्लों को विनष्ट कर दिया? हमने उन्हें धरती पर उससे भी अधिक मज़बूती से स्थापित किया था, जितना कि हमने तुम्हें स्थापित किया है। हमने उन पर आकाश से बहुत अधिक वर्षा बरसाई और उनके नीचे नहरें बहा दीं। फिर हमने उनके पापों के कारण उन्हें विनष्ट कर दिया और उनके पश्चात अन्य नस्लें उत्पन्न कीं।

(7) यदि हम तुमपर कोई किताब उतार दें जो चर्मपत्र पर लिखी हो और वे उसे अपने हाथों से छू लें तो भी इनकार करनेवाले कहेंगे, "यह तो खुला जादू है।"

(8) और वे कहते हैं, "उसकी ओर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?" यदि हम कोई फ़रिश्ता उतार देते तो मामला फ़ैसला हो चुका होता और उन्हें मुहलत न दी जाती।

(9) और यदि हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो उसे मनुष्य बनाकर उसमें उलझा देते जिसमें वे उलझे हुए हैं।

(10) तुमसे पहले भी बहुत से रसूलों का उपहास किया गया, फिर जो लोग उनका उपहास करते थे, वे उसी में डूब गए, जिसका वे उपहास करते थे।

(11) कह दो, "धरती में चलो-फिरो और झुठलानेवालों का परिणाम देखो।"

(12) पूछो, "आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह किसका है?" कह दो, "अल्लाह का है!" उसने अपने ऊपर दया का आदेश दिया है। वह तुम्हें क़ियामत के दिन अवश्य एकत्र करेगा, जिसमें कोई संदेह नहीं। जो लोग खोये हुए हैं, वे ईमान नहीं लाते।

(13) और जो कुछ रात और दिन में रहता है, वह सब उसी का है। वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(14) कहो, "क्या मैं अल्लाह के अलावा कोई दूसरा संरक्षक बनाऊँ, जो आकाशों और धरती का जन्मदाता है, जो खिलाता भी है और नहीं भी खिलाता?" कह दो, "मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सबसे पहले आज्ञाकारी बनूँ।" और तुम साझी ठहरानेवालों में न हो जाओ।

(15) कह दो, "यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

(16) जो कोई उस दिन उससे बच गया, उसपर अल्लाह ने दया की, और यही स्पष्ट सफलता है।

(17) यदि अल्लाह तुमपर कोई मुसीबत डाले तो उसके सिवा कोई उसे दूर नहीं कर सकता और यदि वह तुम्हें कोई भलाई प्रदान करे तो वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(18) वह अपने बन्दों पर प्रभुत्वशाली है, वह अत्यन्त तत्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

(19) कहो, "सबसे बड़ी गवाही कौन सी है?" कहो, "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है। यह क़ुरआन मेरी ओर अवतरित हुआ है, ताकि मैं तुम्हें और जिस किसी को यह पहुँचे, उसे सावधान कर दूँ। क्या तुम सचमुच गवाही देते हो कि अल्लाह के अलावा और भी पूज्य-प्रभु हैं?" कहो, "मैं गवाही नहीं देता।" कह दो, "वह अकेला पूज्य है, और मैं उससे निरपेक्ष हूँ, जिसे तुम साझी ठहराते हो।"

(20) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। और जिन लोगों ने अपने आपको खो दिया, वे ईमान नहीं लाएँगे।

(21) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले या उसकी आयतों को झुठला दे? निश्चय ही ज़ालिम कभी सफल नहीं होते।

(22) जिस दिन हम उन सबको एकत्र करेंगे, तो उन लोगों से जो साझी ठहराते थे, कहेंगे, "तुम्हारे वे साझी कहाँ हैं, जिन्हें तुम साझी कहते थे?"

(23) फिर तो बस यही कहना होगा कि "हमारे रब अल्लाह की क़सम! हम मुश्रिक नहीं थे।"

(24) देखो, वे अपने विरुद्ध कितना झूठ बोलते हैं और जो कुछ वे घड़ते थे, वह उनसे छिन गया।

(25) उनमें से कुछ लोग तुम्हारी बात सुनते हैं, किन्तु हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं, ताकि वे उसे समझ न सकें और उनके कानों में बहरापन डाल दिया है। यदि वे हर निशानी भी देख लें, तो भी उस पर ईमान न लाएँगे। यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास झगड़ते हुए आते हैं, तो इनकार करनेवाले कहते हैं, "यह तो बस पिछले लोगों की कहानियाँ हैं।"

(26) वे दूसरों को उससे रोकते हैं और स्वयं भी उससे दूर रहते हैं। वे अपने सिवा किसी को नष्ट नहीं करते, किन्तु वे उसे नहीं समझते।

(27) यदि तुम देखते, जब वे आग के सामने खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे, "काश! हम लौटा दिये जाते और अपने रब की आयतों को झुठलाते न और ईमानवालों में सम्मिलित हो जाते।"

(28) किन्तु जो कुछ उन्होंने पहले छिपाया था, वही अब उनके सामने आ गया है। और यदि उन्हें लौटा भी दिया जाए, तो वे उसी ओर फिरेंगे, जिसपर उन्हें हराम किया गया था। निश्चय ही वे झूठे हैं।

(29) और वे कहते हैं, "हमारे लिए सांसारिक जीवन ही शेष है और हम पुनः जीवित नहीं किये जायेंगे।"

(30) यदि तुम देखते कि जब वे अपने रब के सामने खड़े किये जायेंगे तो वह कहेगा, "क्या यह सत्य नहीं है?" वे कहेंगे, "हाँ, हमारे रब की क़सम!" वह कहेगा, "अच्छा, अब उस यातना का मज़ा चखो, जिसे तुम झुठलाते रहे थे।"

(31) निश्चय ही वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अल्लाह से मिलने का इन्कार किया, यहाँ तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ जाएगी तो वे कहेंगे, "हाय! हम पर अफ़सोस, हमने उसमें क्या कोताही की।" और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। निस्संदेह, जो कुछ वे उठा रहे हैं वह बहुत बुरा है।

(32) सांसारिक जीवन तो बस खेल और मनोरंजन है, किन्तु आख़िरत का घर उन लोगों के लिए सर्वोत्तम है, जो डर रखनेवाले हों। तो क्या तुम समझते नहीं?

(33) हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हें दुःख होता है। वे तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं।

(34) तुमसे पहले भी बहुत से रसूलों को झुठलाया गया, फिर उन्होंने झुठलाने और सताने को सहन किया, यहाँ तक कि हमारी सहायता उनके पास आ गयी। अल्लाह की बात को कोई नहीं बदल सकता। तुम्हारे पास रसूलों के विषय में कुछ सूचना आ चुकी है।

(35) यदि उनका क्रोध तुम्हारे लिए भारी हो, तो यदि तुम धरती में सुरंग या आकाश में सीढ़ी ढूँढ़ सको, तो उनके पास कोई निशानी ले आओ। यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अतः तुम अज्ञानियों में न हो जाओ।

(36) केवल वही लोग उत्तर देंगे जो सुनेंगे। रहे मुर्दे तो अल्लाह ही उन्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर वे लौटाये जायेंगे।

(37) वे कहते हैं, "उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "अल्लाह निशानी उतारने पर सामर्थ्य रखता है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।"

(38) धरती में कोई प्राणी या पक्षी नहीं जो अपने पंखों से उड़ता हो, परन्तु तुम्हारे समान कोई समुदाय नहीं है। हमने किताब में कोई कमी नहीं की। फिर वे अपने पालनहार की ओर एकत्र किये जायेंगे।

(39) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे अँधेरे में बहरे और गूंगे हैं। अल्लाह जिसे चाहता है, उसे गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है, उसे सीधी राह पर लगा देता है।

(40) कह दो, "क्या तुमने सोचा है कि यदि अल्लाह की यातना तुम पर आ जाए या क़ियामत आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?"

(41) कदापि नहीं, तुम उसी को पुकारोगे, और यदि वह चाहे तो जिस चीज़ के लिए तुम उसे पुकारते हो, उसे दूर कर देगा और तुम भूल जाओगे कि तुम किसको साझीदार मानते हो।

(42) हमने तुमसे पहले भी बहुत-सी जातियों की ओर रसूल भेजे, फिर हमने उन्हें कष्ट और परेशानी में डाला, ताकि वे नम्र हो जाएँ।

(43) फिर जब उनपर हमारी यातना आ गयी तो वे क्यों नम्रता से काम न लेने लगे? परन्तु उनके दिल कठोर हो गये और शैतान ने जो कुछ वे कर रहे थे, उसे उनके लिए आकर्षक बना दिया।

(44) फिर जब वे भूल गए, जो कुछ उन्हें सिखाया गया था, तो हमने उनके लिए हर चीज़ के द्वार खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ पर प्रसन्न हुए जो उन्हें दी गई थी, तो हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, और वे निराश हो गए।

(45) अतः अत्याचारी लोग नष्ट हो गये। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

(46) कह दो, "क्या तुमने सोचा है कि यदि अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के अलावा कौन ऐसा पूज्य-प्रभु है जो उन्हें तुम्हें लौटा सके?" देखो, हम आयतों को किस प्रकार विभक्त करते हैं, फिर भी वे मुँह फेर लेते हैं।

(47) कह दो, "क्या तुमने सोचा कि यदि अल्लाह की यातना तुमपर अचानक या खुलेआम आ पड़े, तो क्या अत्याचारी लोगों के अतिरिक्त कोई नष्ट होगा?"

(48) हम रसूलों को केवल शुभ सूचना देने वाले और सचेत करने वाले बनाकर भेजते हैं। अतः जो कोई ईमान लाए और सुधार लाए, तो न तो उसपर कोई भय होगा और न वह शोकाकुल होगा।

(49) किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें तो उनकी अवज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।

(50) कह दो, "मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मैं अल्लाह के ख़ज़ानों का स्वामी हूँ और न मैं परोक्ष को जानता हूँ और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ। मैं तो बस उसी चीज़ का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर प्रकाशना की जाती है।" कह दो, "क्या अंधा और देखनेवाला बराबर हैं? तो क्या तुम विचार नहीं करते?"

(51) और इसके द्वारा उन लोगों को डराओ जो इस बात से डरते हैं कि वे अपने रब के पास इकट्ठे किये जायेंगे, क्योंकि उसके सिवा उनका न कोई संरक्षक होगा और न सिफ़ारिश करनेवाला, ताकि वे डरें।

(52) जो लोग अपने रब को प्रातःकाल और सायं पुकारते हैं, उसकी प्रसन्नता की इच्छा से, उन्हें न विदा करो। न तुम उनके लिए किसी बात में उत्तरदायी हो और न वे तुम्हारे लिए किसी बात में उत्तरदायी हैं। यदि तुम उन्हें विदा कर दोगे तो तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे।

(53) इस प्रकार हमने उनमें से कुछ को दूसरों के द्वारा परखा, ताकि वे कहें, "क्या यही वे लोग हैं जिनपर अल्लाह ने हममें से अनुग्रह किया है?" क्या अल्लाह कृतज्ञता दिखानेवालों को अधिक नहीं जानता?

(54) और जब वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाए तुम्हारे पास तो कह दो कि "तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर दया का आदेश कर रखा है कि तुममें से जो कोई अज्ञानता से कोई बुरा काम कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और सुधार कर ले, तो निस्संदेह वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(55) इसी प्रकार हम आयतों को स्पष्ट करके बयान करते हैं, ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए।

(56) कह दो, "मुझे तो अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी तुम पूजा करते हो, उनकी बन्दगी से रोका गया है।" कह दो, "मैं तुम्हारी इच्छाओं का अनुसरण नहीं करूँगा। अन्यथा मैं पथभ्रष्ट हो जाता और मार्ग पानेवालों में से न होता।"

(57) कह दो, "मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर हूँ, किन्तु तुमने उसे झुठला दिया। मेरे पास वह नहीं है, जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। निर्णय तो बस अल्लाह के हाथ में है। वही सत्य कहता है और वही सर्वोत्तम निर्णयकर्ता है।"

(58) कह दो, "यदि मुझे वह मिल जाता जिसकी तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे बीच का मामला तय हो चुका होता। किन्तु अल्लाह अत्याचारियों को अधिक जानता है।"

(59) उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं, उसके सिवा कोई उन्हें नहीं जानता। वही जानता है जो ज़मीन में है और जो दरिया में है। एक पत्ता भी ऐसा नहीं गिरता जो उसे मालूम न हो। धरती के अँधेरे में एक दाना भी ऐसा नहीं है और न कोई ताज़ा या सूखा पदार्थ ऐसा है जो किसी स्पष्ट पुस्तक में लिखा न हो।

(60) वही है जो रात को तुम्हारे प्राणों को ले जाता है और दिन में जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर वह तुम्हें उसमें जीवित करता है, ताकि एक निश्चित अवधि पूरी हो जाए। फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है। फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

(61) वह अपने बन्दों पर प्रभुत्वशाली है और वह तुम्हारे ऊपर फ़रिश्ते भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु आ जाती है तो हमारे रसूल उसे ले लेते हैं और वे (अपने) कामों में कभी चूकते नहीं।

(62) फिर वे अल्लाह की ओर लौटाये जायेंगे, जो उनका सच्चा पालनहार है। निश्चय ही निर्णय उसी का है और वह बहुत शीघ्र हिसाब लेनेवाला है।

(63) कह दो, "कौन है जो तुम्हें थल तथा जल के अँधेरे से बचाता है, जबकि तुम उसे चुपचाप पुकारते हो कि यदि वह हमें इससे बचा ले तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे?"

(64) कह दो, "अल्लाह ही है जो तुम्हें उससे और हर मुसीबत से बचाता है। फिर भी तुम दूसरों को उसका साझी ठहराते हो।"

(65) कह दो, "वही तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से यातना भेजने पर समर्थ है, या तुम्हें गिरोहों में उलझा दे और एक दूसरे की हिंसा का मज़ा चखा दे।" देखो, हम कैसे आयतों को विभिन्नता से बयान करते हैं, ताकि वे समझें।

(66) किन्तु तुम्हारी क़ौम ने झुठला दिया, यद्यपि यह सत्य है। कह दो, "मैं तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं हूँ।"

(67) प्रत्येक सूचना के लिए एक समय निर्धारित है, और शीघ्र ही तुम जान लोगे।

(68) जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में बहस कर रहे हैं तो उनसे मुँह फेर लो, यहाँ तक कि वे कोई दूसरी बात करने लगें। और यदि शैतान तुम्हें भुला दे तो नसीहत के पश्चात अत्याचारी लोगों के साथ न बैठो।

(69) जो लोग अल्लाह से डरते हैं, उनसे किसी बात में कोई उत्तरदायित्व नहीं लिया जाएगा, परन्तु केवल एक शिक्षा दी जाएगी, ताकि वे उससे डरते रहें।

(70) छोड़ो उन लोगों को जिन्होंने अपने दीन को मनोरंजन और मनोरंजन बना लिया है और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखा दे दिया है। और क़ुरआन से याद दिलाओ कि कहीं ऐसा न हो कि कोई प्राणी अपने कर्मों के कारण विनाश में पड़ जाए। अल्लाह के सिवा उसका कोई संरक्षक और सिफ़ारिश करनेवाला न हो। और यदि वह हर प्रकार का बदला भी दे तो भी उससे वह स्वीकार न होगा। वही लोग अपने कर्मों के कारण नष्ट हो जाएँगे। उनके लिए खौलता हुआ पानी और दुखद यातना है, क्योंकि वे इनकार करते रहे।

(71) कहो, "क्या हम अल्लाह के सिवा उस चीज़ को पुकारें जो न हमें लाभ पहुँचाए और न हानि पहुँचाए, और पीछे लौट जाएँ, जबकि अल्लाह ने हमें मार्ग दिखा दिया है? तो हम उस व्यक्ति के समान हो जाएँगे जिसे शैतानों ने बहका दिया कि वह धरती में भटकता रहे, और उसके साथी उसे मार्ग की ओर बुला रहे हों, और कह रहे हों कि हमारे पास आ जाओ।" कह दो, "अल्लाह का मार्ग ही मार्ग है, और हमें आदेश दिया गया है कि हम सारे संसार के रब के आज्ञाकारी बनें।

(72) और नमाज़ क़ायम करो और उसी का डर रखो। और वही है जिसकी ओर तुम एकत्र किये जाओगे।

(73) वही है जिसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। जिस दिन उसने कहा कि "हो जा" और वह हो गई, तो उसका वचन सत्य है। जिस दिन सूर फूँका जाएगा, उस दिन राज्य उसी का है। वह परोक्ष और प्रत्यक्ष को जाननेवाला है। वह तत्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

(74) याद करो जब इबराहीम ने अपने पिता आज़र से कहा, "क्या तुम मूर्तियों को ईश्वर मानते हो? वास्तव में मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ।"

(75) इसी प्रकार हमने इबराहीम को आकाशों और धरती का साम्राज्य दिखाया, ताकि वह निश्चित लोगों में से हो।

(76) फिर जब रात ने उसपर छाया की तो उसने एक तारा देखा। उसने कहा, "यह मेरा रब है।" फिर जब वह छिप गया तो उसने कहा, "मैं छिपनेवालों को पसन्द नहीं करता।"

(77) जब उसने चाँद को उगते देखा तो कहा, "यह मेरा रब है।" फिर जब चाँद डूब गया तो कहा, "यदि मेरा रब मुझे मार्ग न दिखा दे तो मैं भी पथभ्रष्ट लोगों में हो जाऊँगा।"

(78) जब उसने सूर्य को उदय होते देखा तो कहा, "यह मेरा रब है, यह बड़ा है।" फिर जब वह डूब गया तो कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं उससे मुक्त हूँ जिसे तुम अल्लाह का साझी ठहराते हो।

(79) निश्चय ही मैंने अपना मुख उसकी ओर फेरा है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, और मैं सत्य की ओर झुका हूँ। और मैं अल्लाह का साझी ठहरानेवालों में से नहीं हूँ।

(80) उसकी क़ौम के लोगों ने उससे झगड़ना शुरू कर दिया। उसने कहा, "क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो, जबकि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है? मैं उससे नहीं डरता जिसे तुम साझीदार ठहराते हो, जब तक कि मेरा रब कुछ न चाहे। मेरा रब हर चीज़ को अपने ज्ञान में घेरे हुए है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं देते?

(81) और मैं कैसे डरूँ उस व्यक्ति से जिसे तुम साझीदार ठहराते हो, जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का साझीदार उस व्यक्ति को बनाया है, जिसका कोई प्रमाण उसने तुमपर नहीं उतारा। तो यदि तुम जानते हो, तो दोनों गिरोहों में से कौन अधिक सुरक्षित है?"

(82) जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को अन्याय से नहीं मिलाया, वही लोग सुरक्षित हैं और वही मार्ग पर हैं।

(83) यह हमारी दलील है जो हमने इबराहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसे चाहते हैं दर्जा देते हैं। निस्संदेह तुम्हारा रब तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

(84) हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए, उन सबको हमने मार्ग दिखाया। और नूह को भी हमने मार्ग दिखाया, और उसकी सन्तान में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी हमने मार्ग दिखाया। इसी प्रकार हम अच्छे कर्म करनेवालों को बदला देते हैं।

(85) और जकरयाह और यूहन्ना और यीशु और एलिय्याह सब धर्मी थे।

(86) और इसमाईल और इलीशा और यूनुस और लूत, और उन सबको हमने सारे संसार पर वरीयता दी।

(87) और उनमें से कुछ लोग उनके बाप-दादा और उनकी संतान और उनके भाई थे, तो हमने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधे मार्ग पर चलाया।

(88) यह अल्लाह का मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, मार्ग दिखाता है। फिर यदि वे उसके साथ किसी और को साझी ठहराते, तो जो कुछ वे करते, वह सब उनके लिए व्यर्थ हो जाता।

(89) वही लोग हैं जिन्हें हमने किताब और अधिकार और नबूवत प्रदान की है। फिर यदि वे उसे झुठलाएँ तो हमने उसे ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इनकार करनेवाले नहीं हैं।

(90) वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया है। अतः तुम भी उनके मार्ग पर चलो। कह दो, "मैं तुमसे इसके बदले कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। यह तो बस सारे संसार के लिए एक नसीहत है।"

(91) उन्होंने अल्लाह का सही मूल्यांकन नहीं किया, जबकि उन्होंने कहा कि "अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कोई चीज़ नहीं उतारी।" कहो, "किसने किताब उतारी, जिसे मूसा ने प्रकाश और मार्गदर्शन बनाकर लोगों के पास पहुँचाया? तुम उसे कई पन्ने बनाते हो, कुछ को खोल देते हो और बहुत कुछ छिपा देते हो। तुम्हें वह सिखाया गया है, जो न तुम जानते थे, न तुम्हारे बाप-दादा।" कह दो, "अल्लाह ने उतारा है।" फिर तुम उन्हें छोड़ दो, अपनी-अपनी बातों में, कि वे अपने-अपने मनोरंजन में लगे रहें।

(92) यह एक बरकत वाली किताब है, जो हमने उतारी है, जो उससे पहले की किताबों की पुष्टि करती है, ताकि तुम मक्का और उसके आस-पास के लोगों को सचेत करो। जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे इस पर ईमान रखते हैं और वे अपनी नमाज़ों को क़ायम रखते हैं।

(93) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले या कहे कि मुझ पर वह उतरी है, हालाँकि उस पर कुछ भी नहीं उतरा और जो कहे कि मैं भी वही उतारूँगा, जैसा अल्लाह ने उतारा है। यदि तुम देख पाते कि ज़ालिम मौत की पीड़ा में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाएँगे कि बचा लो! आज तुम्हें अपमानित किया जाएगा, उस बात के कारण जो तुम अल्लाह पर सत्य के सिवा कुछ और कहते रहे हो और उस बात के कारण जो तुम उसकी आयतों के प्रति अहंकार करते रहे हो।

(94) "तुम हमारे पास अकेले आए हो, जैसे हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था, उसे तुम पीछे छोड़ गए हो। हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफ़ारिश करनेवालों को नहीं देखते, जिनके बारे में तुम कहते थे कि वे साझीदार हैं। तुम्हारे बीच का सम्बन्ध टूट गया है और जो कुछ तुम कहते थे, वह तुमसे छिन गया है।"

(95) निस्संदेह अल्लाह ही अन्न और खजूर को छीलनेवाला है। वही मुर्दों में से जीवित को निकालता है और मुर्दों को जीवित में से निकालता है। वही अल्लाह है। तो फिर तुम कहाँ धोखे में पड़े हो?

(96) वह भोर का समय बतानेवाला है, और उसने विश्राम के लिए रात्रि को बनाया है, और हिसाब के लिए सूर्य और चन्द्रमा को बनाया है। यह प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का निश्चय है।

(97) वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके द्वारा थल और जल के अँधेरों में मार्ग पाओ। और हमने निशानियाँ खोलकर बता दी हैं, उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हों।

(98) वही है जिसने तुम्हें एक प्राण से उत्पन्न किया और तुम्हारे लिए रहने का स्थान और आश्रय प्रदान किया। हमने उन लोगों के लिए निशानियाँ खोलकर बता दी हैं जो बुद्धि रखते हैं।

(99) वही है जिसने आकाश से वर्षा बरसाई, फिर हमने उसके द्वारा हर चीज़ को उगाया। हमने उससे हरियाली उगाई, जिससे हमने अनाज के टुकड़े लगाए। और खजूरों से उनके छिलकों से छोटे-छोटे गुच्छे निकले। और हमने अंगूर, जैतून और अनार के बाग़ उगाए, जो एक जैसे होते हुए भी भिन्न-भिन्न होते हैं। उनके फलों को देखो, जब वे फल दें और उनके पकने को भी। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाए।

(100) फिर भी वे अल्लाह का साझी ठहराते हैं - जिन्नों को, हालाँकि उसी ने उन्हें पैदा किया है - और वे उसके बेटे और बेटियाँ भी झूठे ठहराते हैं, बिना अज्ञान के। वह महान है और उससे कहीं उच्च है, जो वे वर्णन करते हैं।

(101) वह आकाशों और धरती का रचयिता है, उसका कोई पुत्र कैसे हो सकता है, जबकि उसका कोई साथी नहीं है, और उसी ने हर चीज़ पैदा की है, वह हर चीज़ को जाननेवाला है।

(102) वही अल्लाह है, तुम्हारा पालनहार, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वही हर चीज़ का रचयिता है। अतः उसी की बन्दगी करो, वही हर चीज़ का प्रबन्धक है।

(103) उसे आँख नहीं देखती, परन्तु वह सब आँखों को देख लेता है, वह सूक्ष्म, सर्वज्ञ है।

(104) "तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से प्रकाश आ चुका है। अतः जो देखता है, वह अपने ही हित में ऐसा करता है और जो अंधा है, तो वह अपने ही विरुद्ध है। मैं तुम्हारा संरक्षक नहीं हूँ।"

(105) इस प्रकार हम आयतों में विविधता लाते हैं, ताकि वे कहें, "तुमने पढ़ लिया है।" और ताकि हम उसे उन लोगों के लिए स्पष्ट कर दें जो जानते हों।

(106) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसका अनुसरण करो। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। और साझीदारों से मुँह मोड़ लो।

(107) यदि अल्लाह चाहता तो वे उसका साझी न ठहराते और न हमने तुम्हें उनपर संरक्षक बनाया है और न तुम पर उनका दायित्व है।

(108) और अल्लाह के सिवा जिनको वे पुकारते हैं, उनकी निन्दा न करो, कहीं ऐसा न हो कि वे अज्ञानता के कारण शत्रुता में आकर अल्लाह की निन्दा करें। इसी प्रकार हमने प्रत्येक समुदाय के लिए उनके कर्मों को प्रिय बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब की ओर लौटना है, फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे।

(109) वे अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें खाते हैं कि यदि उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे उसपर अवश्य ईमान लाएँगे। कह दो, "निशानियाँ तो बस अल्लाह के पास हैं।" तुमको क्या मालूम कि यदि वह आ भी जाए तो वे ईमान न लाएँगे?

(110) हम उनके दिलों और उनकी आँखों को फेर देंगे, जिस तरह उन्होंने पहली बार ईमान लाने से इनकार किया था, और हम उन्हें उनकी अवज्ञा में अंधे होकर भटकते हुए छोड़ देंगे।

(111) यदि हम उनपर फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बात करते और हम उनके सामने हर चीज़ इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। किन्तु उनमें से अधिकतर लोग अज्ञानी हैं।

(112) इसी प्रकार हमने प्रत्येक नबी के लिए मनुष्यों और जिन्नों में से शैतानों को शत्रु बना दिया है, जो एक दूसरे को भ्रामक बातें सिखाते हैं। यदि तुम्हारा रब चाहता तो वे ऐसा न करते। अतः छोड़ दो उन्हें और जो कुछ वे गढ़ते हैं।

(113) ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल आख़िरत की ओर झुक जाएँ और वे उससे संतुष्ट हो जाएँ और वे जो कुछ कर रहे हैं, करें।

(114) "क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और का न्यायकर्ता को ढूँढ़ूँ, जबकि वही है जिसने तुम्हारे पास किताब उतारी है?" जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे जानते हैं कि वह तुम्हारे रब की ओर से सत्य के साथ उतारी गई है। अतः तुम संदेह करनेवालों में न हो जाओ।

(115) तुम्हारे रब की बात सत्य और न्याय के साथ पूरी हो चुकी है। कोई उसकी बात को बदल नहीं सकता। और वह सुनने वाला जानने वाला है।

(116) यदि तुम धरती में रहने वालों में से अधिकतर की बात मान लो तो वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे, वे तो बस अटकलें लगाते हैं और झूठ बोलते हैं।

(117) निस्संदेह तुम्हारा रब ही भली-भाँति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटक गया और वही मार्ग पानेवालों को भी भली-भाँति जानता है।

(118) अतः खाओ उसमें से जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, यदि तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो।

(119) तुम उस चीज़ को क्यों न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जबकि उसने तुम्हें विस्तार से बता दिया है कि उसने तुम्हें क्या-क्या हराम किया है, सिवाय उस चीज़ के जिस पर तुम मजबूर हो? बहुत से लोग अपनी इच्छाओं के कारण दूसरों को गुमराह कर देते हैं, बिना ज्ञान के। निस्संदेह तुम्हारा रब उल्लंघन करनेवालों को अधिक जानता है।

(120) पाप के प्रत्यक्ष और गुप्त पहलुओं को छोड़ दो। निस्संदेह, जिन लोगों ने पाप किया है, उन्हें उनके कर्मों का प्रतिफल अवश्य मिलेगा।

(121) और जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, उसे न खाओ। निश्चय ही वह अवज्ञा है। शैतान अपने साथियों को तुमसे झगड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। यदि तुम उनकी बात मानो तो निश्चय ही तुम मुश्रिक हो जाओगे।

(122) क्या वह व्यक्ति जो मुर्दा था, उसे हमने जीवित कर दिया और उसके लिए प्रकाश बना दिया जिसके द्वारा वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति के समान है जो अंधकार में हो और उससे कभी बाहर न निकले? इस प्रकार, इनकार करनेवालों को वह सब अच्छा लगा जो वे करते रहे।

(123) इसी प्रकार हमने प्रत्येक नगर में उसके सबसे बड़े अपराधियों को रखा है, कि वे उसमें षड्यंत्र रचें, किन्तु वे केवल अपने विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं, और उन्हें इसका बोध नहीं होता।

(124) जब उनके पास कोई निशानी आती है तो वे कहते हैं कि हम उस समय तक ईमान नहीं लाएँगे जब तक कि हमें वह न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया था। अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह अपना संदेश कहाँ रखता है। अपराधियों को अल्लाह के निकट अपमान तथा उनकी चालों के कारण कठोर यातना मिलेगी।

(125) अल्लाह जिसे मार्ग दिखाना चाहता है, उसका दिल इस्लाम की ओर खोल देता है और जिसे पथभ्रष्ट करना चाहता है, उसका दिल ऐसा कठोर कर देता है मानो वह आकाश पर चढ़ रहा हो। इस प्रकार अल्लाह उन लोगों पर नापाकी डालता है जो ईमान नहीं लाते।

(126) और यही तुम्हारे रब का सीधा मार्ग है। हमने उन लोगों के लिए निशानियाँ खोलकर बता दी हैं जो शिक्षा ग्रहण करें।

(127) उनके लिए उनके रब के पास शान्ति का घर है और वही उनका रक्षक है, उसके बदले में जो कुछ वे करते रहे।

(128) जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा, "ऐ जिन्नों! तुमने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है।" उनके साथी लोग कहेंगे, "हमारे रब! हमने एक-दूसरे से लाभ उठाया और हम उस समय को पहुँच गए जो तूने हमारे लिए निर्धारित किया था।" वह कहेगा, "तुम्हारा ठिकाना आग है, जिसमें तुम सदैव रहोगे, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। निस्संदेह तुम्हारा रब तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।"

(129) इस प्रकार हम अत्याचारियों को उनके कर्मों के बदले में एक-दूसरे का मित्र बना देते हैं।

(130) ऐ जिन्नों और लोगों! क्या तुम्हारे पास तुममें से ही कोई रसूल नहीं आया जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाता और तुम्हें इस दिन के आने से डराता? वे कहेंगे, "हम अपने विरुद्ध गवाही दे रहे हैं।" सांसारिक जीवन ने उन्हें बहकाया और वे अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे इनकार करनेवाले थे।

(131) यह इसलिए कि तुम्हारा रब बस्तियों को अन्यायपूर्वक विनष्ट नहीं करना चाहता, जबकि उनके लोग अचेत हों।

(132) निश्चय ही प्रत्येक व्यक्ति के अपने कर्मों के अनुसार पुरस्कार या दण्ड है। जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।

(133) तुम्हारा रब अत्यन्त दयावान, निरपेक्ष है। यदि वह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और तुम्हारे स्थान पर जिसे चाहे ला दे, जैसे उसने तुम्हें दूसरी जातियों की सन्तान से उत्पन्न किया है।

(134) निश्चय ही जिसका वचन तुमसे दिया जा रहा है वह आ रहा है और तुम कदापि अल्लाह को असफल न कर सकोगे।

(135) कह दो, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपने काम करो। मैं तो काम कर रहा हूँ। तुम जान लोगे कि आख़िरत में किसका परिणाम अच्छा होगा। निश्चय ही अत्याचारी सफल नहीं होते।"

(136) वे अल्लाह को उसकी उपज में से कुछ हिस्सा देते हैं, चाहे वह फसल हो या पशु, और कहते हैं, "यह अल्लाह के लिए है" (और यह हमारे साझीदारों के लिए है), किन्तु जो कुछ उनके साझीदारों के लिए है, वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता, जबकि जो कुछ अल्लाह के लिए है, वह उनके साझीदारों के लिए पहुँचता है। और वे जो निर्णय करते हैं, वह बहुत बुरा है।

(137) इसी प्रकार उनके साझीदारों ने भी बहुत से मुश्रिकों को अपनी संतान की हत्या करके प्रसन्न किया है, ताकि वे नष्ट हो जाएँ और अपने धर्म में उलझ जाएँ। यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। अतः छोड़ो उन्हें और जो कुछ वे गढ़ते हैं, उसे।

(138) वे कहते हैं, "ये जानवर और फसलें हराम हैं। इनमें से कोई भी व्यक्ति नहीं खा सकता, सिवाय उसके जिसे हम चाहें।" और ऐसे जानवर भी हैं जिनकी पीठ हराम है और ऐसे जानवर भी हैं जिनपर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह अल्लाह के विरुद्ध एक घालमेल है। जो कुछ वे घालमेल कर रहे थे, उसके कारण वह उन्हें दण्ड देगा।

(139) वे कहते हैं, "इन जानवरों के पेट में जो कुछ है, वह हमारे नरों के लिए है और हमारी मादाओं के लिए हराम है। फिर यदि वह मरा हुआ पैदा हो जाए, तो वे सब उसमें साझी होंगे।" वह उन्हें उनके वर्णन के अनुसार दण्ड देगा। निस्संदेह, वह तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

(140) घाटे में पड़े वे लोग जिन्होंने अपनी संतान को अज्ञानता के कारण मार डाला और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया है उसे हराम कर दिया, और अल्लाह पर झूठ घड़ते रहे। वे भटक गए और मार्ग पर नहीं चले।

(141) वही है जो बाग़ उगाता है, जालीदार और जालीदार, और खजूर के पेड़ और विभिन्न प्रकार की खाद्यान्न और जैतून और अनार, जो एक जैसे हों और एक जैसे न हों। जब वे फल दें तो उनके फलों को खाओ और कटनी के दिन उनका हक़ अदा करो। और अति न करो। निस्संदेह वह अति करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(142) और चरनेवाले पशुओं में बोझ ढोनेवाले भी हैं और छोटे भी। जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से खाओ और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

(143) वे आठ जोड़े हैं, भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो। कहो, "क्या उसने दो नरों को हराम किया है या दो मादाओं को या जो कुछ उन दो मादाओं के गर्भों में है? यदि तुम सच्चे हो, तो मुझे ज्ञान से बताओ।"

(144) और ऊँटों में से दो और चौपायों में से दो। कहो, "क्या उसने दो नरों को हराम किया है या दो मादाओं को या वह जो दो मादाओं के गर्भों में है? या तुम उस समय गवाह थे जब अल्लाह ने तुमपर यह आरोप लगाया था?" उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़कर लोगों को गुमराह करे, बिना ज्ञान के? निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(145) कह दो, "जो कुछ मेरी ओर अवतरित हुआ है, उसमें मैं किसी ऐसी चीज़ को नहीं पाता जो किसी के लिए हराम हो, सिवाय इसके कि वह मुर्दा हो, या उसका खून हो, या सूअर का माँस हो। वह तो नपाक है, या अवज्ञा में ज़बह किया हुआ हो, जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए समर्पित हो। फिर जो व्यक्ति विवश हो जाए, और न चाहे और न सीमा का उल्लंघन करे, तो निस्संदेह तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(146) और हमने यहूदियों पर हर खुर वाले जानवर को हराम कर दिया है और चौपायों और भेड़ों में से चर्बी को हराम कर दिया है, सिवाय उस चर्बी के जो उनकी पीठ या अंतड़ियों पर चिपकी हो या जो हड्डी से जुड़ी हो। इस प्रकार हमने उन्हें उनके अपराध का बदला दिया। निस्संदेह हम सच्चे हैं।

(147) यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो कह दो, "तुम्हारा रब बड़ा दयालु है। किन्तु जो लोग अपराधी हैं, उनसे उसकी यातना नहीं टल सकती।"

(148) जो लोग अल्लाह का साझीदार बनाते हैं, वे कहेंगे, "यदि अल्लाह चाहता तो हम किसी को साझीदार न बनाते, न हमारे पूर्वज किसी को साझीदार बनाते, और न हम किसी चीज़ को हराम करते।" इसी प्रकार पहले के लोगों ने भी झुठलाया, यहाँ तक कि उन्होंने हमारी यातना का स्वाद चखा। कह दो, "क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है जो तुम हमारे लिए ला सको? तुम तो बस अनुमान पर चल रहे हो, और तुम केवल झूठ बोल रहे हो।"

(149) कह दो, "अल्लाह के पास निर्णयपूर्ण तर्क है। यदि वह चाहता तो तुम सबको मार्ग दिखा देता।"

(150) कह दो, "अपने गवाहों को सामने लाओ जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है। यदि वे गवाही दें तो तुम भी उनके साथ गवाही न दो। और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो, जबकि वे दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

(151) कह दो कि आओ, मैं वह बात तुम्हें सुनाता हूँ जो तुम्हारे रब ने तुमपर हराम की है। उसका साझी न ठहराना और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना। और अपनी संतान को निर्धनता के कारण न मारना। हम तुम्हें और उन्हें रोज़ी देंगे। और व्यभिचार के निकट न जाना, चाहे वह प्रत्यक्ष हो या गुप्त। और जिस प्राणी को अल्लाह ने हराम किया है, उसे हक़ के बिना न मारना। यह उसने तुम्हें इसलिए सिखाया है, ताकि तुम समझो।

(152) अनाथ के माल के पास न जाओ, परन्तु उसी तरह जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह वयस्क हो जाए। न्यायपूर्वक पूरा नाप-तोल करो। हम किसी प्राणी पर उतना ही भार डालते हैं, जितना उसकी सामर्थ्य के अनुसार हो। और जब बोलो, तो न्याय करो, चाहे वह किसी निकट सम्बन्धी के सम्बन्ध में ही क्यों न हो। अल्लाह के वचन को पूरा करो। यह उसने तुम्हें इसलिए निर्देश दिया है, ताकि तुम स्मरण रखो।

(153) और यह मेरा सीधा मार्ग है, अतः इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो, क्योंकि वे तुम्हें उसके मार्ग से अलग कर देंगे। यह उसने तुम्हें इसलिए सिखाया है, ताकि तुम डरपोक बनो।

(154) फिर हमने मूसा को किताब प्रदान की, जो अच्छे कर्म करनेवालों पर सम्पूर्ण कृपा करती है और हर चीज़ का विस्तारपूर्वक वर्णन करती है, मार्गदर्शन और दयालुता प्रदान करती है, ताकि वे अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ।

(155) और ये बहुत ही बरकत वाली किताब है जो हमने उतारी है। अतः इसका अनुसरण करो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुमपर दया की जाए।

(156) ताकि तुम न कहो कि "यह किताब हमसे पहले बस दो गिरोहों की ओर अवतरित हुई थी, किन्तु हम उनकी शिक्षाओं से अनभिज्ञ थे।"

(157) या तुम कहो कि यदि हम पर किताब अवतरित होती तो हम उनसे अधिक मार्ग पर होते। तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दया आ चुकी है। उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह फेर ले? जो लोग हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं, हम उन्हें उनके मुँह फेरने के कारण कठोर यातना देंगे।

(158) क्या वे इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आएँ या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की कोई निशानी आए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, उस दिन कोई प्राणी अपने ईमान से लाभ नहीं उठा सकेगा, यदि वह पहले ईमान न लाया हो या अपने ईमान से कोई भलाई अर्जित न की हो। कह दो, "प्रतीक्षा करो। हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

(159) जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद कर लिया और गिरोह बन गए, तुम उनसे किसी बात में साझी नहीं हो। उनका मामला तो बस अल्लाह के हाथ में है। फिर जो कुछ वे करते रहे, वह उन्हें बता देगा।

(160) जो कोई अच्छा कर्म लेकर आएगा, उसे उसका दस गुना मिलेगा और जो कोई बुरा कर्म लेकर आएगा, उसे उसके बराबर ही बदला मिलेगा और उनपर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा।

(161) कह दो, "मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग दिखाया है, एक सीधा धर्म, अर्थात् इबराहीम का मार्ग, जो सत्य की ओर झुका हुआ है। और वह अल्लाह का साझी ठहरानेवालों में से नहीं था।"

(162) कह दो, "मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।

(163) उसका कोई साझी नहीं। और मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सबसे पहले मुसलमान हुआ हूँ।

(164) कह दो, "क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को पालनहार बनाऊँ, जबकि वह हर चीज़ का पालनहार है? प्रत्येक प्राणी अपने ही विरुद्ध कमाता है। कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता। फिर तुम्हें अपने रब की ओर लौटना है। फिर वह तुम्हें वह सब बता देगा, जिसमें तुम मतभेद कर रहे थे।"

(165) वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया और तुममें से कुछ को दूसरों पर श्रेष्ठ बनाया, ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा ले। निस्संदेह तुम्हारा रब शीघ्र दण्ड देनेवाला है, किन्तु वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

# सूरा 7: ٱلْأَعْرَاف‎ (अल-अराफ) - द हाइट्स

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम, साद।

(2) यह एक किताब है जो तुम्हारी ओर अवतरित की गयी है। अतः इसे लेकर तुम्हारे दिलों में कोई दुःख न हो। ताकि तुम सचेत करो और ईमान वालों के लिए यह एक नसीहत है।

(3) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसका अनुसरण करो और उसके अतिरिक्त किसी संरक्षक का अनुसरण न करो। तुम बहुत कम विचार करते हो।

(4) हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट कर दिया, उनपर हमारी यातना रात में आई या दोपहर के समय जब वे आराम कर रहे थे।

(5) फिर जब हमारी यातना उनपर आई तो उनकी पुकार यही थी कि "हम ही अत्याचारी थे।"

(6) फिर हम अवश्य उनसे पूछेंगे जिनके पास संदेश भेजा गया था और हम अवश्य ही रसूलों से भी पूछेंगे।

(7) फिर हम शीघ्र ही उन्हें ज्ञान बताएँगे, निस्संदेह हम कभी अनुपस्थित नहीं थे।

(8) और उस दिन तौल सत्य होगी। अतः जिनके पलड़े भारी होंगे, वही सफल होंगे।

(9) किन्तु जिनके पलड़े हल्के होंगे, वही लोग घाटे में पड़ गये, उस अन्याय के कारण जो उन्होंने हमारी आयतों के साथ किया था।

(10) और हमने तुम्हें धरती में स्थापित किया और उसमें तुम्हारे लिए जीविका के साधन उपलब्ध कराये। फिर तुम थोड़े ही कृतज्ञ हो।

(11) और हमने ही तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारा स्वरूप बनाया, फिर फ़रिश्तों से कहा, "आदम को सजदा करो।" तो सबने सजदा किया, परन्तु इबलीस सजदा करनेवालों में से न था।

(12) उसने कहा, "जब मैंने तुम्हें आदेश दिया था, तो तुम्हें सजदा करने से किसने रोका?" उसने कहा, "मैं उससे अच्छा हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया।"

(13) उसने कहा, "उसमें से उतर जाओ। तुम्हारे लिए यह उचित नहीं कि तुम उसमें अहंकार करो। अतः निकल जाओ। निश्चय ही तुम निकम्मे लोगों में से हो।"

(14) उसने कहा, "मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे, जिस दिन वे पुनः जीवित किये जायेंगे।"

(15) उसने कहा, "तुम तो मुहलत पानेवालों में से हो।"

(16) उसने कहा, "तूने मुझे गुमराही में डाल दिया है, अतः मैं तेरे सीधे मार्ग पर उनकी घात में बैठूँगा।

(17) फिर मैं उनके आगे से, उनके पीछे से, उनके दाहिने से, उनके बाएँ से उनके पास आऊँगा। फिर तू उनमें से अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा।

(18) उसने कहा, "निकल जाओ इससे, अपमानित और निष्कासित होकर। उनमें से जो कोई तुम्हारा अनुसरण करेगा, मैं अवश्य तुम सब को जहन्नम से भर दूँगा।"

(19) "और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो खाओ, लेकिन इस वृक्ष के निकट न जाना, नहीं तो तुम अत्याचारियों में सम्मिलित हो जाओगे।"

(20) फिर शैतान ने उनसे कहा कि जो कुछ उनकी शर्मगाहों से छिपा हुआ है, उसे उनपर प्रकट कर दे। उसने कहा, "तुम्हारे रब ने इस वृक्ष को तुमपर इसलिए हराम नहीं किया कि तुम फ़रिश्ते बन जाओ या अमर लोगों में से हो जाओ।"

(21) और उसने उनसे शपथ लेकर कहा, "मैं तुम्हारा सच्चा सलाहकार हूँ।"

(22) फिर उसने धोखे से उन्हें गिरा दिया। फिर जब उन्होंने उस वृक्ष का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें खुल गईं और वे जन्नत के पत्तों से अपने शरीर को ढकने लगे। और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस वृक्ष से रोका नहीं था और न कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है?

(23) उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर अत्याचार किया है। यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की तो हम अवश्य घाटे में पड़ जायेंगे।"

(24) उसने कहा, "तुम लोग आपस में एक दूसरे के शत्रु बनकर उतर जाओ। धरती में तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधि तक रहने का स्थान और मनोरंजन है।"

(25) उसने कहा, "उसी में तुम जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।"

(26) ऐ आदम की सन्तान! हमने तुम्हें लिबास प्रदान किया है ताकि तुम्हारी शर्मगाहें ढँक सकें और वह लिबास शोभायमान हो। किन्तु नेकी का लिबास सर्वोत्तम है। यह अल्लाह की आयतों में से है, शायद वे उसे याद करें।

(27) ऐ आदम की संतान! शैतान तुम्हें बहका न ले, जैसे उसने तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकाला था। उनके कपड़े उतारकर उन्हें उनकी शर्मगाहें दिखा दीं। निस्संदेह वह तुम्हें और उसकी क़ौम को वहाँ से देखता है, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। निस्संदेह हमने शैतानों को उन लोगों का साथी बना दिया है, जो ईमान नहीं लाते।

(28) और जब वे कोई व्यभिचार करते हैं तो कहते हैं, "हमने अपने बाप-दादाओं को ऐसा करते पाया है और अल्लाह ने हमें इसका आदेश दिया है।" कह दो, "अल्लाह व्यभिचार का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?"

(29) कह दो, "मेरे रब ने न्याय का आदेश दिया है। और हर सजदे में अपना मुँह सीधा रखो और उसी की ओर सच्चे दीन होकर पुकारो। जिस प्रकार उसने तुम्हें पैदा किया है, उसी प्रकार तुम भी लौटकर जाओगे।

(30) कुछ लोगों को उसने मार्ग दिखाया और कुछ लोग गुमराही के पात्र बन गए। निस्संदेह उन्होंने अल्लाह के स्थान पर शैतानों को अपना मित्र बना लिया था, जबकि वे समझते थे कि वे मार्ग पर हैं।

(31) ऐ आदम की सन्तान! हर नमाज़ के स्थान पर अपना श्रृंगार करो। खाओ और पियो, परन्तु अति न करो। निस्संदेह, वह अति करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(32) कहो, "अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए जो श्रृंगार और रोज़ी की अच्छी चीज़ें बनाई हैं, उन्हें किसने हराम किया है?" कह दो, "ये चीज़ें सांसारिक जीवन में तो ईमान लानेवालों के लिए हैं, परन्तु क़ियामत के दिन ये सिर्फ़ उन्हीं के लिए हैं।" इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए विस्तारपूर्वक बयान करते हैं जो जानते हों।

(33) कह दो, "मेरे रब ने तो केवल व्यभिचार को हराम किया है - चाहे वह प्रत्यक्ष हो या गुप्त - पाप और अन्यायपूर्ण अत्याचार, और यह कि तुम अल्लाह का साझी ठहराओ, जिसका उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और यह कि तुम अल्लाह पर ऐसी बातें कहो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो।"

(34) और प्रत्येक समुदाय के लिए एक निश्चित समय है, फिर जब उनका समय आ जाएगा तो वे न तो उसमें एक घड़ी की भी देरी करेंगे और न उसे आगे बढ़ाएंगे।

(35) ऐ आदम की सन्तान! यदि तुम्हारे पास तुममें से कोई रसूल आए और वे तुम्हें मेरी आयतें सुनाएँ, तो जो कोई अल्लाह से डरेगा और सुधार करेगा, तो न तो उसे कोई भय होगा और न वह शोकाकुल होगा।

(36) किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनपर अहंकार किया, वही लोग आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(37) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले या उसकी आयतों को झुठला दे? ऐसे लोग अपने-अपने हिस्से को पहुँच जाएँगे, यहाँ तक कि जब हमारे रसूल उनके पास आएँगे और उन्हें मौत के घाट उतार देंगे, तो कहेंगे, "वे लोग कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे?" वे कहेंगे, "वे हमसे दूर चले गए हैं।" और वे अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वे इनकार करनेवाले थे।

(38) अल्लाह कहेगा, "तुमसे पहले जिन्न और मनुष्य जैसी जो भी जातियाँ आग में जा चुकी हैं, उनमें से तुम भी प्रवेश करो।" जब कोई जाति प्रवेश करेगी तो अपनी बहन को धिक्कारेगी, यहाँ तक कि जब वे सब एक-दूसरे को उसमें जा पहुँचेंगे तो उनमें से जो पीछे रह जाएगा वह अपने पहले वाले के विषय में कहेगा, "हमारे रब! इन्होंने हमें गुमराह किया है। अतः इन्हें आग की दोगुनी यातना दे।" वह कहेगा, "प्रत्येक के लिए दोगुनी यातना है, परन्तु तुम नहीं जानते।"

(39) और उनमें से पहले वाले अपने पिछले वाले से कहेंगे, "फिर तुमने हमपर कोई उपकार नहीं किया। तो अब जो कुछ तुम करते रहे हो, उसकी सज़ा चखो।"

(40) निस्संदेह जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनपर अहंकार किया, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वे जन्नत में प्रवेश कर सकेंगे, यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके में घुस जाये। और हम अपराधियों को इसी प्रकार दण्ड देते हैं।

(41) उनके लिए जहन्नम से बिछौना होगा और उनके ऊपर आग की चादरें होंगी। और हम अत्याचारियों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

(42) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, हम किसी प्राणी पर उसकी क्षमता के अनुसार ही कोई दायित्व डालते हैं, वही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(43) और हम उनके दिलों में जो कुछ भी है उसे निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही हैं। और वे कहेंगे, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इस मार्ग पर पहुँचाया। और यदि अल्लाह हमें मार्ग न दिखाता तो हम कदापि मार्ग पर न आते। हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे।" और वे पुकारे जाएँगे, "यही वह जन्नत है, जिसका तुम वारिस बनाए गए हो, उसके बदले में जो तुम करते रहे हो।"

(44) और जन्नत वाले आग वालों को पुकारेंगे कि "हमने जो वादा हमसे किया था, उसे सच पाया। क्या तुमने जो वादा अपने रब ने किया था, उसे सच पाया?" वे कहेंगे, "हाँ।" फिर उनमें से एक मुनादी करनेवाला घोषणा करेगा कि "अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर है।

(45) जिन्होंने अल्लाह के मार्ग से रोका और उसमें बाधा उत्पन्न करना चाहा, जबकि वे आख़िरत को माननेवाले नहीं थे।

(46) और उनके बीच एक दीवार होगी और उसकी ऊँचाईयों पर ऐसे लोग होंगे जो हर एक को उसके चिन्ह से पहचान लेंगे और वे जन्नतवालों को पुकारेंगे कि "तुमपर सलामती हो।" वे अभी उसमें प्रवेश नहीं कर पाए हैं, परन्तु वे बहुत चाहत रखते हैं।

(47) और जब उनकी नज़रें आग वालों की ओर जाती हैं तो वे कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों के साथ न रख।"

(48) और उच्च स्थान वाले लोग उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनके चिन्हों से पहचानते हैं, और कहेंगे, "तुम्हारा इकट्ठा होना और तुम्हारा अहंकार करना कुछ काम न आया।"

(49) "क्या ये वही लोग हैं जिनके विषय में तुमने कसम खाई थी कि अल्लाह उनपर दया नहीं करेगा?" (उनसे कहा जाएगा) "जन्नत में प्रवेश करो, वहाँ न तुमको कोई भय होगा और न तुम शोकाकुल होगे।"

(50) और जहन्नम वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि "हम पर पानी डालो या जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें से।" वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों को इनकार करनेवालों पर हराम कर दिया है।

(51) जिन्होंने अपने धर्म को मनोरंजन बना लिया और सांसारिक जीवन ने उन्हें बहका दिया। अतः आज हम उन्हें भूल जायेंगे, जिस प्रकार उन्होंने अपने इस दिन के मिलने को भूला दिया और इस कारण कि उन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया।

(52) और हमने उनके पास एक किताब लायी थी, जिसे हमने अपने ज्ञान के अनुसार विस्तारपूर्वक बयान किया था, ताकि वे मार्गदर्शन और दयालुता रखें, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

(53) क्या वे उसके परिणाम के अलावा किसी और चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं? जिस दिन उसका परिणाम आ जाएगा, वे लोग जो उससे पहले अनभिज्ञ थे, कहेंगे, "हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे। अब क्या कोई सिफ़ारिश करनेवाला है जो हमारी सिफ़ारिश करे या हम फिर भेजे जाएँ कि हम वही करें जो हम करते रहे हैं।" वे स्वयं तो खो गए और जो कुछ वे घड़ते रहे थे, वह भी उनसे खो गया।

(54) निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। फिर रात को दिन के पीछे ले आता है और उसे तेज़ी से पीछे ले आता है। और सूर्य, चन्द्रमा और तारों को भी उसी के आदेश पर वश में करके पैदा किया। निस्संदेह, सृष्टि और आदेश उसी का है। बरकतवाला है अल्लाह, सारे संसार का रब।

(55) अपने रब को विनम्रतापूर्वक तथा चुपचाप पुकारो। निस्संदेह, वह अतिक्रमणकारियों को पसन्द नहीं करता।

(56) और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न फैलाओ और भय और आशा के साथ उसे पुकारो। निस्संदेह अल्लाह की दयालुता सदाचारियों के निकट है।

(57) और वही है जो अपनी दयालुता से पहले हवाओं को शुभ सूचना देकर भेजता है, यहाँ तक कि जब वे भारी वर्षा वाले बादल लेकर चली जाती हैं, तो हम उन्हें एक निर्जीव भूमि की ओर ले जाते हैं, फिर उसमें वर्षा करते हैं, फिर उसके द्वारा सब प्रकार के फलों को उगाते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को भी निकालेंगे, शायद तुम स्मरण कर सको।

(58) और अच्छी भूमि तो उसकी वनस्पति उसके पालनहार की अनुमति से उगती है, किन्तु जो बुरी भूमि है, वह तो बहुत कम, बहुत कठिनाई से उगती है। इस प्रकार हम उन लोगों के लिए निशानियाँ विभिन्न प्रकार से बाँटते हैं जो कृतज्ञता दिखाएँ।

(59) हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा था। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।"

(60) उसकी क़ौम के प्रमुख लोगों ने कहा, "हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं।"

(61) नूह ने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझमें कोई गुमराही नहीं है। मैं तो सारे संसार के रब की ओर से भेजा हुआ रसूल हूँ।

(62) मैं अपने रब की आयतें तुम तक पहुँचाता हूँ और तुम्हें निष्कपट उपदेश देता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(63) फिर क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक अनुस्मृति आई, जो तुममें से ही एक व्यक्ति के द्वारा आई, ताकि वह तुम्हें सचेत करे और ताकि तुम अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुमपर दया की जाए?"

(64) किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया, अतः हमने उसे और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे, उन्हें बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें डुबा दिया। निश्चय ही वे अंधे लोग थे।

(65) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। फिर क्या तुम उससे डरते नहीं?"

(66) उसकी क़ौम के जो लोग इनकार करने लगे थे, उन्होंने कहा, "हम तो तुम्हें मूर्खता में देखते हैं और हम तो तुम्हें झूठों में से समझते हैं।"

(67) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझमें कोई मूर्खता नहीं है। मैं तो सारे संसार के रब की ओर से एक रसूल हूँ।

(68) मैं अपने रब की बातें तुम तक पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा विश्वसनीय सलाहकार हूँ।

(69) अब क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक अनुस्मरण तुम्हारे ही में से एक व्यक्ति के द्वारा आया है, ताकि वह तुम्हें सचेत करे? और याद करो जब उसने नूह की क़ौम के पश्चात तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया और तुम्हारी लंबाई को बहुत बढ़ाया। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो, ताकि तुम सफल हो सको।

(70) उन्होंने कहा, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम केवल अल्लाह की बन्दगी करें और उनकी बन्दगी छोड़ दें, जिनकी बन्दगी हमारे बाप-दादा करते रहे हैं? यदि तुम सच्चे हो, तो जो वादा तुम हमसे करते हो, उसे हमारे पास ले आओ।"

(71) उसने कहा, "तुम्हारे रब की ओर से तुमपर नाश और प्रकोप उतर चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों के विषय में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रखे हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा? तो प्रतीक्षा करो। निश्चय ही मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करनेवालों में हूँ।"

(72) अतः हमने उसे और जो लोग उसके साथ थे, अपनी दयालुता से बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें हमने विनष्ट कर दिया और वे ईमान वाले नहीं थे।

(73) और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। यह अल्लाह की ओर से तुम्हारी ओर भेजी गई ऊँटनी है, जो एक निशानी है। अतः उसे अल्लाह की धरती में खाने दो और उसे कोई हानि न पहुँचाओ, अन्यथा तुम पर दुखद यातना आ पड़ेगी।"

(74) और याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें आद के पश्चात उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें बसाया, फिर तुमने उसके मैदानों में महल बना लिए और पहाड़ों को काटकर घर बना लिए। तो अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव न करो।

(75) उसकी क़ौम के बड़े-बड़े लोगों ने, जो सताए हुए थे, उन लोगों से जो ईमान लाए थे, कहा, "क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब की ओर से भेजा गया है?" उन्होंने कहा, "हम तो उस चीज़ पर ईमान लाए हैं जिसके साथ उसे भेजा गया है।"

(76) जो लोग अहंकारी थे, उन्होंने कहा, "जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम उसके इनकार करनेवाले हैं।"

(77) अतः उन्होंने ऊँटनी की नसें काट दीं और अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया और कहा, "ऐ सालेह! यदि तू रसूलों में से हो, तो जो वादा तूने हमसे किया था, वह हमें ले आ।"

(78) फिर भूकम्प ने उन्हें पकड़ लिया और वे अपने घरों में गिरकर मर गए।

(79) और उसने उनसे मुँह फेर लिया और कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तो अपने रब का संदेश तुम तक पहुँचा दिया था और तुम्हें सलाह भी दे दी थी, किन्तु तुम सलाह देनेवालों को पसंद नहीं करते।"

(80) और लूत को भेजा, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम ऐसा व्यभिचार करते हो जैसा तुमसे पहले संसार में किसी ने नहीं किया?

(81) तुम स्त्रियों के स्थान पर पुरुषों के पास वासना लेकर जाते हो, वास्तव में तुम बड़े अत्याचारी लोग हो।

(82) किन्तु उसकी क़ौम के लोगों ने उत्तर दिया कि, "उन्हें अपने नगर से निकाल दो। वास्तव में वे लोग पवित्रता से रहनेवाले हैं।"

(83) अतः हमने उसे और उसके घरवालों को बचा लिया, परन्तु उसकी पत्नी को, जो पीछे रह जानेवालों में से थी।

(84) और हमने उनपर पत्थर बरसाये, फिर देखो अपराधियों का कैसा परिणाम हुआ।

(85) और मद्यन की ओर उनके भाई शोऐब को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। अतः पूरा नाप-तोल करो और लोगों को उनका हक़ न दो और धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न फैलाओ। यदि तुम ईमान वाले हो तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है।

(86) और हर मार्ग पर बैठकर धमकी न दो और अल्लाह पर ईमान लाने वालों को उसके मार्ग से न रोको, ताकि उसे टेढ़ा बना दो। और याद करो जब तुम कम थे, फिर उसने तुम्हें बढ़ा दिया। और देखो कि बिगाड़ पैदा करने वालों का कैसा परिणाम हुआ।

(87) और यदि तुममें से कुछ लोग उस चीज़ पर ईमान ले लें जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और कुछ लोग ईमान न लाएँ, तो धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

(88) उसकी क़ौम के बड़े-बड़े लोगों ने जो अहंकारी थे, कहा, "ऐ शुऐब! हम तुम्हें और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं, उन्हें अपनी बस्ती से अवश्य निकाल देंगे, अन्यथा तुम हमारे धर्म में वापस आ जाओ।" उसने कहा, "यदि हम न भी चाहें तो भी?

(89) यदि हम तुम्हारे धर्म की ओर लौटते, इसके पश्चात कि अल्लाह ने हमें उससे बचा लिया है, तो हम अल्लाह पर झूठ गढ़ते। और यह हमारे लिए उचित नहीं कि हम उसमें लौटें, जब तक कि अल्लाह, हमारा रब, चाहे। हमारा रब हर चीज़ को अपने ज्ञान में घेरे हुए है। हमने अल्लाह पर भरोसा किया है। हे हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दे। और तू ही सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।

(90) उसकी क़ौम के जो लोग इनकार करनेवाले थे, उन्होंने कहा, "यदि तुम शुऐब का अनुसरण करोगे तो निश्चय ही तुम घाटे में रहोगे।"

(91) फिर भूकम्प ने उन्हें पकड़ लिया और वे अपने घरों में गिरकर मर गए।

(92) जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया, मानो वे वहाँ कभी रहे ही नहीं। जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया, वही लोग घाटे में पड़े।

(93) और उसने उनसे मुँह फेर लिया और कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तो अपने रब की बातें तुम तक पहुँचा दी और तुम्हें नसीहत भी कर दी। अब मैं इनकार करनेवाले लोगों के लिए कैसे दुखी हो सकता हूँ?"

(94) और हमने जिस बस्ती में कोई नबी भेजा, वह तो केवल इसलिए भेजा कि उसके वासियों को कष्ट और कष्ट में डाला, ताकि वे अल्लाह के सामने झुक जाएँ।

(95) फिर हमने उनकी बुरी हालत के बदले अच्छी हालत बना दी, यहाँ तक कि वे समृद्ध हो गए और उन्होंने कहा, "हमारे बाप-दादा भी कष्ट और आसानी में फंसे थे।" फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, जबकि उन्हें कुछ पता भी नहीं था।

(96) और यदि बस्तियों वाले ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम उन पर आकाश और धरती से बरकतें खोल देते, किन्तु उन्होंने झुठलाया तो हमने उनकी कमाई के बदले उन्हें पकड़ लिया।

(97) तो क्या बस्तियों के लोग इस बात से निश्चिंत हो गए कि हमारी यातना उनपर रात को आ जायेगी, जबकि वे सो रहे होंगे?

(98) क्या नगरों के लोग इस बात से निश्चिंत थे कि हमारी यातना उनपर प्रातःकाल आ जायेगी, जबकि वे खेल रहे होंगे?

(99) तो क्या वे अल्लाह की योजना से निश्चिंत हो गये? अल्लाह की योजना से निश्चिंत तो कोई नहीं होता, परन्तु वही लोग होते हैं जो घाटे में रहते हैं।

(100) क्या यह बात उन लोगों पर स्पष्ट नहीं हो गई जो धरती के वारिस हुए, कि यदि हम चाहें तो उनके पापों के कारण उन्हें यातना दे दें, किन्तु हमने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, कि वे सुनते नहीं।

(101) हम तुम्हारे सामने उन बस्तियों की कुछ ख़बरें बयान करते हैं। और उनके पास उनके रसूल भी स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, किन्तु वे उस बात पर ईमान न ला सके, जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

(102) और हमने उनमें से अधिकतर के लिए कोई वचन नहीं पाया, बल्कि हमने उनमें अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

(103) फिर हमने उनके बाद मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, किन्तु उन्होंने उनपर अत्याचार किया। तो देखो कि उपद्रवियों का कैसा परिणाम हुआ।

(104) और मूसा ने कहा, "ऐ फ़िरऔन! मैं सारे संसार के रब की ओर से भेजा हुआ रसूल हूँ।

(105) अल्लाह पर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहना अनिवार्य है। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ। अतः तुम मेरे साथ इसराइल की सन्तान को भेज दो।

(106) फ़िरऔन ने कहा, "यदि तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे सामने लाओ, यदि तुम सच्चे हो।"

(107) अतः मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो अचानक एक साँप प्रकट हुआ।

(108) फिर उसने अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह देखनेवालों के लिए चमकीला हो गया।

(109) फ़िरऔन की क़ौम के प्रमुख लोगों ने कहा, "यह तो बड़ा विद्वान जादूगर है।

(110) कौन चाहता है कि तुमको तुम्हारी धरती से निकाल दे, तो फिर तुम क्या आदेश देते हो?

(111) उन्होंने कहा, "उसके और उसके भाई के मामले को स्थगित कर दो और नगरों में लोगों को इकट्ठा करने के लिए भेज दो।

(112) जो तुम्हारे पास हर विद्वान जादूगर को ले आएगा।

(113) और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, और कहने लगे, "यदि हम ही प्रबल हों तो हमारे लिए बदला है।"

(114) उसने कहा, "हाँ, और इसके अतिरिक्त, तुम मेरे निकट रहनेवालों में से होगे।"

(115) उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! या तो तुम अपनी लाठी फेंको, या हम ही पहले फेंकेंगे।"

(116) उसने कहा, "फेंक दो।" फिर जब उन्होंने फेंका तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उनमें भय उत्पन्न कर दिया और उन्होंने बड़ा जादू प्रस्तुत किया।

(117) और हमने मूसा की ओर प्रकाशना की कि "अपनी लाठी फेंक दो।" तो उसने तुरन्त ही उसे खा लिया जो वे झुठला रहे थे।

(118) अतः सत्य स्थापित हो गया और जो कुछ वे कर रहे थे, वह नष्ट हो गया।

(119) और वहाँ भी वे पराजित हुए और अपमानित हुए।

(120) और जादूगर सजदे में गिर पड़े।

(121) उन्होंने कहा, "हम सारे संसार के रब पर ईमान लाए।

(122) मूसा और हारून का रब।

(123) फ़िरऔन ने कहा, "तुमने उसपर ईमान ला दिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति देता। यह तो तुमने नगर में षड्यंत्र रचा है, ताकि उसके लोगों को वहाँ से निकाल दो। किन्तु अब तुम जान जाओगे।

(124) मैं निश्चय ही तुम्हारे हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से काट डालूँगा; फिर मैं निश्चय ही तुम सब को क्रूस पर चढ़ा दूँगा।"

(125) उन्होंने कहा, "हम अपने रब की ओर लौटकर जानेवाले हैं।

(126) और तू हमपर इसलिए क्रोध नहीं करता कि हम अपने रब की आयतों पर ईमान लाए, जबकि वे हमारे पास आईं। ऐ हमारे रब! हमपर धैर्य प्रदान कर और हमें आज्ञाकारी होकर मरने दे।

(127) और फ़िरऔन की क़ौम के प्रमुख लोगों ने कहा, "क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ दोगे कि वे देश में उत्पात मचाएँ और अपने आपको और अपने देवताओं को त्याग दोगे?" [फ़िरऔन ने] कहा, "हम उनके बेटों को मार डालेंगे और उनकी स्त्रियों को जीवित रखेंगे; और वास्तव में हम उनके अधीन हैं।"

(128) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह से सहायता माँगो और धैर्य रखो। निस्संदेह धरती अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बनाता है। और परिणाम तो नेक लोगों के लिए है।"

(129) उन्होंने कहा, "तुम्हारे आने से पहले भी हम पर बहुत अत्याचार हुए हैं और तुम्हारे आने के बाद भी।" उसने कहा, "शायद तुम्हारा रब तुम्हारे शत्रुओं को विनष्ट कर दे और तुम्हें धरती में उत्तराधिकार प्रदान करे, फिर देखे कि तुम क्या करते हो।"

(130) और हमने फ़िरऔन की क़ौम को अकाल के वर्षों और फलों की कमी में जकड़ लिया, ताकि शायद उन्हें शिक्षा मिल जाए।

(131) फिर जब उनपर कोई भलाई आई तो उन्होंने कहा, "यह हमारा है।" और जब उनपर कोई मुसीबत आई तो उन्होंने मूसा और उसके साथियों में कोई अपशकुन देखा। निस्संदेह उनका भाग्य अल्लाह के हाथ में है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(132) उन्होंने कहा, "चाहे तुम हमें जादू दिखाने के लिए कोई भी निशानी ले आओ, हम तुमपर ईमान नहीं लाएँगे।"

(133) फिर हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियाँ और कुतरें और मेंढक और ख़ून भेज दिए, जो स्पष्ट निशानियाँ थीं। किन्तु वे अहंकारी और अपराधी लोग थे।

(134) फिर जब उनपर यातना उतरी तो उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! अपने रब को उस बात के लिए पुकारो जिसका वादा उसने तुमसे किया है। यदि तुम हमसे यातना दूर कर दोगे तो हम अवश्य तुमपर ईमान लाएँगे और हम तुम्हारे साथ इसराईल की संतान को भेज देंगे।"

(135) फिर जब हमने उनपर से यातना हटा दी, उस समय तक जब तक वे पहुँचते, तो वे तुरन्त ही अपना वचन तोड़ देते।

(136) अतः हमने उनसे बदला लिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे असावधान रहे।

(137) और हमने उन लोगों को, जो अत्याचार सह रहे थे, भूमि के पूर्वी भाग और पश्चिमी भाग का वारिस बनाया, जिन पर हमने बरकत रखी थी। और तुम्हारे रब का शुभ वचन इसराइल की सन्तान के लिए पूरा हुआ, उसके कारण जो उन्होंने धैर्य से सहन किया। और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने जो कुछ बनाया और जो कुछ बनाया, उसे नष्ट कर दिया।

(138) और हमने बनी इसराईल को समुद्र पार कराया। फिर वे एक ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपने ही कुछ देवताओं पर आस्था रखते थे। उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक पूज्य बना दो, जैसा कि उनके पूज्य हैं।" मूसा ने कहा, "तुम लोग तो अज्ञानी लोग हो।

(139) निश्चय ही वे लोग जो कुछ करते थे, वह नष्ट हो गया और जो कुछ वे करते रहे, वह भी व्यर्थ है।

(140) उसने कहा, "क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को तुम्हारा पूज्य बनाऊँ, जबकि उसने तुम्हें सारे संसारों पर श्रेष्ठता प्रदान की है?"

(141) और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से बचाया, जो तुम्हें बुरी यातना दे रहे थे - तुम्हारे बेटों को मार रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे - और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी।

(142) और हमने मूसा को तीस रातें दी थीं, फिर दस रातें और जोड़कर उन्हें पूरा कर दिया। इस प्रकार उसके रब का समय चालीस रातों के बराबर हो गया। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, " मेरे लोगों के बीच मेरा स्थान ले लो, और उनके साथ अच्छा व्यवहार करो और बिगाड़ पैदा करनेवालों के मार्ग पर न चलो।"

(143) और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर पहुँचा और उसका रब उससे बात करने लगा, तो उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे अपना दर्शन दे, ताकि मैं तेरी ओर देखूँ।" (अल्लाह ने) कहा, "तू मुझे नहीं देखेगा, बल्कि पहाड़ की ओर देख। यदि वह अपनी जगह पर स्थिर रहे, तो तू मुझे देख लेगा।" फिर जब उसका रब पहाड़ के सामने प्रकट हुआ, तो उसने उसे समतल कर दिया। इस पर मूसा बेहोश हो गया। फिर जब वह होश में आया, तो उसने कहा, "तू पवित्र है। मैंने तेरी ओर तौबा कर ली है। और मैं सबसे पहले ईमान लानेवाला हूँ।"

(144) अल्लाह ने कहा, "ऐ मूसा! मैंने अपनी आयतों और अपने वचनों के द्वारा तुझे लोगों पर तरजीह दी है। अतः जो कुछ मैंने तुझे दिया है, उसे ले और कृतज्ञ बन जा।"

(145) और हमने उसके लिए तख्तियों पर हर चीज़ की नसीहत और व्याख्या लिख दी, "उन चीज़ों को दृढ़ता से ग्रहण करो और अपनी क़ौम को आदेश दो कि वे उनमें से जो अच्छा हो, उसे ग्रहण करें। मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

(146) मैं धरती में अकारथ घमण्ड करनेवालों को अपनी आयतों से दूर कर दूँगा। यदि वे कोई भी निशानी देख लें तो उस पर ईमान न लाएँगे। यदि वे सदाचार का मार्ग देख लें तो उसे अपना न लेंगे। किन्तु यदि वे गुमराही का मार्ग देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेखबर रहे।

(147) जिन लोगों ने हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया, उनके कर्म व्यर्थ हो गये। क्या उन्हें उसके सिवा कुछ बदला दिया जाएगा जो वे करते रहे थे?

(148) और मूसा की क़ौम ने अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बनाई, जो धीमी आवाज़ में बोलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न तो उनसे बात कर सकती थी और न उन्हें कोई मार्ग दिखा सकती थी? उन्होंने उसे पूजने का निश्चय कर लिया और वे अत्याचारी थे।

(149) फिर जब उनपर अफ़सोस हुआ और उन्होंने देखा कि वे भटक गए थे तो कहने लगे कि यदि हमारा रब हमपर दया न करेगा और हमें क्षमा न करेगा तो हम अवश्य घाटे में पड़ जाएँगे।

(150) और जब मूसा क्रोधित और शोकाकुल होकर अपनी क़ौम के पास लौटा तो उसने कहा, "तुमने मेरे बाद जो किया वह कितना बुरा है। क्या तुम अपने रब के मामले में अधीर थे?" फिर उसने तख्तियाँ नीचे फेंक दीं और अपने भाई को उसके सिर के बाल पकड़कर अपनी ओर खींचा। हारून ने कहा, "ऐ माँ के बेटे! लोगों ने मुझ पर अत्याचार किया और वे मुझे मार डालना चाहते थे। अतः शत्रु मुझ पर आनन्दित न हों और मुझे अत्याचारी लोगों में न डालें।"

(151) मूसा ने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें अपनी दया में शामिल कर ले। निस्संदेह, तू अत्यन्त दयावान है।"

(152) निश्चय ही जिन लोगों ने बछड़े को पूज लिया, वे अपने रब की ओर से क्रोध और सांसारिक जीवन में अपमान प्राप्त करेंगे। और हम झूठ गढ़नेवालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

(153) किन्तु जिन लोगों ने कुकर्म किये, फिर उनके पश्चात् तौबा कर ली और ईमान ले आये, तो निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(154) फिर जब मूसा का क्रोध शांत हो गया तो उसने तख्तियाँ उठा लीं। और उन तख्तियों में मार्गदर्शन और दया थी, उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं।

(155) मूसा ने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को हमारे लिए चुना। फिर जब भूकम्प ने उन्हें जकड़ लिया तो उसने कहा, "ऐ मेरे रब! यदि तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहले ही नष्ट कर देता। क्या तू हमें नष्ट कर देगा, क्योंकि हम मूर्खों ने ऐसा किया है? यह तो बस तेरी परीक्षा है, जिसके द्वारा तू जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे मार्ग दिखा दे। तू ही हमारा रक्षक है। अतः हमें क्षमा कर और हम पर दया कर। और तू ही सबसे बड़ा क्षमा करनेवाला है।"

(156) और हमारे लिए दुनिया में भी भलाई का फ़ैसला कर दे और आख़िरत में भी। हम तेरी ही ओर तौबा कर चुके हैं।" (अल्लाह ने) कहा, "मैं जिसपर चाहूँ यातना पहुँचाता हूँ। मेरी दया हर चीज़ को घेरे हुए है।" अतः मैं उसे उन लोगों के लिए फ़ैसला कर दूँगा जो मुझसे डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

(157) जो लोग रसूल, उस अनपढ़ नबी का अनुसरण करते हैं, जिसे वे तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं, जो उन्हें भलाई का आदेश देता है और बुराई से रोकता है, उनके लिए भलाई को हलाल करता है और बुराई से रोकता है, और उनके बोझ और उन बेड़ियों को हटा देता है जो उन पर थीं। तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसका आदर किया, उसका समर्थन किया और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ उतारा गया, वही लोग सफल होंगे।

(158) कह दो कि ऐ लोगो! मैं तुम सबके लिए अल्लाह का रसूल हूँ, आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी का है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वही जीवन देता है और मारता है। अतः तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उस अनपढ़ नबी पर जो अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है और उसका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग पाओ।

(159) और मूसा की क़ौम में से एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्य के द्वारा मार्ग दिखाता है और उसी के द्वारा न्याय स्थापित करता है।

(160) और हमने उन्हें बारह क़बीलों में बाँट दिया। और जब मूसा की क़ौम ने उससे पानी माँगा तो हमने मूसा को वह्यी भेजी कि अपनी लाठी चट्टान पर मारो। और उसमें से बारह झरने फूट निकले। हर क़बीले को अपना पीने का ठिकाना मालूम था। और हमने उन पर बादलों की छाया की और उन पर मन्ना और बटेर उतारे, "जो अच्छी-अच्छी चीज़ें हमने तुम्हें दी हैं, उनमें से खाओ।" और उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि अपने आप पर ज़ुल्म किया।

(161) और जब उनसे कहा गया कि इसी नगर में रहो और जहाँ चाहो वहाँ से खाओ और कहो कि हमारा बोझ उतार दो और झुककर द्वार से प्रवेश करो। हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे और अच्छे कर्म करनेवालों के लिए प्रतिफल बढ़ा देंगे।

(162) किन्तु उनमें से जिन लोगों ने अत्याचार किया, उन्होंने उस बात को, जो उनसे कही गई थी, उसके अलावा किसी और बात में बदल दिया। अतः हमने उनके अत्याचार के कारण आकाश से उन पर यातना उतारी।

(163) और उनसे उस बस्ती के विषय में पूछो जो समुद्र के किनारे थी, जब उन्होंने सब्त के दिन अतिक्रमण किया, जबकि उनकी मछलियाँ उनके सब्त के दिन उनके पास खुल कर आती थीं, और जिस दिन उनके पास सब्त नहीं होता था, वे उनके पास नहीं आती थीं। इस प्रकार हमने उनकी परीक्षा ली, क्योंकि वे बड़े अवज्ञाकारी थे।

(164) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम उस क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह विनष्ट कर देने वाला है या कठोर यातना देने वाला है? उन्होंने कहा कि ताकि वे अपने रब के सामने क्षमा-याचना करें और संभवतः वे उससे डरें।

(165) और जब वे भूल गए उस बात को जिसके द्वारा उन्हें याद दिलाया गया था, तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अत्याचार किया था, बुरी यातना में पकड़ लिया, क्योंकि वे अवज्ञाकारी थे।

(166) फिर जब वे उस चीज़ पर अड़े रहे जिससे उन्हें रोका गया था, तो हमने उनसे कहा, "तुम तुच्छ समझे जानेवाले बन्दर बन जाओ।"

(167) और याद करो जब तुम्हारे रब ने कहा कि वह क़ियामत के दिन तक उनपर ऐसे लोगों को भेजेगा जो उन्हें बुरी यातना पहुँचाएँगे। निस्संदेह तुम्हारा रब शीघ्र दण्ड देनेवाला है, और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(168) और हमने उन्हें धरती में कई जातियों में बाँट दिया। उनमें से कुछ लोग नेक थे और कुछ दूसरे थे। और हमने उन्हें भलाई और बुराई से परखा, ताकि शायद वे फिर आएँ।

(169) फिर उनके बाद ऐसे लोग हुए जो किताब के उत्तराधिकारी हुए, उन्होंने इस जीवन की वस्तुएँ लीं और कहा, "हमारे लिए यह क्षमा कर दी जाएगी।" और यदि उनके पास ऐसी ही कोई चीज़ आ जाए, तो वे उसे स्वीकार कर लेते हैं। क्या उनसे किताब का वचन नहीं लिया गया था कि वे अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ न कहेंगे और जो कुछ उसमें है, उसका अध्ययन करेंगे? और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह से डरते हैं। तो क्या तुम नहीं समझते?

(170) किन्तु जो लोग किताब को मज़बूती से थामे रहे और नमाज़ क़ायम रखें, हम सुधारकों का बदला व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

(171) और वह समय याद करो जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठा दिया मानो वह छत्र हो, और उन्होंने सोचा कि वह उन पर गिर पड़ेगा, "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे दृढ़तापूर्वक ग्रहण करो और उसमें जो कुछ है उसे स्मरण करो, ताकि तुम अल्लाह से डरते रहो।"

(172) और याद करो जब तुम्हारे रब ने आदम की सन्तान से उनकी संतान को निकाला, फिर उनसे स्वयं अपनी गवाही कराई कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहा कि हाँ, हमने गवाही दी है, ताकि तुम क़ियामत के दिन न कहो कि हम तो इस बात से बेख़बर थे।

(173) या तुम कहो कि हमारे पूर्वज तो केवल अल्लाह का साझी ठहराते थे, हम तो उनके पश्चात् केवल सन्तान हैं। तो क्या तू हमें उन झूटों के कारण विनष्ट कर देगा जो उसने किए हैं?

(174) और इसी प्रकार हम आयतों को विस्तारपूर्वक बयान करते हैं, और संभवतः वे पलट आयेंगे।

(175) और उन्हें उस व्यक्ति का समाचार सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान की थीं, फिर वह उनसे विमुख हो गया। फिर शैतान ने उसका पीछा किया, फिर वह कुपथों में हो गया।

(176) और यदि हम चाहते तो उसे इसी के द्वारा ऊँचा उठा सकते थे, किन्तु वह धरती से चिपका रहा और अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता रहा। अतः उसकी स्थिति कुत्ते जैसी है कि यदि तुम उसका पीछा करो तो वह हाँफता है, या यदि तुम उसे छोड़ दो तो भी हाँफता है। यही उन लोगों की स्थिति है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। अतः तुम कहानियाँ सुनाओ, शायद वे सोच-विचार करें।

(177) कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और अपने आप पर अत्याचार करते रहे।

(178) जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही मार्ग पर चलनेवाला है और जिसे वह पथभ्रष्ट कर दे तो वही लोग घाटे में पड़ेंगे।

(179) और हमने बहुत से जिन्नों और मनुष्यों को जहन्नम में डाल दिया है। उनके पास ऐसे दिल हैं जिनसे वे समझ नहीं पाते, ऐसी आँखें हैं जिनसे वे देख नहीं पाते और ऐसे कान हैं जिनसे वे सुन नहीं पाते। वे तो पशुओं के समान हैं, बल्कि वे तो और भी अधिक भटके हुए हैं। वे ही असावधान हैं।

(180) और अल्लाह ही के लिए अच्छे नाम हैं। अतः उन्हीं के द्वारा उसी को पुकारो। और जो लोग उसके नामों से भटक गए, उन्हें छोड़ दो। वे अपने किए का बदला अवश्य पाएँगे।

(181) और हमने जो पैदा किये हैं उनमें से एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्य के द्वारा मार्ग दिखाता है और उसके द्वारा न्याय स्थापित करता है।

(182) किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें शीघ्र ही वहाँ से ले चलेंगे, जहाँ उन्हें कुछ भी पता नहीं।

(183) और मैं उन्हें समय अवश्य प्रदान करूँगा। निस्संदेह मेरी योजना दृढ़ है।

(184) क्या वे विचार नहीं करते? उनके साथी में कोई पागलपन नहीं है। वह तो बस स्पष्ट चेतावनी देनेवाला है।

(185) क्या वे आकाशों और धरती के साम्राज्य और अल्लाह की बनाई हुई हर चीज़ को नहीं देखते और यह नहीं सोचते कि शायद उनका नियत समय निकट आ गया है? तो फिर वे इसके बाद किस बात पर ईमान लाएँगे?

(186) अल्लाह जिस किसी को गुमराही में छोड़ दे, उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं, और वह उन्हें उनकी अवज्ञा में भटकता हुआ छोड़ देता है।

(187) वे तुमसे क़ियामत के विषय में पूछते हैं कि "वह कब आएगी?" कह दो, "उसका ज्ञान तो केवल मेरे रब को है। उसका समय उसके सिवा कोई नहीं बता सकता। वह आकाशों और धरती पर भारी पड़ती है। वह तुम पर अचानक ही आएगी।" वे तुमसे इस तरह पूछते हैं मानो तुम उससे परिचित हो। कह दो, "उसका ज्ञान तो केवल अल्लाह को है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।"

(188) कह दो, "मैं अपने लिए न तो लाभ और न हानि का अधिकार रखता हूँ, परन्तु जो अल्लाह चाहे। और यदि मैं परोक्ष को जानता तो बहुत धन कमा लेता और मुझे कोई हानि न पहुँचती। मैं तो केवल सचेत करनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला हूँ उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।"

(189) वही है जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि वह उसके साथ निश्चिंत रहे। फिर जब वह उसे ओढ़ाता है तो वह हल्का बोझ उठा लेती है और उसी में रहती है। फिर जब बोझ भारी हो जाता है तो वे दोनों अपने रब अल्लाह को पुकारते हैं कि यदि तू हमें कोई अच्छा बच्चा दे तो हम अवश्य कृतज्ञ होंगे।

(190) किन्तु जब वह उन्हें कोई अच्छा बच्चा देता है तो जो कुछ उसने उन्हें दिया है, उसमें वे उसका साझी ठहराते हैं। और अल्लाह महान है उससे, जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(191) क्या वे लोग परमेश्वर का साझीदार ठहराते हैं जो कुछ पैदा नहीं करते, जबकि वे स्वयं पैदा किये गये हैं?

(192) और न वे उनकी सहायता कर सकते हैं और न वे अपनी सहायता कर सकते हैं।

(193) और यदि तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारा अनुसरण नहीं करेंगे। चाहे तुम उन्हें बुलाओ या चुप रहो, तुम्हारे लिए बराबर है।

(194) निश्चय ही जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे भी तुम्हारे ही समान बन्दे हैं। अतः तुम उन्हें पुकारो, यदि तुम सच्चे हो तो चाहिए कि वे तुम्हारी बात मान लें।

(195) क्या उनके पास पैर हैं जिनसे वे चलते हैं? या उनके पास हाथ हैं जिनसे वे मारते हैं? या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हैं? या उनके पास कान हैं जिनसे वे सुनते हैं? कह दो, "अपने साझीदारों को बुलाओ, फिर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचो और मुझे कोई मोहलत न दो।

(196) निस्संदेह मेरा संरक्षक अल्लाह है, जिसने किताब अवतरित की और वह डर रखनेवालों का सहायक है।

(197) और जिन्हें तुम उससे हटकर पुकारते हो, वे न तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और न अपनी सहायता कर सकते हैं।

(198) और यदि तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ तो वे सुनते नहीं, और तुम देखते हो कि वे तुम्हारी ओर देखते रहते हैं, परन्तु देखते नहीं।

(199) क्षमाशील बनो, भलाई का आदेश दो और अज्ञानियों से दूर रहो।

(200) और यदि शैतान की ओर से कोई बुरी बात तुम्हारे पास आये तो अल्लाह की शरण में जाओ, निस्संदेह वह सब कुछ सुनता, जानता है।

(201) निस्संदेह जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जब शैतान की ओर से कोई आवेग उन्हें छूता है तो वे उसे याद करते हैं और तुरन्त ही उन्हें समझ आ जाती है।

(202) किन्तु उनके भाई शैतान ही हैं जो उनकी गुमराही को और बढ़ा देते हैं, फिर वे रुकते नहीं।

(203) और जब तुम उनके पास कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं, "तुमने उसे क्यों नहीं गढ़ा?" कह दो, "मैं तो बस उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब की ओर से मेरी ओर अवतरित हुई है। यह तुम्हारे रब की ओर से प्रकाशना और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।"

(204) अतः जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और ध्यान लगाओ, ताकि तुमपर दया की जाए।

(205) और अपने रब को अपने मन में नम्रता और भय के साथ, प्रातःकाल और संध्याकाल में, बिना ऊँची आवाज़ में बोले याद करो और ग़ाफ़िल न रहो।

(206) निस्संदेह जो लोग तुम्हारे रब के निकट हैं, वे उसकी बन्दगी से अहंकार के कारण नहीं रुकते, बल्कि उसी की तसबीह करते हैं और उसी को सजदा करते हैं।

[^नोट: यह सजदा की आयत है।]

# सूरा 8: ٱلْأَنْفَال‎ (अल-अनफ़ाल) - लूट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) वे तुमसे युद्ध की लूट के विषय में पूछते हैं। कह दो, "लूट अल्लाह और रसूल की है। अतः अल्लाह से डरो और आपस में मामले सुलझा लो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।"

(2) सच्चे ईमानवाले वे लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र होने पर काँप उठते हैं और जब उनकी आँखों के सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान और बढ़ जाता है और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

(3) वे नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

(4) वही लोग सच्चे ईमानवाले हैं। उन्हीं के लिए उनके रब के पास सम्मान, क्षमा और उदारतापूर्वक जीविका है।

(5) जिस प्रकार तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से सत्य के साथ निकाला, जबकि ईमानवालों में से एक गिरोह ने आनाकानी की।

(6) वे तुमसे सत्य के विषय में झगड़ते हैं, इसके पश्चात कि वह स्पष्ट हो चुका है। मानो वे देखते-देखते मृत्यु की ओर धकेले जा रहे हों।

(7) और याद करो जब अल्लाह ने तुमसे वादा किया था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारा होगा, और तुमने चाहा कि निहत्था गिरोह तुम्हारा हो, किन्तु अल्लाह ने चाहा कि अपने वचनों के द्वारा सत्य को स्थापित करे और इनकार करनेवालों को समाप्त कर दे।

(8) कि सत्य को स्थापित करे और असत्य को मिटा दे, यद्यपि अपराधी उसे नापसंद करते हों।

(9) याद करो जब तुमने अपने रब से मदद की गुहार लगाई तो उसने तुम्हारी सुन ली कि, "मैं तुम्हारे पीछे एक हज़ार फ़रिश्तों को भेजकर तुम्हारी सहायता करूँगा।"

(10) अल्लाह ने इसे केवल शुभ सूचना बनायी है और ताकि तुम्हारे दिलों को इससे भरोसा हो जाए। और सफलता केवल अल्लाह की ओर से है। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(11) याद करो जब उसने तुमपर अपनी ओर से ऊँघ डाली और तुमपर आकाश से पानी बरसाया ताकि उसके द्वारा तुम शुद्ध हो जाओ और शैतान की गंदगी को तुमसे दूर कर दो और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दो और तुम्हारे कदमों को मज़बूत कर दो।

(12) याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों की ओर वह़्यी की कि "मैं तुम्हारे साथ हूँ। अतः जो लोग ईमान लाए हैं, उन्हें शक्ति दो। मैं इनकार करनेवालों के दिलों में भय भर दूँगा। अतः उनकी गर्दनों पर वार करो और उनकी उंगलियों के सिरे काट दो।"

(13) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करेगा, तो अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

(14) "वह तुम्हारा है, अतः उसका स्वाद चखो।" और इनकार करनेवालों के लिए आग की यातना है।

(15) ऐ ईमान लाने वालों! जब तुम उन इनकार करनेवालों से मिलो जो आगे बढ़ रहे हों तो उनकी ओर पीठ न करो।

(16) और जो व्यक्ति ऐसे दिन उनकी ओर पीठ करे, सिवाय इसके कि वह युद्ध के लिए या किसी अन्य दल से मिलने के लिए, तो वह अल्लाह की ओर से क्रोध लेकर लौटा है। और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह स्थान बहुत बुरा है।

(17) और तुमने उन्हें नहीं मारा, बल्कि अल्लाह ने उन्हें मारा। और जब तुमने फेंका, तब तुमने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका, ताकि ईमानवालों को अच्छी परीक्षा से परख ले। निस्संदेह अल्लाह सुनने, जाननेवाला है।

(18) और यह भी कि अल्लाह इनकार करनेवालों की चाल को असफल कर देगा।

(19) यदि तुम निर्णय चाहते हो तो निर्णय तुम्हारे पास आ चुका है। यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा है। किन्तु यदि तुम फिर लौटोगे तो हम फिर लौटेंगे, फिर तुम्हारी संख्या तुम्हारे कुछ काम न आएगी, चाहे वह बहुत अधिक क्यों न हो। और जान लो कि अल्लाह ईमानवालों के साथ है।

(20) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो और उससे मुँह न मोड़ो, जबकि तुम उसका आदेश सुनते हो।

(21) और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो कहते हैं कि हमने सुन लिया, हालाँकि वे सुनते नहीं।

(22) निस्संदेह अल्लाह के निकट सबसे बुरे प्राणी वे हैं जो बहरे और गूंगे हैं और बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

(23) यदि अल्लाह उनमें कोई भलाई जानता तो उन्हें सुना देता, और यदि वह उन्हें सुना भी देता तो भी वे इन्कार करते हुए मुँह फेर लेते।

(24) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन देती है। और जान लो कि अल्लाह मनुष्य और उसके दिल के बीच में हस्तक्षेप करता है और तुम सब उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

(25) और उस परीक्षा से डरो जो केवल उन लोगों पर न पड़ेगी जिन्होंने तुममें से अत्याचार किया। और जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

(26) और याद करो जब तुम धरती में कम और अत्याचारग्रस्त थे, डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें पकड़ न लें, किन्तु उसने तुम्हें शरण दी और अपनी सफलता से तुम्हें सहायता प्रदान की और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें प्रदान कीं, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाएँ।

(27) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल के साथ विश्वासघात न करो और न अपनी अमानतों के साथ विश्वासघात करो, जबकि तुम जानते हो।

(28) और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो बस एक परीक्षा है और अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

(29) ऐ ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो वह तुम्हें एक कसौटी प्रदान करेगा और तुम्हारे गुनाहों को तुमसे दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(30) और याद करो जब इनकार करनेवालों ने तुम्हारे विरुद्ध चालें चलीं कि तुम्हें रोकें या मार डालें या निकाल दें, किन्तु वे चालें चलते हैं और अल्लाह भी चालें चलता है, और अल्लाह सबसे अच्छा चाल चलनेवाला है।

(31) और जब उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं, "हमने सुन ली है। यदि हम चाहें तो ऐसा ही कह सकते हैं। ये तो बस पिछले लोगों की कहानियाँ हैं।"

(32) और याद करो जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह! यदि यह तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे या हम पर दुखद यातना ले आ।

(33) किन्तु अल्लाह उन्हें दण्ड नहीं देगा, जबकि तुम उनके बीच हो और अल्लाह उन्हें दण्ड नहीं देगा, जबकि वे क्षमा की प्रार्थना करते हैं।

(34) फिर अल्लाह उन्हें क्यों न सज़ा दे, जबकि वे मस्जिदे हराम से रोकते हैं, जबकि वे उसके रक्षक नहीं हैं? उसके रक्षक तो केवल डर रखनेवाले लोग हैं, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

(35) और घर में उनकी नमाज़ केवल सीटी बजाने और तालियाँ बजाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं थी। अतः जो कुछ तुमने इनकार किया, उसके कारण यातना चखो।

(36) निश्चय ही जिन लोगों ने इनकार किया, वे अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए अपने माल खर्च करते हैं। फिर वे उसे खर्च करेंगे। फिर वह उनके लिए पश्चाताप का कारण होगा। फिर वे पराजित हो जायेंगे। और जिन लोगों ने इनकार किया, वे जहन्नम की ओर एकत्र किये जायेंगे।

(37) ताकि अल्लाह दुष्टों को अच्छे लोगों से अलग करे और दुष्टों को एक दूसरे के ऊपर रखे और उन सबको एक साथ ढेर कर दे और जहन्नम में डाल दे। और वही लोग घाटे में हैं।

(38) उन लोगों से कह दो जिन्होंने इनकार किया कि यदि वे बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ पहले हो चुका है, वह उनके लिए क्षमा कर दिया जाएगा। फिर यदि वे फिर लौटें तो पहले वालों की दशा हो चुकी।

(39) और उनसे लड़ो यहाँ तक कि अत्याचार समाप्त हो जाए और दीन सम्पूर्ण अल्लाह के लिए हो जाए। फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।

(40) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक है। अच्छा रक्षक है और अच्छा सहायक है।

(41) और जान लो कि जो कुछ भी तुम युद्ध में लूट में से प्राप्त करो, तो उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह के लिए है, और रसूल के लिए, और उसके निकट सम्बन्धियों के लिए, और अनाथों, मुहताजों और मुसाफिरों के लिए, यदि तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान लाए हो, जो हमने अपने बन्दे पर नाज़िल की, उस दिन जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुई थीं। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

(42) याद करो जब तुम घाटी के निकटवर्ती भाग में थे और वे दूर के भाग में थे और क़ाफ़िला तुमसे कमतर था। यदि तुम किसी से मिलने का समय तय करते तो उससे चूक जाते। लेकिन यह इसलिए था कि अल्लाह एक ऐसा काम पूरा कर दे जो पहले से तय था। ताकि जो लोग (कुफ़्र के कारण) हलाक हुए वे प्रमाण के साथ हलाक हों और जो जीवित रहे वे प्रमाण के साथ जीवित रहें। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(43) याद करो जब अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे स्वप्न में थोड़े से रूप में दिखाया था, यदि वह उन्हें अधिक रूप में दिखाता तो तुम हिम्मत हार जाते और झगड़ने लगते, किन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। निस्संदेह वह सीनों के अन्दर की बात भी भली-भाँति जानता है।

(44) और जब तुम उनसे मिले तो उसने उन्हें तुम्हारे सामने कम करके दिखाया और तुम्हें भी उनकी नज़रों में कम करके दिखाया, ताकि अल्लाह एक तय काम को पूरा कर दे। और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटकर जाते हैं।

(45) ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी गिरोह से भिड़ो तो डटे रहो और अल्लाह को अधिक याद करो, ताकि तुम सफल हो सको।

(46) और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानो और विवाद न करो और हिम्मत न हारो, अन्यथा तुम्हारी शक्ति चली जायेगी और धैर्य रखो। निस्संदेह अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

(47) और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से लोगों को दिखाने के लिए अकड़कर निकले और अल्लाह के मार्ग से रोकते रहे। अल्लाह उन कामों को घेरे हुए है जो वे करते हैं।

(48) और याद करो जब शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए अच्छा बना दिया और कहा, "आज लोगों में से कोई तुमपर विजय नहीं पा सकता। मैं तुम्हारा रक्षक हूँ।" फिर जब दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे को देखा तो वह पीछे मुड़ा और बोला, "मैं तुमसे अलग हो गया हूँ। मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे हो। मैं अल्लाह से डरता हूँ। अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।"

(49) याद करो जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी थी, कहने लगे कि उनके धर्म ने उन्हें गुमराह कर दिया है। किन्तु जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे तो निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(50) और यदि तुम देख पाते जब फ़रिश्ते इनकार करनेवालों के प्राण लेते हैं, उनके चेहरों और पीठों पर मारते हुए और कहते हैं, "जहन्नम की यातना चखो।

(51) यह तुम्हारे हाथों द्वारा किए गए बुरे कार्यों के कारण है और इसलिए भी कि अल्लाह अपने बन्दों पर कभी अत्याचार नहीं करता।

(52) जैसा कि फ़िरऔन की क़ौम और उनसे पहले वालों का व्यवहार था, उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें पकड़ लिया। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, कठोर दण्ड देनेवाला है।

(53) यह इसलिए कि अल्लाह किसी क़ौम पर जो उपकार करता है, उसे तब तक नहीं बदलता जब तक कि वे अपने मन में परिवर्तन न कर लें। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(54) जैसा कि फ़िरऔन की क़ौम और उनसे पहले वालों का व्यवहार था, उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो हमने उनके पापों के कारण उन्हें विनष्ट कर दिया और फ़िरऔन की क़ौम को डुबो दिया, और वे सब के सब अत्याचारी थे।

(55) निस्संदेह अल्लाह के निकट सबसे बुरे प्राणी वे हैं जिन्होंने इनकार किया और वे कदापि ईमान नहीं लाएँगे।

(56) वे लोग हैं जिनसे तुमने संधि की थी, फिर वे हर बार अपनी प्रतिज्ञा तोड़ देते हैं और वे अल्लाह से डरते नहीं।

(57) अतः यदि तुम युद्ध में उनपर प्रभुत्व प्राप्त कर लो, तो उनके द्वारा उनके पीछे वालों को तितर-बितर कर दो, ताकि वे स्मरण कर लें।

(58) यदि तुम्हें किसी क़ौम के विश्वासघात का भय हो तो उनसे वापिस संधि कर लो और आपस में बराबरी कर लो। निस्संदेह अल्लाह विश्वासघातियों को पसन्द नहीं करता।

(59) और जो लोग इनकार करने लगे, वे यह न समझें कि वे बच निकलेंगे। निस्संदेह वे (अल्लाह को) असफल नहीं करेंगे।

(60) और उनके विरुद्ध अपनी शक्ति और युद्ध के घोड़े तैयार करो, जिनसे तुम अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और उनके अतिरिक्त उन लोगों को भी डरा दो जिन्हें तुम नहीं जानते, परन्तु जिन्हें अल्लाह जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह के मार्ग में व्यय करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा।

(61) और यदि वे शांति की ओर झुकें तो आप भी उसी की ओर झुकें और अल्लाह पर भरोसा रखें। निस्संदेह वही सुनने वाला जानने वाला है।

(62) किन्तु यदि वे तुम्हें धोखा देना चाहें तो तुम्हारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है। वही है जिसने अपनी सहायता से और ईमान वालों के द्वारा तुम्हारी सहायता की है।

(63) और उनके दिलों को मिला दिया। यदि तुम धरती में जो कुछ है, सब खर्च कर देते, तो भी उनके दिलों को न मिला सकते थे। परन्तु अल्लाह ने उन्हें मिला दिया। निस्संदेह वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(64) ऐ नबी! तुम्हारे लिए अल्लाह और जो भी ईमानवाले तुम्हारे अनुयायी बनें, उनके लिए अल्लाह ही काफ़ी है।

(65) ऐ नबी! ईमान वालों को युद्ध के लिए उकसाओ। यदि तुममें से बीस लोग धैर्यवान हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त करेंगे। और यदि तुममें से सौ लोग धैर्यवान हों तो वे काफ़िरों में से एक हज़ार पर विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो अज्ञानी हैं।

(66) अब अल्लाह ने तुमपर से बोझ हल्का कर दिया है और जानता है कि तुममें कमज़ोरी है। तो यदि तुममें सौ लोग धैर्य रखें तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त करेंगे। और यदि तुममें से हज़ार लोग हों तो वे अल्लाह की अनुमति से दो हज़ार पर विजय प्राप्त करेंगे। और अल्लाह धैर्य रखनेवालों के साथ है।

(67) किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि वह बन्दी बनाए जब तक कि वह पूरी तरह से धरती पर कब्ज़ा न कर ले। तुम सांसारिक वस्तुओं की चाहत रखते हो , किन्तु अल्लाह तुम्हारे लिए आख़िरत चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(68) यदि अल्लाह की ओर से पहले से ही एक आदेश न होता तो जो कुछ तुमने किया उसके कारण तुम्हें बड़ी यातना मिलती।

(69) अतः जो कुछ तुमने लूट का माल पकड़ा है, उसे हलाल और अच्छा मानकर खाओ और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(70) ऐ नबी! जो बन्दी तुम्हारे हाथ में हों उनसे कह दो कि यदि अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई जान लेगा तो जो कुछ तुमसे छीना गया है उससे बेहतर तुम्हें प्रदान करेगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(71) किन्तु यदि वे तुम्हारे साथ विश्वासघात करना चाहें तो वे पहले ही अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं, और अल्लाह ने उनपर तुमको अधिकार प्रदान किया है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(72) जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और जानों से जिहाद किया और जिन्होंने शरण दी और सहायता की, वे एक दूसरे के मित्र हैं। किन्तु जो लोग ईमान लाए और हिजरत नहीं की, उनपर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं जब तक कि वे हिजरत न कर लें। किन्तु यदि वे तुमसे धर्म के लिए सहायता माँगें तो तुम पर उनका सहयोग करना अनिवार्य है, सिवाय उन लोगों के विरुद्ध जिनके साथ तुम्हारे और तुम्हारे बीच संधि हो। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

(73) और जो लोग इनकार करने लगे वे एक दूसरे के मित्र हैं, यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में फितना फैल जायेगी और बहुत फसाद हो जायेगा।

(74) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया और जिन्होंने शरण दी और सहायता की, वही लोग ईमान वाले हैं। उनके लिए क्षमा और उत्तम जीविका है।

(75) और जो लोग (प्रथम प्रवास के पश्चात) ईमान लाए और उन्होंने (प्रथम प्रवास के पश्चात) हिजरत की और तुम्हारे साथ युद्ध किया, वे तुममें से हैं। किन्तु रिश्तेदार अल्लाह के आदेश के अनुसार अधिक हकदार हैं। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

# सूरा 9: ٱلتَّوْبَة‎ (अत-तौबा) - तौबा

(1) यह अल्लाह और उसके रसूल से विमुख होने का बयान है, उन लोगों के लिए जिनसे तुमने संधि की थी, मुश्रिकों में से।

(2) अतः तुम चार महीने तक धरती में स्वतंत्र होकर घूमो-फिरो, किन्तु जान लो कि तुम अल्लाह से बच नहीं सकते और अल्लाह इनकार करनेवालों को अपमानित करेगा।

(3) और अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों के लिए हज्ज के दिन यह घोषणा की गई है कि अल्लाह मुश्रिकों से अलग हो गया है और उसका रसूल भी। अतः यदि तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जान लो कि तुम अल्लाह के लिए असफलता का कारण नहीं बनोगे। और इनकार करनेवालों को दुखद यातना की ख़बर दे दो।

(4) परन्तु वे लोग हैं जिनसे तुमने मुश्रिकों में से कोई संधि कर ली, फिर उन्होंने न तो तुम्हारे साथ कोई कमी की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी का साथ दिया। अतः तुम उनसे उनकी संधि पूरी कर दो, यहाँ तक कि उनकी अवधि समाप्त हो जाए। निस्संदेह अल्लाह डर रखनेवालों को प्रिय है।

(5) और जब हराम महीने बीत जाएँ तो मुश्रिकों को जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो, घेरो और हर घात की जगह पर उनकी घात में बैठो। फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

(6) और यदि मुश्रिकों में से कोई तुमसे शरण चाहे तो उसे शरण दे दो, ताकि वह अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह इसलिए कि वे लोग अज्ञानी हैं।

(7) मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के निकट कोई संधि कैसे हो सकती है, सिवाय उन लोगों के जिनसे तुमने मस्जिदे हराम में संधि की थी? अतः जब तक वे तुम्हारे प्रति न्यायपूर्ण रहें, तुम भी उनके प्रति न्यायपूर्ण रहो। निस्संदेह अल्लाह डर रखनेवालों को प्रिय है।

(8) और यदि वे तुमपर प्रभुत्व जमा लें, तो तुम्हारे सम्बन्ध में न तो कोई सम्बन्धी सन्धि करते हैं, न कोई रक्षा-वचन। वे अपने मुँह से तो तुम्हें संतुष्ट कर देते हैं, परन्तु उनके दिल इनकार करते हैं और उनमें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

(9) उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़े से मूल्य में बदल दिया और उसके मार्ग से रोक दिया। निश्चय ही वे बहुत बुरा काम कर रहे थे।

(10) वे किसी ईमानवाले के साथ न तो कोई सम्बन्ध रखते हैं और न कोई सुरक्षा का वचन, और वही लोग उल्लंघनकारी हैं।

(11) फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे तुम्हारे दीन भाई हैं और हम आयतें उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

(12) फिर यदि वे अपने समझौते के पश्चात अपनी शपथों को तोड़ दें और तुम्हारे धर्म पर कलंक लगाएँ, तो कुफ़्र के सरदारों से युद्ध करो, क्योंकि उनके लिए कोई शपथ पवित्र नहीं है, ताकि वे बाज़ आएँ।

(13) क्या तुम उन लोगों से नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ दीं और रसूल को निकाल देने का इरादा कर लिया, और वे ही तुमपर पहले हमला कर चुके थे? क्या तुम उनसे डरते हो? यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह को इस बात पर अधिक अधिकार है कि तुम उससे डरो।

(14) उनसे लड़ो, अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें यातना देगा और उन्हें अपमानित करेगा और तुम्हें उनपर विजय प्रदान करेगा और ईमानवाले लोगों के दिलों को संतुष्ट करेगा।

(15) और उनके दिलों में जो क्रोध है उसे दूर कर दे। अल्लाह जिसे चाहे क्षमा कर दे। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(16) क्या तुम समझते हो कि तुम ऐसे ही छोड़ दिए जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी तक तुममें से उन लोगों को प्रत्यक्ष नहीं किया है जो जिहाद करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के अतिरिक्त किसी को अपना मित्र नहीं बनाते? और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे परिचित है।

(17) मुश्रिकों के लिए यह उचित नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को बनाए रखें और अपने विरुद्ध कुफ़्र की गवाही दें। ऐसे लोगों के कर्म व्यर्थ हो गए और वे सदैव आग में रहेंगे।

(18) अल्लाह की मस्जिदों की देखभाल तो बस वही लोग कर सकते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, नमाज़ क़ायम करते हों, ज़कात देते हों और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते हों, क्योंकि उम्मीद है कि वही लोग सीधे मार्ग पर चलनेवाले होंगे।

(19) क्या तुमने हाजी को पानी पिलाने और मस्जिदुल हराम की देखभाल को उस व्यक्ति के बराबर कर दिया है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए और अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करे? वे अल्लाह के निकट समान नहीं हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(20) जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ वही लोग बड़े दर्जे के हैं और वही लोग सफल होनेवाले हैं।

(21) उनका रब उन्हें अपनी ओर से दयालुता और प्रसन्नता की शुभ सूचना देता है और उनके लिए ऐसे जन्नतों की भी, जिनमें सदैव सुख है।

(22) वे उसमें सदैव रहेंगे, निस्संदेह अल्लाह के पास बड़ा प्रतिदान है।

(23) ऐ ईमान लाने वालों! अपने बाप-दादा और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ, यदि उन्होंने ईमान पर कुफ़्र को प्राथमिकता दी हो। और जो तुममें से ऐसा करेगा, तो वही लोग अत्याचारी हैं।

(24) कह दो, "यदि तुम्हारे पिता, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारे सम्बन्धी, जो धन तुमने कमाया है, व्यापार जिसके बिगड़ने का तुम्हें भय है, और वे घर जिनसे तुम प्रसन्न हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल तथा उसके मार्ग में संघर्ष करने से अधिक प्रिय हैं, तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना आदेश दे दे। अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।"

(25) अल्लाह ने तुम्हें बहुत-से क्षेत्रों में विजय प्रदान की है, और हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी अधिकता ने तुम्हें प्रसन्न किया, किन्तु वह तुम्हारे कुछ काम न आयी, और धरती अपनी विशालता के कारण तुम्हारे लिए सीमित हो गयी, तो तुम पीछे हटकर भागने लगे।

(26) फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपनी शांति उतारी और फ़रिश्तों को भेजा जिन्हें तुम देख नहीं सके और इनकार करनेवालों को दण्ड दिया। और यही इनकार करनेवालों का बदला है।

(27) फिर अल्लाह इसके पश्चात जिसकी चाहेगा तौबा स्वीकार करेगा और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(28) ऐ ईमान लाने वालों! मुश्रिक लोग तो नापाक हैं। अतः उन्हें चाहिए कि वे इस वर्ष के पश्चात मस्जिदे हराम के निकट न आएं। और यदि तुम्हें अभाव का भय हो तो अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अपने अनुग्रह से समृद्ध कर देगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(29) उन लोगों से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान लाए और न अन्तिम दिन पर, और जो उस चीज़ को हराम नहीं मानते जो अल्लाह और उसके रसूल ने हराम की है, और जो उन लोगों में से सत्यधर्म को नहीं अपनाते जिन्हें किताब दी गई थी, यहाँ तक कि वे स्वेच्छा से जिज़्या देने लगें और दीन-हीन हो जाएँ।

(30) यहूदी कहते हैं कि एज्रा अल्लाह का बेटा है और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है। यह उनके मुँह से निकली बात है। वे उन लोगों की बात की नकल करते हैं जिन्होंने इनकार किया। अल्लाह उन्हें विनष्ट कर दे। वे कहाँ गुमराह हो गए?

(31) उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने विद्वानों और संन्यासियों को और मरयम के बेटे मसीह को भी अपना रब बना लिया। और उन्हें तो बस एक ही ख़ुदा की इबादत करने का हुक्म दिया गया था। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। वह महान है उससे, जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(32) वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से बुझा दें, किन्तु अल्लाह तो अपने प्रकाश को पूर्ण करने के सिवा कुछ नहीं चाहता, यद्यपि इनकार करनेवाले इसे नापसंद करते हैं।

(33) वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर स्पष्ट कर दे, यद्यपि अल्लाह का साझी बनानेवाले उसे नापसंद करते हों।

(34) ऐ ईमान लाने वालों! बहुत से विद्वान और संन्यासी लोगों के मालों को अन्यायपूर्वक खा जाते हैं और उन्हें अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी इकट्ठा करते हैं और उसे अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की ख़बर दे दो।

(35) जिस दिन उन्हें जहन्नम की आग में तपाया जाएगा और उससे उनके माथे, उनके पार्श्व और उनकी पीठें झुलस जाएँगी, "यह वही है जो तुमने अपने लिए जमा किया था। अतः जो कुछ तुम जमा करते थे, उसका मज़ा चखो।"

(36) अल्लाह के निकट महीनों की संख्या बारह है, अल्लाह के रजिस्टर में उस दिन से जब उसने आकाशों और धरती को पैदा किया। उनमें से चार आदरणीय हैं। यही सच्चा धर्म है। अतः तुम उनमें अपने ऊपर अत्याचार न करो। और मुश्रिकों से उसी प्रकार लड़ो जिस प्रकार वे तुमसे लड़ रहे हैं। और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

(37) निश्चय ही, (प्रतिबन्धित महीनों में) विलम्ब करना कुफ़्र में वृद्धि है, जिससे काफ़िर गुमराह हो जाते हैं। वे एक वर्ष हलाल और दूसरा वर्ष हराम करते हैं, ताकि अल्लाह ने जो हराम किया है, उसकी संख्या के अनुसार वे हलाल करते हैं। और इस प्रकार वे उन चीज़ों को हलाल करते हैं जिन्हें अल्लाह ने हराम किया है। उनके लिए उनके बुरे कर्म प्रसन्न करने वाले हैं, और अल्लाह इनकार करनेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

(38) ऐ ईमान लानेवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह के मार्ग में निकलो तो तुम धरती से चिपक जाते हो? क्या तुम आख़िरत की अपेक्षा सांसारिक जीवन से संतुष्ट हो? आख़िरत के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन का आनंद कुछ और ही है, बस थोड़ा सा।

(39) यदि तुम न निकलोगे तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा और तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को ले आएगा, और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(40) यदि तुम उसकी सहायता न करो, तो अल्लाह ने उसकी सहायता कर दी है, जब इनकार करनेवालों ने उसे दो लोगों में से एक बनाकर निकाल दिया था, जबकि वे गुफा में थे और उसने अपने साथी से कहा, "शोक न करो, अल्लाह हमारे साथ है।" और अल्लाह ने उस पर अपनी शांति उतारी और ऐसे फ़रिश्तों से उसकी सहायता की जिन्हें तुमने नहीं देखा और इनकार करनेवालों की बात को सबसे छोटा बना दिया, जबकि अल्लाह की बात सबसे ऊँची है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(41) निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या भारी, और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम जानो।

(42) यदि यह कोई आसान रास्ता होता और कोई आसान यात्रा होती तो वे तुम्हारे पीछे आ जाते, किन्तु दूरी उनके लिए बहुत अधिक थी। और वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि यदि हम सक्षम होते तो तुम्हारे साथ निकल पड़ते। और वे अपने आपको नष्ट कर रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

(43) हे नबी! अल्लाह तुम्हें क्षमा करे! तुमने उन्हें क्यों अनुमति दी, इससे पहले कि तुम पर स्पष्ट हो कि कौन सच्चे हैं और तुम जानते ही नहीं कि कौन झूठे हैं?

(44) जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुमसे यह अनुमति नहीं माँगते कि वे अपने मालों और प्राणों से जिहाद करें। और अल्लाह उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो उससे डरते हैं।

(45) तुमसे अनुमति तो बस वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान नहीं रखते और जिनके दिल सन्देह में पड़ गये हैं और वे अपने सन्देह में संकोच में पड़े हुए हैं।

(46) और यदि वे निकलना चाहते तो उसके लिए कुछ तैयारी कर लेते, किन्तु अल्लाह को उनका भेजा जाना पसन्द नहीं आया, अतः उसने उन्हें रोक लिया और उनसे कहा गया कि "तुम भी उन लोगों के साथ रहो जो बचे हुए हैं।"

(47) यदि वे तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हें केवल उलझन में डालते और तुम्हारे बीच में सक्रिय रहते तथा तुम्हें फितना दिलाने की कोशिश करते। और तुममें से बहुत से लोग उनकी बात सुनते हैं। अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

(48) वे इससे पहले भी मतभेद चाहते थे और तुम्हारे लिए चीज़ें बिगाड़ते रहे थे, यहाँ तक कि सत्य आ गया और अल्लाह का आदेश प्रभावी हुआ, और वे इससे विमुख हो गए।

(49) और उनमें से कोई ऐसा भी है जो कहता है कि "मुझे अनुमति दे दो और मुझे परीक्षा में न डालो।" निस्संदेह वे परीक्षा में पड़ चुके हैं। और निश्चय ही जहन्नम इनकार करनेवालों को घेर लेगी।

(50) यदि तुमपर कोई भलाई आती है तो वे दुःखी हो जाते हैं, किन्तु यदि तुमपर कोई विपत्ति आती है तो वे कहते हैं कि हमने तो अपना काम पहले ही कर लिया है, और वे मुँह फेर लेते हैं, इस दशा में कि वे प्रसन्न होते हैं।

(51) कह दो, "हम पर कभी कोई आघात नहीं होगा, परन्तु वही होगा जो अल्लाह ने हमारे लिए निर्धारित कर दिया है। वही हमारा रक्षक है।" और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

(52) कह दो, "क्या तुम हमारे लिए दो उत्तम चीज़ों के सिवा किसी एक चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हो, जबकि हम तुम्हारे लिए इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से या हमारे द्वारा यातना दे? अतः तुम प्रतीक्षा करो, निश्चय ही हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

(53) कह दो, "चाहे स्वेच्छा से ख़र्च करो या अनिच्छा से, वह तुमसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। निस्संदेह, तुम बड़े अवज्ञाकारी लोग हो।"

(54) और उनके ख़र्चों के स्वीकार किए जाने में इसके अतिरिक्त और क्या बाधा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ इनकार किया और वे नमाज़ के लिए आलसी होकर ही आते हैं और वे ख़र्च भी अनिच्छा से ही करते हैं।

(55) अतः तुम पर उनके धन और उनकी सन्तान का कोई प्रभाव न पड़े। अल्लाह तो बस यही चाहता है कि उनके द्वारा सांसारिक जीवन में उन्हें यातना दे और उनकी आत्माएँ इस दशा में निकलें कि वे इनकार करनेवाले ही हों।

(56) और वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वे तुममें से हैं, हालाँकि वे तुममें से नहीं हैं, बल्कि वे डरने वाले लोग हैं।

(57) यदि उन्हें कोई शरणस्थल या गुफा या कोई ऐसी जगह मिल जाए जहाँ वे घुसकर छिप सकें तो वे उसकी ओर भागते हुए बेखबर भागते हैं।

(58) और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दान के वितरण के विषय में तुम्हारी आलोचना करते हैं। यदि उन्हें दान दिया जाए तो वे प्रसन्न हो जाते हैं और यदि उन्हें दान न दिया जाए तो वे क्रोधित हो जाते हैं।

(59) यदि वे उसी पर संतुष्ट हो जाते जो अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें दिया और कहते कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह हमें अपने अनुग्रह से देगा और उसका रसूल भी। हम अल्लाह की ओर से इच्छुक हैं। (यह उनके लिए अच्छा होता)

(60) ज़कात तो बस ग़रीबों, मुहताजों, ज़कात वसूलने वालों, दिलों को जोड़ने वालों, बन्दियों को छुड़ाने वालों, क़र्ज़दारों, अल्लाह के मार्ग में और मुसाफ़िरों के लिए है। यह अल्लाह की ओर से एक दायित्व है। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(61) और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नबी पर निन्दा करते हैं और कहते हैं कि "वह तो कान है।" कह दो कि जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और ईमान वालों पर ईमान लाए, उनके लिए यह भलाई का कान है और जो लोग तुममें से ईमान लाए, उनके लिए यह दया है। और जो लोग अल्लाह के रसूल पर निन्दा करते हैं, उनके लिए दुखद यातना है।

(62) वे तुम्हारे समक्ष अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम्हें संतुष्ट कर सकें। यदि वे ईमान वाले हों तो अल्लाह और उसका रसूल उनसे संतुष्ट करने के अधिक हक़दार हैं।

(63) क्या वे नहीं जानते कि जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करेगा, उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें वह सदैव रहेगा? यही बड़ी अपमानजनक बात है।

(64) मुनाफ़िक़ लोग डरते हैं कि कहीं कोई सूरा उनपर न उतर आए जो उनके दिलों में है। कह दो, "मज़ाक करो, अल्लाह उसे उजागर कर देगा जिससे तुम डरते हो।"

(65) और यदि तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे, "हम तो बस बातें और खेल-कूद कर रहे थे।" कह दो, "क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल का उपहास कर रहे थे?"

(66) कोई बहाना न बनाओ, तुम अपने ईमान के पश्चात इनकार कर बैठे। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें, तो दूसरे गिरोह को अवश्य दण्ड देंगे, क्योंकि वे अपराधी थे।

(67) मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ एक दूसरे के पूरक हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं और अपने हाथ बन्द कर लेते हैं। वे अल्लाह को भूल गए, इसलिए उसने भी उन्हें भूल दिया। निस्संदेह मुनाफ़िक़ ही अवज्ञाकारी हैं।

(68) अल्लाह ने कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी स्त्रियों और इनकार करनेवालों से जहन्नम की आग का वादा किया है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। उनके लिए यही काफी है। और अल्लाह ने उनपर लानत की है और उनके लिए स्थायी यातना है।

(69) तुम उन लोगों की तरह हो जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। वे तुमसे शक्ति में अधिक शक्तिशाली थे और धन और संतान में अधिक थे। उन्होंने अपना हिस्सा भोगा और तुमने भी अपना हिस्सा भोगा, जिस तरह तुमसे पहले के लोगों ने अपना हिस्सा भोगा और तुम भी उनके जैसे ही कामों में लगे रहे। यही वे लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आख़िरत में व्यर्थ हो गए और वही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं।

(70) क्या उन लोगों के पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले थे - नूह की क़ौम और आद और समूद और इबराहीम की क़ौम और मद्यन के लोग और उलटी हुई बस्तियाँ? उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए। अल्लाह उन पर ज़ुल्म नहीं करना चाहता था, परन्तु वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे।

(71) ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ एक दूसरे के सहयोगी हैं। वे भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं। वे नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। ऐसे लोगों पर अल्लाह दया करेगा। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(72) अल्लाह ने ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनमें सदैव रहेंगे। किन्तु अल्लाह की प्रसन्नता इससे कहीं अधिक है। यही बड़ी सफलता है।

(73) ऐ नबी! इनकार करनेवालों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो और उनपर सख़्ती करो। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह ठिकाना बहुत बुरा है।

(74) वे अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने कुफ़्र की बात कही थी और इस्लाम के पश्चात कुफ़्र किया और ऐसी योजना बनाई जो उन्हें प्राप्त नहीं होनी थी। और वे केवल इसी बात पर नाराज़ हुए कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़ल से समृद्ध किया। अतः यदि वे तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर है। किन्तु यदि वे मुँह मोड़ लें तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना देगा और धरती पर उनका कोई संरक्षक और सहायक नहीं होगा।

(75) और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वचन लिया कि यदि वह हमें अपने अनुग्रह से प्रदान करे तो हम अवश्य दान करेंगे और हम अवश्य ही नेक लोगों में से होंगे।

(76) फिर जब उसने उन्हें अपने अनुग्रह से कुछ दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और इनकार करते हुए मुँह फेर लिया।

(77) अतः उसने उन्हें उनके दिलों में पाखण्ड की यातना दी, जिस दिन तक वे उससे मिलेंगे। इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था, उसे पूरा नहीं किया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।

(78) क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह उनके भेदों और उनकी गुप्त बातों को जानता है और निस्संदेह अल्लाह परोक्ष का जाननेवाला है।

(79) जो लोग ईमानवालों में से दानदाताओं को दान के विषय में बुरा भला कहते हैं और जो लोग अपने परिश्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं पाते, तो उनका उपहास करते हैं, अल्लाह उनका उपहास करेगा और उनके लिए दुखद यातना है।

(80) हे नबी! उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। यदि तुम उनके लिए सत्तर बार भी क्षमा की प्रार्थना करो तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

(81) जो लोग पीछे रह गए, वे अल्लाह के रसूल के जाने के बाद अपने घर पर ही रहने से प्रसन्न हुए और अल्लाह के मार्ग में अपने धनों और प्राणों के साथ जिहाद करना पसन्द नहीं किया और कहने लगे, "गर्मी में न निकलो।" कह दो, "जहन्नम की आग बहुत अधिक गर्म है।" यदि वे समझें।

(82) अतः उन्हें चाहिए कि वे थोड़ा हँसें और अधिक रोएँ, यह उनके कर्मों का प्रतिफल है।

(83) यदि अल्लाह तुम्हें उनके किसी गिरोह के पास लौटा दे और फिर वे तुमसे युद्ध में जाने की अनुमति माँगें तो कह दो, "तुम मेरे साथ कभी नहीं जाओगे और न मेरे शत्रु से युद्ध करोगे। निश्चय ही तुम पहले घर बैठे ही संतुष्ट हो गये थे, अतः अब तुम पीछे रह गये लोगों के साथ बैठो।"

(84) और उनमें से जो मर जाए उसपर कभी न नमाज़ पढ़ो और न उसकी क़ब्र पर खड़े होओ। निस्संदेह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ इनकार किया और वे अवज्ञाकारी अवस्था में मरे।

(85) और उनके माल और उनकी संतान तुम्हें प्रभावित न करें। अल्लाह तो बस यही चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें संसार में यातना दे और उनकी आत्माएँ इस दशा में निकलें कि वे इनकार करनेवाले ही हों।

(86) और जब एक सूरा अवतरित हुई कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल से युद्ध करो, तो उनमें से जो लोग धनवान थे, उन्होंने तुमसे अनुमति माँगी और कहा कि "हमें छोड़ दो कि हम उन लोगों के साथ रहें जो बैठे हैं।"

(87) वे पीछे रह जाने वालों के साथ रहना चाहते थे, और उनके दिलों पर मुहर लगी हुई थी। अतः वे समझ नहीं पाते।

(88) किन्तु रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए थे, उन्होंने अपने मालों और अपनी जानों से युद्ध किया। वही लोग भलाई के पात्र हैं और वही सफल होने वाले हैं।

(89) अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

(90) और जो लोग बहानेबाज़ थे, वे बद्दूओं के पास आ गए और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले थे, वे बैठ गए। उनमें से जो लोग इनकार करने लगे, उन पर दुखद यातना आएगी।

(91) न कमज़ोर पर कोई तकलीफ़ है, न बीमार पर, न उन लोगों पर जो कुछ ख़र्च करने के योग्य पाते हैं, जब वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति सच्चे हों। और न अच्छे काम करनेवालों पर कोई दोष है, और न अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(92) और उन लोगों पर कोई दोष नहीं है, जो जब तुम्हारे पास आए ताकि तुम उन्हें सवारी प्रदान करो तो तुमने कहा कि मैं तुम्हारे लिए कोई सवारी नहीं पा रहा हूँ। वे लौट गए, इस दशा में कि उनकी आँखें आँसूओं से बह रही थीं, इस दुःख के कारण कि उन्हें खर्च करने के लिए कुछ नहीं मिला।

(93) दोष तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे अनुमति माँगते हैं, जबकि वे धनवान हैं। वे पीछे रह जाने वालों के साथ संतुष्ट हैं। और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः वे नहीं जानते।

(94) जब तुम उनकी ओर लौटोगे तो वे तुम्हारे सामने बहाने बनाएंगे। कह दो, "बहाना न बनाओ। हम तुमपर कभी विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बर बता दी है। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देखेगा और उसका रसूल भी। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के जाननेवाले की ओर लौटाए जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।"

(95) जब तुम उनकी ओर लौटोगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे कि तुम उन्हें छोड़ दोगे। तो तुम उन्हें छोड़ दो। वास्तव में वे बुरे हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, जो कुछ उन्होंने किया है, उसके बदले में।

(96) वे तुमसे क़समें खाते हैं, ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। किन्तु यदि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, तो निश्चय ही अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों से राज़ी नहीं होता।

(97) बद्दू लोग कुफ़्र और पाखण्ड में अधिक प्रबल हैं और अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ अवतरित किया है, उसकी सीमाओं को वे अधिक नहीं जानते। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(98) और बद्दुओं में से कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने ख़र्च को घाटा समझते हैं और तुम्हारे लिए मुसीबत की प्रतीक्षा में रहते हैं। उनपर बुरी मुसीबत आ पड़ेगी। और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(99) किन्तु बद्दुओं में से कुछ लोग अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ वे खर्च करते हैं उसे अल्लाह की निकटता और रसूल की दुआ का साधन समझते हैं। निस्संदेह यह उनके लिए निकटता का साधन है। अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(100) और जो मुहाजिरीन और अन्सार में से पहले आये और जो अच्छे आचरण से उनके अनुयायी बने, अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हुए और उसने उनके लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।

(101) और तुम्हारे आस-पास के बद्दूओं में से भी कुछ लोग कपटाचारी हैं, और मदीना के लोग भी। वे कपटाचार में लगे रहे। तुम उन्हें नहीं जानते, परन्तु हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दुगनी यातना देंगे, फिर वे बड़ी यातना की ओर लौटाए जाएँगे।

(102) और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया। उन्होंने एक अच्छा काम दूसरे बुरे काम के साथ मिला दिया। आशा है कि अल्लाह उनकी क्षमा कर दे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(103) उनके मालों में से दान ले लो, जिससे तुम उन्हें पवित्र बनाओ और उनकी वृद्धि करो, और उनपर दुआ करो। निस्संदेह तुम्हारी दुआएँ उनके लिए शांतिदायक हैं। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(104) क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और ख़ैरात लेता है और वास्तव में अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

(105) कह दो, "जो कुछ तुम करना चाहते हो करो। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देखेगा, तथा उसका रसूल और ईमान वाले भी। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के जाननेवाले की ओर लौटाए जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो।"

(106) और कुछ लोग अल्लाह के आदेश तक स्थगित हैं, चाहे वह उन्हें यातना दे या उन्हें क्षमा कर दे। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(107) और कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने मस्जिद को इसलिए बनाया कि वह नुक़सान पहुँचाए, कुफ़्र फैलाए, ईमान वालों में फूट डाले, और उन लोगों के लिए ठिकाना बनाए जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले कभी लड़ चुके हैं। और वे क़समें खाएँगे कि हमने तो अच्छा ही चाहा था। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं।

(108) उसमें कभी खड़े न होना। वह मस्जिद जो पहले दिन से ही धर्म पर आधारित हो, तुम्हारे लिए अधिक योग्य है कि उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग रहते हैं जो पवित्रता को पसन्द करते हैं, और अल्लाह पवित्रता रखनेवालों को पसन्द करता है।

(109) फिर वह व्यक्ति अच्छा है जिसने अपने भवन की नींव अल्लाह के भय और उसकी प्रसन्नता के आधार पर रखी या वह व्यक्ति अच्छा है जिसने अपने भवन की नींव उस किनारे पर रखी जो गिरने ही वाला था, फिर वह उसके साथ जहन्नम की आग में गिर पड़ा? अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(110) जो इमारतें उन्होंने बनाई हैं, वे उनके दिलों में संदेह का कारण बनी रहेंगी, यहाँ तक कि उनके दिल रुक न जाएँ। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(111) निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों से उनकी जान और माल खरीद लिए हैं, ताकि उन्हें जन्नत मिले। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं, फिर वे मारते हैं और मारे जाते हैं। तौरात, इंजील और क़ुरआन में यह उसपर एक सच्चा वादा है। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे का पक्का कौन है? अतः जो सौदा तुमने किया है, उस पर प्रसन्न हो जाओ। और यही बड़ी सफलता है।

(112) तौबा करनेवाले, नमाज़ पढ़नेवाले, प्रशंसा करनेवाले, यात्रा करनेवाले, रुकूआनेवाले, भलाई का आदेश देनेवाले और बुराई से रोकनेवाले, तथा अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का पालन करनेवाले हैं। और ईमानवालों को शुभ सूचना दे दो।

(113) नबी और ईमान वालों के लिए यह उचित नहीं कि वे मुश्रिकों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों, जबकि उनपर स्पष्ट हो चुका है कि वे जहन्नम वाले हैं।

(114) और इबराहीम ने अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना केवल एक वादे के कारण की थी जो उसने उससे किया था। फिर जब इबराहीम को यह स्पष्ट हो गया कि उसका पिता अल्लाह का शत्रु है तो उसने उससे विमुख हो गया। वास्तव में इबराहीम दयावान, धैर्यवान था।

(115) अल्लाह किसी क़ौम को मार्ग दिखाने के पश्चात भटकने नहीं देता, जब तक कि वह उनपर स्पष्ट न कर दे कि उन्हें किन चीज़ों से बचना चाहिए। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(116) निश्चय ही आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। वही जीवन देता है और मारता है। अल्लाह के सिवा तुम्हारा न तो कोई संरक्षक है और न सहायक।

(117) अल्लाह ने नबी और मुहाजिरीन और अन्सार को, जिन्होंने कठिनाई के समय उनका अनुसरण किया, क्षमा कर दिया, जबकि उनमें से एक गिरोह के दिल लगभग झुक चुके थे, फिर उसने उन्हें क्षमा कर दिया। निस्संदेह वह उनपर अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(118) और उन तीन लोगों को भी क्षमा कर दिया जो पीछे रह गए थे यहाँ तक कि धरती ने अपनी विशालता के बावजूद उन्हें घेर लिया और उनके प्राणों ने उन्हें जकड़ लिया और उन्हें विश्वास हो गया कि अल्लाह के पास शरण लेने के लिए उसके सिवा कोई स्थान नहीं है। फिर उसने उनकी ओर ध्यान दिया, ताकि वे तौबा कर लें। निस्संदेह अल्लाह तौबा स्वीकार करनेवाला, दयावान है।

(119) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो।

(120) मदीना वालों और उनके आस-पास के बद्दू लोगों के लिए यह उचित नहीं था कि वे अल्लाह के रसूल के जाने के बाद पीछे रह जाएँ या अपने आपको उनकी जान से अधिक तरजीह दें। ऐसा इसलिए क्योंकि वे अल्लाह के मार्ग में प्यास, थकान या भूख से पीड़ित नहीं होते और न वे किसी ऐसी ज़मीन पर चलते हैं जिससे काफ़िरों को क्रोध आए और न वे किसी दुश्मन पर कोई ऐसा वार करते हैं जो उनके लिए नेक काम के रूप में दर्ज हो। निस्संदेह अल्लाह नेक काम करने वालों का बदला जाया नहीं होने देता।

(121) और न वे कोई छोटा-बड़ा व्यय करते हैं, न कोई घाटी पार करते हैं, परन्तु यह उनके लिए लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कर्मों का बदला दे।

(122) और ईमान वालों का यह हक नहीं कि वे एकाएक निकल पड़ें, बल्कि उनके हर गिरोह से एक गिरोह अलग हो जाना चाहिए जो दीन की समझ हासिल करे और अपने लोगों को डरा दे, जब वे उनकी ओर लौटें, ताकि वे सावधान रहें।

(123) ऐ ईमान लाने वालों! अपने आस-पास के इनकार करनेवालों से युद्ध करो, और चाहिए कि वे तुममें कठोरता पाएँ और जान लो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

(124) और जब भी कोई सूरा अवतरित होती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं कि "तुममें से किसका ईमान इससे बढ़ा है?" और जो लोग ईमान लाए, उनका ईमान इससे बढ़ा है और वे प्रसन्न हैं।

(125) किन्तु जिन लोगों के दिलों में रोग है, उसने उनकी बुराई पर बुराई बढ़ा दी है और वे इनकार ही की दशा में मरेंगे।

(126) क्या वे नहीं देखते कि हर वर्ष एक या दो बार उनकी परीक्षा ली जाती है, फिर न तो वे तौबा करते हैं और न याद करते हैं?

(127) और जब भी कोई सूरा अवतरित होती है तो वे एक-दूसरे की ओर देखते हैं कि क्या कोई तुम्हें देख रहा है? फिर वे चले जाते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को मोड़ दिया है, क्योंकि वे अज्ञानी लोग हैं।

(128) निश्चय ही तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है। जो कुछ तुमको कष्ट पहुँचा, वह उसके लिए कष्टकारी है। वह तुम्हारा ध्यान रखता है और ईमानवालों के प्रति अत्यन्त दयावान है।

(129) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया है और वही बड़े सिंहासन का रब है।"

# सूरा 10: يُونُس‎ (यूनुस) - योना

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, रा. ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं.

(2) क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक व्यक्ति की ओर वह्यी की कि "लोगों को सचेत करो और जो लोग ईमान लाए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि वे अपने रब के यहाँ उच्च पद वाले हैं।" इनकार करनेवाले कहते हैं, "यह तो खुला जादूगर है।"

(3) निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हो गया, और सारे कामों का संचालन करता रहा। उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। अतः उसी की इबादत करो। तो क्या तुम स्मरण नहीं करते?

(4) उसी की ओर तुम सब लौटकर जाओगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है। वही सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है, ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें उचित बदला दे। और जो लोग इनकार करेंगे, उनके लिए उनके इनकार के कारण खौलता हुआ पानी और दुखद यातना होगी।

(5) वही है जिसने सूर्य को प्रकाशवान बनाया और चन्द्रमा को प्रकाशवान बनाया और उसके लिए चरण निर्धारित किए, ताकि तुम वर्षों की गिनती और समय का हिसाब जान सको। अल्लाह ने इसे सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं बनाया। वह उन लोगों के लिए निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है जो ज्ञान रखते हैं।

(6) वास्तव में, रात और दिन के आने-जाने में और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों और धरती में पैदा किया है, उसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो उससे डरते रहें।

(7) जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, वही सांसारिक जीवन से प्रसन्न हैं और उसमें निश्चिन्त रहते हैं और जो लोग हमारी आयतों से असावधान हैं,

(8) उनकी शरणस्थली आग है, उसके कारण जो उन्होंने किया।

(9) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनका रब उन्हें उनके ईमान के द्वारा मार्ग दिखाएगा और उनके नीचे सुख के बाग़ों में नहरें बह रही होंगी।

(10) वे उसमें यह पुकारेंगे कि "पवित्र है तू, ऐ अल्लाह!" और वे उसमें यह कहेंगे कि "सलामत हो।" और उनकी दुआ का अंत यह होगा कि "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।"

(11) यदि अल्लाह लोगों पर बुराई को उसी प्रकार शीघ्रता से लागू कर देता जिस प्रकार वे भलाई को शीघ्रता से लागू करते हैं, तो उनका समय समाप्त हो जाता, किन्तु जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, उन्हें हम उनकी अवज्ञा में भटकते छोड़ देते हैं।

(12) और जब कोई मुसीबत किसी इन्सान को छूती है तो वह हमें पुकारता है, चाहे वह करवट लेकर हो, चाहे बैठा हो, चाहे खड़ा हो। लेकिन जब हम उससे उसकी मुसीबत दूर कर देते हैं तो वह ऐसे चलता है जैसे उसने कभी हमें पुकारा ही न हो, ताकि वह मुसीबत से छुटकारा पा सके। इस तरह जो कुछ वे कर रहे हैं, वह अत्याचारियों को अच्छा लगता है।

(13) और हमने तुमसे पहले भी बहुत सी जातियों को विनष्ट कर दिया, जब उन्होंने अत्याचार किया और उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आये, किन्तु वे ईमान लाने वाले न थे। इसी प्रकार हम अपराधियों को दण्ड देते हैं।

(14) फिर हमने उनके पश्चात धरती में तुम्हारा उत्तराधिकारी बनाया, ताकि हम देखें कि तुम क्या करते हो।

(15) और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, वे कहते हैं, "हमारे पास इसके अलावा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ या इसमें परिवर्तन करो।" कह दो, "मेरे लिए यह उचित नहीं कि मैं अपनी इच्छा से इसमें परिवर्तन करूँ। मैं तो केवल उसी चीज़ का अनुसरण करता हूँ, जो मेरी ओर अवतरित की जाती है। वास्तव में, यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ, तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।"

(16) कह दो, "यदि अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुम्हें न सुनाता और न वह इसे तुम्हें बताता। मैं इससे पहले भी तुम्हारे बीच एक जीवन रहा हूँ। फिर क्या तुम समझते नहीं?"

(17) तो फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले या उसकी आयतों को झुठला दे? निश्चय ही अपराधी सफल नहीं होते।

(18) वे अल्लाह से हटकर उन लोगों की बन्दगी करते हैं जो न उन्हें हानि पहुँचाते हैं और न उन्हें लाभ पहुँचाते हैं और कहते हैं, "ये लोग अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशकर्ता हैं।" कह दो, "क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात बताते हो जिसे वह आकाशों में और धरती में नहीं जानता?" वह महान है और उससे बहुत ऊँचा है जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(19) पहले लोग एक ही समुदाय थे, फिर उन्होंने विभेद किया। यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले कोई बात न होती तो जिस विषय में वे विभेद कर रहे हैं, उसके विषय में उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता।

(20) और वे कहते हैं, "उसके रब की ओर से कोई निशानी उस पर क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "परदेसी तो अल्लाह ही के अधिकार में है। अतः तुम प्रतीक्षा करो। निश्चय ही मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करनेवालों में हूँ।"

(21) और जब हम लोगों को दया का स्वाद चखाते हैं, इसके पश्चात कि उन्हें कोई कष्ट पहुँच चुका है, तो वे हमारी आयतों के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगते हैं। कह दो, "अल्लाह अधिक शीघ्र षड्यंत्र रचनेवाला है।" निश्चय ही हमारे रसूल तुम्हारी चालें लिख लेते हैं।

(22) वही है जो तुम्हें थल तथा जल में यात्रा कराता है, यहाँ तक कि जब तुम नावों पर सवार हो जाते हो और वे अनुकूल वायु के साथ उनके साथ चलती हैं और उसमें आनन्दित होते हैं, तो एक तूफ़ानी हवा आती है और चारों ओर से उन पर लहरें आती हैं, और वे समझते हैं कि वे घिर गए हैं। वे सच्चे दीन होकर अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि यदि तूने हमें इससे बचा लिया तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे।

(23) फिर जब वह उन्हें बचा लेता है तो वे धरती पर अनाधिकृत रूप से अत्याचार करने लगते हैं। ऐ लोगो! तुम्हारा यह अत्याचार तो बस अपने ही विरुद्ध है। यह सांसारिक जीवन का एक छोटा-सा सुख है। फिर तुम्हें हमारी ओर लौटना है। फिर हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या करते रहे हो।

(24) सांसारिक जीवन की मिसाल ऐसी है जैसे हम आकाश से वर्षा बरसाते हैं, फिर धरती की वनस्पतियाँ उससे मिल जाती हैं, जिससे मनुष्य और पशु खाते हैं। यहाँ तक कि जब धरती अपनी शोभा पा लेती है और सज जाती है, और उसके लोग समझ लेते हैं कि वे उस पर अधिकार कर चुके हैं, तो रात और दिन में हमारा आदेश उस पर आ जाता है, और हम उसे कटी हुई फसल बना देते हैं, मानो कल उसमें कुछ भी उगा न हो। इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए स्पष्ट करते हैं जो ध्यान करते हैं।

(25) अल्लाह शांति के घर की ओर बुलाता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है।

(26) जिन लोगों ने अच्छे कर्म किये, उनके लिए उत्तम प्रतिफल है और उससे भी अधिक। न तो अंधकार और न अपमान उनके चेहरों पर छायेगा। वही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(27) किन्तु जिन लोगों ने बुरे कर्म किये हैं, तो बुरे कर्म का बदला तो उनके लिए बराबर ही है, और अपमान उन्हें ढँक लेगा। अल्लाह से उनका कोई बचाव करनेवाला न होगा। मानो उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढँक दिये गये हों। वही लोग आग वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(28) और उस दिन को याद करो, जब हम उन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से कहेंगे जिन्होंने अल्लाह का साझीदार बनाया था, "तुम और तुम्हारे साझीदार अपने स्थान पर रहो।" फिर हम उन्हें अलग-अलग कर देंगे, और उनके साझीदार कहेंगे, "तुम हमारी बन्दगी नहीं करते थे।

(29) और हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही काफ़ी है, इस बात पर कि हम तुम्हारी इबादत से बेखबर थे।

(30) वहाँ प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि उसने क्या-क्या किया है, और वे अल्लाह की ओर लौटा दिए जाएँगे, जो उनका सच्चा पालनहार है, और जो कुछ वे घड़ते थे, वह उनसे लुप्त हो जाएगा।

(31) कहो, "आकाश और धरती से तुम्हें कौन रोज़ी देता है? या सुनने और देखने को कौन वश में करता है? और कौन जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवित में से निकालता है? और कौन हर काम का प्रबंध करता है?" वे कहेंगे, "अल्लाह।" तो कहो, "तो क्या तुम उससे डरते नहीं?"

(32) वही अल्लाह है, तुम्हारा सच्चा पालनहार। तो फिर गुमराही के सिवा और क्या है? फिर तुम कैसे बचोगे?

(33) इस प्रकार तुम्हारे रब का वचन उन लोगों पर आ पहुँचा, जिन्होंने अवज्ञा की। निश्चय ही वे ईमान नहीं लाएँगे।

(34) कहो, "क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है?" कहो, "अल्लाह सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है। फिर तुम कहाँ धोखे में पड़े हो?"

(35) कहो, "क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो सत्य की ओर मार्ग दिखाए?" कहो, "अल्लाह सत्य की ओर मार्ग दिखाता है। तो क्या जो सत्य की ओर मार्ग दिखाए, वह अधिक योग्य है कि उसका अनुसरण किया जाए या वह जो मार्ग न दिखाए, जब तक कि वह मार्ग पर न आ जाए? फिर तुम्हें क्या हो गया? तुम क्या फ़ैसला करते हो?"

(36) और उनमें से अधिकतर लोग तो बस अनुमान पर चलते हैं। निश्चय ही सत्य के सामने अनुमान कुछ काम नहीं आता। निस्संदेह अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वे करते हैं।

(37) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और द्वारा रचा जा सके, बल्कि यह तो उस पुस्तक की पुष्टि है जो इससे पहले आई है और यह उस पुस्तक की विस्तृत व्याख्या है, जिसमें कोई संदेह नहीं; यह तो सारे संसार के पालनहार की ओर से है।

(38) या वे कहते हैं कि उसने इसे गढ़ा है? कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरा ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे चाहो पुकार लो।

(39) किन्तु उन्होंने उस बात को झुठलाया जिसका ज्ञान उनके पास नहीं है और जिसका अर्थ अभी उनके पास नहीं आया। इसी प्रकार उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था। अब देखो कि अत्याचारियों का परिणाम कैसा हुआ।

(40) और उनमें से कुछ लोग उसपर ईमान लाए और कुछ लोग उसपर ईमान नहीं लाए। और तुम्हारा रब बिगाड़ पैदा करनेवालों को भली-भाँति जानता है।

(41) और यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो कह दो, "मेरे कर्म मेरे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। जो कुछ मैं करता हूँ उससे तुम विमुख हो और जो कुछ तुम करते हो उससे मैं विमुख हूँ।"

(42) और उनमें से कुछ लोग तुम्हारी बात सुनते हैं। तो क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, यद्यपि वे समझते नहीं?

(43) और उनमें से कुछ लोग तुम्हारी ओर देखते हैं। तो क्या तुम अंधों को मार्ग दिखा सकते हो, यद्यपि वे देख न सकें?

(44) निस्संदेह अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता, बल्कि लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।

(45) और जिस दिन वह उन्हें इकट्ठा करेगा, तो ऐसा लगेगा जैसे वे दिन के एक घंटे के अलावा दुनिया में रहे ही नहीं, और वे एक दूसरे को पहचान लेंगे। और वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अल्लाह से मिलने से इनकार किया और वे मार्ग पर नहीं चले।

(46) चाहे हम तुम्हें कुछ दिखा दें, जो वादा हमने उनसे किया था या तुम्हें मृत्यु देकर ले जाएँ, उन्हें हमारी ही ओर लौटना है। फिर जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह उसपर साक्षी है।

(47) और प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाएगा तो उनके बीच न्याय के अनुसार फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा।

(48) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(49) कह दो, "मेरे लिए न तो कोई हानि है और न कोई लाभ, परन्तु जो अल्लाह चाहे। प्रत्येक समुदाय के लिए एक निश्चित समय है। जब उनका समय आ जाएगा, तो वे न एक घड़ी पीछे रहेंगे और न उससे पहले।"

(50) कह दो, "क्या तुमने सोचा है कि यदि उसकी यातना तुमपर रात को या दिन में आ जाए, तो अपराधी किस बात के लिए अधीर होंगे?"

(51) तो क्या जब वह घटित हो जाएगी तो तुम उसपर ईमान ले आओगे? अभी? और तुम तो उसके लिए अधीर थे।

(52) फिर अत्याचार करनेवालों से कहा जाएगा कि "आखिरकार की यातना चखो। क्या तुम्हें बदला दिया जा रहा है, परन्तु केवल वही जो तुम करते रहे हो?"

(53) और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सत्य है? कह दो कि हाँ, मेरे रब की क़सम। निस्संदेह यह सत्य है और तुम इससे बच नहीं सकते।

(54) और यदि हर ज़ालिम के पास धरती में जो कुछ भी हो, वह उसे फ़िदेय के रूप में दे दे। और जब वे यातना देखेंगे तो पछताएँगे। और उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा।

(55) निस्संदेह अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में है। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(56) वही जीवन देता है और वही मारता है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।

(57) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से शिक्षा आ चुकी है और जो कुछ दिलों में है उसके लिए शिफ़ा और ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और दया।

(58) कह दो, "अल्लाह के अनुग्रह और उसकी दयालुता से उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। यह उससे कहीं बेहतर है जो वे इकट्ठा करते हैं।"

(59) कहो, "क्या तुमने देखा कि अल्लाह ने तुम्हारी ओर जो रोज़ी उतारी है, उसमें से तुमने कुछ हलाल और कुछ हलाल कर दिया?" कहो, "क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी है या तुम अल्लाह पर कुछ झूठ बोलते हो?"

(60) और क़ियामत के दिन जो लोग अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं, उनका क्या अनुमान होगा? निस्संदेह अल्लाह लोगों पर अत्यन्त अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

(61) और तुम किसी काम में न लगो और न क़ुरआन की कोई आयत पढ़ो और न कोई ऐसा काम करो जिसमें तुम उलझे हुए हो, परन्तु हम तुम्हारे ऊपर साक्षी हैं। और तुम्हारे रब के यहाँ से किसी चीज़ की कोई मात्रा गायब नहीं होती जो धरती और आकाश में कण के बराबर भी हो या उससे छोटी या बड़ी, परन्तु वह स्पष्ट रजिस्टर में दर्ज हो।

(62) निस्संदेह अल्लाह के सहयोगियों के लिए कोई भय नहीं होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(63) जो लोग ईमान लाए और अल्लाह से डरते रहे।

(64) उन्हीं के लिए सांसारिक जीवन तथा आख़िरत में शुभ सूचना है। अल्लाह के वचनों में कोई परिवर्तन नहीं। यही बड़ी सफलता है।

(65) और उनकी बातें तुम्हें दुखी न करें। निस्संदेह सारा सम्मान अल्लाह के लिए है। वह सब सुनता, जानता है।

(66) निस्संदेह अल्लाह ही का है जो कोई आकाशों में है और जो कोई धरती में है। और जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारते हैं, वे वास्तव में किसी साझीदार का अनुसरण नहीं करते। वे तो केवल अनुमान करके अनुसरण करते हैं, और वे तो केवल अटकलें लगाते हैं।

(67) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि उसमें आराम करो और दिन बनाया ताकि तुम देख सको। निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ध्यान से सुनें।

(68) वे कहते हैं, "अल्लाह ने एक बेटा बनाया है।" वह पवित्र है, वह अत्यन्त क्षमाशील है। जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह सब उसी का है। इस बात का तुम कोई प्रमाण नहीं रखते। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?

(69) कह दो, "जो लोग अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं, वे सफल नहीं होंगे।"

(70) संसार में उनका सुख-चैन बहुत कम है, फिर उन्हें हमारी ओर लौटना है, फिर हम उन्हें कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे, क्योंकि वे इनकार करते रहे।

(71) और उन्हें नूह का वृत्तान्त सुनाओ, जब उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यदि मेरा निवास और मेरा अल्लाह की आयतों की याद दिलाना तुमपर भारी पड़ गया है, तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया है। अतः अपनी योजना पर दृढ़ निश्चय करो और अपने साझीदारों को बुलाओ। फिर अपनी योजना को अपने लिए अस्पष्ट न होने दो। फिर उसी को मेरे विरुद्ध लागू करो और मुझे मोहलत न दो।

(72) और यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला तो बस अल्लाह की ओर से है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ।

(73) और उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हमने उसे और जो लोग उसके साथ नाव में थे, उन्हें बचा लिया और उन्हें उत्तराधिकारी बना दिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें डुबो दिया। अब देखो, सावधान किए गए लोगों का कैसा परिणाम हुआ।

(74) फिर हमने उसके पश्चात् उनकी क़ौम की ओर रसूल भेजे, तो वे उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, किन्तु वे उस बात पर ईमान न ला सके, जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस प्रकार हम अवज्ञाकारियों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

(75) फिर हमने उनके पश्चात मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके शासकों के पास अपनी आयतों के साथ भेजा, किन्तु उन्होंने अहंकार किया और वे अपराधी लोग थे।

(76) फिर जब हमारे पास से सत्य उनके पास आया तो उन्होंने कहा, "यह तो खुला जादू है।"

(77) मूसा ने कहा, "क्या तुम सत्य के विषय में कहते हो, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है कि यह कोई जादू है? किन्तु जादूगर सफल नहीं होते।"

(78) उन्होंने कहा, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उससे रोक दो जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया था, ताकि तुम दोनों धरती में अपना प्रभुत्व जमा लो? और हम तुमपर ईमान नहीं रखते।"

(79) फ़िरऔन ने कहा, "सभी विद्वान जादूगरों को मेरे पास लाओ।"

(80) फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा, "जो कुछ तुम फेंकना चाहते हो, फेंक दो।"

(81) फिर जब वे फेंक चुके तो मूसा ने कहा, "तुम जो कुछ लेकर आए हो वह जादू है। निश्चय ही अल्लाह उसकी व्यर्थता को उजागर कर देगा। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों का काम नहीं सुधारता।

(82) और अल्लाह अपने वचनों के द्वारा सत्य को प्रमाणित करेगा, यद्यपि अपराधी उसे नापसंद भी करें।

(83) किन्तु मूसा की बात पर किसी ने विश्वास नहीं किया, परन्तु उसकी क़ौम के कुछ युवकों ने, फ़िरऔन और उसके सरदारों के भय से कि वे उन पर अत्याचार करेंगे। और फ़िरऔन तो देश में बहुत ही घमंडी था, और वह तो अत्याचारियों में से था।

(84) और मूसा ने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यदि तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा रखो, यदि तुम मुसलमान हो।"

(85) अतः उन्होंने कहा, "हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं। हे हमारे रब! हमें अत्याचारी लोगों के लिए परीक्षा का विषय न बना।"

(86) और अपनी दयालुता से हमें इनकार करनेवाले लोगों से बचा ले।

(87) और हमने मूसा और उसके भाई की ओर वह़्यी भेजी कि "अपनी क़ौम के लोगों को मिस्र में घरों में बसाओ और अपने घरों को क़िबले की ओर करो और नमाज़ क़ायम करो और ईमानवालों को शुभ सूचना दो।"

(88) मूसा ने कहा, "ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके गिरोह को सांसारिक जीवन में वैभव और धन दिया है, ऐ हमारे रब! ताकि वे लोगों को तेरे मार्ग से भटका दें। ऐ हमारे रब! उनके धन नष्ट कर दे और उनके दिलों को कठोर कर दे, कि वे ईमान न लाएँ, जब तक कि वे दुखद यातना न देख लें।"

(89) अल्लाह ने कहा, "तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार हो गई है। अतः धैर्य रखो और उन लोगों के मार्ग पर न चलो जो नहीं जानते।"

(90) और हमने बनी इसराईल को समुद्र पार पहुँचाया। फिर फ़िरऔन और उसकी सेनाएँ अत्याचार और शत्रुता के साथ उनका पीछा करती रहीं, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो उसने कहा, "मैं ईमान लाया कि कोई पूज्य नहीं, परन्तु वह जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए, और मैं मुसलमानों में से हूँ।"

(91) अब जबकि इससे पहले भी तुम अवज्ञाकारी रहे हो और बिगाड़ पैदा करनेवालों में से थे?

(92) अतः आज हम तुम्हें सशरीर बचा लेंगे, ताकि तुम अपने बाद आनेवालों के लिए निशानी बन जाओ। और बहुत-से लोग हमारी आयतों से असावधान हैं।

(93) और हमने बनी इसराईल को एक अच्छा स्थान प्रदान किया और उन्हें अच्छी-अच्छी रोज़ी दी, और उन्होंने तब तक विभेद नहीं किया जब तक कि उन्हें ज्ञान प्राप्त न हो गया, और निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच क़ियामत के दिन उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे थे।

(94) अतः यदि तुम्हें उसमें कोई संदेह हो जो हमने तुम्हारी ओर उतारा है तो उनसे पूछ लो जो तुमसे पहले किताब पढ़ते रहे हैं। निश्चय ही तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अतः तुम संदेह करनेवालों में न पड़ना।

(95) और कदापि उन लोगों में न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और घाटे में चले गये।

(96) जिनपर तुम्हारे रब का वचन आ गया, वे ईमान नहीं लाएँगे।

(97) चाहे उनके पास प्रत्येक निशानी आ जाये, यहाँ तक कि वे दुखद यातना देख लें।

(98) तो क्या कोई बस्ती ऐसी नहीं जो ईमान लाई हो और उसका ईमान उसके लिए लाभप्रद रहा हो, सिवाए यूनुस की क़ौम के? जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे सांसारिक जीवन में अपमान की यातना दूर कर दी और उन्हें एक निश्चित अवधि तक सुख-सुविधा प्रदान की।

(99) और यदि तुम्हारा रब चाहता तो धरती में रहनेवाले सभी लोग ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को विवश करते हो कि वे ईमान ले आयें?

(100) और अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्राणी ईमान नहीं ला सकता। और जो लोग बुद्धि से काम नहीं लेंगे, उन्हें वह अवश्य अशुद्धि में डाल देगा।

(101) कह दो, "आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसे देखो।" किन्तु जो लोग ईमान नहीं लाते, उनके लिए न कोई निशानियाँ काम आएंगी और न कोई सचेत करनेवाली चीज़।

(102) तो क्या वे लोग प्रतीक्षा करते हैं, सिवाय उन दिनों के, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? कह दो, "अच्छा, तुम प्रतीक्षा करो। मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करनेवालों में हूँ।"

(103) फिर हम अपने रसूलों को और ईमान वालों को बचा लेंगे। अतः हमारा दायित्व है कि हम ईमान वालों को बचाएँ।

(104) कह दो, "ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के विषय में संदेह में हो तो मैं उनकी बन्दगी नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो। मैं तो अल्लाह की बन्दगी करता हूँ, जो तुम्हें मृत्यु देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं ईमानवालों में से रहूँ।

(105) और हुक्म दिया कि अपना रुख़ धर्म की ओर करो, सत्य की ओर झुको और अल्लाह का साझीदार न बनना।

(106) और अल्लाह के अतिरिक्त किसी ऐसी चीज़ को न पुकारो जो न तुम्हें लाभ पहुँचाए और न हानि पहुँचाए। यदि तुमने ऐसा किया तो निश्चय ही तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे।'"

(107) और यदि अल्लाह तुमपर कोई मुसीबत डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं और यदि वह तुम्हारे लिए भलाई का इरादा करे तो उसके अनुग्रह को कोई रोकनेवाला नहीं। वह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है उसे पहुँचा देता है। और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(108) कह दो कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अतः जो मार्ग पर चला गया, वह अपने ही लाभ के लिए मार्ग पर चला गया और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह तो केवल अपने ही लाभ के लिए पथभ्रष्ट हुआ। और मैं तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं हूँ।

(109) और जो कुछ तुम्हारी ओर उतारा गया है उसका अनुसरण करो और धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सबसे अच्छा निर्णय करनेवाला है।

सूरा 11: **هُود‎ (Hūd)** – Hud

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, रा. यह एक किताब है जिसकी आयतें पूरी की गयीं और फिर विस्तार से बयान की गयीं, एक तत्वदर्शी और बाख़बर व्यक्ति द्वारा।

(2) "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मैं ही उसकी ओर से तुम्हें सचेत करनेवाला और शुभ सूचना देनेवाला हूँ।"

(3) और (कहते हैं) अपने रब से क्षमा याचना करो और उसकी ओर तौबा कर लो। वह तुम्हें एक निश्चित अवधि तक अच्छी जीविका प्रदान करेगा और प्रत्येक उपकारकर्ता को उसका उपकार प्रदान करेगा। फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो मैं तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

(4) अल्लाह ही की ओर तुम्हें लौटना है और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(5) निस्संदेह वे अपने सीने मोड़कर उससे अपनी बातें छिपाते हैं। निस्संदेह जब वे अपने वस्त्रों से अपने आपको ढक लेते हैं तो भी वह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। निस्संदेह वह सीनों के अन्दर की बातों को भी जानता है।

(6) धरती में कोई प्राणी ऐसा नहीं है जिसकी रोज़ी अल्लाह पर ही है, और वह उसके रहने के स्थान और उसके भण्डार को भी जानता है। और सब कुछ स्पष्ट रजिस्टर में है।

(7) और वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया और उसका सिंहासन पानी पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें कौन सबसे अच्छा कर्म करता है। फिर यदि तुम कहो कि "निश्चय ही तुम मरने के पश्चात पुनः जीवित किये जाओगे" तो इनकार करनेवाले अवश्य कहेंगे कि "यह तो बस खुला जादू है।"

(8) और यदि हम उनपर यातना को कुछ समय तक टाल दें तो वे कहेंगे, "इसमें क्या विलम्ब है?" निश्चय ही जिस दिन वह उनपर आ जाएगी, तो उनसे टाली न जाएगी और वे उसी चीज़ में लिपटे रहेंगे जिसका वे उपहास करते रहे थे।

(9) और यदि हम मनुष्य को अपनी दयालुता का स्वाद चखा दें, फिर उसे उससे छीन लें, तो वह निराश और कृतघ्न है।

(10) किन्तु यदि हम उसे इसके पश्चात् कि उसे कोई कष्ट पहुँच चुका हो, कुछ अनुग्रह चखा दें तो वह अवश्य कहेगा कि "मेरा बुरा समय चला गया।" निश्चय ही वह बड़ा गर्व करनेवाला, बड़ा डींग मारनेवाला है।

(11) परन्तु जो लोग धैर्य से काम लें और अच्छे कर्म करें, वही क्षमाशील और बड़ा प्रतिफल पानेवाले हैं।

(12) फिर क्या तुम जो कुछ तुम्हारी ओर उतारा गया है, उसमें से कुछ छोड़ देते हो या तुम्हारा दिल उसके कारण बोझिल हो जाता है, क्योंकि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़जाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया? तुम तो बस सचेत करनेवाले हो। अल्लाह हर चीज़ का अधिकारी है।

(13) या वे कहते हैं कि उसने इसे गढ़ा है? कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो इसके समान दस सूरह गढ़ लाओ और अल्लाह के सिवा जिसे चाहो पुकारो।

(14) और यदि वे तुम्हारी बात न मानें तो जान लो कि वह अल्लाह के ज्ञान के साथ अवतरित हुई है और उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। फिर क्या तुम आज्ञाकारी न हो?

(15) जो कोई सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहता है, हम उसे उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला देते हैं और वह उसमें वंचित नहीं किया जायेगा।

(16) यही वे लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। जो कुछ उन्होंने उसमें किया वह व्यर्थ है और जो कुछ वे करते रहे वह व्यर्थ है।

(17) तो क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर खड़ा हो और उसकी ओर से कोई गवाह उसका अनुसरण करे, और इससे पहले मूसा की किताब मार्गदर्शन और दया के रूप में आई थी? वे लोग इस पर ईमान लाए हैं। फिर जो कोई गिरोहों में से इसका इनकार करेगा, तो उसके लिए आग का वादा है। अतः इसमें कोई संदेह न करो। निश्चय ही यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, किन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

(18) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले? ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे और गवाह कहेंगे, "ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला।" निस्संदेह ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।

(19) जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें बाधा डालना चाहते हैं, हालाँकि वे आख़िरत के विषय में इनकार करनेवाले हैं।

(20) वे लोग धरती में न तो अधर्म करनेवाले थे और न अल्लाह के सिवा उनका कोई संरक्षक था। उनपर यातना बढ़ा दी जाएगी। वे न सुन सकते थे और न देख सकते थे।

(21) वे लोग हैं जिन्होंने अपने आप को खो दिया है, और उनसे वह भी खो गया है जिसे वे गढ़ते थे।

(22) निश्चय ही वही लोग आख़िरत में सबसे अधिक घाटे में रहेंगे।

(23) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अपने पालनहार के सामने झुके, वही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(24) दोनों पक्षों की मिसाल अंधे और बहरे तथा देखने और सुनने वाले के समान है। क्या वे तुलना में बराबर हैं? तो क्या तुम याद नहीं रखते?

(25) और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा था कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से सचेत करनेवाला हूँ।

(26) ताकि तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मैं तो तुम्हारे विषय में दुःखदायी दिन की यातना से डरता हूँ।

(27) अतः उसकी क़ौम के इनकार करनेवालों में से जो लोग थे, उन्होंने कहा, "हम तो तुम्हें अपने ही समान मनुष्य देखते हैं और हम तो यह भी नहीं देखते कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग करते हैं जो हमारे ही बीच से नीच हैं। और हम तो तुममें अपने ऊपर कोई गुण नहीं देखते, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।"

(28) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमने सोचा है कि यदि मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर हूँ, जबकि उसने मुझे अपनी ओर से दयालुता प्रदान की है, किन्तु वह तुम्हारे लिए अदृश्य है, तो क्या हम उसे तुम पर ज़बरदस्ती थोपें, जबकि तुम उससे नाखुश हो?

(29) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुमसे इसके बदले में कोई माल नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के सिवा और कुछ नहीं है। और मैं उन लोगों को भगानेवाला नहीं जो ईमान लाए। वे तो अपने रब से मिलेंगे। लेकिन मैं तो देख रहा हूँ कि तुम लोग नासमझी में पड़े हुए हो।

(30) और ऐ मेरी क़ौम! यदि मैं उन्हें निकाल दूँ तो अल्लाह से मुझे कौन बचाएगा? फिर क्या तुमको नसीहत नहीं की जाएगी?

(31) और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं या मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और न मैं उन लोगों के विषय में कहता हूँ जिनपर तुम्हारी नज़र होगी कि अल्लाह उन्हें कभी कोई भलाई प्रदान नहीं करेगा। अल्लाह उनके मन की बातें भली-भाँति जानता है। निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हो जाऊँगा।"

(32) उन्होंने कहा, "ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया है और हमसे बहुत झगड़ा किया है। तो फिर, यदि तुम सच्चे हो, तो वह ले आओ जिसकी धमकी तुम हमें दे रहे हो।"

(33) उसने कहा, "अल्लाह यदि चाहेगा तो उसे तुम्हारे पास अवश्य ले आएगा, और तुम उसे असफल न कर सकोगे।

(34) और मेरी सलाह तुम्हें कुछ लाभ नहीं पहुँचाएगी, यद्यपि मैं तुम्हें सलाह देना चाहता था, यदि अल्लाह तुम्हें गुमराही में डालना चाहे। वही तुम्हारा रब है, और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

(35) क्या वे कहते हैं कि उसने इसे गढ़ लिया है? कह दो कि यदि मैंने इसे गढ़ लिया है तो मेरे अपराध का फल मुझ पर है, और जो कुछ तुम करते हो उससे मैं निर्दोष हूँ।

(36) और नूह की ओर प्रकाशना की गई कि, "तुम्हारी क़ौम में से जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनके सिवा कोई ईमान नहीं लाएगा। अतः तुम उससे दुःखी न हो जो कुछ वे करते रहे हैं।

(37) और हमारी देख-रेख और हमारी वह्यी के अधीन नाव बनाओ और अत्याचारियों के विषय में मुझसे प्रश्न न करो। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

(38) और उसने जहाज़ बनवाया, और जब भी उसके क़ौम के बड़े लोग उसके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक उड़ाते। उसने कहा, "अगर तुम हमारा मज़ाक उड़ाओगे तो हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएँगे, जैसे तुम उड़ाते हो।

(39) और तुम जान लोगे कि किस पर ऐसी यातना उतरेगी जो उसके लिए अपमानजनक होगी और किस पर ऐसी यातना उतरेगी जो सदैव बनी रहेगी।

(40) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ पहुँचा और तन्दूर भर गया तो हमने कहा, "इस पर प्रत्येक प्राणी के दो-दो जोड़े और अपने परिवार को लाद लो, सिवाय उनके जिनके विषय में पहले कहा जा चुका है, और उनमें वे भी शामिल हैं जो ईमान लाए हैं।" किन्तु उसके साथ कोई ईमान न लाया, केवल थोड़े लोग।

(41) और कहा, "इसमें सवार हो जाओ। अल्लाह के नाम से ही उसका मार्ग और उसका लंगर है। निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(42) और वह उन्हें लेकर पर्वतों के समान लहरों में चला। और नूह ने अपने बेटे को जो उनसे अलग था, पुकारा, "ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ जहाज़ पर चढ़ आ और इनकार करनेवालों के साथ न रह।"

(43) उसने कहा, "मैं पानी से बचने के लिए किसी पहाड़ पर शरण लूँगा।" नूह ने कहा, "आज अल्लाह के आदेश से कोई बचानेवाला नहीं, परन्तु जिसपर वह दया करे।" और लहरें उनके बीच आ गईं और वह डूबनेवालों में से हो गया।

(44) और कहा गया, "ऐ धरती, अपना पानी पी जा और ऐ आकाश, रोक ले।" फिर पानी कम हो गया और बात पूरी हो गई और नाव जूदी पर्वत पर आकर रुकी। और कहा गया, "अत्याचारी लोगों का अन्त कर दो।"

(45) और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, "ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे ही घराने में से है। और तेरा वादा सच्चा है। और तू ही सबसे बड़ा न्याय करनेवाला है।"

(46) उसने कहा, "ऐ नूह! वह तुम्हारे घराने में से नहीं है। वह तो नेक काम करनेवाला नहीं है। अतः मुझसे उस विषय में न पूछो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि तुम अज्ञानियों में से हो जाओ।"

(47) नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं ऐसी चीज़ न माँगूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं। यदि तू मुझे क्षमा न करे और मुझपर दया न करे तो मैं घाटे में पड़ जाऊँगा।"

(48) कहा गया कि ऐ नूह! हमसे निश्चिन्त होकर उतर जा। और तुझपर और उन जातियोंपर भी जो तेरे साथ आएंगी, कृपा है। फिर हम कुछ अन्य जातियों को सुख प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दुखद यातना पहुँचेगी।

(49) यह उस ग़ैब की ख़बर से है जो हम तुम्हारी ओर वह्यी करते हैं। इससे पहले न तुम जानते थे और न तुम्हारी क़ौम। अतः धैर्य रखो। निश्चय ही अच्छा परिणाम नेक लोगों के लिए है।

(50) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम तो बस झूठ गढ़ते हो।

(51) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस उसी की ओर से है जिसने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

(52) और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर तौबा करो। वह तुम्हारे ऊपर आकाश से वर्षा बरसाएगा और तुम्हारी शक्ति को बढ़ाएगा। और तुम अपराधी बनकर मुँह न मोड़ो।

(53) उन्होंने कहा, "ऐ हूद! तूने हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं लाया और न हम तेरे कहने पर अपने पूज्यों को छोड़नेवाले हैं और न हम तुझपर ईमान लानेवाले हैं।"

(54) हम तो बस इतना ही कहते हैं कि हमारे कुछ पूज्यों ने तुमपर बुराई डाल दी है।" उसने कहा, "मैं अल्लाह को साक्षी बनाता हूँ और तुम भी साक्षी हो जाओ कि मैं उससे निरपेक्ष हूँ जिसे तुम अल्लाह का साझी ठहराते हो।

(55) अतः तुम सब लोग मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचो, फिर मुझे अवसर न दो।

(56) मैंने अल्लाह पर भरोसा किया है, जो मेरा और तुम्हारा रब है। कोई प्राणी ऐसा नहीं जिसका अगला भाग वह थामे रहता हो। निस्संदेह मेरा रब सीधे मार्ग पर है।

(57) फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो मैं वह बात तुम्हें बता चुका हूँ जिसके साथ मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था। मेरा रब तुम्हारे सिवा दूसरे लोगों को उत्तराधिकारी बनाएगा और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ पर नियंत्रण रखनेवाला है।

(58) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने हूद को और जो लोग उसके साथ ईमान लाए थे, उन्हें अपनी दयालुता से बचा लिया और हमने उन्हें कठोर यातना से बचा लिया।

(59) और वह आद था, जिसने अपने रब की आयतों को झुठलाया और उसके रसूलों की अवज्ञा की और प्रत्येक अत्याचारी के आदेश का अनुसरण किया।

(60) और संसार में भी उनके पीछे लानत पड़ी और क़ियामत के दिन भी। निश्चय ही आद ने अपने रब को झुठलाया तो हूद की क़ौम भी आद के साथ चली गयी।

(61) और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। उसी ने तुमको धरती से पैदा किया और उसमें बसाया। अतः उसी से क्षमा याचना करो और उसी की ओर तौबा करो। निस्संदेह मेरा रब निकट, स्वीकार करनेवाला है।"

(62) उन्होंने कहा, "ऐ सालेह! इससे पहले तू हमारे बीच एक वादा करनेवाला व्यक्ति था। तो क्या तू हमें उसकी इबादत करने से रोकता है, जिसकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे? और जिस चीज़ की ओर तू हमें बुला रहा है, उसके विषय में हम संदेह में हैं।"

(63) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमने विचार किया कि यदि मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से दया प्रदान की है, तो यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? अतः तुम मुझे केवल हानि ही पहुँचाओगे।

(64) और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी है। यह तुम्हारे लिए एक निशानी है। अतः इसे अल्लाह की धरती पर चरने दो और इसे कोई तकलीफ़ न पहुँचाओ, नहीं तो तुम पर अज़ाब आ जाएगा।

(65) किन्तु उन्होंने उसकी नसें तोड़ दीं। अतः उसने कहा, "तीन दिन तक अपने-अपने घरों में आनन्द मनाओ। यह ऐसा वादा है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता।"

(66) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने सालेह और जो लोग उसके साथ ईमान लाए थे, उन्हें अपनी दयालुता से बचा लिया और उस दिन की अपमानित अवस्था से बचा लिया। निस्संदेह तुम्हारा रब ही अत्यन्त प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(67) और चीख़ उन लोगों पर पड़ी जिन्होंने ज़ालिम किया था और वे अपने घरों में गिरे हुए पड़े रहे।

(68) मानो वे उसमें कभी सफल ही न हुए। निश्चय ही समूद ने अपने रब को झुठला दिया। तो फिर समूद नष्ट हो जाए।

(69) और हमारे रसूल इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर आये। उन्होंने कहा, "सलामत हो।" उसने कहा, "सलामत हो।" और उसने उनके पास भुना हुआ बछड़ा लाने में विलम्ब नहीं किया।

(70) फिर जब उसने देखा कि उनके हाथ उस तक नहीं पहुँच रहे तो उसने उनपर अविश्वास किया और उनसे घबरा गया। उन्होंने कहा, "डरो मत। हम तो लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं।"

(71) और उसकी पत्नी खड़ी हुई और मुस्कुराई, फिर हमने उसे इसहाक की शुभ सूचना दी और इसहाक के बाद याकूब की।

(72) उसने कहा, "हाय! क्या मैं बूढ़ी हूँ और मेरा यह पति बूढ़ा है, फिर भी बच्चे को जन्म दूँ? यह तो बड़ी आश्चर्यजनक बात है।"

(73) उन्होंने कहा, "क्या तुम अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य करते हो? ऐ घर के लोगो, अल्लाह की दयालुता और उसकी कृपा तुमपर हो। निस्संदेह, वह प्रशंसनीय, सम्माननीय है।"

(74) और जब इबराहीम का भय जाता रहा और शुभ सूचना उसे पहुँची तो वह लूत की क़ौम के विषय में हमसे झगड़ने लगा।

(75) निश्चय ही इबराहीम बहुत धैर्यवान, शोकाकुल और शीघ्र लौटनेवाला था।

(76) [फ़रिश्ते बोले] ऐ इबराहीम! यह बात छोड़ दो। तुम्हारे रब का आदेश आ चुका है और उनपर ऐसी यातना आएगी, जो टलनेवाली नहीं।

(77) और जब हमारे रसूल लूत के पास आये तो वह उनके कारण बहुत दुःखी हुआ और उनके कारण बहुत दुःखी हुआ और कहने लगा, "यह बड़ा कष्ट का दिन है।"

(78) और उसकी क़ौम के लोग उसके पास जल्दी-जल्दी आए, जबकि इससे पहले वे बुरे कर्म कर रहे थे। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! ये मेरी बेटियाँ हैं। वे तुम्हारे लिए पवित्र हैं। अतः अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों के विषय में मुझे अपमानित न करो। क्या तुममें कोई विवेकशील व्यक्ति नहीं है?"

(79) उन्होंने कहा, "तुम्हें मालूम ही हो गया कि तुम्हारी बेटियों के विषय में हमारा कोई अधिकार नहीं है। और तुम जानते ही हो कि हम क्या चाहते हैं।"

(80) उसने कहा, "काश! मेरे पास तुम्हारे विरुद्ध कुछ शक्ति होती या मैं किसी सुदृढ़ सहारे की शरण ले सकता।"

(81) उन्होंने कहा, "ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं। अतः वे तुम्हारे पास कदापि नहीं पहुँचेंगे। अतः तुम अपने घरवालों को लेकर रात के एक हिस्से में निकल पड़ो। तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे। परन्तु तुम्हारी पत्नी ही पीछे मुड़े। जो कुछ उन्हें लगेगा, वह उसे लगेगा। निश्चय ही उनका समय सुबह का है। क्या सुबह निकट नहीं है?"

(82) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने सबसे ऊँचे भाग को सबसे नीचा बना दिया और उन पर मिट्टी के पत्थर बरसाए।

(83) तुम्हारे रब की ओर से निश्चित कर दिया गया है और अल्लाह की यातना अत्याचारियों से बहुत दूर नहीं है।

(84) और मदयन की ओर उनके भाई शोऐब को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। और नाप-तौल में कमी न करो। मैं तो तुम्हें समृद्धि में देख रहा हूँ, किन्तु मैं तो तुम्हारे विषय में उस दिन की यातना से डरता हूँ, जो पूरी तरह से व्याप्त हो जाएगा।

(85) और ऐ मेरी क़ौम! न्याय के साथ पूरा नाप-तोल करो और लोगों को उनका हक़ न दो और धरती में अत्याचार न करो और बिगाड़ फैलाओ।

(86) जो कुछ अल्लाह की ओर से बचा है, वही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम ईमान वाले हो। मैं तुम्हारा संरक्षक नहीं हूँ।

(87) उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह आदेश देती है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी हमारे पूर्वज पूजा करते थे या अपने मालों से जो चाहें करें? निस्संदेह, तुम बहुत सहनशील, सदाचारी हो।"

(88) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमने सोचा है कि मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से अच्छी रोज़ी प्रदान की है? और जो कुछ मैंने तुम्हें हराम किया है, उसमें मैं तुमसे विभेद नहीं करना चाहता। मैं तो बस उतना सुधार करना चाहता हूँ, जितना मैं कर सकता हूँ। और मेरी सफलता केवल अल्लाह के द्वारा है। उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की ओर मैं लौटकर जाऊँगा।

(89) और ऐ मेरी क़ौम! मुझसे तुम्हारा मतभेद तुम पर ऐसा आघात न पहुंचाए जैसा नूह की क़ौम पर पड़ा, या हूद की क़ौम पर, या सालेह की क़ौम पर। और लूत की क़ौम भी तुमसे बहुत दूर नहीं है।

(90) और अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो, फिर उसी की ओर तौबा कर लो। निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(91) उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! जो कुछ तुम कहते हो, उसमें से हम कुछ नहीं समझते। हम तो तुम्हें अपने बीच कमज़ोर समझते हैं। यदि तुम्हारा परिवार न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते। और तुम हमारे निकट आदरणीय नहीं हो।"

(92) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मेरे परिवार को तुम्हारे लिए अल्लाह से अधिक सम्मान दिया जाता है? किन्तु तुमने उसे अपनी पीठ के पीछे कर दिया है। निस्संदेह मेरा रब तुम जो कुछ करते हो, उसे घेरे हुए है।

(93) और ऐ मेरी क़ौम! अपने काम पर ध्यान दो। मैं काम पर हूँ। तुम जान लोगे कि किस पर ऐसी यातना आएगी जो उसे अपमानित करेगी और कौन झूठा है। तो देखो, मैं तुम्हारे साथ निगरानी करनेवाला हूँ।

(94) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने शुऐब को और जो लोग उसके साथ ईमान लाए थे, अपनी दयालुता से बचा लिया और चीख ने उन लोगों को पकड़ लिया जिन्होंने अत्याचार किया था और वे अपने घरों में गिरे पड़े रहे।

(95) मानो वे उसमें कभी सफल ही न हुए हों। फिर मदयन भी उसी प्रकार दूर हो गया जिस प्रकार समूद को ले जाया गया।

(96) और हमने मूसा को अपनी आयतों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।

(97) फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर, परन्तु उन्होंने फ़िरऔन के आदेश का पालन किया, और फ़िरऔन का आदेश कुछ भी समझ में न आया।

(98) वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के लोगों से पहले आएगा और उन्हें आग की ओर ले जाएगा, और वह स्थान बहुत बुरा है, जहाँ उन्हें ले जाया जाएगा।

(99) और इस संसार में भी उनके पीछे लानत पड़ी और क़ियामत के दिन भी, और बहुत बुरा है वह उपहार जो दिया गया।

(100) यह उन बस्तियों की ख़बरों में से है जो हमने तुमसे बयान की हैं। उनमें से कुछ तो खड़ी हैं और कुछ कटी हुई फ़सल की तरह हैं।

(101) हमने उनपर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनेआप पर अत्याचार किया और जब तुम्हारे रब का आदेश आया तो उनके पूज्य-प्रभु, जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य-प्रभु कहते थे, उनके कुछ काम न आए और उन्होंने विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं बढ़ाया।

(102) और ऐसा ही होता है तुम्हारे रब का पकड़ लेना, जब वह बस्तियों को पकड़ता है, इस दशा में कि वे अत्याचार कर रहे होते हैं। निस्संदेह उसका पकड़ लेना दुःखदायी, कठोर है।

(103) निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो आख़िरत की यातना से डरते हैं। वह एक दिन है जिसके लिए लोग एकत्र किये जायेंगे और वह एक दिन है जिसका साक्षी होना निश्चित है।

(104) और हम उसमें विलम्ब नहीं करते, परन्तु एक निश्चित अवधि तक।

(105) जिस दिन वह आ जायेगा, कोई प्राणी बिना उसकी अनुमति के बात नहीं करेगा, और उनमें अभागे और धनवान भी होंगे।

(106) किन्तु जो लोग अभागे थे, वे अवश्य ही आग में पड़ेंगे, उनके लिए उसमें भयंकर श्वास छोड़ना और लेना है।

(107) वे उसी में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश और धरती टिके रहेंगे, परन्तु जो तुम्हारा रब चाहे। निस्संदेह तुम्हारा रब जो चाहता है, उसे पूरा करनेवाला है।

(108) और जो लोग सफल होने वाले थे, वे जन्नत में होंगे, उसमें सदैव रहेंगे, जब तक आकाश और धरती टिके रहेंगे, परन्तु जो तुम्हारा रब चाहे, वह निरंतर प्रदान करने वाला है।

(109) अतः तुम इस विषय में संदेह में न पड़ो कि ये लोग किसकी पूजा कर रहे हैं। वे उसी प्रकार पूजा करते हैं जिस प्रकार उनके पूर्वज पूजा करते थे। और हम उन्हें उनका हिस्सा अवश्य देंगे, जो कम नहीं होगा।

(110) और हमने मूसा को किताब दी थी, फिर उसमें मतभेद हो गया। और यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले से कोई बात न होती, तो उनके बीच उसका फ़ैसला कर दिया जाता। और वे उसके विषय में अशांत संदेह में हैं।

(111) और निश्चय ही तुम्हारा रब उनमें से प्रत्येक को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा। निस्संदेह वह उनसे परिचित है जो कुछ वे करते हैं।

(112) अतः तुम और वे लोग जो तुम्हारे साथ अल्लाह की ओर पलटे हैं, जैसा आदेश दिया गया है, उसी पर चलो और अतिक्रमण न करो। निस्संदेह, जो कुछ तुम करते हो, वह उसे देख रहा है।

(113) और अत्याचारियों की ओर न झुको, अन्यथा तुम आग में पड़ जाओगे। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक न होगा, फिर तुम किसी प्रकार की सहायता न पा सकोगे।

(114) और दिन के दोनों छोरों पर तथा रात के आने पर नमाज़ क़ायम करो। निस्संदेह नेकियाँ बुरे कर्मों को दूर कर देती हैं। यह उन लोगों के लिए नसीहत है जो याद रखें।

(115) और धैर्य रखो, निस्संदेह अल्लाह अच्छे कर्म करनेवालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देता।

(116) तो फिर तुमसे पहले की नस्लों में से कोई ऐसा क्यों नहीं हुआ जो धरती में बुराई से रोकता हो, सिवाय उन चंद लोगों के जिन्हें हमने उनमें से बचा लिया? और जो लोग अत्याचारी थे, वे उसमें उसी सुख-सुविधा का पीछा करते रहे जो उन्हें दी गयी थी और वे अपराधी थे।

(117) और तुम्हारा रब यह न चाहता कि बस्तियों को अन्यायपूर्वक विनष्ट कर देता, जबकि उनके लोग सुधारवादी थे।

(118) और यदि तुम्हारा रब चाहता तो लोगों को एक ही समुदाय बना देता, किन्तु वे मतभेद करने से नहीं रुकेंगे।

(119) परन्तु जिनपर तुम्हारे रब ने दया की हो और इसी कारण उसने उन्हें पैदा किया हो। किन्तु तुम्हारे रब का यह वचन अवश्य पूरा होगा कि मैं जहन्नम को जिन्नों और मनुष्यों से भर दूँगा।

(120) और जो कुछ हम तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरों में से बयान करते हैं, वह तुम्हारे दिल को दृढ़ करता है और तुम्हारे पास इसमें सत्य और शिक्षा और अनुस्मरण आ चुका है ईमान वालों के लिए।

(121) और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दो कि "तुम अपनी हैसियत के अनुसार काम करो। हम तो काम ही कर रहे हैं।

(122) और प्रतीक्षा करो, हम प्रतीक्षा ही कर रहे हैं।

(123) और अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती की छिपी हुई चीज़ें और उसी की ओर सारे मामले लौटाए जाएँगे। अतः उसी की बन्दगी करो और उसी पर भरोसा रखो। और जो कुछ तुम करते हो उससे तुम्हारा रब अनजान नहीं है।

सूरा 12: **يُوسُف (यूसुफ)** - जोसेफ

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, रा. ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

(2) निश्चय ही हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप में अवतरित किया है, ताकि तुम समझो।

(3) हमने जो कुछ इस क़ुरआन में से तुम्हारी ओर उतारा है, उसमें हम तुम्हें बहुत अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं, हालाँकि तुम इससे पहले अज्ञानियों में से थे।

(4) याद करो जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ऐ मेरे पिता! मैंने स्वप्न में ग्यारह तारे, सूर्य और चन्द्रमा देखे हैं। मैंने देखा कि वे मुझे सजदा कर रहे हैं।

(5) उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे! अपने भाइयों को अपना स्वप्न न बताना, अन्यथा वे तुम्हारे विरुद्ध कोई चाल चलेंगे। निस्संदेह शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

(6) और इसी प्रकार तुम्हारा रब तुम्हें चुन लेगा और तुम्हें स्वप्नों का अर्थ बताना सिखाएगा और तुमपर और याकूब के घराने पर अपनी कृपा पूरी करेगा, जिस प्रकार उसने तुम्हारे पूर्वजों इबराहीम और इसहाक़ पर पूरी की थी। निस्संदेह तुम्हारा रब सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।"

(7) निश्चय ही यूसुफ़ और उसके भाइयों में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो पूछें।

(8) जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हमसे अधिक प्रिय हैं, हालाँकि हम एक शक्तिशाली समूह हैं। निस्संदेह हमारे पिता स्पष्ट गुमराही में हैं।

(9) यूसुफ़ को मार डालो या उसे किसी दूसरे देश में फेंक दो; तब तुम्हारे पिता का मुख केवल तुम्हारे लिए होगा, और उसके बाद तुम धर्मी लोग होगे।"

(10) उनमें से एक ने कहा, "यूसुफ को मत मारो, बल्कि उसे कुएँ की तलहटी में फेंक दो। यदि तुम चाहो तो कुछ यात्री उसे उठा लेंगे।"

(11) उन्होंने कहा, "ऐ हमारे पिता! आप हमें यूसुफ़ के पास क्यों नहीं सौंप देते? जबकि हम ही उसके सच्चे सलाहकार हैं।

(12) उसे कल हमारे साथ भेज दो ताकि वह अच्छे से खाए-पिए और खेले, और हम उसके रक्षक होंगे।

(13) याकूब ने कहा, "मुझे दुःख है कि तूने उसे पकड़ लिया और मुझे डर है कि कहीं कोई भेड़िया उसे खा न ले और तू इस बात से अनजान हो।"

(14) उन्होंने कहा, "यदि हम शक्तिशाली होते हुए भी उसे भेड़िया खा ले, तो हम घाटे में रहेंगे।"

(15) फिर जब उन्होंने उसे बाहर निकाला और उसे कुएँ की तह में डालने पर सहमत हुए तो हमने उसकी ओर प्रकाशना की कि, "तू उन्हें उनके इस मामले के बारे में अवश्य बता देगा, जबकि वे इसे जानते भी नहीं।"

(16) और वे रात को रोते हुए अपने पिता के पास आये।

(17) उन्होंने कहा, "ऐ हमारे पिता! हम लोग आपस में होड़ कर रहे थे और यूसुफ़ को अपना माल देकर छोड़ दिया था। फिर उसे भेड़िया खा गया। फिर भी यदि हम सच्चे भी होते, तो आप हमारी बात पर विश्वास न करते।"

(18) और उन्होंने उसके कुर्ते पर झूठा खून लगा दिया। (याकूब) ने कहा, "बल्कि तुम्हारे मनों ने ही तुम्हें किसी बात के लिए उकसाया है। अतः धैर्य ही अधिक उचित है। और जो कुछ तुम कहते हो, उसके विरुद्ध सहायता के लिए अल्लाह ही पुकारा जाता है।"

(19) फिर यात्रियों का एक दल आया, उन्होंने अपना पानी भरनेवाला भेजा, उसने अपना बर्तन नीचे उतारा और कहा, "ख़ुशख़बरी! एक लड़का है।" फिर उन्होंने उसे माल समझकर छिपा लिया, और अल्लाह जानता था कि वे क्या कर रहे थे।

(20) और उन्होंने उसे कम कीमत पर बेच दिया - कुछ दिरहम - और वे उसके बारे में, थोड़े से संतुष्ट थे।

(21) और मिस्र से जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा था, उसने अपनी पत्नी से कहा, "इसका घर ठीक से बनाओ। शायद यह हमारे लिए लाभदायक हो या हम इसे अपना बेटा बना लें।" इस प्रकार हमने यूसुफ़ को धरती में स्थापित किया, ताकि हम उसे घटनाओं का अर्थ सिखाएँ। और अल्लाह अपने मामले पर प्रभुत्व रखता है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(22) और जब वह वयस्क हो गया तो हमने उसे बुद्धि और ज्ञान प्रदान किया और इसी प्रकार हम अच्छे कर्म करनेवालों को बदला देते हैं।

(23) और वह स्त्री, जिसके घर में वह था, उसे बहकाने लगी। उसने दरवाज़े बंद कर लिए और कहा, "मेरे पास आओ।" उसने कहा, "मैं अल्लाह की शरण में आता हूँ। निस्संदेह वह मेरा स्वामी है, जिसने मेरे लिए निवास को अच्छा बनाया है। निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होते।"

(24) और उसने निश्चय कर लिया कि उसे बहकाना है, और यदि उसने अपने रब का प्रमाण न देखा होता, तो वह उसकी ओर अवश्य झुकता। और इसी प्रकार हम उससे बुराई और अधर्म को दूर रखते। निस्संदेह वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था।

(25) और वे दोनों दौड़कर दरवाजे की ओर गए, और उसने उसकी कमीज़ पीछे से फाड़ी, और उन्होंने अपने पति को दरवाजे पर पाया। उसने कहा, "जो कोई तुम्हारी पत्नी के साथ बुरा करने की योजना बनाए, उसका क्या बदला है, सिवाय इसके कि उसे कैद किया जाए या दर्दनाक सज़ा दी जाए?"

(26) यूसुफ ने कहा, "वही मुझे बहकाना चाहती थी।" और उसके घरवालों में से एक ने गवाही दी, "यदि उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ है, तो उसने सच कहा है, और वह झूठों में से है।

(27) किन्तु यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा हो, तो वह झूठ बोल रही है, और वह सच्चा है।

(28) फिर जब उसने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो कहा, "यह तुम्हारी ही चाल है। तुम्हारी चाल बहुत बड़ी है।

(29) यूसुफ़, इस पर ध्यान मत दो। और अपने गुनाह की माफ़ी मांगो। बेशक तुम गुनाहगारों में से थी।

(30) और नगर की स्त्रियाँ कहने लगीं, "अजीज की पत्नी अपने दास लड़के को बहकाना चाहती है; उसने उस पर प्रेम का जुनून सवार कर दिया है। हम तो उसे स्पष्ट रूप से गुमराही में देखते हैं।"

(31) फिर जब उसने उनकी चाल सुनी तो उन्हें बुला भेजा और उनके लिए एक भोज तैयार किया और उनमें से हर एक को एक छुरी दी और कहा, "उनके सामने आओ।" फिर जब उन्होंने उसे देखा तो उसकी बहुत प्रशंसा की और अपने हाथ काट लिए और कहा, "अल्लाह सच्चा है! यह कोई मनुष्य नहीं है, यह तो एक महान फ़रिश्ता है।"

(32) उसने कहा, "यही वह है जिसके विषय में तुमने मुझ पर दोष लगाया था। मैंने उसे बहकाना चाहा, किन्तु उसने दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया। और यदि वह मेरा आदेश न माने, तो अवश्य ही बन्दी बनाया जाएगा और दुष्टों में से हो जाएगा।"

(33) उसने कहा, "मेरे रब! मुझे तो जेल जाना उससे अधिक पसन्द है, जिसकी ओर वे मुझे बुला रहे हैं। यदि तूने मुझसे उनकी चाल न टाली, तो मैं भी उनकी ओर झुक जाऊँगा और अज्ञानियों में से हो जाऊँगा।"

(34) अतः उसके रब ने उसकी बात मान ली और उसकी चाल को टाल दिया। निस्संदेह, वही सब कुछ सुनता, जानता है।

(35) फिर जब उन्होंने निशानियाँ देख लीं, तो उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे कुछ समय तक कैद में रखना चाहिए।

(36) और दो युवक उसके साथ कारागार में दाखिल हुए। उनमें से एक ने कहा, "मैंने स्वप्न में अपने आपको शराब निचोड़ते हुए देखा है।" दूसरे ने कहा, "मैंने अपने आप को अपने सिर पर रोटी उठाते हुए देखा है, जिसे पक्षी खा रहे हैं। हमें उसका अर्थ बताओ। हम तुम्हें अच्छे लोगों में से देखते हैं।"

(37) उसने कहा, "तुम्हारे पास जो भोजन आएगा, वह तुम्हारे पास नहीं आएगा, परन्तु मैं उसका अर्थ तुम्हें बता दूँगा, इससे पहले कि वह तुम्हारे पास आए। यह उसी बात से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाई है। निश्चय ही मैंने उन लोगों के धर्म को छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे आख़िरत के प्रति भी इनकार करनेवाले हैं।

(38) और मैंने अपने पूर्वजों इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब के धर्म का अनुसरण किया। और हमारे लिए यह उचित नहीं था कि हम अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराएँ। यह अल्लाह की ओर से हम पर और लोगों पर हुई अनुकंपा से है। किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

(39) ऐ मेरे दोनों साथियों! क्या अलग-अलग पालनहार अच्छे हैं या अल्लाह, जो अकेला, प्रभुत्वशाली है?

(40) तुम उसके सिवा किसी की इबादत नहीं करते, सिवाय उन नामों के जिन्हें तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिया है, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है। कोई भी आदेश अल्लाह के सिवा और कुछ नहीं है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत मत करो। यही सच्चा धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(41) हे मेरे दोनों जेल साथियों, तुममें से एक अपने स्वामी को शराब पिलाएगा, परन्तु दूसरा क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, और पक्षी उसका सिर नोचेंगे। जिस बात के विषय में तुम दोनों पूछ रहे हो, वह बात तय हो चुकी है।”

(42) और उस व्यक्ति से, जिसके विषय में वह जानता था कि वह स्वतंत्र हो जाएगा, कहा, "अपने स्वामी से मेरा उल्लेख करना।" किन्तु शैतान ने उसे अपने स्वामी से मेरा उल्लेख भूलवा दिया, और वह कई वर्ष तक बन्दीगृह में रहा।

(43) राजा ने कहा, "वास्तव में, मैंने सात मोटी गायों को सात पतली गायों द्वारा खाया जा रहा है, और सात हरी बालियाँ और अन्य सूखी हैं। हे महानुभावों, यदि आप दर्शन का अर्थ करना चाहते हैं, तो मुझे मेरा दर्शन समझाएँ।"

(44) उन्होंने कहा, "यह तो झूठे स्वप्नों का मिश्रण है। हम स्वप्नों की व्याख्या करने में निपुण नहीं हैं।"

(45) फिर जो व्यक्ति मुक्त हो गया और कुछ समय के बाद याद आया, उसने कहा, "मैं तुम्हें इसका अर्थ बता दूँगा। अतः मुझे भेज दो।"

(46) उसने कहा, "हे यूसुफ, हे सच्चे मनुष्य, हमें सात मोटी गायों का, जिन्हें सात पतली गायें खा गईं, और सात हरी बालियाँ और कुछ सूखी बालियाँ, यह बताओ, तब मैं लोगों के पास लौट जाऊँगा; सम्भव है वे जान लें।"

(47) यूसुफ़ ने कहा, "तुम सात वर्ष तक लगातार बोओगे और जो कुछ तुम काटोगे, उसे उसकी बालियों में छोड़ दोगे, सिवाए थोड़ा सा, जिससे तुम खा सको।

(48) फिर उसके पश्चात सात कठिन वर्ष आएंगे, जो तुम्हारे द्वारा उनके लिए बचाए गए धन को खा जाएंगे, परन्तु उसमें से थोड़ा-सा ही तुम बचा पाओगे।

(49) फिर उसके बाद एक वर्ष आएगा, जिसमें लोगों को वर्षा दी जाएगी और जिसमें वे [जैतून और अंगूर] दबाएँगे।

(50) राजा ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ।" फिर जब दूत उसके पास आया तो उसने कहा, "अपने स्वामी के पास लौट जाओ और उससे पूछो कि उन स्त्रियों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए? निस्संदेह मेरा स्वामी उनकी चाल को भली-भाँति जानता है।"

(51) राजा ने उन स्त्रियों से कहा, "जब तुम यूसुफ़ को बहकाना चाहती थीं, तब तुम्हारी क्या दशा थी?" उन्होंने कहा, "अल्लाह सच्चा है! हम उसके विषय में कुछ बुरा नहीं जानते।" अज़ीज़ की पत्नी ने कहा, "अब सत्य प्रकट हो गया। मैंने ही उसे बहकाना चाहा था, और वह सच्चा है।

(52) ताकि वह जान ले कि मैंने उसकी अनुपस्थिति में उसके साथ विश्वासघात नहीं किया और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(53) और मैं अपने आपको दोषमुक्त नहीं करता। निश्चय ही आत्मा बुराई की ओर प्रवृत्त होती है, परन्तु वे लोग जिनपर मेरा रब दया करे। निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(54) राजा ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ; मैं उसे अपने लिए नियुक्त करूँगा।" फिर जब उसने उससे बात की, तो उसने कहा, "वास्तव में, आज तुम विश्वसनीय और विश्वसनीय हो।"

(55) यूसुफ़ ने कहा, "मुझे देश के भण्डारों का अधिकारी बना दीजिए। मैं अवश्य ही एक जानकार रक्षक बनूँगा।"

(56) और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को धरती में स्थापित किया कि वह जहाँ चाहे वहाँ बस जाए। हम जिस पर चाहते हैं अपनी दयालुता से उसे छू लेते हैं और हम अच्छे कर्म करनेवालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देते।

(57) और आख़िरत का बदला उन लोगों के लिए उत्तम है जो ईमान लाए और अल्लाह से डरते रहे।

(58) और यूसुफ़ के भाई उसके पास आए, और उसके पास गए; और उसने उन्हें पहचान लिया, परन्तु वह उनसे अनजान था।

(59) फिर जब उसने उन्हें उनकी सामग्री उपलब्ध करा दी तो कहा, "अपने पिता से अपने किसी भाई को मेरे पास ले आओ। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा नाप देता हूँ और मैं सबसे अच्छा मेहमाननवाज़ हूँ?

(60) फिर यदि तुम उसे मेरे पास न लाओगे तो फिर मेरे पास तुम्हारे लिए कोई उपाय न होगा और न तुम मेरे पास आ सकोगे।

(61) उन्होंने कहा, "हम अवश्य उसके पिता को उसके विषय में समझा लेंगे, और हम अवश्य ऐसा करेंगे।"

(62) और यूसुफ ने अपने सेवकों से कहा, "अपना माल अपनी-अपनी काठी में रख लो, कि जब वे अपने घरवालों के पास लौटें, तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर लौट आएं।"

(63) फिर जब वे अपने पिता के पास लौटे तो कहने लगे कि हे हमारे पिता! हमें नाप देने से मना कर दिया गया है। अतः आप हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हमें नाप दिया जाए। और हम ही उसके संरक्षक होंगे।

(64) उसने कहा, "क्या मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँ, जबकि इससे पहले मैंने उसके भाई को तुम्हारे हवाले किया था? निस्संदेह अल्लाह ही सबसे अच्छा संरक्षक है और वह अत्यन्त दयावान है।"

(65) फिर जब उन्होंने अपना सामान खोला तो पाया कि उनका माल उन्हें लौटा दिया गया है। उन्होंने कहा, "हे हमारे पिता! अब हम और क्या चाहते? यह हमारा माल है जो हमें लौटा दिया गया है। और हम अपने परिवार के लिए भोजन सामग्री प्राप्त करेंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और ऊँट का बोझ बढ़ा लेंगे। यह तो आसान उपाय है।"

(66) याकूब ने कहा, "मैं उसे तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेजूँगा, जब तक कि तुम मुझे अल्लाह की कसम न दो कि तुम उसे मेरे पास वापस लाओगे, सिवाय इसके कि तुम घिर जाओ।" फिर जब उन्होंने उससे वादा कर लिया तो उसने कहा, "हम जो कुछ कहते हैं, अल्लाह उसपर साक्षी है।"

(67) उसने कहा, "ऐ मेरे बेटो! एक द्वार से प्रवेश न करो, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करो। मैं अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। फ़ैसला तो अल्लाह ही का है। मैंने उसी पर भरोसा किया है और जो लोग भरोसा करना चाहें, वे उसी पर भरोसा करें।"

(68) और जब वे वहाँ से प्रविष्ट हुए जहाँ उनके पिता ने उन्हें आदेश दिया था, तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनके लिए कुछ भी काम न आया, सिवाय इसके कि याकूब के मन की एक ज़रूरत थी जिसे उसने पूरा कर दिया। और निश्चय ही वह ज्ञानवान था, उस ज्ञान के कारण जो हमने उसे सिखाया था, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(69) फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास बुला लिया और कहा, "मैं तुम्हारा भाई हूँ। अतः जो कुछ वे मेरे साथ करते रहे हैं, उससे निराश न हो।"

(70) फिर जब उसने उन्हें उनका सामान दे दिया तो उसने प्याला अपने भाई की थैली में रख दिया। फिर एक घोषणाकर्ता ने पुकारा, "ऐ काफ़िले! तुम लोग सचमुच चोर हो।"

(71) वे उनके पास आकर बोले, "तुम किस चीज़ से वंचित हो?"

(72) उन्होंने कहा, "हम राजा के माप से चूक गए हैं। जो उसे पूरा करेगा, उसके लिए एक ऊँट का बोझ है, और मैं उसका उत्तरदायी हूँ।"

(73) उन्होंने कहा, "अल्लाह की क़सम! तुम्हें मालूम हो गया कि हम धरती में फ़साद फैलाने नहीं आए हैं और न हम चोर हैं।"

(74) उन्होंने कहा, "फिर यदि तुम झूठे निकले तो इसका क्या बदला होगा?"

(75) उन्होंने कहा, "उसका बदला यह है कि जिसके थैले में वह मिले, वही उसका बदला पाएगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को बदला देते हैं।"

(76) अतः यूसुफ़ ने अपने भाई के थैले से पहले ही उनके थैलों की तलाशी शुरू कर दी, फिर उसने अपने भाई के थैले से उसे निकाल लिया। इसी प्रकार हमने यूसुफ़ के लिए योजना बनाई। वह अपने भाई को राजा के धर्म में नहीं ले जा सकता था, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। हम जिसे चाहते हैं, उसे दर्जा देते हैं, किन्तु प्रत्येक ज्ञानी से अधिक ज्ञानी एक है।

(77) उन्होंने कहा, "यदि वह चोरी करता है तो इसका एक भाई पहले भी चोरी कर चुका है।" किन्तु यूसुफ़ ने यह बात अपने मन में ही रखी और उनपर प्रकट न की। उसने कहा, "तू तो और भी बुरी स्थिति में है। जो कुछ तू कहता है, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।"

(78) उन्होंने कहा, "ऐ अज़ीज़! उसका पिता बूढ़ा है। अतः उसके स्थान पर हममें से किसी को ले लो। हम तो तुम्हें बहुत अच्छा कर्म करनेवाला देखते हैं।"

(79) उसने कहा, "मैं अल्लाह की शरण चाहता हूँ कि हम उसे छोड़ दें जिसके पास हमने अपना माल पाया है। निश्चय ही हम अत्याचारी होंगे।"

(80) फिर जब वे उससे निराश हो गए तो एकांत में बैठकर विचार-विमर्श करने लगे। उनमें से सबसे बड़े ने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह की शपथ ली है और इससे पहले तुम यूसुफ़ के प्रति लापरवाह हो चुके हो? अतः मैं इस देश को कदापि नहीं छोडूंगा, जब तक कि मेरे पिता मुझे अनुमति न दें या अल्लाह मेरे लिए निर्णय न कर दे, और वह सबसे अच्छा निर्णय करनेवाला है।

(81) अपने पिता के पास लौट जाओ और कहो कि ऐ हमारे पिता! आपके बेटे ने चोरी की है और हमने तो केवल उसी बात की गवाही दी जो हम जानते थे और हम परोक्ष के भी साक्षी नहीं थे।

(82) और उस नगर से पूछो जिसमें हम थे और उस काफिले से भी पूछो जिसमें हम आये, और निश्चय ही हम सच्चे हैं।

(83) याकूब ने कहा, "तुम्हारे प्राणों ने तुम्हें किसी चीज़ के लिए प्रेरित कर दिया है। अतः धैर्य रखना ही उचित है। आशा है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। निस्संदेह वही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।"

(84) और वह उनसे मुँह फेरकर कहने लगा, "हाय! यूसुफ़ के विषय में मुझे कितना दुःख है!" और उसकी आँखें शोक से सफ़ेद हो गयीं, क्योंकि वह उस बात को दबानेवाला था।

(85) उन्होंने कहा, "अल्लाह की कसम! तुम यूसुफ़ को याद करना न छोड़ोगे, यहाँ तक कि तुम मर जाओ या हलाक हो जाओ।"

(86) उसने कहा, "मैं तो बस अल्लाह से अपनी परेशानी और अपने दुःख की शिकायत करता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(87) ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई के बारे में पता लगाओ और अल्लाह की ओर से राहत से निराश न हो। निस्संदेह अल्लाह की ओर से राहत से निराश कोई नहीं होता, सिवाय इनकार करनेवाले लोगों के।

(88) फिर जब वे यूसुफ़ के पास आए तो कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! हम पर और हमारे घरवालों पर मुसीबत आ पड़ी है और हम घटिया माल लेकर आए हैं। अतः हमें पूरा-पूरा माल दे और हमें दान दे। निस्संदेह अल्लाह दान देनेवालों को बदला देता है।

(89) उसने कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया, जब तुम अज्ञान थे?"

(90) उन्होंने कहा, "क्या तुम यूसुफ़ हो?" उसने कहा, "मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हमपर उपकार किया है। जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है और धैर्य रखता है, तो अल्लाह अच्छे कर्म करनेवालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देता।"

(91) उन्होंने कहा, "अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुमको हमपर वरीयता दी है। और हम ही पापी थे।"

(92) उसने कहा, "आज तुमपर कोई दोष नहीं। अल्लाह तुम्हें क्षमा करे। वह अत्यन्त दयावान है।"

(93) यह मेरी कमीज़ लो और इसे मेरे पिता के चेहरे पर डाल दो; वह देखने लगेगा। और अपने परिवार के सभी लोगों को मेरे पास ले आओ।"

(94) और जब क़ाफ़िला चला तो उनके पिता ने कहा, "मुझे यूसुफ़ की गन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे कमज़ोर न समझते।"

(95) उन्होंने कहा, "अल्लाह की क़सम! तुम अपनी पुरानी गुमराही में ही पड़े हो।"

(96) फिर जब शुभ सूचना देनेवाला आया तो उसने उसे उसके चेहरे पर डाल दिया, और वह देखता हुआ लौटा। उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते?"

(97) उन्होंने कहा, "ऐ हमारे पिता! हमारे लिए हमारे पापों की क्षमा माँग लो। वास्तव में, हम पापी थे।"

(98) उसने कहा, "मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। निस्संदेह, वही अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(99) फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने माता-पिता को अपने पास बुलाया और कहा, "अल्लाह की इच्छा से तुम मिस्र में सुरक्षित प्रवेश करो।"

(100) और उसने अपने माता-पिता को सिंहासन पर खड़ा किया, तो उन्होंने उसे सजदा किया और कहा, "ऐ मेरे पिता! यह मेरे पहले देखे हुए स्वप्न का विवरण है। मेरे रब ने इसे साकार कर दिया है। और उसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया, जब उसने मुझे कारागार से निकाला और आपको बद्दू जीवन से यहाँ लाया, इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच मतभेद पैदा कर दिया था। निस्संदेह मेरा रब जो चाहता है, उसमें सूक्ष्मता रखता है। निस्संदेह वही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(101) ऐ मेरे रब! तूने मुझे हुकूमत दी और ख़्वाबों की ताबीर सिखाई। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा मददगार है। मुझे मुसलमान की तरह मौत दे और मुझे नेक लोगों में शामिल कर।

(102) यह उस ग़ैब की ख़बर से है जो हम तुम्हारी ओर उतारते हैं। और जब वे षड्यंत्र रच रहे थे, तो तुम उनके साथ नहीं थे।

(103) यद्यपि तुम प्रयास करो, किन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

(104) और तुम उनसे इसके बदले में कुछ भी पारिश्रमिक नहीं माँगते, यह तो बस संसार के लिए एक शिक्षा है।

(105) और कितनी ही निशानियाँ हैं जिनको वे आकाशों और धरती में छोड़कर चले जाते हैं, और उनसे मुँह फेर लेते हैं।

(106) उनमें से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, परन्तु वे उसका साझीदार बनते हैं।

(107) तो क्या वे इस बात से निश्चिंत हैं कि अल्लाह की यातना उनपर कभी भारी न पड़ जाए या क़ियामत अचानक उनपर न आ जाए और उन्हें इसका एहसास भी न हो?

(108) कह दो, "यही मेरा मार्ग है। मैं अल्लाह की ओर स्पष्ट समझ के साथ बुलाता हूँ, मैं और मेरे अनुयायी। और पवित्र है अल्लाह। मैं उसका साझीदार नहीं।"

(109) और हमने तुमसे पहले भी ऐसे ही लोगों को भेजा है, जिनकी ओर हमने बस्तियों के लोगों में से वह्यी की है। क्या उन्होंने धरती में फिरकर यह नहीं देखा कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए सर्वोत्तम है जो अल्लाह से डरते हैं। फिर क्या तुम नहीं सोचते?

(110) यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गए और उन्हें विश्वास हो गया कि उन्हें झुठलाया जा चुका है, तो हमारी सफलता उनके पास आ गई और जो कोई हमने चाहा बचा लिया और जो लोग अपराधी हैं, उनसे हमारी यातना नहीं टल सकती।

(111) निश्चय ही उनकी कहानियों में समझ रखनेवालों के लिए शिक्षा है। वह कोई गढ़ी हुई कथा नहीं है, बल्कि जो कुछ उसके पहले था, उसकी पुष्टि करनेवाली है, और हर चीज़ की विस्तृत व्याख्या करनेवाली है, और मार्गदर्शन और दया है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

सूरा 13: **ٱلرَّعْد‎ (अर-राउद)** - द थंडर

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, मीम, रा. ये किताब की आयतें हैं. जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, वही सत्य है. किन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते.

(2) अल्लाह ही है जिसने आकाश को बिना किसी खंभे के ऊँचा किया जिसे तुम देख सकते हो। फिर वह अर्श पर स्थित हुआ। उसने सूर्य और चन्द्रमा को अपने अधीन कर दिया, प्रत्येक अपने निर्धारित समय तक चलता है। वह सभी मामलों का प्रबंध करता है और निशानियों को विस्तारपूर्वक बयान करता है, ताकि तुम अपने रब से मिलने के प्रति आश्वस्त हो जाओ।

(3) और वही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें दृढ़ पहाड़ और नदियाँ बनाईं और उसमें हर प्रकार के फलों से दो प्रकार बनाए और रात को दिन पर ढाँप दिया। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें।

(4) और धरती में अंगूरों के बाग़, फ़सलें और खजूर के पेड़ हैं, जो एक ही जड़ से उगते हैं या किसी और तरह से, एक ही पानी से सींचे जाते हैं, फिर भी हम उनमें से कुछ को फलों में दूसरों से अधिक बनाते हैं। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो समझ रखते हैं।

(5) और यदि तुम आश्चर्य में पड़ो तो आश्चर्य की बात है कि उनका यह कहना कि "क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो फिर किसी नई सृष्टि में डाल दिये जायेंगे?" यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया और उनकी गर्दनों में बेड़ियाँ डाल दी जायेंगी और वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसी में सदैव रहेंगे।

(6) वे तुमसे कहते हैं कि भलाई से पहले बुराई में जल्दी करो, हालाँकि उनसे पहले भी कठोर यातनाएँ आ चुकी हैं। और तुम्हारा रब लोगों को उनके अत्याचारों के बावजूद क्षमा करने वाला है, और तुम्हारा रब कठोर दण्ड देने वाला है।

(7) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? तुम तो बस सचेत करनेवाले हो और प्रत्येक समुदाय के लिए मार्गदर्शक है।

(8) अल्लाह जानता है कि हर स्त्री क्या गर्भ धारण करती है और गर्भ क्या खोता है या अधिक करता है। और हर चीज़ उसके पास नियत मात्रा में है।

(9) वह अदृश्य और प्रत्यक्ष का जाननेवाला, महान, सर्वोच्च है।

(10) तुम्हारे लिए तो यह बात बराबर है कि कोई अपनी बात छिपाए या प्रकट करे, चाहे कोई रात में छिपा रहे या दिन में प्रकट हो जाए।

(11) हर एक के आगे और पीछे एक-एक फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी रक्षा करते हैं। बेशक अल्लाह किसी क़ौम की हालत तब तक नहीं बदलता जब तक कि वह अपने अंदर की चीज़ों को न बदल ले। और जब अल्लाह किसी क़ौम को कोई नुकसान पहुँचाना चाहे तो वह उसे टाल नहीं सकता और न वह उसके सिवा किसी को बचाने वाला पाएँगे।

(12) वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है, डराता है, आशा जगाता है और घने बादल उत्पन्न करता है।

(13) और गरज अल्लाह की प्रशंसा करके उसकी तसबीह करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से। और वह बिजलियाँ बरसाता है और उनसे जिसे चाहता है मारता है, जबकि लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं। और वह बहुत ज़ोर से वार करनेवाला है।

(14) उसी की ओर सच्ची दुआ है और वे लोग उससे हटकर जिन्हें पुकारते हैं, वे उनकी कोई बात नहीं सुनते, परन्तु जैसे कोई पानी की ओर हाथ बढ़ाए कि वह उसके मुँह तक पहुँचे, किन्तु वह उस तक न पहुँचे और इनकार करनेवालों की दुआ तो केवल गुमराही है।

(15) और अल्लाह ही को सजदा करता है जो कोई आकाशों और धरती में है, चाहे स्वेच्छा से हो या अनिच्छा से, और उनकी परछाइयाँ भी प्रातःकाल और सायंकाल में।

(16) कहो, "आकाशों और धरती का रब कौन है?" कहो, "अल्लाह।" कहो, "तो क्या तुमने उसके सिवा ऐसे संरक्षक बना रखे हैं, जो न तो अपने लिए लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि पहुँचा सकते हैं?" कहो, "क्या अंधा देखनेवाले के बराबर है? या अँधेरा प्रकाश के बराबर है? या उन्होंने अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझीदार ठहराया है, जिन्होंने उसकी रचना के समान रचना की, यहाँ तक कि उन्हें रचना एक-सी लगी?" कहो, "अल्लाह हर चीज़ का रचयिता है, और वही एक है, प्रभुत्वशाली है।"

(17) वह आकाश से पानी बरसाता है, फिर घाटियाँ अपनी क्षमता के अनुसार बह जाती हैं, और नदी में झाग उठता है। और जिस अयस्क को वे आग में गर्म करके श्रृंगार और बर्तन चाहते हैं, उसमें से भी उसी जैसा झाग निकलता है। इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य का दृष्टान्त प्रस्तुत करता है। झाग तो उड़ जाता है, परन्तु जो लोगों के काम आता है, वह धरती पर ही रहता है। इस प्रकार अल्लाह दृष्टान्त प्रस्तुत करता है।

(18) जो लोग अपने रब की बात मान लेते हैं, उनके लिए अच्छा बदला है। किन्तु जो लोग उसकी बात नहीं मानते, यदि उनके पास धरती में जो कुछ है, वह सब हो और उसके समान भी हो, तो वे उससे अपना प्रायश्चित कर लेंगे। ऐसे लोगों का सबसे बुरा हाल है। उनका ठिकाना जहन्नम है और उनका ठिकाना बुरा है।

(19) फिर जो व्यक्ति जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है वह सत्य है, क्या वह अंधे के समान है? निश्चय ही बुद्धि वाले लोग ही ध्यान देंगे।

(20) जो लोग अल्लाह के वचन को पूरा करते हैं और उसे नहीं तोड़ते,

(21) और जो लोग उस चीज़ को जोड़ते हैं जिसे जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है और अपने रब से डरते हैं और अपने बुरे हिसाब से डरते हैं।

(22) और जो लोग धैर्य से काम लें, अपने रब की प्रसन्नता चाहते हों और नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करें और भलाई से बुराई को दूर करें, वही लोग इस घर में अच्छा परिणाम पानेवाले हैं।

(23) वे सदैव रहने वाले बाग़ हैं, उनमें वे लोग प्रवेश करेंगे जो अपने पूर्वजों, अपनी पत्नियों और अपनी सन्तान में से अच्छे लोगों के साथ होंगे और फ़रिश्ते उन पर प्रत्येक द्वार से प्रवेश करेंगे।

(24) "तुम पर सलाम है उस चीज़ के बदले जो तुमने धैर्य से सहन की। और अन्तिम घर भी बहुत अच्छा है।"

(25) किन्तु जो लोग अल्लाह से किया हुआ वचन तोड़ देते हैं और जिसे जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है उसे तोड़ देते हैं और धरती में बिगाड़ फैलाते हैं, उन्हीं के लिए लानत है और उनका घर बहुत बुरा है।

(26) अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी प्रदान करता है और जिसे चाहता है सीमित भी करता है। और वे सांसारिक जीवन पर प्रसन्न होते हैं, हालाँकि सांसारिक जीवन आख़िरत के समान कुछ भी नहीं है, बस एक छोटा-सा सुख है।

(27) और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि "उस पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जो कोई उसकी ओर पलट आए उसे अपनी ओर मार्ग दिखा देता है।

(28) जो लोग ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से आश्वस्त हो गए, निस्संदेह अल्लाह की याद से उनके दिल आश्वस्त हो गए।

(29) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए अच्छा राज्य और अच्छा प्रतिफल है।

(30) इसी प्रकार हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय की ओर भेजा है, जिसके पहले कई समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि तुम उन्हें वह बात सुनाओ जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है, हालाँकि वे रहमान के साथ इनकार करते हैं। कह दो, "वह मेरा रब है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मुझे लौटना है।"

(31) और यदि कोई ऐसा क़ुरआन होता जिससे पहाड़ हट जाते या धरती फट जाती या मुर्दे बोलने लगते, तो भी यह सब अल्लाह का काम है। तो क्या ईमान लाने वालों ने यह नहीं माना कि यदि अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को मार्ग दिखा देता? और जो लोग इनकार करते हैं, उनके कर्मों के कारण उन पर मुसीबत आती रहेगी, या उनके घरों के निकट आ जाएगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। निस्संदेह अल्लाह अपने वादे से कभी नहीं चूकता।

(32) और तुमसे पहले भी बहुत से रसूल उपहास का पात्र बन चुके हैं और मैंने इनकार करनेवालों का समय बढ़ा दिया, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। और कैसी भयानक थी मेरी यातना।

(33) तो क्या वह जो प्रत्येक जीव का पालन-पोषण करनेवाला है, वह जानता है कि उसने क्या कमाया है? फिर भी वे अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं। कहो, "उनका नाम बताओ। या तुम उसे धरती में ऐसी बातें बताते हो, जो वह नहीं जानता या प्रत्यक्ष बातें? बल्कि उनकी चालें इनकार करनेवालों के लिए आकर्षक हो गई हैं और वे मार्ग से रोक दिए गए हैं। और जिसे अल्लाह भटका दे, उसके लिए कोई मार्गदर्शी नहीं।

(34) उनके लिए सांसारिक जीवन में यातना है और आख़िरत की यातना उससे भी अधिक कठोर है और अल्लाह की ओर से उनका कोई संरक्षक न होगा।

(35) यह जन्नत की मिसाल है जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है। उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसका फल स्थायी है और उसकी छाया भी है। यही बुरे कर्म करनेवालों का परिणाम है और इनकार करनेवालों का परिणाम आग है।

(36) और जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसपर प्रसन्न होते हैं जो तुम्हारी ओर अवतरित हुई है। किन्तु कुछ लोग उसमें से कुछ को झुठलाते हैं। कह दो, "मुझे तो बस यह आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ और उसका साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौटना है।"

(37) और इसी प्रकार हमने इसे अरबी कानून के रूप में अवतरित किया है। और यदि तुम उनके इच्छाओं का अनुसरण करो, इसके पश्चात कि जो ज्ञान तुम्हारे पास आ चुका है, तो अल्लाह के विरुद्ध तुम्हारा कोई संरक्षक और रक्षक न होगा।

(38) और हमने तुमसे पहले भी बहुत से रसूल भेजे, फिर उनको पत्नियाँ और संतानें दीं, और किसी रसूल का यह अधिकार नहीं कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी लेकर आए, और हर एक शब्द एक आदेश है।

(39) अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है या पुष्ट करता है, और उसी के पास किताब वाली माँ है।

(40) चाहे हम तुम्हें उसका कुछ भाग दिखाएँ जिसका वादा हम उनसे कर रहे हैं या तुम्हें मृत्यु में ले जाएँ, तुम पर तो बस सूचना देने का दायित्व है और हिसाब-किताब हमारे ऊपर है।

(41) क्या वे नहीं देखते कि हमने धरती पर कब्ज़ा कर लिया है और उसे उसकी सीमाओं से दूर कर दिया है? और अल्लाह फ़ैसला करता है, उसके फ़ैसले को कोई नियंत्रित करनेवाला नहीं और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

(42) और उनसे पहले के लोगों ने भी चालें चली थीं, किन्तु सारी चाल अल्लाह ही के लिए है। वह जानता है कि प्रत्येक प्राणी क्या करता है। और इनकार करनेवाले शीघ्र ही जान लेंगे कि अन्तिम घर किसका है।

(43) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं कि तुम कोई रसूल नहीं हो। कह दो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही काफ़ी है और जो कोई किताब का ज्ञान रखता है, उसकी गवाही काफ़ी है।

सूरा 14: **إِبْرَاهِيم‎ (इब्राहीम)** - इब्राहीम

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, रा. हमने तुम्हारी ओर एक किताब उतारी है, ताकि तुम अपने रब की अनुमति से लोगों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले चलो, प्रभुत्वशाली, प्रशंसनीय प्रभु के मार्ग की ओर।

(2) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है। विनाश है इनकार करनेवालों के लिए कठोर यातना है।

(3) जो लोग सांसारिक जीवन को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं, वे घोर गुमराही में हैं।

(4) और हमने जो भी रसूल भेजा है, वह उसकी क़ौम की भाषा में ही भेजा है, ताकि वह उनके लिए स्पष्ट कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है, गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है। और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(5) और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि "अपनी क़ौम के लोगों को अँधेरों से निकालकर रोशनी की ओर ले आओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ।" निस्संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान और कृतज्ञता दिखानेवाले व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं।

(6) और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह ने तुमपर जो उपकार किया उसे याद करो, जब उसने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से बचाया, जिसने तुमपर घोर यातनाएँ बरसाईं, तुम्हारे बेटों को ज़बह किया और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखा। और इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी परीक्षा थी।

(7) और याद करो जब तुम्हारे रब ने कहा था कि "यदि तुम कृतज्ञता दिखाओगे तो मैं तुम्हारे प्रति और अधिक अनुग्रह प्रदर्शित करूँगा। किन्तु यदि तुम कृतज्ञता नहीं दिखाओगे तो निश्चय ही मेरी यातना कठोर है।"

(8) मूसा ने कहा, "यदि तुम और जो कोई धरती में है, सब इनकार करें तो अल्लाह निःसंदेह निःसंदेह प्रशंसनीय है।"

(9) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे, अर्थात् नूह, आद, समूद और उनके बाद वाले? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, किन्तु उन्होंने अपने मुँह पर हाथ रख लिए और कहा, "जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए हो, हम उसका इनकार करते हैं और जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुला रहे हो, उसके विषय में भी हम संदेह में हैं।"

(10) उनके रसूलों ने कहा, "क्या अल्लाह, जो आकाशों और धरती का रचयिता है, उस पर कोई संदेह हो सकता है? वह तुम्हें बुला रहा है, ताकि तुम्हारे पापों को क्षमा कर दे और एक निश्चित अवधि तक तुम्हें विलम्बित कर दे।" उन्होंने कहा, "तुम तो हमारे जैसे ही लोग हो, जो चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो, जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते रहे हैं। अतः हमारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण लाओ।"

(11) उनके रसूलों ने उनसे कहा, "हम तो बस तुम्हारे जैसे ही लोग हैं। अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है अनुग्रह करता है। हमारे लिए यह उचित नहीं कि हम अल्लाह की अनुमति के बिना तुम्हारे पास कोई प्रमाण लेकर आएँ। ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(12) और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखा दिए हैं? और तुम हमें जो कुछ कष्ट पहुँचाओगे, हम उसपर धैर्य रखेंगे। और जो लोग अल्लाह पर भरोसा करना चाहें, वे अल्लाह पर भरोसा करें।

(13) और जिन लोगों ने इनकार किया, उन्होंने अपने रसूलों से कहा, "हम तुम्हें अपनी धरती से निकाल देंगे, जब तक कि तुम हमारे धर्म की ओर न फिरो।" तो उनके रब ने उनकी ओर वह़्यी की, "हम अत्याचारियों को अवश्य विनष्ट कर देंगे।

(14) और हम उनके पश्चात तुम्हें अवश्य धरती में बसाएंगे। यह उसी के लिए है जो मेरे प्रभुत्व से डरे और मेरी धमकी से डरे।

(15) और उन्होंने अल्लाह से विजय का अनुरोध किया, और प्रत्येक अत्याचारी नष्ट हो गया।

(16) उसके आगे जहन्नम है, और उसे पीपयुक्त जल पिलाया जाएगा।

(17) जिसे वह गटकेगा, किन्तु निगल नहीं सकेगा और मृत्यु हर ओर से उस पर आएगी, किन्तु वह न मरेगा, और उसके आगे कठोर यातना है।

(18) जिन लोगों ने अपने रब के साथ इनकार किया, उनके कर्म तूफ़ानी दिन में हवा से उड़ाई गई राख के समान हैं। वे जो कुछ कमाते हैं, उससे कुछ लाभ नहीं पाते। यही तो भटकाव है।

(19) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है। यदि वह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और नयी सृष्टि उत्पन्न कर दे।

(20) और अल्लाह के लिए यह कोई कठिन बात नहीं है।

(21) और वे सब अल्लाह के सामने आएँगे और कमज़ोर लोग उन लोगों से जो अहंकारी थे कहेंगे, "हम तो तुम्हारे अनुयायी थे। अब तुम अल्लाह की यातना से हमारे कुछ काम आ सकते हो?" वे कहेंगे, "यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दिखाया होता तो हम भी तुम्हें मार्ग दिखाते। हमारे लिए कोई बात नहीं, चाहे हम अधीरता दिखाएँ या धैर्य रखें। हमारे लिए कोई बचने का स्थान नहीं।"

(22) और जब बात पूरी हो जाएगी तो शैतान कहेगा, "अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था। मैंने भी तुमसे वादा किया था, फिर भी मैंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया। मेरा तुमपर कोई अधिकार नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली। तो तुम मुझपर दोष न लगाओ, बल्कि अपने आप पर दोष लगाओ। न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। निश्चय ही मैं तुम्हारे द्वारा पहले मुझे साझी ठहराए जाने को झुठलाता हूँ। निश्चय ही अत्याचारियों के लिए दुखद यातना है।"

(23) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, अपने रब की अनुमति से वे उनमें सदैव रहेंगे। वहाँ उनका स्वागत "सलाम" से होगा।

(24) क्या तुमने नहीं सोचा कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पेश की है कि अच्छी बात एक अच्छे वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ें मज़बूत हैं और उसकी शाखाएँ आकाश तक पहुँचती हैं।

(25) वह अपने रब की अनुमति से प्रत्येक मौसम में फल देती है। और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है, ताकि वे स्मरण करें।

(26) और बुरे वचन की मिसाल बुरे वृक्ष के समान है, जो धरती से उखाड़ दिया गया हो, और जिसमें कोई स्थिरता न हो।

(27) अल्लाह ईमान वालों को सांसारिक जीवन तथा आख़िरत में दृढ़ वचन के साथ दृढ़ रखता है। और अल्लाह अत्याचारियों को भटका देता है। अल्लाह जो चाहता है, करता है।

(28) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के उपकार को कुफ़्र से बदल दिया और अपनी क़ौम को विनाश के घर में बसा दिया?

(29) जहन्नम है, जिसमें वे जलनेवाले हैं। और वह बुरी जगह है।

(30) और उन्होंने अल्लाह के बराबर लोगों को ठहराया, ताकि वे उसे उसके मार्ग से भटका दें। कह दो, "मज़े करो, निश्चय ही तुम्हारा ठिकाना आग है।"

(31) मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए हैं कह दो कि नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छुपकर और खुलेआम ख़र्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न लेन-देन होगा और न कोई मित्रता होगी।

(32) वही अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और आकाश से वर्षा बरसाई फिर उसके द्वारा तुम्हारे लिए फल पैदा किए, और उसी ने अपने आदेश से समुद्र में नौकाओं को तुम्हारे अधीन कर दिया और नदियों को भी तुम्हारे अधीन कर दिया।

(33) और उसने तुम्हारे लिए सूर्य और चन्द्रमा को निरन्तर वश में रखा और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए वश में रखा।

(34) और उसने तुम्हें वह सब दिया जो तुमने उससे माँगा। और यदि तुम अल्लाह के उपकारों को गिनना चाहो तो भी तुम उन्हें गिन नहीं सकोगे। निश्चय ही मनुष्य बड़ा अत्याचारी और कृतघ्न है।

(35) और याद करो जब इबराहीम ने कहा कि "ऐ मेरे रब! इस नगर को सुरक्षित रख और मुझे और मेरी सन्तान को मूर्तियों की पूजा से दूर रख।

(36) मेरे पालनहार! उन्होंने लोगों में से बहुतों को गुमराह कर दिया है। फिर जो मेरा अनुसरण करे, वह मुझमें से है और जो मेरी अवज्ञा करेगा, तो निस्संदेह तू अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(37) ऐ हमारे पालनहार! मैंने अपनी संतान में से कुछ लोगों को तेरे पवित्र घर के निकट एक बंजर घाटी में बसाया है, ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। अतः तू लोगों के दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर और उन्हें फलों से रोज़ी दे, ताकि वे कृतज्ञता दिखाएँ।

(38) हे हमारे पालनहार! तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम प्रकट करते हैं। और अल्लाह से न धरती में कोई चीज़ छिपी है और न आकाश में।

(39) और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ प्रदान किये। निस्संदेह मेरा पालनहार प्रार्थना सुनने वाला है।

(40) ऐ मेरे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करनेवाला बना दे और मेरी संतान में से भी बहुतों को। ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़बूल कर।

(41) ऐ हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और ईमानवालों को क्षमा कर दे, जिस दिन हिसाब पूरा हो जाएगा।

(42) और यह न समझो कि अल्लाह ज़ालिमों के कामों से अनभिज्ञ है। वह तो उन्हें बस उस दिन तक टालता है, जब आँखें घूरेंगी।

(43) वे आगे बढ़ते हैं, उनके सिर ऊंचे होते हैं, उनकी दृष्टि उनकी ओर नहीं आती, और उनके हृदय खाली होते हैं।

(44) और लोगों को उस दिन से डराओ जब उनपर यातना आ जायेगी और अत्याचारी कहेंगे कि "ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी देर के लिए रोक दे। हम तेरी पुकार को स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे।" (परन्तु कहा जाएगा कि) "क्या तुमने पहले यह क़सम न खायी होती कि तुम्हारा कभी अन्त नहीं होगा?

(45) और तुम उन लोगों की बस्तियों में रहते थे जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया। और तुमपर स्पष्ट हो गया कि हमने उनके साथ कैसा व्यवहार किया और हमने तुम्हारे लिए उदाहरण प्रस्तुत किये।

(46) और उन्होंने अपनी चाल चल ली, किन्तु अल्लाह के पास उनकी चाल दर्ज है, यद्यपि उनकी चाल पहाड़ों को भी नष्ट करने के लिए पर्याप्त होती।

(47) अतः तुम कदापि यह न समझो कि अल्लाह अपने रसूलों से किया हुआ वादा पूरा न करेगा। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रतिशोध लेनेवाला है।

(48) जिस दिन धरती के स्थान पर दूसरी धरती ले ली जाएगी और आकाश भी, और सारे प्राणी अल्लाह के समक्ष आएँगे, जो एकमात्र प्रभुत्वशाली है।

(49) और उस दिन तुम अपराधियों को बेड़ियों में बंधे हुए देखोगे,

(50) उनके वस्त्र तरल राल के थे और उनके चेहरे आग से ढके हुए थे।

(51) ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का बदला अवश्य देगा। निस्संदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

(52) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए एक संदेश है, ताकि वे इसके द्वारा सावधान हो जाएँ और ताकि वे जान लें कि वह एक ईश्वर है और जो लोग बुद्धि रखते हैं, उन्हें शीघ्र ही शिक्षा दी जाएगी।

सूरा 15: **ٱلْحِجْر‎ (अल-इज्र)** - द रॉक

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अलिफ़, लाम, रा. ये किताब और स्पष्ट क़ुरआन की आयतें हैं।

(2) शायद वे लोग जो इनकार करते हैं, चाहते होंगे कि काश वे मुसलमान होते।

(3) वे खाएँ और आनन्द मनाएँ, और आशा से बहक जाएँ, क्योंकि वे जानने वाले हैं।

(4) और हमने किसी बस्ती को विनष्ट नहीं किया परन्तु उसके पास कोई ज्ञात निर्णय था।

(5) कोई भी राष्ट्र अपनी समय-सीमा से पहले नहीं रहेगा, न ही उसके बाद रहेगा।

(6) और वे कहते हैं, "ऐ जिसपर यह संदेश अवतरित हुआ है, तू तो पागल है।

(7) यदि तुम सच्चे हो, तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते?

(8) हम फ़रिश्तों को सत्य के साथ ही उतारते हैं, और न वे कभी मौक़ा पाएँगे।

(9) निश्चय ही हम ही हैं जिन्होंने संदेश उतारा है और हम ही उसके संरक्षक भी हैं।

(10) और हमने तुमसे पहले भी पूर्ववर्ती गिरोहों में से बहुत से रसूल भेजे थे।

(11) और जो रसूल उनके पास आता था, वे उसका उपहास करते थे।

(12) इसी प्रकार हम अपराधियों के दिलों में झुठलाहट डाल देते हैं।

(13) वे उसपर ईमान नहीं लाएँगे, हालाँकि पहले के लोगों की मिसाल पहले ही हो चुकी है।

(14) और यदि हम उनके लिए आकाश का द्वार खोल दें, और वे उसमें से चढ़ते रहें,

(15) वे कहेंगे, "हमारी आँखें तो बस चौंधिया गई हैं। बल्कि हम तो जादू से प्रभावित लोग हैं।"

(16) और हमने आकाश में बड़े-बड़े तारे रखे और उसे देखनेवालों के लिए सुन्दर बनाया।

(17) और हमने उसको प्रत्येक निकाले हुए शैतान से सुरक्षित रखा।

(18) परन्तु वह व्यक्ति जो किसी की बात सुन ले और उसका पीछा कोई जलती हुई ज्वाला कर रही हो।

(19) और धरती को हमने फैलाया और उसमें दृढ़ पर्वत स्थापित किए और उसमें हर चीज़ को संतुलित रूप से उगाया।

(20) और हमने उसमें तुम्हारे लिए जीविका उत्पन्न की है और उनके लिए भी जिन्हें तुम जीविका प्रदान करने वाले नहीं हो।

(21) और कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके भण्डार हमारे ही पास न हों, और हम उसे एक ज्ञात मात्रा के अनुसार ही उतारते हैं।

(22) और हमने ही उर्वर वायु भेजी और आकाश से जल बरसाया, फिर उससे तुमको पिलाया, और तुम उसके अनुयायी नहीं हो।

(23) और हम ही हैं जो जीवन देते और मारते हैं और हम ही उत्तराधिकारी हैं।

(24) और हम तुममें से पहले की नस्लों को भी जानते हैं और हम बाद की नस्लों को भी जानते हैं।

(25) और निश्चय ही तुम्हारा रब उन्हें इकट्ठा करेगा। निस्संदेह वह तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

(26) और हमने मनुष्य को मिट्टी से पैदा किया, जो कि काली मिट्टी से बनी थी।

(27) और जिन्नों को हमने पहले भी दहकती आग से पैदा किया था।

(28) और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक मनुष्य को मिट्टी से पैदा करूँगा जो कि काली मिट्टी से बनी है।

(29) फिर जब मैं उसे तौलकर उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उसके सामने सजदे में गिर पड़ो।

(30) अतः सब फ़रिश्तों ने सजदा किया।

(31) परन्तु इबलीस ने सज्दा करनेवालों के साथ रहने से इन्कार कर दिया।

(32) उसने कहा, "ऐ इबलीस! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सजदा करनेवालों में से नहीं हो?"

(33) उसने कहा, "मैं कभी किसी ऐसे मनुष्य को सजदा नहीं करूँगा जिसे तूने काली मिट्टी से बनाया हो।"

(34) उसने कहा, "अच्छा, निकल जाओ उसमें से। निश्चय ही तुम निकाले जा रहे हो।

(35) और निश्चय ही तुमपर लानत है प्रतिफल के दिन तक।

(36) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे दे, जिस दिन वे पुनः जीवित किये जायेंगे।"

(37) अल्लाह ने कहा, "अतः तुम भी मुहलत पानेवालों में से हो।

(38) उस दिन तक, जब ज्ञात समय आ जाएगा।"

(39) इबलीस ने कहा, "ऐ मेरे रब! तूने मुझे गुमराही में डाल दिया है, इसलिए मैं धरती में भी उनके लिए अवज्ञा का मार्ग बना दूँगा और उन सबको गुमराह कर दूँगा।

(40) परन्तु उनमें से तेरे चुने हुए बन्दे ही होंगे।

(41) उसने कहा, "यह मेरी ओर सीधा मार्ग है।

(42) हे मेरे बन्दों, उनपर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं, परन्तु जो तुम्हारे अनुयायी हैं, वे कुपथ हो गये।

(43) और निश्चय ही जहन्नम ही उन सबके लिए वादा किया गया स्थान है।

(44) उसके सात द्वार हैं, और हर एक द्वार का एक भाग है।

(45) निश्चय ही डर रखनेवाले लोग बाग़ों और स्रोतों में होंगे।

(46) "शान्तिपूर्वक, सुरक्षित होकर उसमें प्रवेश करो।"

(47) और हम उनके दिलों में जो कुछ भी नाराज़गी है उसे दूर कर देंगे। फिर वे भाई-भाई होकर आमने-सामने तख़्तों पर बैठेंगे।

(48) न उन्हें उसमें कोई थकावट छू सकेगी और न वे उससे कभी निकल सकेंगे।

(49) मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं ही अत्यन्त क्षमाशील, दयावान हूँ।

(50) और यह कि मेरी यातना बड़ी दुःखदायी यातना है।

(51) और उन्हें इबराहीम के अतिथियों के विषय में बताओ।

(52) जब वे उसके पास आये और कहा, "सलामत हो।" (इब्राहीम) ने कहा, "हम तुमसे डरते हैं।"

(53) उन्होंने कहा, "डरो मत। हम तुम्हें एक विद्वान लड़के की शुभ सूचना देते हैं।"

(54) उसने कहा, "क्या तुम मुझे शुभ सूचना देते हो, यद्यपि मुझमें बुढ़ापा आ गया है? फिर तुम किस आश्चर्य की सूचना देते हो?"

(55) उन्होंने कहा, "हमने तुम्हें सत्य रूप से शुभ सूचना दे दी है। अतः तुम निराश न हो जाओ।"

(56) उसने कहा, "और कौन है जो अपने रब की दयालुता से निराश हो, परन्तु वही लोग जो भटक गए?"

(57) इबराहीम ने कहा, "तो फिर ऐ रसूलों! तुम्हारा क्या काम है?"

(58) उन्होंने कहा, "हम अपराधियों की जाति की ओर भेजे गए हैं।

(59) परन्तु लूत के घराने को छोड़कर, हम उन सबको बचा लेंगे।

(60) परन्तु उसकी पत्नी को छोड़कर, हमने यह निर्णय कर दिया है कि वह पीछे रह जानेवालों में से है।

(61) और जब दूत लूत के घराने के पास आये,

(62) उसने कहा, "तुम लोग अनजाने लोग हो।"

(63) उन्होंने कहा, "हम तुम्हारे पास वही बात लेकर आये हैं, जिसपर वे झगड़ रहे थे।

(64) और हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आये हैं और हम सच्चे हैं।

(65) अतः तुम अपने घरवालों को लेकर रात के एक हिस्से में निकल पड़ो और उनके पीछे-पीछे चलो। तुममें से कोई भी व्यक्ति पीछे मुड़कर न देखे और जहाँ तुम्हें आदेश दिया जाए वहाँ चले जाओ।

(66) और हमने उसे उस बात का आदेश दे दिया कि वे लोग प्रातःकाल ही नष्ट कर दिये जायेंगे।

(67) और नगर के लोग आनन्दित होकर आये।

(68) लूत ने कहा, "ये मेरे मेहमान हैं। अतः मुझे अपमानित न करो।

(69) और अल्लाह से डरो और मुझे अपमानित न करो।

(70) उन्होंने कहा, "क्या हमने तुम्हें लोगों की रक्षा करने से नहीं रोका था?"

(71) लूत ने कहा, "ये मेरी बेटियाँ हैं। यदि तुम विवाह करना चाहते हो।"

(72) हे नबी! आपकी जान की क़सम! वे नशे में अंधे होकर भटक रहे थे।

(73) अतः सूर्योदय होते ही चीख़ ने उन्हें पकड़ लिया।

(74) और हमने सबसे ऊँचे भाग को सबसे नीचा बनाया और उनपर मिट्टी के पत्थर बरसाए।

(75) निश्चय ही इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विवेकशील हों।

(76) और निश्चय ही वे नगर एक निश्चित मार्ग पर स्थित हैं।

(77) निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

(78) और झाड़ियों वाले भी अत्याचारी थे।

(79) अतः हमने उनसे बदला ले लिया और दोनों नगर खुले मार्ग पर स्थित हैं।

(80) और निश्चय ही हिज्र वालों ने रसूलों को झुठलाया।

(81) और हमने उन्हें अपनी निशानियाँ प्रदान कीं, किन्तु वे उनसे विमुख हो गये।

(82) और वे पहाड़ों को काटकर मकान बनाते थे, सुरक्षित महसूस करते थे।

(83) किन्तु भोर होते ही चीख ने उन्हें जकड़ लिया।

(84) अतः जो कुछ वे कमाते थे, उससे उन्हें कुछ लाभ न हुआ।

(85) और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे सत्य के साथ ही पैदा किया है। और निश्चय ही क़ियामत आनेवाली है। अतः तुम कृपा करके क्षमा कर दो।

(86) निस्संदेह तुम्हारा पालनहार ही सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता है।

(87) और हमने तुम्हें सात आयतें जो बार-बार दोहराई जाती हैं और बड़ा क़ुरआन प्रदान किया है।

(88) और जो कुछ हमने उनमें से कुछ लोगों को सुख प्रदान किया है, उसकी ओर अपनी दृष्टि न बढ़ाओ और न उन पर शोक करो। और ईमान वालों की ओर अपना पंख झुकाओ।

(89) कह दो, "मैं ही स्पष्ट चेतावनी देनेवाला हूँ।"

(90) जिस प्रकार हमने अलग करने वालों की ओर भी कुछ अवतरित किया था।

(91) जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

(92) अतः तुम्हारे रब की शपथ! हम अवश्य उनसे पूछेंगे।

(93) वे क्या करते थे.

(94) अतः जो आदेश तुम्हें दिया गया है उसे कह दो और मुश्रिकों से दूर हो जाओ।

(95) निश्चय ही हम तुम्हारे लिए उपहास करनेवालों पर काफ़ी हैं।

(96) जो अल्लाह के साथ एक और पूज्य को समान बनाते हैं, किन्तु वे शीघ्र ही जान लेंगे।

(97) और हम भली-भाँति जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, उससे तुम्हारे दिल विवश हो रहे हैं।

(98) अतः तुम अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह करो और सजदा करनेवालों में से हो जाओ।

(99) और अपने रब की बन्दगी करो यहाँ तक कि तुमपर मृत्यु आ जाए।

सूरा 16: **ٱلنَّحْل‎ (अन-नाअल)** - मधुमक्खियाँ

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अल्लाह का आदेश आ गया है, अतः तुम उसमें जल्दी न करो। वह महान है और उच्च है उससे, जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(2) वह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है अपनी आज्ञा के अनुसार आत्मा के द्वारा फ़रिश्तों को उतारता है, कि "आगाह करो कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, अतः मुझसे डरो।"

(3) उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। वह उच्च है उससे, जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(4) उसने मनुष्य को वीर्य से पैदा किया, फिर वह प्रत्यक्ष विरोधी हो गया।

(5) और चौपाये भी, उन्हें उसने तुम्हारे लिए पैदा किया। उनमें गर्मी और बहुत-से लाभ हैं और तुम उनसे खाते हो।

(6) और तुम्हारे लिए उनमें सुन्दरता का आनन्द है, जब तुम उन्हें संध्या के लिए भीतर लाते हो और जब उन्हें चरने के लिए बाहर भेजते हो।

(7) और वे तुम्हारे बोझों को उस भूभाग तक पहुँचाते हैं, जहाँ तुम स्वयं कठिनाई से पहुँच सकते थे। निस्संदेह तुम्हारा रब अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(8) और घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम सवारी करो और शोभा बढ़ाओ और वह ऐसी चीज़ें भी पैदा करता है जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं।

(9) और अल्लाह ही पर सीधा मार्ग दिखाने का अधिकार है और बहुत से मार्गों में से कुछ मार्ग भटकाव वाले भी हैं। और यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधा मार्ग दिखा देता।

(10) वही है जो आकाश से वर्षा बरसाता है, फिर उसमें से तुम जल पीते हो और उसमें से पत्ते निकलते हैं, जिनमें तुम चरते हो।

(11) और वह तुम्हारे लिए उससे खेती उगाता है, जैतून, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सोच-विचार करें।

(12) और उसने रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारे लिए वश में कर दिया और तारे भी उसके आदेश से वश में हैं। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

(13) और जो कुछ उसने तुम्हारे लिए धरती में फैलाया है, उसे भिन्न-भिन्न रंगों में फैलाया है। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो शिक्षा ग्रहण करें।

(14) और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए वश में कर दिया कि उसमें से स्वादिष्ट मांस खाओ और उसमें से आभूषण निकालो, जो तुम पहनते हो। और तुम उसमें से नावों को चलते हुए देखते हो, तो तुम उसके अनुग्रह से कुछ खोजो, और सम्भव है कि तुम कृतज्ञ हो जाओ।

(15) और उसने धरती में पहाड़ स्थापित कर दिए, ताकि वह तुम्हें लेकर न हिले। और उसने नदियाँ और मार्ग बनाए, ताकि तुम मार्ग पाओ।

(16) और निशानियाँ भी हैं और सितारों से भी वे मार्ग पाते हैं।

(17) फिर क्या वह जो पैदा करता है, उस जैसा है जो पैदा नहीं करता? तो क्या तुम नसीहत न किए जाओगे?

(18) और यदि तुम अल्लाह के उपकारों को गिनना चाहो तो भी तुम उन्हें गिन न सकोगे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(19) अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।

(20) और वे अल्लाह के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं, वे कोई चीज़ पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किये गये हैं।

(21) वे मरे हुए हैं, जीवित नहीं हैं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएँगे।

(22) तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, किन्तु जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, उनके दिल ही नाराज़ हैं और वे बहुत ही घमंडी हैं।

(23) निस्संदेह अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं। निस्संदेह वह अहंकारियों को पसन्द नहीं करता।

(24) और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या उतारा है तो वे कहते हैं कि यह तो पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।

(25) ताकि वे क़ियामत के दिन अपने बोझ पूरे उठाएँ और उन लोगों के बोझों में से भी कुछ उठाएँ जिन्हें वे अज्ञानता के कारण गुमराह कर रहे हैं। निस्संदेह, जो कुछ वे उठा रहे हैं वह बहुत बुरा है।

(26) उनसे पहले के लोग भी षड्यंत्र कर चुके थे, फिर अल्लाह उनकी इमारतों पर नींव से आया, फिर छत उनके ऊपर से गिर पड़ी, और यातना उन पर वहाँ से आई, जहाँ से उन्हें पता भी नहीं चला।

(27) फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें अपमानित करेगा और कहेगा, "मेरे वे साझीदार कहाँ हैं, जिनके कारण तुम उनका विरोध करते थे?" वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया, कहेंगे, "निश्चय ही आज अपमानित करनेवाला दिन है और इनकार करनेवालों पर बहुत बुरा हाल है।"

(28) जिनको फ़रिश्ते इस हालत में मार डालते हैं कि वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं, फिर वे आज्ञाकारी होकर कहते हैं कि हमने कोई बुराई नहीं की, बल्कि हाँ, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते रहे हो।

(29) अतः प्रवेश कर जाओ जहन्नम के द्वारों में, तथा उसमें सदैव रहोगे। और अभिमानियों का निवास कितना बुरा है।

(30) और जो लोग अल्लाह से डरते थे उनसे पूछा जाएगा कि तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वे कहेंगे कि वही जो अच्छा है। जिन लोगों ने अच्छा कर्म किया उनके लिए संसार में भी अच्छा है और आख़िरत का घर भी उससे बेहतर है। और नेक लोगों का घर कितना अच्छा है।

(31) वे सदैव रहने वाले बाग़ हैं, जिनमें वे प्रवेश करेंगे और उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे जो कुछ चाहेंगे, वहाँ पाएँगे। इसी प्रकार अल्लाह नेक लोगों को बदला देता है।

(32) जिन लोगों को फ़रिश्ते मौत में पकड़ेंगे, वे भले और पवित्र होंगे, तो वे कहेंगे, "तुम पर सलाम हो। तुम जो कर्म करते रहे हो, उसके बदले में जन्नत में जाओ।"

(33) क्या वे इसके सिवा किसी और चीज़ की प्रतीक्षा में हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आएँ या तुम्हारे रब का आदेश आ जाए? उनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया है। अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे।

(34) अतः जो कुछ उन्होंने किया था, उसके बुरे परिणाम उन पर पड़े और जिसका वे उपहास करते थे, उसी में वे आ घिरे।

(35) और जो लोग अल्लाह का साझी ठहराते हैं, वे कहते हैं कि यदि अल्लाह चाहता तो न हम उसके सिवा किसी की बन्दगी करते, न हम और न हमारे पूर्वज, और न हम उसके सिवा किसी को हराम करते। उनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया। तो क्या रसूलों पर स्पष्ट सूचना देने के सिवा और कोई बात नहीं है?

(36) और हमने हर समुदाय में एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की इबादत करो और तग़ूत से बचो।" उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया और उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिनपर गुमराही का हुक्म था। तो धरती में चलो और देखो कि इनकार करनेवालों का नतीजा कैसा हुआ।

(37) यदि तुम उनके मार्ग पर चलने का प्रयत्न भी करो, तो अल्लाह जिन्हें भटकाता है, उन्हें मार्ग नहीं दिखाता और न उनका कोई सहायक होगा।

(38) और वे अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें खाते हैं कि अल्लाह मरनेवाले को जीवित नहीं करेगा, बल्कि यह उसका सच्चा वादा है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(39) और वह उनके लिए उस सत्य को स्पष्ट कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं, ताकि वे लोग जान लें जिन्होंने इनकार किया कि वे झूठे थे।

(40) और जब हम किसी चीज़ को चाहते हैं तो हमारा कहना बस इतना है कि हम उससे कहते हैं कि "हो जा" और वह हो जाती है।

(41) और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में, इसके पश्चात कि उन पर ज़ुल्म किया गया, हिजरत की, उन्हें हम अवश्य संसार में अच्छे स्थान पर बसाएँगे, किन्तु आख़िरत का प्रतिफल तो उससे कहीं अधिक है, काश वे जानते।

(42) वे लोग हैं जिन्होंने धैर्य रखा और अपने पालनहार पर भरोसा किया।

(43) और हमने तुमसे पहले भी केवल पुरुषों को ही भेजा है, जिनकी ओर हमने अपना संदेश उतारा है। अतः यदि तुम नहीं जानते तो संदेश वालों से पूछ लो।

(44) और हमने स्पष्ट प्रमाणों और लिखित नियमों के साथ तुम्हारे पास संदेश उतारा है, ताकि तुम लोगों के सामने वह बात स्पष्ट कर दो जो उनकी ओर अवतरित हुई है, और ताकि वे विचार करें।

(45) तो क्या वे लोग जो बुरे काम करने की योजना बना चुके हैं, इस बात से निश्चिंत हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में न डाल दे या उन पर ऐसी जगह से यातना न आ जाए, जिसका उन्हें आभास भी न हो?

(46) या उन्हें उनके काम के समय पकड़ ले और वे बिगाड़ न सकें?

(47) या उन्हें धीरे-धीरे भयभीत करके पकड़ता? निश्चय ही तुम्हारा रब अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(48) क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह ने क्या-क्या पैदा किया है? उनकी परछाइयाँ दाहिनी ओर और बाईं ओर झुकती रहती हैं, अल्लाह को सजदा करते हुए, और वे झुके हुए रहते हैं।

(49) अल्लाह ही को सजदा करता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और फ़रिश्ते भी, और वे घमंड नहीं करते।

(50) वे अपने रब से डरते हैं जो उनके ऊपर है और जो आदेश उन्हें दिया जाता है, वे वही करते हैं।

(51) तथा अल्लाह ने कहा है, "तुम अपने लिए दो पूज्य न बनाओ। वह तो एक ही पूज्य है। अतः तुम मुझसे ही डरो।"

(52) और उसी का है जो कुछ आकाशों और धरती में है और उसी की सदैव इबादत है। तो क्या तुम अल्लाह के अलावा किसी और से डरते हो?

(53) और जो कुछ भी तुम्हारे पास उपकार है, वह अल्लाह की ओर से है। फिर जब तुम पर कोई मुसीबत आती है तो तुम उसी की ओर पुकारते हो।

(54) फिर जब वह तुमसे मुसीबत दूर कर देता है तो तुममें से एक गिरोह अपने रब का साझीदार बना लेता है।

(55) फिर जो कुछ हमने उन्हें दिया है, वे उसे झुठला देंगे। तो तुम आनन्द मनाओ, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

(56) और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है, उसमें से वे उन लोगों को हिस्सा देते हैं जिन्हें वे नहीं जानते। अल्लाह की क़सम! तुमसे अवश्य ही पूछा जाएगा कि तुम क्या-क्या घड़ियां बनाते रहे हो।

(57) और वे अल्लाह के लिए बेटियाँ बनाते हैं, वह महान है, और जो कुछ वे चाहते हैं, वह उन्हीं के लिए है।

(58) और जब उनमें से किसी को लड़की के जन्म की सूचना दी जाती है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह शोक को दबा लेता है।

(59) वह अपने आपको लोगों से छिपा रहा है, उस बुराई के कारण जिसकी सूचना उसे दी गई है। क्या उसे अपमानित करके रख ले या उसे जमीन में गाड़ दे? निस्संदेह, जो कुछ वे तय करते हैं वह बुरा ही है।

(60) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके लिए बुरी बातें हैं और अल्लाह ही सबसे बड़ा गुण है और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(61) और यदि अल्लाह लोगों पर उनके अत्याचारों के कारण दोष लगाए, तो धरती पर किसी प्राणी को न छोड़ेगा, परन्तु वह उन्हें एक निश्चित अवधि तक के लिए टाल देता है। फिर जब उनका समय आ जाएगा, तो वे न तो उसे एक घड़ी भी विलम्ब कर सकेंगे और न उसे आगे बढ़ा सकेंगे।

(62) और वे अल्लाह के लिए वह बात कहते हैं जो उन्हें पसन्द नहीं और उनकी ज़बानें झूठ बोलती हैं कि उनके लिए सबसे अच्छा है। निश्चय ही उनके लिए आग है, और वे उसमें उपेक्षित रह जायेंगे।

(63) अल्लाह की क़सम! तुमसे पहले भी हमने बहुत से लोगों की ओर संदेशवाहक भेजे, फिर शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए आकर्षक बना दिया। और वही आज उनका संरक्षक है। उनके लिए दुखद यातना है।

(64) और हमने तुम्हारी ओर यह किताब इसलिए नहीं उतारी कि तुम उनपर स्पष्ट कर दो कि उन्होंने किसमें विभेद किया है और ताकि वह मार्गदर्शन और दयालुता हो उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

(65) और अल्लाह ने आकाश से वर्षा बरसाई, फिर उसके द्वारा धरती को उसके प्राणहीन हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान किया। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सुनें।

(66) और तुम्हारे लिए पशुओं को चराना एक शिक्षा है। हम तुम्हें उनके पेटों में से, मल और रक्त के बीच से, शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है।

(67) और तुम खजूर और अंगूर के फलों से मादक पदार्थ और उत्तम जीविका प्राप्त करते हो। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो बुद्धि से काम लें।

(68) और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी की ओर वह्यी की कि "तू पहाड़ों में घर बना ले और वृक्षों में और जो कुछ वे बनाते हैं, उसमें भी घर बना ले।

(69) फिर तुम सब प्रकार के फलों से खाओ और अपने रब के बताये हुए मार्गों पर चलो। उनके पेटों से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है। उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सोच-समझकर काम करें।

(70) और अल्लाह ने ही तुम्हें पैदा किया है, फिर वही तुम्हें मृत्यु में ले जाएगा। और तुममें से कोई ऐसा भी है जो बहुत ही बुढ़ापे की ओर पलटा जाता है, फिर वह ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् कुछ भी नहीं जानता। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, सामर्थ्यवान है।

(71) और अल्लाह ने तुममें से कुछ लोगों को दूसरों पर रोज़ी में फ़ायदा पहुँचाया है। फिर जिन लोगों को फ़ायदा पहुँचाया गया, उन्होंने अपनी रोज़ी उन लोगों को नहीं दी जो उनके अधिकार में थे, ताकि वे उसमें उनके बराबर हो जाएँ। तो क्या वे अल्लाह के फ़ायदे को झुठलाते हैं?

(72) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुममें से ही जोड़े बनाए और तुम्हारे जोड़ों में से ही तुम्हारे लिए बेटे और नाती बनाए और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ों से रोज़ी दी। फिर क्या वे झूठ पर ईमान लाए और अल्लाह की अनुकंपा से इनकार किया?

(73) और वे अल्लाह को छोड़कर उनको पूजते हैं जो उनके लिए आकाशों और धरती से कुछ भी रोज़ी देने में समर्थ नहीं हैं और न वे इसकी क्षमता रखते हैं।

(74) अतः तुम अल्लाह से किसी की तुलना न करो। निस्संदेह अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

(75) अल्लाह ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि एक ऐसा बन्दा जो किसी दूसरे का हो और किसी चीज़ पर उसका कोई अधिकार न हो, और एक ऐसा बन्दा जिसे हमने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी प्रदान की हो, फिर वह उसमें से छुपकर और खुलेआम ख़र्च करता हो। तो क्या वे दोनों बराबर हो सकते हैं? प्रशंसा अल्लाह के लिए है! किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(76) और अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत किया है, उनमें से एक गूंगा है, कुछ भी नहीं कर सकता, तथा वह अपने संरक्षक पर बोझ है। वह उसे जहाँ भी भेजता है, वह कोई भलाई नहीं पहुँचाता। क्या वह उस व्यक्ति के बराबर है जो न्याय का आदेश देता है, तथा वह सीधे मार्ग पर है?

(77) और अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती की छिपी हुई चीज़ें। क़ियामत का आना तो बस पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी ज़्यादा नज़दीक। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(78) अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से बिना कुछ जाने निकाला और तुम्हारे लिए कान, आँख और बुद्धि बनाई, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाएँ।

(79) क्या वे आकाश में पक्षियों को नियंत्रित होते नहीं देखते? अल्लाह के सिवा कोई उन्हें नियंत्रित नहीं करता। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(80) और अल्लाह ने तुम्हारे घरों में तुम्हारे लिए विश्राम-स्थल बनाए हैं और जानवरों की खालों से तुम्हारे लिए ख़ेमे बनाए हैं, जिनमें तुम यात्रा के दिन और पड़ाव के दिन रोशनी पाते हो। और उनके ऊन, रोएँ और बालों से कुछ समय तक जीवन-यापन और मनोरंजन होता है।

(81) और अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है, उसमें से तुम्हारे लिए छाया बनाई और पहाड़ों से तुम्हारे लिए आशियाने बनाए और तुम्हारे लिए ऐसे कपड़े बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाएँ और ऐसे कपड़े बनाए जो तुम्हें युद्ध से बचाएँ। इस प्रकार वह तुम पर अपनी नेमत पूरी करता है, ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

(82) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो स्पष्ट सूचना देना तो तुम्हारे ही ऊपर है।

(83) वे अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसे झुठलाते हैं, और उनमें अधिकतर इनकार करनेवाले हैं।

(84) और उस दिन का ज़िक्र करो, जब हम हर समुदाय में से एक गवाह उठाएँगे। फिर इनकार करनेवालों को न तो माफ़ी माँगने की इजाज़त होगी और न उनसे अल्लाह की राज़ी करने को कहा जाएगा।

(85) और जब अत्याचारी लोग यातना देख लेंगे तो न तो उनपर यातना हल्की की जायेगी और न उन्हें मोहलत दी जायेगी।

(86) और जब वे लोग, जिन्होंने अल्लाह का साझीदार ठहराया था, अपने साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे, "ऐ हमारे रब! यही वे लोग हैं, जिन्हें हम तुझसे हटकर पुकारते थे।" किन्तु वे उन पर यह कह देंगे, "तुम झूठे हो।"

(87) उस दिन वे अल्लाह के आगे आज्ञाकारी हो जायेंगे और जो कुछ वे घड़ते थे, वह उनसे नष्ट हो जायेगा।

(88) जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, हम उनकी सज़ा पर सज़ा बढ़ा देंगे, उस बिगाड़ के कारण जो वे करते रहे।

(89) और उस दिन को याद करो जब हम हर समुदाय में से उन्हीं में से एक गवाह को उठाएँगे और हम तुम्हें उन लोगों पर गवाह बनाकर लाएँगे और हमने तुम पर किताब उतारी है, हर चीज़ के लिए स्पष्टीकरण के रूप में और मार्गदर्शन, दया और शुभ सूचना के रूप में मुसलमानों के लिए।

(90) निस्संदेह अल्लाह न्याय, अच्छे आचरण और रिश्तेदारों को दान देने का आदेश देता है और अनैतिकता, बुरे आचरण और अत्याचार से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि शायद तुम शिक्षा ग्रहण करो।

(91) और जब तुम अल्लाह से कोई वचन ले लो तो उसे पूरा करो और अपनी क़समों को पक्का करने के बाद उन्हें न तोड़ो, जबकि तुमने अल्लाह को अपने ऊपर एक गवाह बना लिया है। निस्संदेह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(92) और उस औरत की तरह न बनो जिसने अपनी काती हुई डोरी को उसके मज़बूत होने के बाद खोल दिया, और तुम्हारी क़समों को आपस में धोखा बना लिया, क्योंकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से ज़्यादा समृद्ध है। अल्लाह तो बस इसी से तुम्हारी परीक्षा लेता है। और वह क़ियामत के दिन तुम्हारे लिए वह सब स्पष्ट कर देगा, जिसमें तुम मतभेद कर रहे थे।

(93) और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही दीन बना देता, किन्तु वह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है। और जो कुछ तुम करते रहे हो उसके विषय में तुमसे अवश्य पूछा जाएगा।

(94) और अपनी क़समों को आपस में धोखे का साधन न बनाओ, कहीं ऐसा न हो कि कोई पाँव उसके दृढ़ होने के पश्चात फिसल जाए, और तुम उन लोगों के कारण, जिन्हें तुमने अल्लाह के मार्ग से भटकाया, इस संसार में बुराई का स्वाद चखोगे, और तुम्हारे लिए आख़िरत में बड़ी यातना होगी।

(95) और अल्लाह के वचन को थोड़े से मूल्य पर न बदलो। निस्संदेह जो कुछ अल्लाह के पास है, वही तुम्हारे लिए अच्छा है। यदि तुम जानते।

(96) जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त होने वाला है, किन्तु जो कुछ अल्लाह के पास है वह स्थायी है। और जो लोग धैर्य से काम लेते रहे, हम अवश्य ही उनके अच्छे कर्मों के अनुसार उनका बदला देंगे।

(97) जो कोई भी नेक काम करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, जबकि वह ईमानवाला हो, तो हम उसे अवश्य अच्छा जीवन प्रदान करेंगे और हम उन्हें उनके अच्छे कर्मों के अनुसार उनका प्रतिफल अवश्य देंगे।

(98) अतः जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की शरण माँगो शैतान से जो उसकी दया से निकाला हुआ है।

(99) निस्संदेह, जो लोग ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखा, उनपर उसका कोई ज़ोर नहीं।

(100) उसका अधिकार तो केवल उन लोगों पर है जो उसे अपना मित्र बनाते हैं और जो उसके द्वारा दूसरों को अल्लाह का साझी ठहराते हैं।

(101) और जब हम किसी आयत के स्थान पर कोई आयत लाते हैं - और अल्लाह जो कुछ उतारता है उसे भली-भाँति जानता है - तो वे कहते हैं, "तुम तो बस एक झूठ गढ़ने वाले हो।" किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(102) कह दो कि, "पवित्र आत्मा ने इसे तुम्हारे रब की ओर से सत्य रूप में उतारा है, ताकि ईमानवालों को दृढ़ करे और मार्गदर्शन और शुभ सूचना दे, मुसलमानों के लिए।"

(103) और हम जानते हैं कि वे कहते हैं, "उसे सिखानेवाला तो बस एक मनुष्य है।" जिसकी ओर वे संकेत कर रहे हैं, उसकी भाषा विदेशी है और यह (क़ुरआन) स्पष्ट अरबी भाषा में है।

(104) निस्संदेह जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें मार्ग नहीं दिखाएगा और उनके लिए दुखद यातना है।

(105) झूठ तो वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही लोग झूठे हैं।

(106) जो व्यक्ति अपने ईमान के पश्चात अल्लाह का इनकार करेगा, सिवाय उस व्यक्ति के जो विवश हो गया हो, जबकि उसका दिल ईमान में स्थिर हो, किन्तु जो लोग अपने सीने कुफ़्र की ओर खोल देंगे, उनपर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है।

(107) यह इसलिए कि उन्होंने सांसारिक जीवन को आख़िरत पर प्राथमिकता दी और इस कारण कि अल्लाह इनकार करनेवालों को मार्ग नहीं दिखाता।

(108) वही लोग हैं जिनके दिलों और कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और वही लोग असावधान हैं।

(109) निश्चय ही वही लोग आख़िरत में घाटे में रहेंगे।

(110) फिर तुम्हारा रब उन लोगों पर दया करेगा जिन्होंने विवश होकर हिजरत की, फिर युद्ध किया और धैर्य से काम लिया। निस्संदेह तुम्हारा रब इसके पश्चात भी अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(111) जिस दिन प्रत्येक प्राणी अपने-अपने पक्ष में झगड़ा करता हुआ आएगा और प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उनपर कोई अत्याचार न किया जाएगा।

(112) और अल्लाह ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि एक नगर जो सुरक्षित था, हर जगह से प्रचुर मात्रा में रोज़ी उसे मिल रही थी, फिर भी उसने अल्लाह के उपकारों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उसे भूख और भय का स्वाद चखाया, उसके बदले में जो वे कर रहे थे।

(113) और उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया था, फिर उन्होंने उसे झुठला दिया। तो उनपर यातना आ पड़ी, जबकि वे अत्याचारी थे।

(114) अतः जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और अच्छा रोज़ी दी है, उसमें से खाओ और अल्लाह के अनुग्रह का आभार मानो, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

(115) उसने तुमपर केवल मुर्दे, खून, सूअर का माँस और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को समर्पित की गई वस्तुएँ हराम की हैं। फिर जो व्यक्ति विवश हो जाए, और न चाहे और न सीमा का उल्लंघन करे, तो निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(116) और जो कुछ तुम्हारी ज़बानें झूठ बोल रही हैं, उसके विषय में यह न कहो कि यह हलाल है और यह हराम है, ताकि तुम अल्लाह पर झूठ घड़ो। निस्संदेह जो लोग अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं, वे सफल नहीं होते।

(117) वह तो बस क्षणिक सुख है, और उनके लिए दुखद यातना है।

(118) और जो यहूदी हैं उनपर हमने वह बात हराम कर दी है जो हमने तुमसे पहले कही थी, और हमने उनपर कोई अत्याचार नहीं किया, बल्कि वे अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

(119) तो फिर तुम्हारा रब उन लोगों की ओर जो अज्ञानता से अत्याचार कर बैठें, फिर उसके पश्चात् तौबा कर लें और सुधार कर लें, निश्चय ही तुम्हारा रब अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(120) निश्चय ही इबराहीम एक श्रेष्ठ नेता, अल्लाह का आज्ञाकारी, सत्य का पक्षधर था और वह अल्लाह का साझी ठहरानेवालों में से न था।

(121) वह उसके उपकारों का आभारी था। अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधा मार्ग दिखाया।

(122) और हमने उसे संसार में भी भलाई प्रदान की और आख़िरत में भी वह नेक लोगों में से होगा।

(123) फिर हमने तुम्हारी ओर वह्यी भेजी कि तुम इबराहीम के धर्म का अनुसरण करो, जो सत्य की ओर झुका हुआ हो। और वह अल्लाह का साझीदार न था।

(124) सब्त का दिन तो केवल उन लोगों के लिए निर्धारित किया गया है जिन्होंने उसमें विभेद किया। और निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच क़ियामत के दिन उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद करते रहे हैं।

(125) अपने रब के मार्ग की ओर बुद्धि और उत्तम शिक्षा के साथ बुलाओ और उनसे उत्तम रीति से तर्क करो। निस्संदेह तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटक गया और वह भली-भाँति जानता है कि कौन मार्ग पर है।

(126) और यदि तुम किसी को सज़ा दो तो उसी सज़ा दो जो तुम्हें दी गयी है। फिर यदि तुम धैर्य रखो तो यह धैर्य रखने वालों के लिए बेहतर है।

(127) और धैर्य रखो, और तुम्हारा धैर्य अल्लाह के द्वारा ही संभव है। और तुम उनपर शोक न करो और जो कुछ वे षड्यंत्र कर रहे हैं, उससे तुम दुःखी न हो।

(128) निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उससे डरते हैं और जो अच्छे कर्म करते हैं।

सूरा 17: **ٱلْإِسْرَاء‎ (अल-इसरा')** - रात की यात्रा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) पवित्र है वह, जिसने अपने बन्दे को रातों-रात मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अक़्सा तक पहुँचाया, जिसके आस-पास के क्षेत्रों को हमने बरकत दी हुई है, ताकि उसे अपनी निशानियाँ दिखाये। निस्संदेह, वह सुनने वाला, देखने वाला है।

(2) और हमने मूसा को किताब प्रदान की और उसे इसराईल की संतान के लिए मार्गदर्शन बनाया कि "मेरे सिवा किसी और को काम का अधिकारी न बनाओ।"

(3) ऐ उन लोगों की संतान जिन्हें हमने नूह के साथ जहाज़ में सवार किया था। निस्संदेह वह एक कृतज्ञ बन्दा था।

(4) और हमने किताब में बनी इसराईल को बता दिया कि, "तुम धरती में दो बार फ़साद मचाओगे और तुम बड़े घमंड को पहुँच जाओगे।"

(5) फिर जब पहला वादा पूरा हुआ तो हमने तुम्हारे विरुद्ध अपने बड़े शक्तिशाली बन्दे भेजे। उन्होंने घरों की छानबीन की और वह वादा पूरा हो गया।

(6) फिर हमने तुम्हें उनपर विजय प्रदान की और धन और पुत्र देकर तुम्हारी शक्ति बढ़ाई और तुम्हारी संख्या में वृद्धि की।

(7) "यदि तुम अच्छा करते हो, तो अपने ही लिए अच्छा करते हो और यदि बुरा करते हो, तो अपने ही लिए करते हो।" फिर जब अन्तिम वादा आ गया, तो (हमने तुम्हारे शत्रुओं को) भेजा कि वे तुम्हारे चेहरों को उदास कर दें और यरूशलेम के मन्दिर में उसी प्रकार प्रवेश करें, जिस प्रकार वे पहली बार उसमें प्रवेश किए थे और जो कुछ उन्होंने अपने अधिकार में कर लिया था, उसे पूरी तरह नष्ट कर दें।

(8) "संभव है कि तुम्हारा रब तुमपर दया करे। किन्तु यदि तुम फिरोगे तो हम भी फिरेंगे। और हमने इनकार करनेवालों के लिए जहन्नम को कारागार बना दिया है।"

(9) निस्संदेह यह क़ुरआन सीधे मार्ग की ओर मार्ग दिखाता है और उन ईमान वालों को शुभ सूचना देता है, जिन्होंने अच्छे कर्म किए कि उनके लिए बड़ा प्रतिफल है।

(10) और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(11) मनुष्य जिस प्रकार भलाई के लिए प्रार्थना करता है, उसी प्रकार बुराई के लिए भी प्रार्थना करता है; और मनुष्य सदैव उतावली करता है।

(12) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया और रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को ज़ाहिर कर दिया, ताकि तुम अपने रब से फ़ायदा मांगो और वर्षों की गिनती और हिसाब जान लो। और हर चीज़ हमने विस्तार से बयान कर दी है।

(13) और हमने प्रत्येक व्यक्ति पर उसका भाग्य उसकी गर्दन पर डाल दिया है, और हम उसके लिए क़ियामत के दिन एक पुस्तक लाएँगे, जिसे वह फैलाए हुए देखेगा।

(14) "अपना हिसाब पढ़ो। आज तुम ही अपने लिए हिसाब-किताब काफ़ी हो।"

(15) जो मार्ग पर चला, वह अपने ही हित के लिए मार्ग पर चला। और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपने ही विरुद्ध पथभ्रष्ट हुआ। और कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और हम तब तक दण्ड न देंगे, जब तक कोई रसूल न भेज दें।

(16) और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करना चाहते हैं तो उसके धनवानों को आदेश देते हैं, किन्तु वे अवज्ञा करते हैं, तो उसपर आदेश लागू हो जाता है और हम उसे विनष्ट कर देते हैं।

(17) और हमने नूह के पश्चात कितने ही लोगों को विनष्ट कर दिया, और तुम्हारा रब अपने बन्दों के पापों के विषय में जानने वाला, देखने वाला है।

(18) जो कोई तत्काल की इच्छा करे तो हम उसे उससे शीघ्र ही दूर कर देते हैं, जिसे हम चाहते हैं। फिर हमने उसके लिए जहन्नम बना दिया है, जिसमें वह जलता हुआ, दण्डित और निर्वासित होकर प्रवेश करेगा।

(19) किन्तु जो व्यक्ति आख़िरत की इच्छा रखता है और उसके लिए प्रयास करता है, तथा वह ईमानवाला है, तो ऐसे ही लोगों का प्रयास सराहनीय है।

(20) हम प्रत्येक को तुम्हारे रब के उपहार में से कुछ न कुछ देते हैं, और तुम्हारे रब का उपहार कभी सीमित नहीं किया गया।

(21) देखो कि हमने उनमें से कुछ को दूसरों पर किस प्रकार से वरीयता दी है। किन्तु आख़िरत (परलोक) बहुत बड़ी है और बहुत बड़ी विशिष्टता भी।

(22) अल्लाह के साथ किसी दूसरे को समान न बनाओ, ताकि तुम निन्दा किये जाओ और त्यागे जाओ।

(23) और तुम्हारे रब ने आदेश दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे साथ रहते हुए बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनसे "उफ़" तक न कहो और न उन्हें पीछे हटाओ, बल्कि उनसे अच्छी बात कहो।

(24) और दया के कारण उनकी ओर नम्रता का पंख डाल दो और कहो कि "ऐ मेरे रब! उन पर दया कर, जिस प्रकार उन्होंने मुझे बचपन में पाला।"

(25) तुम्हारा रब तुम्हारे अन्दर की बातों को भली-भाँति जानता है। यदि तुम नेक काम करो तो वह अवश्य क्षमा करनेवाला है।

(26) और नातेदारों को उसका हक़ दो और फ़क़ीरों और मुसाफ़िरों को भी और फ़िज़ूलखर्ची न करो।

(27) निश्चय ही वे लोग जो व्यर्थ की बातें करते हैं शैतानों के भाई हैं और शैतान तो अपने रब का बड़ा कृतघ्न है।

(28) और यदि तुम अपने रब की ओर से उस दया की प्रतीक्षा में, जिसकी तुम्हें आशा है, उनसे मुँह मोड़ दो, तो उनसे नम्रता से बात करो।

(29) और अपने हाथ को अपनी गर्दन से न बाँध ले, और न उसे पूरी तरह फैला दे। फिर तू दोषी और दीवालिया हो जाए।

(30) निस्संदेह तुम्हारा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी प्रदान करता है और जिसे चाहता है सीमित भी करता है। निस्संदेह वह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखनेवाला, सब कुछ देखनेवाला है।

(31) और निर्धनता के भय से अपनी सन्तान की हत्या न करो। हम उन्हें भी जीविका देते हैं और तुम्हें भी। निस्संदेह उनकी हत्या बहुत बड़ा पाप है।

(32) और हराम (अनैतिक) यौन-संबंध के निकट न जाओ, निस्संदेह वह व्यभिचार है और बुरी रीति है।

(33) और जिस प्राणी को अल्लाह ने हराम किया है, उसे हक़ के बिना न मारो। और जो व्यक्ति अन्याय से मारा जाए, हमने उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दे दिया है, किन्तु वह प्राण लेने में सीमा का उल्लंघन न करे। निश्चय ही उसे सहायता प्राप्त है।

(34) और अनाथ के माल के पास न जाओ, परन्तु उसी तरह जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह वयस्क हो जाए। और अपना वचन पूरा करो। निश्चय ही वचन के विषय में प्रश्न किया जाएगा।

(35) और जब नापें तो पूरा नाप लें और ठीक तराजू से तोलें। यही सर्वोत्तम मार्ग है और इसका परिणाम भी अच्छा है।

(36) और जिस चीज़ का तुम्हें ज्ञान नहीं, उसका पीछा न करो। निश्चय ही सुनने, देखने और दिल के विषय में भी पूछा जाएगा।

(37) और धरती पर इतराते हुए न चलो, तुम धरती को कभी चीर न सकोगे और न पहाड़ों की ऊँचाई तक पहुँच सकोगे।

(38) जो कुछ भी बुरा है, वह तुम्हारे पालनहार के निकट घृणित है।

(39) यह उस तत्वदर्शिता से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर अवतरित की है। और हे लोगो! अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पूज्य न बनाओ, अन्यथा तुम दोषी ठहराए जाकर जहन्नम में डाल दिए जाओगे।

(40) तो क्या तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए बेटे चुन लिए हैं और फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना ली हैं? तुम बड़ी गंभीर बात कहते हो।

(41) और हमने इस क़ुरआन में विविधता ला दी है, ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें। किन्तु यह उनमें घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं बढ़ाता।

(42) कह दो, "यदि उसके साथ और भी पूज्य होते, जैसा कि वे कहते हैं, तो वे सब अवश्य अर्श के स्वामी की ओर मार्ग खोजते।"

(43) वह अत्यन्त उच्च है और उससे उच्च है जो कुछ वे कहते हैं।

(44) सातों आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है, सब उसी की तसबीह करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा करके उसकी तसबीह करे, परन्तु तुम उनकी तसबीह को नहीं समझते। निस्संदेह वह अत्यन्त सहनशील, क्षमाशील है।

(45) और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच, जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, एक गुप्त दीवार बना देते हैं।

(46) और हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि कहीं वे समझ न लें और उनके कानों में बहरापन डाल दिया है। और जब तुम क़ुरआन में अकेले अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वे मुँह फेर लेते हैं।

(47) हम भली-भाँति जानते हैं कि वे इसे कैसे सुनते हैं, जब वे तुम्हारी बात सुनते हैं और जब वे गुप्त में बातचीत करते हैं। जब अत्याचारी कहते हैं कि "तुम तो किसी जादू से प्रभावित व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।"

(48) देखो, वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी उपमाएँ देते हैं, किन्तु वे भटक गए हैं, अतः वे कोई मार्ग नहीं खोज सकते।

(49) और वे कहते हैं, "क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण-चूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हम पुनः जीवित किये जाएँगे?"

(50) कह दो, "तुम पत्थर बनो या लोहा।

(51) या तुम्हारे सीनों में जो कुछ बड़ा है, उसमें से कोई पैदा करोगे।" वे कहेंगे, "हमें कौन लौटाएगा?" कह दो, "वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया।" फिर वे तुम्हारी ओर सिर हिलाकर कहेंगे, "वह कब है?" कह दो, "शायद वह शीघ्र ही हो जाए।

(52) जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा और तुम उसकी प्रशंसा करोगे और समझोगे कि तुम थोड़े ही दिन रहे।

(53) और मेरे बन्दों से कह दो कि वही कहें जो अच्छा हो। शैतान उनमें फूट डालता है। शैतान तो लोगों का स्पष्ट शत्रु है।

(54) तुम्हारा रब तुम्हारे विषय में भली-भाँति जानता है। यदि वह चाहे तो तुमपर दया करे या चाहे तो तुम्हें यातना दे। और हमने तुम्हें उनपर प्रबंधक बनाकर नहीं भेजा है।

(55) और तुम्हारा रब आकाशों और धरती में जो कोई है, उसे भली-भाँति जानता है। और हमने कुछ नबियों को दूसरों पर श्रेष्ठ बनाया और दाऊद को हमने ज़बूर प्रदान की।

(56) कह दो, "उसके सिवा जिनको तुमने पूज्य माना है, उनको पुकारो। वे न तो तुमसे कोई विपत्ति दूर कर सकते हैं और न उसे किसी और पर डाल सकते हैं।"

(57) वे लोग जिन्हें पुकारते हैं, वे अपने रब की ओर पहुँचने का मार्ग खोजते हैं, कि उनमें से कौन सबसे निकट है? और वे उसकी दया की आशा रखते हैं और उसकी यातना से डरते हैं। वास्तव में, तुम्हारे रब की यातना से डरने वाले लोग हैं।

(58) और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत के दिन से पहले विनष्ट कर दें या उसे कठोर यातना दें। यह बात हमेशा से ही रजिस्टर में लिखी हुई है।

(59) और हमें निशानियाँ भेजने से सिर्फ़ यही रोक सका कि पहले वालों ने उन्हें झुठला दिया और हमने समूद को ऊँटनी प्रदान की, जो एक खुली निशानी थी, किन्तु उन्होंने उसपर अत्याचार किया और हम निशानियाँ केवल चेतावनी के रूप में भेजते हैं।

(60) और (याद करो, ऐ नबी!) जब हमने तुमसे कहा था कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेर लिया है और जो दृश्य हमने तुम्हें दिखाया, उसे हमने लोगों के लिए केवल एक परीक्षा बना दिया, जैसे कि क़ुरआन में धिक्कारनेवाला वृक्ष। और हम उन्हें धमकाते हैं, किन्तु वह उन्हें और अधिक बढ़ा देता है, परन्तु बहुत अधिक अपराध ही करता है।

(61) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। उसने कहा, "क्या मैं उसको सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है?"

(62) इबलीस ने कहा, "क्या तूने इसको देखा है, जिसको तूने मुझसे अधिक सम्मान दिया है? यदि तूने मुझे क़ियामत तक के लिए टाल दिया तो मैं इसकी सन्तान को नष्ट कर दूँगा, सिवाय कुछ लोगों के।"

(63) अल्लाह ने कहा, "जाओ! उनमें से जो कोई तुम्हारा अनुसरण करेगा, उसके लिए नरक ही बहुत बड़ा बदला है।

(64) और उनमें से जिसे चाहो अपनी आवाज़ से भड़का दो और अपने घोड़ों और प्यादों से उनपर हमला करो और उनके मालों और उनकी संतान में साझीदार बन जाओ और उनसे वादा करो।" किन्तु शैतान उनसे धोखे के अतिरिक्त और कोई वादा नहीं करता।

(65) "मेरे बन्दों पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं, और तुम्हारा रब ही सब कामों का निपटारा करने के लिए काफ़ी है।"

(66) वह तुम्हारा रब है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नाव चलाता है, ताकि तुम उसके अनुग्रह की खोज करो। निस्संदेह वह तुमपर अत्यन्त दयावान है।

(67) और जब समुद्र में कोई मुसीबत तुम्हें छू लेती है तो तुम जिसे पुकारते हो, वह सब बर्बाद हो जाता है, परन्तु जब वह तुम्हें भूमि पर पहुँचा देता है तो तुम उससे मुँह फेर लेते हो। और मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

(68) तो क्या तुम इस बात से निश्चिंत हो कि वह तुम्हें धरती का कोई भाग निगल न दे या तुमपर पत्थरों की वर्षा न कर दे? फिर तुम अपने लिए कोई सहायक न पा सकोगे।

(69) क्या तुम इस बात से निश्चिंत हो कि वह तुम्हें फिर उसी में डाल देगा और तुमपर तूफ़ान भेज देगा और तुम्हें उस चीज़ के कारण डुबा देगा जिसे तुमने झुठलाया था? फिर तुम अपने लिए हमसे बदला लेनेवाला न पाओगे।

(70) और हमने आदम की संतान को सम्मान दिया और उन्हें थल और जल में चलाया और उन्हें उत्तम-उत्तम चीज़ों से रोज़ी दी और जो कुछ हमने पैदा किया है, उसमें से उन्हें बहुत-सी चीज़ों पर वरीयता दी।

(71) उस दिन को याद करो, जब हम प्रत्येक जाति को उसके कर्मों का लेखा-जोखा लेकर बुलाएँगे। फिर जिस किसी को उसका लेखा-जोखा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, तो वही अपना लेखा-जोखा पढ़ेगा और उनपर एक सूत के बराबर भी अन्याय न किया जाएगा।

(72) और जो इस जीवन में अन्धा रहेगा, वह आख़िरत में भी अन्धा रहेगा और अधिक भटका हुआ रहेगा।

(73) और वे तो तुम्हें उससे दूर करना चाहते थे जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है, ताकि हमारे विरुद्ध कोई दूसरी बात गढ़ लें, फिर वे तुम्हें अपना मित्र बना लेते।

(74) और यदि हम तुम्हें शक्ति न प्रदान करते तो तुम उनकी ओर थोड़ा झुक जाते।

(75) फिर हम तुम्हें जीवन में दोहरी यातना चखा देते और मृत्यु के बाद भी दोहरी यातना चखा देते, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में कोई सहायक न पाते।

(76) और वे तो तुम्हें धरती से भगाना चाहते थे, ताकि तुम्हें वहाँ से निकाल दें। फिर वे तुम्हारे पश्चात वहाँ थोड़े ही दिन रहेंगे।

(77) यह हमारा निर्धारित मार्ग है, उन लोगों के लिए जिन्हें हमने तुमसे पहले अपने रसूलों में से भेजा था। और तुम हमारे मार्ग में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे।

(78) सूरज के डूबने से लेकर रात के अंधेरे तक नमाज़ क़ायम करो और फ़ज्र की क़ुरआन भी पढ़ो। निस्संदेह फ़ज्र की तिलावत हमेशा देखी जाती है।

(79) और रात की नमाज़ में से कुछ समय अपने लिए अतिरिक्त नमाज़ पढ़ो। आशा है कि तुम्हारा रब तुम्हें प्रशंसनीय स्थान पर उठाएगा।

(80) कह दो, "ऐ मेरे रब! मुझे सुरक्षित प्रवेश दे और सुरक्षित निकास दे और मुझे अपने पास से कोई सहायक प्रदान कर।"

(81) कह दो, "सत्य आ गया और असत्य चला गया। निस्संदेह असत्य का जाना निश्चित है।"

(82) और हमने क़ुरआन में से ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रहमत उतारी, किन्तु वह ज़ालिमों को नुक़सान ही पहुँचाता है।

(83) और जब हम मनुष्य पर उपकार करते हैं तो वह मुँह फेर लेता है और दूर हट जाता है, किन्तु जब उसे कोई मुसीबत छूती है तो वह निराश हो जाता है।

(84) कह दो, "प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने ढंग से काम करता है, किन्तु तुम्हारा रब ही अधिक जानता है कि कौन अधिक मार्ग पर चलनेवाला है।"

(85) और वे तुमसे आत्मा के विषय में पूछते हैं। कह दो, "आत्मा तो मेरे रब का काम है। मनुष्य को ज्ञान तो बहुत थोड़ा-सा ही दिया गया है।"

(86) और यदि हम चाहें तो जो कुछ हमने तुम्हारी ओर उतारा है, उसे मिटा दें। फिर तुम उसमें हमारे विरुद्ध कोई समर्थक न पा सकोगे।

(87) परन्तु यह तुम्हारे रब की ओर से एक दयालुता है। निश्चय ही उसका तुमपर बड़ा अनुग्रह है।

(88) कह दो, "यदि मनुष्य और जिन्न इस क़ुरआन के समान कुछ बनाने के लिए एकत्र हो जाएँ, तो भी वे इसके समान कुछ नहीं बना सकते, यद्यपि वे एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों।"

(89) और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर प्रकार की मिसालें अलग-अलग कर दी हैं, किन्तु अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के अलावा कुछ नहीं किया।

(90) और वे कहते हैं, "हम तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं करेंगे, जब तक कि तुम हमारे लिए धरती से कोई स्रोत न निकाल दो।

(91) या तुम्हारे पास खजूर और अंगूर का बाग़ हो जाए और तुम उनमें नहरें तेज़ गति से बहा दो।

(92) या तुम आकाश को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो, जैसा कि तुमने दावा किया है या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आओ।

(93) या तुम्हारे लिए सोने का घर हो या तुम आकाश पर चढ़ जाओ, फिर भी हम तुम्हारे ऊपर चढ़ने पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक कि तुम हमारे पास कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें।" कह दो, "पवित्र है मेरा रब! क्या मैं कोई मनुष्य ही रसूल हूँ?"

(94) और जब लोगों के पास मार्गदर्शन आया, तो उन्हें ईमान लाने से किसने रोका, इसके अतिरिक्त कि उन्होंने कहा, "क्या अल्लाह ने कोई मनुष्य रसूल भेजा है?"

(95) कह दो, "यदि धरती पर फ़रिश्ते सुरक्षित चलते-फिरते होते तो हम उनके पास आकाश से एक फ़रिश्ता भेज देते।"

(96) कह दो, "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही ही काफ़ी है। निस्संदेह वह अपने बन्दों को सब कुछ जाननेवाला, सब कुछ देखनेवाला है।"

(97) और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही मार्ग पानेवाला है और जिसे वह पथभ्रष्ट कर दे उसके लिए तुम उसके सिवा कोई संरक्षक न पाओगे और हम उन्हें क़ियामत के दिन औंधे मुँह इकट्ठा करेंगे - अंधे, गूंगे और बहरे। उनका ठिकाना जहन्नम है। जब वह डूबेगी तो हम उन्हें भड़कती हुई आग में और बढ़ा देंगे।

(98) यह उनका बदला है, क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और कहा, "क्या जब हम हड्डियाँ और चूर्ण-चूर्ण होकर रह जाएँगे, तो क्या हम किसी नई सृष्टि में पुनः जीवित किये जाएँगे?"

(99) क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, उन जैसे लोगों को पैदा करने की सामर्थ्य रखता है और उसने उनके लिए एक अवधि निर्धारित कर दी है, जिसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु अत्याचारी लोग कुफ़्र के सिवा कुछ नहीं करते।

(100) कह दो, "यदि मेरे रब की दयालुता के भण्डार तुम्हारे पास होते तो तुम ख़र्च करने के डर से उसे रोक लेते।" और मनुष्य बहुत कंजूस है।

(101) और हमने मूसा को नौ स्पष्ट निशानियाँ प्रदान की थीं। अतः तुम इसराईल की सन्तान से पूछो, जब वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे कहा, "ऐ मूसा! मैं तो यह समझता हूँ कि तुम पर जादू हो गया है।"

(102) मूसा ने कहा, "तुम्हें मालूम ही है कि ये निशानियाँ आकाशों और धरती के रब के अतिरिक्त किसी और ने नहीं उतारी, और हे फ़िरऔन! मैं तो समझता हूँ कि तुम नष्ट हो गए।"

(103) फिर उसने चाहा कि उन्हें धरती से निकाल दे, किन्तु हमने उसे और उसके साथियों को डुबो दिया।

(104) और हमने फ़िरऔन के पश्चात इसराईल की सन्तान से कहा, "इस धरती में रहो। फिर जब आख़िरत का वादा आएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके निकालेंगे।"

(105) और हमने उसे सत्य के साथ उतारा है और वह सत्य के साथ उतरी है। और हमने तुम्हें केवल शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है।

(106) और यह क़ुरआन है जिसे हमने अलग-अलग किया है, ताकि तुम इसे लोगों को एक निश्चित अवधि में पढ़कर सुनाओ और हमने इसे क्रमशः अवतरित किया है।

(107) कह दो, "इसपर ईमान लाओ या न लाओ। जिन लोगों को इससे पहले ज्ञान दिया गया, जब यह उन्हें पढ़कर सुनाया जाता है तो वे सजदे में मुँह के बल गिर पड़ते हैं।

(108) और वे कहते हैं, "पवित्र है हमारा रब! हमारे रब का वादा पूरा हो गया।"

(109) और वे रोते हुए मुँह के बल गिर पड़ते हैं, और वह (क़ुरआन) उनकी विनम्रता को और बढ़ा देता है।

(110) कह दो, "अल्लाह को पुकारो या अत्यंत दयावान को। तुम जिस किसी को भी पुकारो, अच्छे नाम उसी के हैं।" और अपनी नमाज़ में न तो बहुत ऊँची आवाज़ में पढ़ो और न बहुत धीमी आवाज़ में, बल्कि दोनों के बीच कोई रास्ता तलाश करो।

(111) कह दो, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने न कोई पुत्र बनाया और न अपने राज्य में उसका कोई साझीदार है और न उसे निर्बलता के कारण किसी संरक्षक की आवश्यकता है। और उसकी स्तुति और महिमा का वर्णन करो।"

सूरा 18: **ٱلْكَهْف‎ (अल-काहफ)** - गुफा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने अपने बन्दे की ओर किताब उतारी और उसमें कोई उलटफेर नहीं होने दिया।

(2) यह सीधी बात है कि अल्लाह की ओर से कठोर यातना से सावधान किया जाए और उन ईमान वालों को शुभ सूचना दी जाए जिन्होंने अच्छे कर्म किए कि उनके लिए अच्छा प्रतिफल है।

(3) जिसमें वे सदैव रहेंगे।

(4) और उन लोगों को डराने के लिए जो कहते हैं कि, "अल्लाह ने एक बेटा बनाया है।"

(5) न वे इसका ज्ञान रखते हैं और न उनके पूर्वज ही जानते थे। जो बात उनके मुँह से निकलती है वह बड़ी गम्भीर होती है। वे झूठ के अतिरिक्त कुछ नहीं बोलते।

(6) यदि वे इस संदेश पर विश्वास न करें तो शायद आप उनके लिए दुःख में खुद को भस्म कर लेंगे।

(7) और हमने धरती में जो कुछ है उसे उसकी शोभा बना दिया, ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें कौन सबसे अच्छा कर्म करता है।

(8) और जो कुछ उस पर है, उसे हम बंजर बना देंगे।

(9) क्या तुमने यह समझ लिया है कि गुफा और शिलालेख वाले हमारी अद्भुत निशानियों में से थे?

(10) याद करो जब युवक गुफा की ओर चले गए और कहने लगे कि "ऐ हमारे रब! हमें अपनी ओर से दया प्रदान कर और हमारे मामले में हमें सही मार्ग दिखा।"

(11) फिर हमने गुफा में ही कई वर्षों तक उनके कानों पर नींद की चादर डाल दी।

(12) फिर हमने उन्हें जगाया, ताकि जान लें कि दोनों गिरोहों में से किसने अपने बचे हुए समय का अधिक अनुमान लगाया था।

(13) हम तुम्हारे समक्ष उनकी कहानी सत्य रूप में बयान करते हैं। वास्तव में वे नवयुवक थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उन्हें मार्गदर्शन में और वृद्धि की।

(14) और हमने उनके दिलों को मज़बूती प्रदान की, जब वे खड़े हुए और कहा, "हमारा रब आकाशों और धरती का रब है। हम उसके सिवा किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। अन्यथा हम बहुत बड़ी बात कह देते।"

(15) हमारे इन लोगों ने तो अल्लाह के सिवा दूसरे पूज्य बना लिए हैं। फिर उनके लिए कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले?

(16) "और जब तुम उनसे दूर हो जाओ और उनसे भी जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजते हैं, तो गुफा में चले जाओ। तुम्हारा रब तुमपर दया करेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारा मामला सुगम कर देगा।"

(17) और तुमने देखा होगा कि जब सूरज निकलता था तो उनकी गुफा से दाहिनी ओर झुक जाता था और जब डूबता था तो उनसे बाईं ओर चला जाता था, और वे गुफा के भीतर खुले स्थान में लेटे रहते थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे, वह सीधा मार्ग पा लेता है, और जिसे वह भटका दे, उसके लिए तुम कोई संरक्षक नहीं पाओगे।

(18) और तुम उन्हें जागते हुए समझते, जबकि वे सो रहे थे। और हमने उन्हें दाएँ-बाएँ घुमाया, और उनका कुत्ता द्वार पर अपनी अगली टाँगें फैलाए हुए था। यदि तुम उनकी ओर देखते, तो उनसे भाग जाते और उनसे भयभीत हो जाते।

(19) फिर हमने उन्हें जगाया, ताकि वे आपस में प्रश्न करें। उनमें से एक वक्ता ने पूछा, "तुम कितने दिन ठहरे हो?" उन्होंने कहा, "हम एक दिन या एक दिन का कुछ भाग ठहरे हैं।" उन्होंने कहा, "तुम्हारा रब ही जानता है कि तुम कितने दिन ठहरे हो। अतः तुममें से किसी को अपना यह चाँदी का सिक्का देकर नगर में भेजो, फिर वह शुद्धतम भोजन की खोज करे और उससे तुम्हारे लिए भोजन लाये। और वह सावधान रहे और कोई भी तुम्हारे बारे में न जाने।

(20) यदि वे तुम्हारे विषय में जान लेंगे तो तुम्हें संगसार कर देंगे या अपने धर्म में लौटा लाएंगे, फिर तुम कभी सफल न हो सकोगे।

(21) और इस प्रकार हमने उनका मामला उजागर कर दिया, ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत के बारे में कोई संदेह नहीं। फिर वे अपने मामले में आपस में झगड़ने लगे और कहने लगे, "उनके ऊपर एक इमारत बना दो। उनका रब उनके विषय में अधिक जानता है।" जो लोग इस मामले में प्रबल हुए, उन्होंने कहा, "हम अवश्य उनके ऊपर एक इबादतगाह बनाएँगे।"

(22) वे कहेंगे, "वे तीन थे, उनमें से चौथा उनका कुत्ता था।" फिर वे कहेंगे, "वे पाँच थे, उनमें से छठा उनका कुत्ता था।" वे ग़ैब की बात पर अनुमान लगाते हैं। फिर वे कहेंगे, "वे सात थे, उनमें से आठवाँ उनका कुत्ता था।" कह दो, "मेरा रब उनमें से सबसे अधिक जानता है। उन्हें केवल थोड़े लोग ही जानते हैं।" अतः उनके विषय में स्पष्ट प्रमाण के बिना विवाद न करो और उनके विषय में किसी से पूछताछ न करो।

(23) और किसी बात के विषय में यह न कहना कि, "मैं यह काम कल करूँगा,"

(24) परन्तु यह कि "यदि अल्लाह चाहे।" और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो और कहो कि "शायद मेरा रब मुझे इससे भी अधिक निकट मार्ग दिखा दे।"

(25) और वे अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष तक रहे, और नौ वर्ष से अधिक हो गये।

(26) कह दो, "अल्लाह ही भली-भाँति जानता है कि वे कितने समय तक रहे। आकाशों और धरती की छिपी हुई चीज़ें उसी की हैं। वह भली-भाँति देखता और सुनता है। उसके सिवा उनका कोई संरक्षक नहीं और वह किसी के साथ अपना आदेश साझी नहीं करता।"

(27) और जो कुछ तुम्हारे रब की किताब में से तुम्हारी ओर उतारा गया है, उसे पढ़कर सुनाओ। कोई उसकी बात को बदल नहीं सकता और तुम उसके सिवा कोई शरण न पाओगे।

(28) और जो लोग सुबह और शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसके दर्शन की चाह में, उनके साथ धैर्य से पेश आओ। और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में उनसे नज़रें न फेरो। और उस व्यक्ति की बात न मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से आलस्य में डाल दिया हो, जो अपनी इच्छा के पीछे चलता हो और जिसका काम हमेशा अधूरे में हो।

(29) कह दो, "सत्य तुम्हारे रब की ओर से है। अतः जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे इनकार करे।" हमने ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी दीवारें उन्हें घेरे रहेंगी। और यदि वे राहत की गुहार लगाएँ तो उन पर पिघली हुई धातु के समान पानी डाला जाएगा, जो उनके चेहरों को जला देगा। और पीने का स्थान भी बुरा है और ठहरने का स्थान भी बुरा है।

(30) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, हम ऐसे किसी भी व्यक्ति का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देंगे जो अच्छे कर्म करेगा।

(31) उनके लिए सदैव रहने के बाग़ होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सोने के कंगन पहनेंगे, और बढ़िया रेशम और जरी के हरे कपड़े पहनेंगे, और उनमें ऊँचे तख़्तों पर टेक लगाएँगे, और बहुत अच्छा बदला है, और अच्छा विश्रामस्थान है।

(32) और उनके सामने दो व्यक्तियों का उदाहरण पेश करो। उनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दिए, फिर उनके किनारों पर खजूर के वृक्ष लगा दिए और उनके बीच में खेत उगा दिए।

(33) प्रत्येक बाग़ ने अपना फल पैदा किया और किसी चीज़ में कमी न की, और हमने उनमें नहर बहा दी।

(34) और उसके पास धन था, इसलिए उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा, "मैं धन में तुमसे बड़ा हूँ और मनुष्यों में तुमसे अधिक शक्तिशाली हूँ।"

(35) और जब वह अपने बाग़ में गया तो अपने ऊपर अत्याचार कर रहा था। उसने कहा, "मैं नहीं समझता कि यह कभी नष्ट होगा।

(36) और मैं नहीं समझता कि क़ियामत आएगी। और यदि मैं अपने रब की ओर लौटा भी जाऊँ तो इससे भी बेहतर वापसी पाऊँगा।

(37) उसके साथी ने उससे बातचीत करते हुए कहा, "क्या तूने उसका इनकार किया जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे मनुष्य बनाया?

(38) किन्तु मेरा तो वही अल्लाह है, मेरा पालनहार है और मैं अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।

(39) और जब तुम अपने बाग़ में दाखिल हुए तो यह क्यों नहीं कहते कि जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हो गया, अल्लाह के सिवा किसी को कोई शक्ति नहीं? हालाँकि तुम मुझे माल और औलाद में अपने से कम समझते हो।

(40) शायद मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग़ से भी बेहतर कुछ दे दे और उसपर आकाश से कोई आपदा भेज दे और वह बंजर ज़मीन बन जाए।

(41) या उसका पानी डूब जाएगा, फिर तुम उसे कभी खोज न सकोगे।

(42) और उसके फल नष्ट हो गए, तो उसने उस पर जो कुछ खर्च किया था, उसपर हाथ फेरना शुरू कर दिया, जबकि वह अपनी जालियों पर गिर पड़ा था, और उसने कहा, "काश! मैंने अपने पालनहार के साथ किसी को साझी न बनाया होता।"

(43) अल्लाह के सिवा न तो कोई उसकी सहायता कर सकता था और न वह अपनी रक्षा कर सकता था।

(44) और निश्चय ही सारा अधिकार अल्लाह के लिए है, जो सत्य है। वही सर्वोत्तम प्रतिफल देनेवाला और सर्वोत्तम परिणाम देनेवाला है।

(45) और उनके सामने सांसारिक जीवन की मिसाल पेश करो। वह उस पानी के समान है जिसे हमने आकाश से बरसाया, फिर धरती की वनस्पति उसमें मिल गई, फिर वह सूखकर बिखर गई, हवाओं से बिखर गई। और अल्लाह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

(46) धन और संतान तो सांसारिक जीवन की शोभा मात्र हैं, किन्तु स्थायी अच्छे कर्म तुम्हारे रब के निकट उत्तम प्रतिफल और उत्तम आशा हैं।

(47) और उस दिन से सावधान रहो जब हम पहाड़ों को हटा देंगे और तुम धरती को खुला हुआ देखोगे, फिर हम उन्हें इकट्ठा कर लेंगे और उनमें से किसी को न छोड़ेंगे।

(48) और वे तुम्हारे रब के सामने सफ़ों में खड़े किये जाएँगे। (और वह कहेगा) कि तुम हमारे पास वैसे ही आए हो जैसे हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। फिर तुमने कहा था कि हम तुम्हारे लिए कोई मुलाक़ात मुक़र्रर नहीं करेंगे।

(49) और जब किताब खोल दी जाएगी तो तुम देखोगे कि अपराधी उसमें लिखी हुई बातों से डर रहे हैं और वे कहेंगे, "हाय! यह कौन सी किताब है जो न तो छोटी है और न बड़ी, बस गिनती भर कर रखी है?" और वे जो कुछ उन्होंने किया है, उसे सामने पाएँगे। और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।

(50) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया, सिवाए इबलीस के। वह जिन्न था और अपने रब के हुक्म से भटक गया। तो क्या तुम उसे और उसकी संतान को मुझसे अलग कोई मित्र बनाओगे, जबकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं? ज़ालिमों के लिए बदले में बुरा हाल है।

(51) मैंने उन्हें आकाशों और धरती की रचना का साक्षी नहीं बनाया और न स्वयं उनकी रचना का, और न मैं पथभ्रष्ट लोगों को अपना सहायक बनाता।

(52) और उस दिन से सावधान रहो जब अल्लाह कहेगा, "मेरे उन साझीदारों को बुलाओ, जिनके बारे में तुमने दावा किया था।" वे उन्हें पुकारेंगे, किन्तु वे उनकी बात न मानेंगे। और हम उनके बीच विनाश की एक घाटी बना देंगे।

(53) और अपराधी लोग आग को देखेंगे और उन्हें विश्वास हो जाएगा कि वे उसमें गिरेंगे और वे उससे बचने का कोई रास्ता न पाएँगे।

(54) और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें उतारी हैं, किन्तु मनुष्य हमेशा से ही विवाद में लिप्त रहा है।

(55) और जब लोगों के पास मार्गदर्शन आ गया तो उन्हें ईमान लाने और अपने रब से क्षमा मांगने से किसी चीज़ ने नहीं रोका, सिवाय इसके कि उनके सामने पहले वालों की मिसाल आ जाए या उनके सामने यातना आ जाए।

(56) और हम रसूलों को केवल शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजते हैं। और जिन लोगों ने इनकार किया, वे सत्य को व्यर्थ करने के लिए झूठ के द्वारा विवाद करते हैं और उन्होंने मेरी आयतों को और जिन बातों से उन्हें सावधान किया जाता है, उनका उपहास किया है।

(57) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों की याद दिलाई जाए, फिर वह उनसे मुँह मोड़ ले और जो कुछ उसके हाथों ने किया है उसे भूल जाए। हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि कहीं वे उसे समझ न लें और उनके कानों में बहरापन डाल दिया है। और यदि तुम उन्हें मार्गदर्शन की ओर बुलाओ तो वे कदापि मार्ग पर न आ सकेंगे।

(58) और तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील, दयावान है। यदि वह उनपर उनके कर्मों के कारण दोष लगाता तो उनके लिए यातना शीघ्र कर देता। बल्कि उनके लिए एक नियत समय है, जिससे वे कभी बच नहीं सकेंगे।

(59) और हमने उन बस्तियों को विनष्ट कर दिया, जब उन्होंने अत्याचार किया और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निर्धारित कर दिया।

(60) और याद करो जब मूसा ने अपने सेवक से कहा कि मैं तब तक नहीं रुकूँगा जब तक दोनों समुद्रों के मिलन बिंदु पर न पहुँच जाऊँ या बहुत समय तक चलता रहूँ।

(61) किन्तु जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वे दोनों एक दूसरे के बीच थे, तो अपनी मछली को भूल गये और वह समुद्र में चली गयी।

(62) फिर जब वे वहाँ से आगे निकल गए तो मूसा ने अपने सेवक से कहा, "हमारे लिए सुबह का खाना ले आओ। हम इस यात्रा में बहुत थक गए हैं।"

(63) उसने कहा, "क्या तुमने देखा कि जब हम चट्टान पर बैठे थे? मैं मछली को भूल गया था। और शैतान के सिवा किसी ने मुझे उसे भुलाया नहीं कि मैं उसका ज़िक्र करूँ। और वह मछली आश्चर्यजनक रूप से समुद्र में चली गई।"

(64) मूसा ने कहा, "यही तो हम खोज रहे थे।" अतः वे उनके पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए वापस चले गये।

(65) और उन्होंने अपने बन्दों में से एक बन्दा पाया, जिसपर हमने अपनी ओर से दया की थी और उसे अपनी ओर से एक ज्ञान सिखाया था।

(66) मूसा ने उससे कहा, "क्या मैं तुम्हारे पीछे चल सकता हूँ यदि तुम मुझे वही सिखाओ जो तुम्हें सही विवेक की शिक्षा दी गई है?"

(67) उसने कहा, "तुम मुझपर कदापि धैर्य न रख सकोगे।

(68) और तुम उस चीज़ पर कैसे धैर्य रखोगे जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं है?

(69) मूसा ने कहा, "यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम मुझे धैर्यवान पाओगे और मैं किसी मामले में तुम्हारी अवज्ञा नहीं करूँगा।"

(70) उसने कहा, "यदि तुम मेरे पीछे आओ तो मुझसे कुछ न पूछो, जब तक कि मैं तुम्हें बता न दूँ।"

(71) अतः वे चल पड़े, यहाँ तक कि जब वे नाव पर चढ़े तो मूसा ने उसमें छेद कर दिया। मूसा ने कहा, "क्या तुमने उसमें छेद इसलिए किया है कि उसमें सवार लोग डूब जाएँ? तुमने तो बड़ा ही बड़ा काम किया है।"

(72) उसने कहा, "क्या मैंने नहीं कहा था कि तू मुझपर कदापि धैर्य न रख सकेगा?"

(73) मूसा ने कहा, "जो कुछ मैं भूल गया हूँ, उसपर मुझे दोष न दे और मेरे मामले में मुझे कठिनाई में न डाल।"

(74) अतः वे चल पड़े, यहाँ तक कि जब उन्हें एक लड़का मिला तो मूसा ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, "क्या तुमने किसी और चीज़ के लिए किसी पवित्र प्राणी को मारा है? तुमने बहुत बुरा काम किया है।"

(75) उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मुझपर कदापि धैर्य न रख सकोगे?"

(76) मूसा ने कहा, "यदि इसके पश्चात् मैं तुमसे कुछ पूछूँ तो मुझे अपना साथी न बनाना। तुमने मुझसे बहाना प्राप्त कर लिया है।"

(77) फिर वे चल पड़े, यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती के लोगों के पास पहुँचे तो उन्होंने वहाँ के लोगों से भोजन माँगा, किन्तु उन्होंने उनका स्वागत करने से इन्कार कर दिया। फिर उन्होंने वहाँ एक दीवार देखी जो गिरने ही वाली थी, अतः मूसा ने उसकी मरम्मत कर दी। मूसा ने कहा, "यदि तुम चाहते तो इसके लिए कुछ कीमत ले सकते थे।"

(78) उसने कहा, "यह मेरे और तुम्हारे बीच विदा होने का दिन है। मैं तुम्हें उस चीज़ का अर्थ बता दूँगा जिसपर तुम धैर्य न रख सके।

(79) जहाँ तक जहाज़ का सवाल है, वह समुद्र में काम करने वाले गरीब लोगों का था, इसलिए मैंने उसे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया क्योंकि उनके बाद एक राजा था जिसने हर अच्छे जहाज़ को बलपूर्वक जब्त कर लिया था।

(80) और रहे लड़के के माता-पिता तो ईमानवाले थे, अतः हमें भय था कि वह उनपर अत्याचार और कुफ़्र का बोझ डाल देगा।

(81) अतः हमने चाहा कि उनका पालनहार उनके स्थान पर कोई ऐसा व्यक्ति ले आये जो पवित्रता में उससे उत्तम और दया में अधिक निकट हो।

(82) और रही बात दीवार की तो वह नगर के दो अनाथ लड़कों की थी और उसके नीचे उनके लिए एक ख़ज़ाना था और उनके पिता नेक थे। अतः तुम्हारे रब ने चाहा कि वे वयस्क हो जाएँ और अपने ख़ज़ाने को तुम्हारे रब की दया के रूप में निकाल लें। और मैंने यह अपनी इच्छा से नहीं किया। यह उस बात का अर्थ है जिस पर तुम धैर्य नहीं रख सकते थे।"

(83) और वे तुमसे ज़ुलक़रनैन के विषय में पूछते हैं। कह दो, "मैं तुम्हें उसके विषय में एक कथा सुनाता हूँ।"

(84) निश्चय ही हमने उसे धरती में स्थापित किया और हर चीज़ के लिए उसे मार्ग प्रदान किया।

(85) इसलिए वह एक रास्ता पर चला गया

(86) यहाँ तक कि जब वह डूबते सूरज के पास पहुँचा तो उसने सूरज को कीचड़ के सोते में डूबता हुआ पाया और उसके निकट एक समुदाय को पाया। हमने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! या तो तुम उन्हें सज़ा दो या उनमें से कोई भलाई का मार्ग अपनाओ।"

(87) उसने कहा, "जो व्यक्ति अत्याचार करेगा, हम उसे अवश्य दण्ड देंगे। फिर वह अपने रब की ओर लौटा दिया जाएगा, फिर वह उसे कठोर दण्ड देगा।

(88) किन्तु जो व्यक्ति ईमान लाए और नेक काम करे, उसे अच्छा प्रतिफल मिलेगा और हम उससे अपने आदेश के अनुसार सहजता से बात करेंगे।

(89) फिर वह एक रास्ता पर चला गया

(90) यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय के निकट पहुँचा तो उसने पाया कि वह ऐसे लोगों पर उदय हो रहा है जिन्हें हमने उससे कोई आश्रय नहीं दिया था।

(91) ऐसा ही हुआ और जो कुछ उसका ज्ञान था, उसे हमने घेर लिया।

(92) फिर वह एक रास्ता पर चला गया

(93) यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के बीच पहुँचा तो उनके पास एक ऐसे समुदाय को पाया जो कठिनता से बोल पाता था।

(94) उन्होंने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! वास्तव में गोग और मागोग धरती में फ़साद फैलानेवाले हैं। तो क्या हम तुम्हारे लिए कुछ व्यय निर्धारित करें, ताकि तुम हमारे और उनके बीच एक बाधा बना दो?"

(95) उसने कहा, "मेरे रब ने मुझे जो प्रदान किया है, वह उससे उत्तम है, जो तुम प्रदान करते हो। अतः तुम मुझे शक्ति प्रदान करो। मैं तुम्हारे और उनके बीच एक बाँध बना दूँगा।

(96) मेरे पास लोहे की चादरें लाओ। फिर जब उसने उन्हें दो पर्वतीय दीवारों के बीच समतल कर दिया तो कहा, "धौंकनी चलाओ।" जब उसने उसे आग के समान बना दिया तो कहा, "मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ, ताकि मैं उस पर डालूँ।"

(97) अतः गोग और मागोग न तो उसे पार कर सके, न उसमें प्रवेश कर सके।

(98) [ज़ुलक़रनैन] ने कहा, "यह मेरे रब की ओर से एक दयालुता है। किन्तु जब मेरे रब का वादा आ जाएगा, तो वह उसे बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सदैव सच्चा है।"

(99) और उस दिन हम उन्हें एक दूसरे पर लहरों की तरह उछाल देंगे, और नरसिंगा फूँका जाएगा, और हम उन सबको एकत्र करेंगे।

(100) और उस दिन हम जहन्नम को इनकार करनेवालों के लिए खुली हुई हालत में खड़ा कर देंगे।

(101) जिनकी आँखें मेरी याद से ढकी हुई थीं और वे सुन नहीं सकते थे।

(102) तो क्या जिन लोगों ने इनकार किया, उन्होंने यह समझ लिया कि वे मेरे बन्दों को अपना मित्र बना लेंगे? निश्चय ही हमने इनकार करनेवालों के लिए जहन्नम को ठिकाना बना रखा है।

(103) कहो, "क्या हम तुम्हें बताएँ कि कौन लोग अपने कर्मों में सबसे अधिक घाटे में रहे?

(104) वे वे लोग हैं, जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में व्यर्थ हो गया, जबकि वे समझते हैं कि वे अपना काम अच्छे से कर रहे हैं।

(105) यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया, अतः उनके कर्म व्यर्थ हो गये और हम क़ियामत के दिन उनपर कोई भार न लगाएँगे।

(106) यही उनका बदला है - जहन्नम - उसके बदले में जिसे उन्होंने झुठलाया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को उपहास में लिया।

(107) निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए जन्नत के बाग़ ठहरने के लिए हैं।

(108) वे उसमें सदैव रहेंगे, और उसमें से कोई परिवर्तन नहीं चाहेंगे।

(109) कह दो, "यदि समुद्र मेरे रब के वचनों के लिए स्याही होता, तो मेरे रब के वचन समाप्त होने से पहले ही समुद्र समाप्त हो जाता, यद्यपि हम उसके बराबर और कुछ ले आते।"

(110) कह दो, "मैं तो बस तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर यह प्रकाशना की गई है कि तुम्हारा पूज्य एक पूज्य है। अतः जो व्यक्ति अपने रब से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि वह अच्छे कर्म करे और अपने रब की इबादत में किसी को साझी न ठहराए।"

सूरा 19: **مَرْيَم‎ (मरियम)** - मरियम

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कफ़ हा या ऐन साद.

(2) यह तुम्हारे रब की अपने बन्दे ज़करियाह पर हुई दयालुता का वर्णन है।

(3) जब उसने अपने रब को धीमी आवाज़ में पुकारा।

(4) उसने कहा, "ऐ मेरे पालनहार! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं और मेरे सिर के बाल सफ़ेद हो गए हैं। किन्तु ऐ मेरे पालनहार! मैं कभी भी तेरी प्रार्थना में निराश नहीं हुआ।

(5) और मैं अपने बाद आने वालों से डरता हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है। अतः मुझे अपनी ओर से कोई उत्तराधिकारी प्रदान कर।

(6) जो मुझसे और याकूब के घराने से वारिस होगा, और हे मेरे रब, तू उसे प्रसन्न कर।

(7) "ऐ ज़करियाह! हम तुम्हें एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं जिसका नाम यूहन्ना होगा। हमने इससे पहले किसी को यह नाम नहीं दिया।"

(8) उसने कहा, "मेरे पालनहार! मैं लड़का कैसे पैदा कर सकता हूँ, जबकि मेरी पत्नी बांझ है और मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ?"

(9) कहा, "ऐसा ही होगा। तुम्हारा रब कहता है, 'मेरे लिए यह सरल है। इससे पहले भी मैंने तुम्हें पैदा किया था, जबकि तुम कुछ भी नहीं थे।'"

(10) ज़करियाह ने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी बना दे।" उसने कहा, "तेरी निशानी यह है कि तू तीन रातों तक लोगों से बात नहीं करेगा, जबकि तू भला है।"

(11) अतः वह अपने लोगों के पास पवित्र स्थान से बाहर आया और उन्हें संकेत दिया कि प्रातःकाल और संध्याकाल में तसबीह (प्रशंसा) किया करो।

(12) "ऐ यह्या! किताब को दृढ़तापूर्वक पढ़ो।" और हमने उसे बचपन ही में बुद्धि प्रदान की थी।

(13) और हमारी ओर से दया और पवित्रता, और वह डर रखनेवाला था।

(14) और अपने माता-पिता का आदर करनेवाला, और न अहंकारी और न अवज्ञाकारी।

(15) और सलाम है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायेगा।

(16) और किताब में मरियम की कहानी का उल्लेख करो, जबकि वह अपने घरवालों से अलग होकर पूर्व दिशा की ओर चली गयी।

(17) और उसने उनसे अलग होकर एक पर्दा ले लिया, फिर हमने उसकी ओर अपनी रूह भेजी, तो वह उसके सामने एक सुडौल पुरुष के रूप में प्रकट हुआ।

(18) उसने कहा, "मैं तुझसे रहमान की शरण चाहती हूँ। यदि तू अल्लाह से डरता है, तो मुझे छोड़ दे।"

(19) उसने कहा, "मैं तो तुम्हारे रब का रसूल मात्र हूँ, जो तुम्हें एक पवित्र लड़के की ख़बर देता हूँ।"

(20) उसने कहा, "मैं कैसे लड़का पैदा कर सकती हूँ, जबकि किसी पुरुष ने मुझे छुआ तक नहीं और मैं बदचलन भी नहीं रही?"

(21) उसने कहा, "ऐसा ही होगा। तुम्हारा रब कहता है, 'यह मेरे लिए सरल है। और हम उसे लोगों के लिए एक निशानी और अपनी ओर से एक दयालुता बना देंगे। और यह एक ऐसा मामला है जिसका निर्णय हो चुका है।'"

(22) सो वह गर्भवती हुई, और उसे लेकर एक सुनसान स्थान पर चली गई।

(23) और प्रसव पीड़ा ने उसे एक खजूर के पेड़ के तने पर धकेल दिया। उसने कहा, "काश! मैं इससे पहले मर गई होती और विस्मृति में होती, भुला दी गई होती।"

(24) किन्तु उसने उसे नीचे से पुकारा, "शोक मत कर, तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा रखी है।

(25) और खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ, वह तुम्हारे ऊपर पके हुए खजूर गिराएगा।

(26) अतः खाओ, पियो और संतुष्ट रहो। और यदि तुम लोगों में से किसी को देखो तो कह दो कि मैंने अल्लाह तआला से परहेज़ की मन्नत मानी है, अतः आज मैं किसी से बात नहीं करूँगा।

(27) फिर वह उसे उठाकर अपनी क़ौम के पास ले गई। उन्होंने कहा, "ऐ मरियम! तूने एक ऐसा काम किया है जो पहले कभी नहीं हुआ।

(28) ऐ हारून की बहन, न तो तेरा पिता बुरा आदमी था और न ही तेरी माँ बदचलन थी।

(29) तब उसने उस की ओर इशारा करके कहा, "हम उस बालक से जो पालने में है, कैसे बात कर सकते हैं?"

(30) यीशु ने कहा, "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसी ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है।

(31) और उसने मुझे जहाँ कहीं भी रहूँ बरकत दी है और मुझपर नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया है जब तक मैं जीवित रहूँ।

(32) और उसने मुझे मेरी माँ का आदर करनेवाला बनाया और उसने मुझे न तो अहंकारी बनाया और न अभागा।

(33) और मुझ पर शांति है जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा, और जिस दिन मैं जीवित उठाया जाऊंगा। ”

(34) वह मरियम का पुत्र यीशु है - वही सत्य वचन जिसके विषय में वे विवाद कर रहे हैं।

(35) अल्लाह के लिए यह उचित नहीं कि वह कोई पुत्र बनाए, वह महान है। जब वह किसी मामले का निर्णय करता है तो उससे केवल यही कहता है कि "हो जा।" तो वह हो जाती है।

(36) [ईसा ने कहा], "और निस्संदेह अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है। अतः उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।"

(37) फिर गिरोहों ने ईसा के विषय में मतभेद किया। तो विनाश है उन लोगों के लिए जिन्होंने इनकार किया, एक भयंकर दिन के दृश्य से।

(38) जिस दिन वे हमारे पास आएंगे, वे अवश्य सुनेंगे और देखेंगे, किन्तु आज अत्याचारी लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

(39) और उन्हें उस दिन से डरा दो जब मामला पूरा हो जायेगा, फिर भी वे असावधान हैं और ईमान नहीं लाते।

(40) निश्चय ही हम ही धरती के उत्तराधिकारी होंगे और जो कोई उसमें रहेगा, वे सब हमारे ही पास लौटकर आएंगे।

(41) और किताब में इबराहीम का वर्णन करो, निस्संदेह वह सच्चा व्यक्ति और नबी था।

(42) जबकि उसने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता! आप उसकी उपासना क्यों करते हैं जो न सुनता है, न देखता है और न आपको कुछ लाभ पहुँचा सकता है?

(43) ऐ मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया। अतः तुम मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें सीधा मार्ग दिखाऊँगा।

(44) ऐ मेरे पिता! शैतान की इबादत न करो। वास्तव में शैतान अत्यंत दयावान की अवज्ञाकारी है।

(45) ऐ मेरे पिता! मुझे भय है कि कहीं तुम्हें अत्यंत दयावान की ओर से कोई यातना न छू ले, फिर तुम शैतान के साथी हो जाओ।

(46) उसने कहा, "ऐ इबराहीम! क्या तू मेरे पूज्यों की इच्छा नहीं रखता? यदि तू बाज़ न आया तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा। अतः तू कुछ समय तक मुझसे दूर रह।"

(47) इबराहीम ने कहा, "तुम्हें सलाम हो। मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। निस्संदेह, वह मुझपर अत्यन्त दयावान है।

(48) और मैं तुम्हें और उन लोगों को छोड़ दूँगा जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो और अपने रब को पुकारूँगा। मुझे आशा है कि मैं अपने रब को पुकारते समय दुखी नहीं होऊँगा।

(49) फिर जब उसने उनको और उनको जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजते थे, छोड़ दिया तो हमने उसे इसहाक और याकूब प्रदान किए, और उनमें से प्रत्येक को हमने एक नबी बनाया।

(50) और हमने उन्हें अपनी दयालुता से प्रदान किया और उनके लिए सम्मानपूर्ण प्रतिष्ठा प्रदान की।

(51) और किताब में मूसा को याद करो, वह चुना हुआ था और वह एक रसूल और नबी था।

(52) और हमने उसे पहाड़ की दाहिनी ओर से पुकारा और उसे विश्वास दिलाते हुए निकट ले आए।

(53) और हमने अपनी दयालुता से उसके भाई हारून को नबी बनाकर प्रदान किया।

(54) और किताब में इसमाईल को याद करो, वह अपने वादे का पक्का था और वह रसूल और नबी था।

(55) और वह अपनी क़ौम को नमाज़ और ज़कात का आदेश देता था और अपने रब को प्रसन्न करनेवाला था।

(56) और किताब में इदरीस का उल्लेख करो, निस्संदेह वह सच्चा व्यक्ति और नबी था।

(57) और हमने उसे उच्च स्थान दिया।

(58) ये वे लोग हैं जिनपर अल्लाह ने अनुग्रह किया, आदम की सन्तान में से, और नूह के साथ जिनको हमने जहाज़ में बिठाया, और इबराहीम और इसराइल की सन्तान में से, और उन लोगों में से जिन्हें हमने मार्ग दिखाया और जिन्हें हमने चुन लिया। जब उनपर रहमान की आयतें पढ़ी गईं तो वे सजदे में गिर पड़े और रोने लगे।

(59) परन्तु उनके बाद ऐसे लोग आये जिन्होंने प्रार्थना करना छोड़ दिया और वासनाओं के पीछे भागे; अतः वे बुराई को प्राप्त होंगे।

(60) परन्तु जो लोग तौबा कर लें और ईमान लाएँ और अच्छे कर्म करें, वही लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे और उनपर कोई ज़ुल्म न किया जाएगा।

(61) उनमें सदैव रहने वाले बाग़ हैं, जिनका वादा रहमान ने अपने बन्दों से परोक्ष में किया है। निश्चय ही उसका वादा निकट आ चुका है।

(62) वे उसमें कोई निन्दा न सुनेंगे, केवल सलामती की शुभकामनाएँ देंगे और उन्हें सुबह और शाम उसी में रोज़ी मिलेगी।

(63) यही वह जन्नत है जिसका हम अपने बन्दों में से उन लोगों को हिस्सा बनाते हैं जो डर रखनेवाले हों।

(64) हम तुम्हारे रब के आदेश के बिना नहीं उतरते। जो कुछ हमारे आगे है, जो हमारे पीछे है और जो कुछ उनके बीच है, वह सब उसी का है। और तुम्हारा रब कभी भूलनेवाला नहीं है।

(65) हे प्रभु, आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब। अतः उसी की बन्दगी करो और उसकी बन्दगी पर धैर्य रखो। क्या तुम जानते हो कि उसका कोई सादृश्य है?

(६६) और मनुष्य कहता है, "क्या मैं मर गया हूँ, तो क्या मुझे जीवित उठाया जाएगा?"

(67) क्या मनुष्य को याद नहीं कि हमने उसे पहले भी पैदा किया था, जबकि वह कुछ भी न था?

(68) अतः तुम्हारे रब की कसम! हम उन्हें और शैतानों को अवश्य इकट्ठा करेंगे, फिर उन्हें जहन्नम के चारों ओर घुटनों के बल खड़ा कर देंगे।

(69) फिर हम प्रत्येक गिरोह से उन लोगों को अवश्य निकाल देंगे जो अत्यंत दयावान के विरुद्ध अत्यन्त दुष्टतापूर्ण थे।

(70) तो फिर हम ही हैं जो उसमें जलने के अधिक योग्य लोगों को भली-भाँति जानते हैं।

(71) और तुममें से कोई ऐसा नहीं जो उस तक पहुंचे, और यह तुम्हारे रब पर अनिवार्य रूप से निर्धारित है।

(72) फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो अल्लाह से डरते रहे और जो लोग उसमें अत्याचार करते रहे उन्हें घुटनों के बल पर छोड़ देंगे।

(73) और जब हमारी आयतें उनके समक्ष स्पष्ट प्रमाण के रूप में पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो इनकार करनेवाले लोग ईमान लानेवालों से कहते हैं, "हमारे दोनों गिरोहों में से कौन अधिक अच्छा है और कौन अधिक अच्छा है?"

(74) और हमने उनसे पहले कितनी ही जातियों को विनष्ट कर दिया जो धन और दिखावट में उत्तम थीं।

(75) कह दो, "जो व्यक्ति गुमराही में पड़ा हो, तो अत्यंत दयावान उसके लिए कुछ समय बढ़ा दे, यहाँ तक कि जब वे वह देख लें जिसका उनसे वादा किया गया था - यातना या क़ियामत - तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि कौन सबसे अधिक स्थिति में है और कौन अधिक कमज़ोर है।"

(76) और अल्लाह मार्ग पर चलनेवालों को मार्गदर्शन में और अधिक बढ़ा देता है। और जो अच्छे कर्म स्थायी हैं, वे तुम्हारे रब के निकट उत्तम प्रतिफल और उत्तम मार्ग हैं।

(77) फिर क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों के साथ इनकार किया और कहा कि मुझे अवश्य ही धन और संतान प्रदान की जाएगी?

(78) क्या उसने ग़ैब को देखा है या रहमान से कोई वादा ले लिया है?

(79) कदापि नहीं, जो कुछ वह कहेगा, हम लिख लेंगे और उसके लिए यातना में बहुत कुछ विस्तार कर देंगे।

(80) और हम उससे उसका वारिस लेंगे जिसका वह ज़िक्र करेगा और वह हमारे पास अकेला ही आएगा।

(81) और उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अन्य पूज्य बना लिए, ताकि वे उनके लिए सम्मान का कारण बनें।

(82) कदापि नहीं, वे उनकी उपासना से इन्कार करेंगे और उनके विरोधी बन जायेंगे।

(83) क्या तुमने नहीं देखा कि हमने इनकार करनेवालों पर शैतानों को भेजा है जो उन्हें लगातार भड़काते रहते हैं।

(84) अतः तुम उनपर अधीरता न करो, हमने तो बस उनकी एक सीमित संख्या ही गिन रखी है।

(85) जिस दिन हम डर रखने वालों को एक दल बनाकर रहमान की ओर इकट्ठा करेंगे।

(86) और अपराधियों को प्यास की हालत में नरक की ओर धकेलेंगे।

(87) सिफ़ारिश करने का अधिकार किसी को नहीं, परन्तु उसी को जिसने रहमान से वचन ले लिया हो।

(88) और वे कहते हैं, "अत्यंत दयावान ने एक पुत्र बनाया है।"

(89) तुमने बहुत बुरा काम किया है.

(९०) आकाश लगभग फट जाएगा, पृथ्वी फट जाएगी, और पहाड़ विनाश में ढह जाएंगे

(91) और वे अत्यंत दयावान का पुत्र ठहराते हैं।

(92) और अत्यन्त दयावान के लिए यह उचित नहीं कि वह पुत्र बनाए।

(93) आकाशों और धरती में कोई ऐसा नहीं जो रहमान के पास बन्दा बनकर आये।

(94) उसने उनकी गिनती कर ली और पूरी गिनती कर ली।

(95) और वे सभी क़ियामत के दिन उसी की ओर आएंगे।

(96) निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, दयावान अल्लाह शीघ्र ही उनके लिए दया प्रदान करेगा।

(97) अतः हमने इसे तुम्हारी ज़बान के लिए सरल बना दिया है, ताकि तुम इसके द्वारा डर रखनेवालों को शुभ सूचना दो और इसके द्वारा शत्रुओं को सचेत करो।

(98) और हमने उनसे पहले कितनी नस्लों को विनष्ट कर दिया, क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनसे कोई आवाज़ सुनते हो?

सूरा 20: **طه‎ (Ṭā-Hā)** - ता-हा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) ता हा.

(2) हमने तुमपर क़ुरआन इसलिए नहीं उतारा कि तुम दुःखी हो जाओ।

(3) किन्तु यह तो केवल उन लोगों के लिए अनुस्मरण है जो डर रखते हैं।

(4) यह उसकी ओर से है जिसने धरती और आकाशों को पैदा किया।

(5) अत्यन्त दयावान, जो सिंहासन पर विराजमान है।

(6) उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और जो कुछ उनके बीच है और जो कुछ धरती के नीचे है।

(7) और यदि तुम ऊँची आवाज़ में बोलो तो वह रहस्य को भी जानता है और उससे भी अधिक छिपी हुई बातों को भी।

(8) अल्लाह, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अच्छे नाम उसी के हैं।

(9) और क्या मूसा का वृत्तांत तुम्हारे पास पहुँचा है?

(10) जब उसने आग देखी और अपने घरवालों से कहा, "यहाँ ठहरो। मैंने भी आग देखी है। शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए कोई मशाल ले आऊँ या आग के पास कोई मार्ग पाऊँ।"

(11) फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे पुकारा गया कि ऐ मूसा!

(12) मैं ही तुम्हारा रब हूँ। अतः अपने जूते उतार दो। तुम पवित्र वादी तुवा में हो।

(13) और मैंने तुम्हें चुन लिया है, अतः जो कुछ अवतरित हुआ है उसे सुनो।

(14) निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं। अतः मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।

(15) निश्चय ही क़ियामत आनेवाली है, मैं उसे लगभग छिपा रहा हूँ, ताकि प्रत्येक प्राणी को उसके प्रयास के अनुसार प्रतिफल मिले।

(16) अतः तुमको उससे कोई रोक न दे जो उसपर ईमान न लाए और अपनी इच्छा का अनुसरण करे, क्योंकि ऐसा करने से तुम नष्ट हो जाओगे।

(17) और हे मूसा, तेरे दाहिने हाथ में वह क्या है?"

(18) उसने कहा, "वह मेरी लाठी है। मैं उसपर टेक लगाता हूँ और अपनी भेड़ों के लिए पत्ते गिराता हूँ। और उसमें मेरे और भी काम हैं।"

(19) अल्लाह ने कहा, "ऐ मूसा! इसे नीचे फेंक दो।"

(20) तब उसने उसे नीचे फेंक दिया, और क्या देखा कि वह साँप बन गया है और तेजी से चलने लगा है।

(21) उसने कहा, "इसे पकड़ लो और डरो मत। हम इसे इसकी पहली अवस्था में लौटा देंगे।

(22) और अपना हाथ अपनी पसली के पास खींचो; वह बिना किसी रोग के उजला निकलेगा - यह एक और चिन्ह है,

(23) ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।

(24) फ़िरऔन के पास जाओ, निःसंदेह उसने अपराध किया है।

(25) मूसा ने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरे लिए मेरा सीना चौड़ा कर दे।

(26) और मेरा काम आसान कर,

(27) और मेरी जीभ की गांठ खोल दे,

(28) ताकि वे मेरी बात समझ सकें।

(29) और मेरे परिवार में से एक को मेरे लिये मंत्री नियुक्त करो—

(३०) हारून, मेरा भाई.

(31) उसके द्वारा मेरी शक्ति बढ़ाओ,

(32) और वह मेरे काम में हाथ बटाए,

(33) ताकि हम तेरी बहुत स्तुति करें

(34) और तेरी बहुत याद करो।

(35) निश्चय ही तू हमको देखनेवाला है।

(36) अल्लाह ने कहा, "ऐ मूसा! तुम्हारी माँग पूरी हो गयी।

(37) और हमने इससे पहले भी तुमपर उपकार किया था।

(38) जबकि हमने तुम्हारी माँ की ओर वही भेजा जो हमने भेजा था।

(39) "उसे सन्दूक में रखो और नदी में डाल दो, फिर नदी उसे किनारे पर फेंक देगी, वहाँ वह मेरे लिए एक शत्रु और उसके लिए एक शत्रु ले लेगी।" और मैंने तुमपर अपनी ओर से प्रेम किया, ताकि तुम मेरी निगरानी में बड़े हो।

(40) और हमने तुमपर एहसान किया, जबकि तुम्हारी बहन ने जाकर कहा, 'क्या मैं तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति के पास भेजूँ जो उसका ज़िम्मेदार होगा?' तो हमने तुम्हें तुम्हारी माँ के पास वापस पहुँचा दिया, ताकि वह संतुष्ट हो जाए और दुखी न हो। और तुमने किसी को क़त्ल किया, तो हमने तुम्हें बदला लेने से बचा लिया और तुम्हारी कड़ी परीक्षा ली। और तुम मदयन के लोगों के बीच कुछ वर्ष रहे। फिर तुम नियत समय पर आए, ऐ मूसा।

(41) और मैंने तुझे अपने लिए पैदा किया।

(42) तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियाँ लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करो।

(43) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, निश्चय ही उसने अपराध किया है।

(44) और उससे कोमल बातें बोलो, ताकि वह स्मरण हो जाए या डरने लगे।

(45) उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब! हमें डर है कि कहीं वह हमारे विरुद्ध शीघ्रता न कर दे या अतिशयोक्ति न कर दे।"

(46) उसने कहा, "डरो मत। मैं तुम दोनों के साथ हूँ। मैं सुनता हूँ और देखता हूँ।

(47) अतः उसके पास जाओ और कहो कि हम तुम्हारे रब के रसूल हैं। अतः तुम हमारे साथ इसराईल की सन्तान को भेज दो और उन्हें यातना न दो। हम तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आये हैं। और जो व्यक्ति मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, उसके लिए शांति है।

(48) निश्चय ही हमारी ओर वह्यी की गई है कि यातना उसी पर है जो झुठलाए और मुँह मोड़े।

(49) फ़िरऔन ने कहा, "तो ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है?"

(50) उसने कहा, "हमारा रब वही है जिसने प्रत्येक चीज़ को उसका रूप प्रदान किया, फिर उसे मार्ग दिखाया।"

(51) फ़िरऔन ने कहा, "फिर पिछली नस्लों का क्या हुआ?"

(52) मूसा ने कहा, "इसका ज्ञान मेरे रब के पास पुस्तक में भरा पड़ा है। मेरा रब न भूलता है और न चूकता है।"

(53) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए और आकाश से वर्षा बरसाई फिर उसके द्वारा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पैदा कीं।

(54) तुम भी खाओ और अपने पशुओं को चराओ। निश्चय ही इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धि वालों के लिए।

(55) उसी (धरती) से हमने तुम्हें पैदा किया, फिर उसी में तुम्हें लौटाएँगे और उसी से फिर निकालेंगे।

(56) और हमने उसे अपनी सारी निशानियाँ दिखा दी, किन्तु उसने झुठलाया और इनकार किया।

(57) उसने कहा, "ऐ मूसा! क्या तुम अपने जादू से हमें हमारे देश से निकाल देने आए हो?

(58) फिर हम अवश्य तुम्हारे पास ऐसा ही जादू लाएंगे। अतः हमारे और अपने बीच एक ऐसा स्थान निश्चित कर लो, जिसे न तो हम चूकेंगे और न तुम।

(59) मूसा ने कहा, "तुम्हारा काम त्यौहार के दिन है, जब लोग मध्याह्न के समय एकत्र होंगे।"

(60) अतः फ़िरऔन चला गया, अपनी योजना तैयार की, और फिर [मूसा के पास] आया।

(61) मूसा ने उनसे कहा, "अफसोस है तुमपर! अल्लाह पर कोई झूठ न गढ़ो, नहीं तो वह तुम्हें यातना देकर विनष्ट कर देगा। और जो कोई झूठ गढ़े, वह असफल हो गया।"

(62) अतः वे आपस में झगड़ने लगे और अपनी गुप्त बातें छिपा लीं।

(63) उन्होंने कहा, "ये दोनों जादूगर हैं जो अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल देना चाहते हैं और तुम्हारे उत्तम मार्ग को नष्ट कर देना चाहते हैं।

(64) अतः अपनी योजना पर दृढ़ हो जाओ और फिर पंक्ति में आगे बढ़ो। और आज वही सफल हुआ जिसने विजय प्राप्त की।

(65) उन्होंने कहा, "ऐ मूसा! या तो तुम फेंको या हम फेंकेंगे।"

(66) उसने कहा, "बल्कि तुम ही फेंक दो।" अचानक उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ उनके जादू से उसे ऐसी लगीं मानो वे (साँपों की तरह) हिल रही हों।

(67) और मूसा ने अपने मन में भय महसूस किया।

(68) हमने कहा, "डरो मत। वास्तव में तुम ही प्रभावशाली हो।

(69) और जो कुछ तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे फेंक दो, वह उनकी चालों को निगल जाएगा। जो कुछ उन्होंने चालें चली हैं, वह तो बस जादूगर की चाल है, और जादूगर जहाँ कहीं भी हो, सफल नहीं हो सकता।

(70) अतः जादूगर सजदे में गिर पड़े और कहने लगे, "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए।"

(71) फ़िरऔन ने कहा, "क्या तुम उसपर ईमान लाए हो इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा सरदार है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। अतः मैं अवश्य ही तुम्हारे हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से काट डालूँगा और तुम्हें खजूर के पेड़ों के तनों पर सूली पर चढ़ा दूँगा। तब तुम अवश्य ही जान लोगे कि हम में से कौन अधिक कठोर दण्ड देनेवाला और अधिक सहनशील है।"

(72) उन्होंने कहा, "हम कभी भी तुम्हें उसपर वरीयता नहीं देंगे जो हमारे पास खुली निशानियाँ लेकर आई है और उसपर जिसने हमें पैदा किया है। अतः तुम जो कुछ निर्णय करना चाहो करो। तुम केवल सांसारिक जीवन के लिए निर्णय कर सकते हो।

(73) हम अपने रब पर ईमान लाए, ताकि वह हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और जो जादू तुमने हम पर थोपा है, उसे भी क्षमा कर दे। और अल्लाह उत्तम और अधिक स्थायी है।

(74) जो व्यक्ति अपराधी बनकर अपने पालनहार के पास आएगा, उसके लिए जहन्नम है, वह उसमें न मरेगा और न जीवित रहेगा।

(75) फिर जो कोई ईमानवाला होकर उसके पास अच्छे कर्म करके आए, तो वही लोग उच्चतर दर्जे के हैं।

(76) वे सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें लोग सदैव रहेंगे। और यही उस व्यक्ति का बदला है जो पवित्र हो जाए।

(77) और हमने मूसा की ओर वह़्यी की थी कि "मेरे बन्दों के साथ रातों-रात यात्रा करो और उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना दो। फिर न तो तुम्हें पकड़ लिए जाने का डर रहेगा और न डूबने का।"

(78) अतः फ़िरऔन ने अपने सैनिकों के साथ उनका पीछा किया, और समुद्र से उन्हें ढक लिया,

(79) फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया और मार्ग न दिखाया।

(80) ऐ इसराइल की सन्तान! हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्ति दिलाई और हमने तुम्हारे लिए पहाड़ के दाहिने भाग में एक नियति निर्धारित की और हमने तुमपर मन्ना और बटेर उतारे।

(81) "हमने तुम्हें जो अच्छी-अच्छी रोज़ी दी है, उसमें से खाओ और उसमें अतिक्रमण न करो, अन्यथा मेरा क्रोध तुमपर उतरेगा। और जिसपर मेरा क्रोध उतरा, वह गिर पड़ा।"

(82) किन्तु जो व्यक्ति तौबा कर ले और ईमान लाये और अच्छे कर्म करे फिर सीधा मार्ग प्राप्त करे, तो मैं उसे सदैव क्षमा करने वाला हूँ।

(83) उसने कहा, "ऐ मूसा! तुम्हें अपनी क़ौम से जल्दी क्यों हो गई?"

(84) उसने कहा, "वे मेरे पीछे पड़े हैं। हे मेरे रब! मैं तेरी ओर शीघ्रता से आया हूँ, ताकि तू प्रसन्न हो।"

(85) उसने कहा, "हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे पश्चात परीक्षा में डाला, और सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया।"

(86) अतः मूसा क्रोधित और शोकाकुल होकर अपनी क़ौम की ओर लौटा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! क्या तुम्हारे रब ने तुमसे अच्छा वादा नहीं किया था? फिर क्या मेरे चले जाने का समय तुम्हारे लिए बहुत अधिक हो गया या तुम चाहते थे कि तुम्हारे रब का प्रकोप तुमपर उतर आए, फिर तुमने मुझसे किया हुआ वादा तोड़ दिया?"

(87) उन्होंने कहा, "हमने अपनी इच्छा से आपका वचन भंग नहीं किया, बल्कि हम लोगों के आभूषणों से बोझ उठाने के लिए विवश किये गये थे, अतः हमने उन्हें (आग में) फेंक दिया, और इसी प्रकार सामरी ने भी फेंका।"

(88) और उसने उनके लिए एक बछड़े की मूर्ति निकाली जो गरजने जैसी आवाज़ निकाल रही थी। उन्होंने कहा, "यह तुम्हारा ईश्वर है और मूसा का ईश्वर भी है, किन्तु वह भूल गया।"

(89) क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि वह उनसे कोई बात नहीं कह सकता और न ही उनके लिए उसमें कोई हानि है और न कोई लाभ।

(90) और हारून ने मूसा के आने से पहले ही उनसे कह दिया था कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! इस कारण से तो तुम्हारी परीक्षा ही हो रही है। निस्संदेह तुम्हारा रब अत्यन्त दयावान है। अतः तुम मेरा अनुसरण करो और मेरे आदेश का पालन करो।

(91) उन्होंने कहा, "हम तो उसपर अड़े रहेंगे, जब तक मूसा हमारे पास वापस न आ जाए।"

(92) मूसा ने कहा, "ऐ हारून! जब तुमने देखा कि वे भटक रहे हैं, तो तुम्हें किस बात ने रोका?

(93) क्या तुमने मेरा अनुसरण करने से मना कर दिया? तो क्या तुमने मेरे आदेश की अवहेलना की है?

(94) हारून ने कहा, "ऐ माँ के बेटे! मुझे मेरी दाढ़ी से न पकड़ और न मेरे सिर से। मुझे तो डर था कि कहीं तू न कहने लगे कि तूने बनी इसराईल में फूट डाल दी और तूने मेरी बात नहीं मानी।"

(95) मूसा ने कहा, "और ऐ सामरी! तुम्हारा क्या मामला है?"

(96) उसने कहा, "मैंने वह देखा जो उन्होंने नहीं देखा। अतः मैंने रसूल के मार्ग से एक मुट्ठी धूल ली और उसे फेंक दिया। इस प्रकार मेरी आत्मा ने मुझे बहकाया।"

(97) मूसा ने कहा, "अच्छा तो जाओ। और इस जीवन में तुम्हारे लिए आदेश है कि तुम कह दो कि कोई सम्पर्क न करो। और तुम्हारे लिए एक नियति है जिसे तुम पूरा करने में असफल नहीं होगे। और अपने उस पूज्य को देखो, जिसपर तुम समर्पित थे। हम उसे अवश्य जला डालेंगे और उसे समुद्र में उड़ा देंगे।

(98) और तुम्हारा पूज्य तो बस अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसने हर चीज़ को अपने ज्ञान में घेर रखा है।

(99) इसी प्रकार हम तुमसे पूर्व की कुछ बातें बयान करते हैं और हमने तुम्हें अपनी ओर से एक अनुस्मरण प्रदान किया है।

(100) जो कोई उससे मुँह मोड़ेगा तो क़ियामत के दिन वह अवश्य ही बोझ उठाएगा।

(101) और वे उसी में सदैव रहेंगे और क़ियामत के दिन उनके लिए वह बहुत बुरा बोझ होगा।

(102) जिस दिन नरसिंगा फूँका जाएगा, और हम अपराधियों को उस दिन इकट्ठा करेंगे, उनकी आँखें नीली होंगी,

(103) वे आपस में बुड़बुड़ाएँगे कि "तुम तो बस दस दिन ही रहे।"

(104) हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे कहते हैं, जबकि उनमें से श्रेष्ठतम आचरणवाला कहेगा, "तुम तो केवल एक दिन रहे।"

(105) और वे तुमसे पर्वतों के विषय में पूछते हैं। कह दो, "मेरा रब उन्हें एक धमाके से उड़ा देगा।

(106) और धरती को समतल मैदान बनाकर छोड़ देगा।

(107) तुम उसमें न तो कोई गड्ढा देखोगे और न कोई ऊँचाई।"

(108) उस दिन वे पुकारनेवाले के पीछे चलेंगे, और उससे विचलित हुए बिना नहीं। रहमान के सामने उनकी आवाज़ें दब जाएँगी। फिर तुम केवल फुसफुसाहट ही सुन सकोगे।

(109) उस दिन कोई सिफ़ारिश लाभ नहीं पहुँचाएगी, परन्तु उसी की सिफ़ारिश जिसे अत्यंत दयावान ने अनुमति दे दी हो और उसकी बात स्वीकार कर ली हो।

(110) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, हालाँकि वे उसका ज्ञान नहीं रखते।

(111) और सब के चेहरे उस जीवित, पालनहार के समक्ष झुक जायेंगे और वह व्यक्ति असफल हो गया जिसने अन्याय किया।

(112) किन्तु जो व्यक्ति ईमान रखते हुए अच्छे कर्म करेगा, तो उसे न तो अन्याय का भय होगा और न ही अभाव का।

(113) और इसी प्रकार हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है और इसमें चेतावनियाँ विविधतापूर्ण तरीके से लिखी हैं, ताकि शायद वे (पाप से) बचें या वह उन्हें (बुद्धि को) याद दिला दे।

(114) अतः अल्लाह सर्वोच्च, सत्य, प्रभुत्वशाली है। और (ऐ नबी!) क़ुरआन को पढ़ने में जल्दी न करो, इससे पहले कि वह तुम्हारी ओर अवतरित हो जाए। कह दो, "ऐ मेरे रब! मुझे ज्ञान प्रदान कर।"

(115) और हमने आदम से पहले भी वादा लिया था, किन्तु वह भूल गया और हमने उसमें दृढ़ता न पाई।

(116) और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया, परन्तु इबलीस ने इनकार कर दिया।

(117) अतः हमने कहा, "ऐ आदम! यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है। अतः वह तुम्हें जन्नत से न निकाले, ताकि तुम्हें दुःख पहुँचे।

(118) निश्चय ही तुमसे वादा किया गया है कि तुम उसमें भूखे नहीं रहोगे और न नंगे रहोगे।

(119) और न तुम वहाँ प्यासे होगे और न धूप से गरम होगे।

(120) तब शैतान ने उसके कान में फुसफुसाकर कहा, "ऐ आदम! क्या मैं तुझे उस वृक्ष की ओर संकेत करूँ जो अनन्तकाल और सम्पत्ति का है, जो कभी नष्ट नहीं होता?"

(121) और जब उन दोनों ने उसमें से खाया तो उनके गुप्तांग खुल गए और वे जन्नत के पत्तों से अपने शरीर को ढकने लगे। और आदम ने अपने रब की अवज्ञा की और वह भटक गया।

(122) फिर उसके रब ने उसे चुन लिया और उसकी ओर क्षमाशीलता दिखाई और उसे मार्ग दिखाया।

(123) [अल्लाह] ने कहा, "जन्नत से उतरो। यद्यपि तुम्हारी सन्तान एक दूसरे की शत्रु हैं। यदि मेरी ओर से तुम्हारे पास मार्गदर्शन आ जाए, तो जो कोई मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न उसे आख़िरत में कष्ट होगा।"

(124) और जो कोई मेरी याद से मुँह मोड़ेगा, तो वह उदास जीवन व्यतीत करेगा और हम उसे क़ियामत के दिन अंधा बनाकर इकट्ठा करेंगे।

(125) वह कहेगा, "ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों बनाया, जबकि मैं देखता था?"

(126) अल्लाह कहेगा, "ऐसी ही आयतें तुम्हारे पास आईं, फिर तुम उन्हें भूल गए। इसी प्रकार आज तुम भी भुलाए जाओगे।"

(127) और जिस व्यक्ति ने अवज्ञा की और अपने पालनहार की आयतों पर ईमान नहीं लाया, उसे हम इसी प्रकार दण्ड देते हैं। और आख़िरत की यातना अधिक कठोर और अधिक स्थायी है।

(128) तो क्या यह बात उनपर स्पष्ट नहीं हुई कि हमने उनसे पहले कितनी ही जातियों को विनष्ट कर दिया, जबकि वे अपने घरों में चलती-फिरती थीं? निश्चय ही इसमें बुद्धि वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

(129) और यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले से कोई बात न होती तो वह अनिवार्य होती और यदि कोई निश्चित अवधि न होती।

(130) अतः जो कुछ वे कहते हैं उसपर धैर्य से काम लो और सूर्योदय से पहले तथा सूर्यास्त से पहले अपने रब की प्रशंसा करते रहो, रात्रि में भी उसकी प्रशंसा करते रहो तथा दिन के अन्त में भी, ताकि तुम संतुष्ट हो जाओ।

(131) और जो कुछ हमने उनमें से कुछ लोगों को सुख प्रदान किया है, उसकी ओर अपनी दृष्टि न बढ़ाओ, यह तो सांसारिक जीवन की शोभा है, जिसके द्वारा हम उन्हें परीक्षा में डालते हैं। और तुम्हारे रब की रोज़ी उत्तम और अधिक स्थायी है।

(132) और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दो और उसमें पाबंद रहो। हम तुमसे रोज़ी नहीं माँगते, बल्कि हम तुम्हें रोज़ी देते हैं। और सबसे अच्छा परिणाम नेक लोगों के लिए है।

(133) और वे कहते हैं, "वह अपने रब की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?" क्या उनके पास पहले की किताबों की कोई निशानी नहीं आई?

(134) और यदि हम उनसे पहले भी उन्हें किसी यातना से विनष्ट कर देते, तो वे कहते, "ऐ हमारे रब! तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों नहीं भेजा, कि हम तेरी आयतों पर चलते, इससे पहले कि हम अपमानित और अपमानित होते?"

(135) कह दो, "हममें से प्रत्येक प्रतीक्षा कर रहा है, अतः तुम भी प्रतीक्षा करो। तब तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्ग पर चलनेवाला है और कौन सीधा मार्ग पर चलनेवाला है।"

सूरा 21: **ٱلْأَنْبِيَاء‎ (अल-अनबिया')** - पैगंबर

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) लोगों के लिए हिसाब का समय निकट आ गया है, और वे लापरवाही से मुँह फेरे हुए हैं।

(2) उनके पास उनके रब की ओर से जो नई शिक्षा आती है, वह तो बस इतनी ही होती है कि वे उसे खेलते-खेलते सुनते हैं।

(3) उनके दिल विचलित हो गए हैं। और अत्याचारी अपनी गुप्त बातें छिपाते हैं कि "क्या यह तुम्हारे जैसा कोई मनुष्य है? फिर क्या तुम जादू के आगे झुक जाओगे, जबकि तुम भली-भाँति देख रहे हो?"

(4) उसने कहा, "मेरा रब जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में कहा जाता है। और वही सुनता, जानता है।"

(5) किन्तु वे कहते हैं, "यह तो स्वप्नों का घालमेल है! बल्कि उसने तो स्वयं ही इसे गढ़ लिया है! बल्कि वह तो कवि है! तो फिर वह हमारे लिए भी कोई निशानी लेकर आए, जैसा कि पहले भेजे गए रसूल भेजे गए थे।"

(6) उनसे पहले हमने जिन बस्तियों को विनष्ट किया, उनमें से एक भी ईमान नहीं लाई। तो क्या वे ईमान लाएँगे?

(7) और हमने तुमसे पहले भी केवल पुरुषों को ही भेजा है, जिनकी ओर हमने वह्यी भेजी है। अतः यदि तुम नहीं जानते तो अनुस्मृति वालों से पूछ लो।

(8) और हमने उन्हें ऐसा शरीर नहीं बनाया जो खाना न खाता हो और न वे अमर थे।

(9) फिर हमने उनसे किया हुआ वादा पूरा किया और उन्हें और जिन्हें चाहा बचा लिया और हमने अतिक्रमणकारियों को विनष्ट कर दिया।

(10) हमने तुम्हारी ओर एक किताब उतारी है, जिसमें तुम्हारा ज़िक्र है। तो क्या तुम समझते नहीं?

(11) और हमने कितनी ही अत्याचारी बस्तियों को ध्वस्त कर दिया, फिर उनके पश्चात दूसरे लोगों को उत्पन्न किया।

(12) और जब उन्होंने हमारी यातना का अनुभव किया तो वे उससे भाग निकले।

(13) "भागो मत, बल्कि जहाँ तुम्हें सुख दिया गया है, वहाँ लौट जाओ और अपने घरों की ओर लौट जाओ, ताकि तुमसे पूछताछ की जाए।"

(14) उन्होंने कहा, "हाय! हम पर अफ़सोस! हम ही अत्याचारी थे।"

(15) और उनकी यह चीख़ बन्द न हुई, यहाँ तक कि हमने उन्हें एक कटी हुई फसल के समान बुझा दिया।

(16) और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे खेल-खेल में पैदा नहीं किया।

(17) यदि हम कोई लीला करना चाहते तो उसे अपने पास से ले लेते, यदि हम ऐसा करना चाहते।

(18) बल्कि हम सत्य को असत्य पर फेंकते हैं, तो वह उसे नष्ट कर देता है, फिर वह नष्ट हो जाता है। और जो कुछ तुम कहते हो, उसपर तुम्हारे लिए विनाश है।

(19) आकाशों और धरती में जो भी है, सब उसी का है। और जो उसके निकट हैं, वे न तो उसकी बन्दगी करने में गर्व करते हैं और न थकते हैं।

(20) वे रात दिन उसकी स्तुति करते रहते हैं, वे सुस्त नहीं पड़ते।

(21) क्या उन्होंने धरती में से ऐसे देवता बना लिए हैं जो मरे हुओं को जिला सकें?

(22) यदि आकाशों तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य होते तो वे दोनों बिगड़ गये होते। अतः अल्लाह, अर्श का स्वामी, उससे कहीं अधिक महान है जो वे वर्णन करते हैं।

(23) उससे जो कुछ वह करता है, उसके विषय में पूछा नहीं जाता, परन्तु उनसे अवश्य पूछा जाएगा।

(24) या उन्होंने उससे हटकर कोई और पूज्य बना लिया है? कह दो, "अपना प्रमाण लाओ। यह उन लोगों के लिए संदेश है जो मेरे साथ हैं और उन लोगों के लिए भी जो मुझसे पहले आ चुके हैं।" किन्तु उनमें से अधिकतर लोग सत्य को नहीं जानते, अतः वे मुँह मोड़ लेते हैं।

(25) और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर वह्यी भेजी कि "मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं। अतः मेरी ही इबादत करो।"

(26) और वे कहते हैं, "अत्यंत दयावान ने एक पुत्र बनाया है।" महान है वह! बल्कि वे तो सम्मानित बन्दे हैं।

(27) वे वचन में उससे आगे नहीं बढ़ सकते, और वे उसके आदेश से कार्य करते हैं।

(28) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। वे सिफ़ारिश नहीं कर सकते, परन्तु जिनके लिए वह प्रसन्न हो। और वे उसके भय से डरते हैं।

(29) और जो कोई उनमें से कहे कि "मैं उसके सिवा एक पूज्य हूँ" तो ऐसे ही को हम जहन्नम में दण्ड देंगे। और हम अत्याचारियों को इसी प्रकार दण्ड देते हैं।

(30) क्या इनकार करनेवालों ने यह नहीं सोचा कि आकाश और धरती को एक साथ मिलाकर हमने अलग-अलग कर दिया और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे ईमान नहीं लाते?

(31) और हमने धरती पर दृढ़ पर्वत बनाए, ताकि वह उनसे हिल न जाए और हमने उसमें चौड़ी सड़कें बनाईं, ताकि लोग मार्ग पा सकें।

(32) और हमने आकाश को छत बना दिया, किन्तु वे उसकी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं।

(33) और वही है जिसने रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा को पैदा किया, प्रत्येक अपनी-अपनी कक्षा में तैरता है।

(34) और हमने तुमसे पहले किसी मनुष्य को अमरता प्रदान नहीं की, फिर यदि तुम मर जाओ तो क्या वे अमर रहेंगे?

(35) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है। हम तुम्हारी परीक्षा बुराई और भलाई से करते हैं, फिर तुम हमारी ही ओर लौटाए जाओगे।

(36) और जब इनकार करनेवाले लोग तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा उपहास ही करते हैं, "क्या यह वही है जो तुम्हारे पूज्यों का उल्लेख करता है?" जबकि वे लोग रहमान के उल्लेख से इनकार करते हैं।

(37) मनुष्य को शीघ्रता से पैदा किया गया है। मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा। अतः तुम मुझसे जल्दी न करो।

(38) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(39) और यदि वे लोग, जिन्होंने इनकार किया, उस समय को जानते, जब वे न तो अपने मुखों से आग को हटा सकेंगे और न अपनी पीठों से, और न उन्हें कोई सहायता मिलेगी।

(40) बल्कि वह अचानक उनपर आ पड़ेगा और उन्हें घबरा देगा, फिर वे न तो उसे रोक सकेंगे और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

(41) और तुमसे पहले भी बहुत से रसूलों का उपहास किया गया, फिर जो उनका उपहास करते थे, वे उसी चीज़ में आ गये जिसका वे उपहास करते थे।

(42) कह दो, "रात और दिन में तुम्हें कौन बचा सकता है अत्यन्त दयावान से?" किन्तु वे लोग अपने रब की याद से मुँह फेरे हुए हैं।

(43) क्या हमारे सिवा कोई और पूज्य-प्रभु है जो उनकी रक्षा करें? वे अपनी सहायता भी नहीं कर सकते और न वे हमसे सुरक्षित रह सकते हैं।

(44) किन्तु हमने इन लोगों और इनके बाप-दादा को अच्छी-अच्छी चीज़ें प्रदान कीं, यहाँ तक कि उनकी आयु बढ़ा दी गई। क्या वे नहीं देखते कि हमने धरती पर कब्ज़ा कर लिया और उसे उसकी सीमाओं से दूर कर दिया? तो क्या वे ही प्रबल होंगे?

(45) कह दो, "मैं तो बस तुम्हें वह्यी के द्वारा सचेत कर रहा हूँ।" किन्तु बहरे, जब सचेत किये जाते हैं, तो पुकार नहीं सुनते।

(46) और यदि तुम्हारे रब की यातना की एक साँस भी उन्हें छू जाए तो वे कहेंगे, "हाय! हम पर अफ़सोस! हम ही अत्याचारी थे।"

(47) और हम क़ियामत के दिन न्याय के तराजू स्थापित कर देंगे, फिर किसी प्राणी पर अन्याय न किया जाएगा। और यदि कोई राई के दाने के बराबर भी वज़न होगा तो हम उसे भी निकाल देंगे। और हिसाब-किताब के लिए हम ही पर्याप्त हैं।

(48) और हमने मूसा और हारून को कसौटी और प्रकाश और नसीहत प्रदान की थी डर रखनेवालों के लिए।

(49) जो अपने रब से छिपे हुए डरते हैं, और वे क़ियामत से डरते हैं।

(50) और ये (क़ुरआन) एक शुभ संदेश है जिसे हमने अवतरित किया है। फिर क्या तुम उससे अनजान हो?

(51) और हमने इबराहीम को इससे पहले भी उसकी सही समझ प्रदान की थी और हम उसके विषय में भली-भाँति जानते थे।

(52) जबकि उसने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि ये कौन सी मूर्तियाँ हैं, जिनकी तुम पूजा कर रहे हो?

(53) उन्होंने कहा, "हमने अपने पूर्वजों को उन्हीं का उपासक पाया है।"

(54) उसने कहा, "तुम और तुम्हारे पूर्वज स्पष्ट गुमराही में थे।"

(55) उन्होंने कहा, "क्या तुम हमारे पास सत्य लेकर आये हो या मजाक कर रहे हो?"

(56) उसने कहा, "नहीं, बल्कि तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिसने उन्हें पैदा किया है और मैं गवाही देनेवालों में से हूँ।

(57) और अल्लाह की कसम! मैं तुम्हारे बुतों के विरुद्ध चाल चलूँगा, इसके पश्चात कि तुम पलटकर चले जाओगे।

(58) अतः उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, सिवाय एक बड़े को छोड़कर, ताकि वे उसकी ओर फिरें।

(59) उन्होंने कहा, "हमारे देवताओं के साथ ऐसा किसने किया? निस्संदेह वह अत्याचारियों में से है।"

(60) उन्होंने कहा, "हमने एक युवक को उनकी चर्चा करते सुना है जिसका नाम इबराहीम है।"

(61) उन्होंने कहा, "अच्छा, उसे लोगों के सामने लाओ, ताकि वे गवाही दें।"

(62) उन्होंने कहा, "ऐ इबराहीम! क्या तुमने हमारे देवताओं के साथ ऐसा किया है?"

(63) उसने कहा, "बल्कि यह तो उनमें से सबसे बड़े ने किया है। यदि वे बोल सकें तो उनसे पूछ लो।"

(64) अतः वे अपने-अपने पक्ष में लौट आए और कहने लगे, "निश्चय ही तुम ही अत्याचारी हो।"

(65) फिर वे पलटकर बोले, "तुम्हें तो मालूम ही है कि ये लोग बोलते नहीं।"

(66) उसने कहा, "तो क्या तुम अल्लाह के सिवा उस चीज़ की बन्दगी करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचाती है और न तुम्हें कुछ हानि पहुँचाती है?

(67) धिक्कार है तुमपर और उनपर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

(68) उन्होंने कहा, "उसे जला दो और अपने देवताओं का समर्थन करो, यदि तुम्हें कार्य करना है।"

(69) हमने कहा, "ऐ आग! इबराहीम के लिए शीतलता और सुरक्षा प्रदान कर।"

(70) और उन्होंने उसके लिए एक चाल चली, किन्तु हमने उन्हें सबसे बड़ा घाटे में डाल दिया।

(71) और हमने उसे और लूत को उस भूभाग में पहुँचाया, जिसे हमने सारे संसारों के लिए बरकत दी थी।

(72) और हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब भी प्रदान किए, और उन सभी को हमने धर्मी बनाया।

(73) और हमने उन्हें अपने आदेश से मार्गदर्शन करने वाले नेता बनाया और हमने उनकी ओर अच्छे कर्म करने, नमाज़ स्थापित करने और ज़कात देने की प्रकाशना की और वे हमारे बन्दे थे।

(74) और हमने लूत को निर्णय शक्ति और ज्ञान प्रदान किया और उसे उस बस्ती से बचा लिया जो बुरे कर्म कर रही थी। निश्चय ही वे लोग बुरे लोग थे, बड़े अवज्ञाकारी।

(75) और हमने उसे अपनी दयालुता में प्रवेश दिया, निस्संदेह वह डर रखनेवालों में से था।

(76) और नूह को याद करो, जब उसने पहले भी हमें पुकारा था, तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे और उसके घरवालों को बड़ी मुसीबत से बचा लिया।

(77) और हमने उसकी सहायता उन लोगों के मुक़ाबले में की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था। निश्चय ही वे बुरे लोग थे। अतः हमने उन सबको डुबो दिया।

(78) और दाऊद और सुलैमान को याद करो, जब वे खेत के विषय में निर्णय कर रहे थे। जबकि एक जाति की भेड़ें उस पर रात को दौड़ रही थीं। और हम उनके निर्णय के साक्षी थे।

(79) और हमने सुलैमान को मामले की समझ प्रदान की और उनमें से प्रत्येक को निर्णय और ज्ञान प्रदान किया और हमने पहाड़ों को वश में कर दिया ताकि वे दाऊद और पक्षियों के साथ हमारी बड़ाई करें और हम ही सब कुछ करने वाले थे।

(80) और हमने उसे कवच बनाना सिखाया, ताकि वह युद्ध में तुम्हारे शत्रु से तुम्हारी रक्षा करे। तो क्या तुम कृतज्ञता दिखाओगे?

(81) और सुलैमान के लिए हमने तेज़ हवाएँ चलाईं, जो उसके आदेश से उस भूभाग की ओर चलीं, जिसे हमने बरकत दी थी। और हम हर चीज़ को जानने वाले हैं।

(82) और शैतानों में से भी कुछ लोग ऐसे थे जो उसके लिए गोते लगाए और उसके अलावा अन्य काम भी किए, और हम उनके संरक्षक थे।

(83) और अय्यूब को याद करो, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे एक मुसीबत ने छू लिया है। और तू अत्यन्त दयावान है।"

(84) अतः हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उससे जो कुछ कष्ट था उसे दूर कर दिया और उसके साथ उसके परिवार और उसके समान अन्य लोगों को भी लौटा दिया, यह हमारी ओर से दयालुता है और बन्दों के लिए एक नसीहत है।

(85) और इसमाईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो, ये सब धैर्यवान थे।

(86) और हमने उन्हें अपनी दयालुता में प्रवेश दिया। निस्संदेह वे डर रखनेवालों में से थे।

(87) और मछलीवाले (योना) को याद करो, जबकि वह क्रोध में चला गया और उसने सोचा कि हम उस पर कोई फ़ैसला नहीं करेंगे। और उसने अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं! तू महान है। निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।"

(88) अतः हमने उसकी आज्ञा मान ली और उसे संकट से बचा लिया। इसी प्रकार हम ईमानवालों को बचाते हैं।

(89) और ज़करियाह को याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा कि "ऐ मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़, हालाँकि तू ही सबसे अच्छा उत्तराधिकारी है।"

(90) तो हमने उसकी बात मान ली और उसे यहया प्रदान कर दिया और उसकी पत्नी को उसके लिए सुधार दिया। निश्चय ही वे लोग भलाई के लिए जल्दी करते थे और आशा और भय के साथ हमसे प्रार्थना करते थे और वे हमारे आज्ञाकारी थे।

(91) और उस औरत को याद करो जिसने अपनी पवित्रता की रक्षा की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूँक दी और उसे और उसके बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया।

(92) निश्चय ही ये तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है और मैं ही तुम्हारा पालनहार हूँ। अतः मेरी ही इबादत करो।

(93) और उन्होंने आपस में ही अपना मामला बाँट लिया, किन्तु सब लोग हमारी ही ओर लौटकर आनेवाले हैं।

(94) अतः जो व्यक्ति ईमान रखते हुए अच्छे कर्म करेगा, तो उसके प्रयास का कोई खंडन नहीं होगा। और हम तो उसका लेखा-जोखा रखने वाले हैं।

(95) और जिस बस्ती को हमने विनष्ट कर दिया, उस पर हराम है कि वे फिर लौटकर जाएँगे।

(96) यहाँ तक कि जब गोग और मागोग का बाँध खोल दिया जाएगा और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतरेंगे।

(97) और सच्चा वादा निकट आ गया, फिर अचानक इनकार करनेवालों की आँखें चौंक जाएँगी, "हाय! हम पर अफ़सोस! हम तो इससे बेख़बर थे, बल्कि हम तो अत्याचारी थे।"

(98) निश्चय ही तुम और वे सब जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो, दोनों जहन्नम की लकड़ियाँ हैं, तुम उसी में प्रविष्ट होने वाले हो।

(99) यदि ये लोग ईश्वर होते तो उसमें प्रवेश न करते, परन्तु वे सब उसमें सदैव रहते हैं।

(100) उनके लिए उसमें भारी आह है, और वे उसमें सुनते नहीं।

(101) निस्संदेह जिन लोगों को हमारी ओर से पहले ही उत्तम प्रतिफल प्राप्त हो चुका है, वही उससे बहुत दूर हैं।

(102) वे उसकी ध्वनि नहीं सुनेंगे, जब तक वे उसमें रहेंगे, जिसकी उनकी आत्मा इच्छा करती है, सदैव रहेंगे।

(103) वे किसी बड़े भय से भी विचलित नहीं होंगे और फ़रिश्ते उनसे मिलेंगे और कहेंगे, "यह तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया गया था।"

(104) जिस दिन हम आकाश को इस प्रकार मोड़ देंगे जैसे कागज़ को मोड़ा जाता है। जिस प्रकार हमने सृष्टि का आरम्भ किया था, उसी प्रकार हम उसे दोहराएँगे। यह हमारा वचन है। निश्चय ही हम इसे पूरा करेंगे।

(105) और हमने किताब में ज़बूर के उल्लेख के पश्चात लिख दिया है कि धरती मेरे अच्छे बन्दों को मिलेगी।

(106) निस्संदेह इसमें इबादत करनेवालों के लिए सूचना है।

(107) और हमने तुम्हें संसार के लिए परन्तु दयालुता बनाकर भेजा है।

(108) कह दो, "मुझ पर तो बस यही प्रकाशना की गई है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। तो क्या तुम आज्ञाकारी होगे?"

(109) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो कि मैंने तुम सबको बराबर बता दिया है और मैं नहीं जानता कि जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह निकट है या दूर।

(110) निस्संदेह वह जानता है जो कुछ कहा जाता है और वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो।

(111) और मैं नहीं जानता, सम्भव है कि यह तुम्हारे लिए एक परीक्षा हो और कुछ समय तक आनन्ददायक हो।

(112) कहा, "ऐ मेरे रब! हमारे बीच सत्य के अनुसार निर्णय कर दे। हमारा रब अत्यन्त दयावान है। जो कुछ तुम वर्णन करते हो, उसके विरुद्ध उसी से सहायता मांगी जाती है।"

सूरा 22: **ٱلْحَجّ‎ (अल-हज्ज)** - तीर्थयात्रा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ लोगो! अपने रब से डरो, क़ियामत का भूकम्प बहुत बड़ी चीज़ है।

(2) जिस दिन तुम देखोगे, हर दूध पिलानेवाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर गर्भवती स्त्री का गर्भपात हो जाएगा और तुम लोगों को नशे में धुत्त होते देखोगे, जबकि वे नशे में नहीं होंगे। किन्तु अल्लाह की यातना बहुत कठोर है।

(3) और लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के विषय में अज्ञानता से झगड़ते हैं और प्रत्येक अवज्ञाकारी शैतान का अनुसरण करते हैं।

(4) उसके लिए यह निर्धारित कर दिया गया है कि जो कोई उसे अपना मित्र बनाएगा, वह उसे गुमराह कर देगा और उसे आग की यातना की ओर ले जाएगा।

(5) ऐ लोगो! यदि तुम पुनरुत्थान के विषय में संदेह में हो तो निश्चय ही हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर थक्के से, फिर भ्रूण से, ताकि हम तुम्हें स्पष्ट कर दें। और हम जिस गर्भ में चाहते हैं उसे एक निश्चित अवधि तक रखते हैं, फिर हम तुम्हें शिशु अवस्था में निकालते हैं, फिर ताकि तुम अपनी युवावस्था को पहुँचो। और तुममें से कोई ऐसा है जो समय से पहले ही मर जाता है और कोई ऐसा है जो बहुत ही कम आयु में लौटा दिया जाता है, फिर ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात उसे कुछ भी पता नहीं रहता। और तुम धरती को बंजर देखते हो, फिर जब हम उस पर वर्षा बरसाते हैं तो वह हिलती है, फूलती है और हर प्रकार की सुन्दरता को उगाती है।

(6) यह इसलिए कि अल्लाह सत्य है, और वह मुर्दों को जिलाता है, और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(7) और यह कि क़ियामत आनेवाली है, इसमें कोई संदेह नहीं, और यह कि अल्लाह क़ब्रों में पड़े लोगों को जीवित करेगा।

(8) और लोगों में से कुछ लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, बिना ज्ञान, मार्गदर्शन और बिना प्रकाशमान किताब के।

(9) जो अपनी गर्दन को घमण्ड में मरोडकर लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटका दे, उसके लिए संसार में अपमान है और हम उसे क़ियामत के दिन दहकती आग की यातना चखाएंगे।

(10) "यह तुम्हारे हाथों के परिश्रम के कारण है और इसलिए भी कि अल्लाह अपने बन्दों पर अत्याचार नहीं करता।"

(11) और लोगों में से कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की बन्दगी किनारे पर रहकर करता है। यदि उस पर कोई भलाई आ जाती है तो वह उससे संतुष्ट हो जाता है, किन्तु यदि कोई मुसीबत आ जाती है तो वह मुँह फेर लेता है। वह संसार और आख़िरत दोनों को खो देता है। यही स्पष्ट हानि है।

(12) और वह अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसे हानि पहुँचा सकती है और न लाभ पहुँचा सकती है। यही बड़ी गुमराही है।

(13) वह ऐसे व्यक्ति को पुकारता है जिसका अहित उसके लाभ से अधिक निकट है - कितना अभागा रक्षक और कितना अभागा साथी!

(14) निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, करता है।

(15) जो व्यक्ति यह समझे कि अल्लाह उसे संसार और परलोक में सहायता नहीं देगा, तो उसे चाहिए कि छत तक रस्सी बढ़ाए, फिर उसे काट दे, और देखे कि उसका प्रयास उसके क्रोध को दूर करता है या नहीं।

(16) और इसी प्रकार हमने इसे स्पष्ट आयतों के रूप में उतारा है। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है।

(17) जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी और साबिई और ईसाई और मागुइया और जो लोग अल्लाह का साझी ठहराते हैं, अल्लाह क़ियामत के दिन उनके बीच फ़ैसला कर देगा। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है।

(18) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही को सजदा करते हैं जो कोई आसमानों में है और जो कोई ज़मीन में है - सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, पेड़, रेंगनेवाले जीव-जन्तु और बहुत से लोग? लेकिन बहुत से लोगों पर अज़ाब वाजिब है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे, उसका कोई सम्मान नहीं कर सकता। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, करता है।

(19) ये दो विरोधी हैं, जिन्होंने अपने पालनहार के विषय में झगडा किया। फिर जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए आग के वस्त्र तैयार कर दिए गए हैं, और उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

(20) उनकी अंदरूनी सतह और खाल को पिघलाना।

(21) और उनके लिए लोहे की गदाएँ हैं।

(22) जब भी वे दुःख से बचकर उसमें से निकलना चाहेंगे, तो उसी ओर लौटा दिए जाएँगे और (कहा जाएगा) "जहन्नम की यातना का मज़ा चखो!"

(23) निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उन्हें सोने और मोतियों के कंगन पहनाए जाएँगे और वहाँ उनके वस्त्र रेशमी होंगे।

(24) तथा उन्हें अच्छी बात की ओर मार्ग दिखाया गया और प्रशंसनीय मार्ग की ओर मार्ग दिखाया गया।

(25) निस्संदेह जिन लोगों ने इनकार किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से और मस्जिदे हराम से रोका, जिसे हमने सबके लिए बनाया है। उसमें रहनेवाले और आनेवाले दोनों बराबर हैं। और जो कोई उसमें कुटिलता या अन्याय का इरादा करेगा तो हम उसे दुखद यातना का मज़ा चखाएँगे।

(26) और याद करो जब हमने इबराहीम के लिए घर का स्थान निश्चित किया था कि "मेरे साथ किसी को साझी न बनाना और मेरे घर को तवाफ़ करनेवालों और खड़े रहनेवालों और रुकूआ और सजदा करनेवालों के लिए पवित्र बनाओ।

(27) और लोगों को हज का समाचार सुना दो, वे तुम्हारे पास पैदल और हर प्रकार के दुबले-पतले ऊँटों पर सवार होकर आएंगे, वे हर दूर-दूर के दर्रे से आएंगे।

(28) ताकि वे अपने लिए लाभ देखें और अल्लाह का नाम लें, ज्ञात दिनों में, उन पशुओं पर जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं। अतः तुम भी उनका मांस खाओ और दीन-दुखियों और निर्धनों को खिलाओ।

(29) फिर वे अपने निर्धारित कर्तव्यों को पूरा करें और अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करें और प्राचीन घर के चारों ओर परिक्रमा करें।

(30) यही (आदेश) है। और जो व्यक्ति अल्लाह के पवित्र आदेशों का आदर करे, तो उसके लिए उसके रब के निकट सर्वोत्तम है। और चौपाये भी तुम्हारे लिए हलाल कर दिए गए हैं, सिवाय उन चीज़ों के जो तुम्हें पढ़कर सुनाई जाएँ। अतः मूर्तियों की अशुद्धता से बचो और झूठी बातों से बचो।

(31) अल्लाह की ओर झुकना, उसके साथ किसी को साझी न ठहराना। और जो व्यक्ति अल्लाह का साझी ठहराए, तो मानो वह आकाश से गिरा, फिर पक्षियों ने उसे उठा लिया या हवा ने उसे किसी निर्जन स्थान पर पहुंचा दिया।

(32) और जो व्यक्ति अल्लाह की निशानियों का आदर करेगा, तो यह उसके दिल की तक़वा से है।

(33) तुम्हारे लिए इसमें एक निश्चित अवधि तक लाभ हैं, फिर उनका स्थान तो प्राचीन घर ही है।

(34) और हमने प्रत्येक समुदाय के लिए रीति-रिवाज़ निर्धारित कर दिए हैं, ताकि वे अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें पशुओं से प्रदान किया है। और तुम्हारा पूज्य एक पूज्य है, अतः उसी के आगे झुक जाओ। और नम्र लोगों को शुभ सूचना दे दो।

(35) वे लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र होने पर डर जाते हैं और जो कुछ उन पर गुज़रा उसपर धैर्य रखते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

(36) और हमने ऊँटों और चौपायों को तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः जब तुम क़ुरबानी के लिए खड़े हो जाओ तो उन पर अल्लाह का नाम लो, फिर जब वे अपनी बगलों के बल लेट जाएँ तो उनमें से खाओ और मुहताजों और भिखारियों को खिलाओ। इस प्रकार हमने उन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

(37) न तो उनका भोजन अल्लाह तक पहुँचेगा और न उनका ख़ून, बल्कि जो कुछ अल्लाह तक पहुँचेगा वह तुम्हारा परहेज़गारपन है। इस प्रकार हमने उन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया, ताकि तुम अल्लाह की प्रशंसा करो, उस पर जिसकी उसने तुम्हें राह दिखाई है। और अच्छे कर्म करनेवालों को शुभ सूचना दो।

(38) निस्संदेह अल्लाह उन लोगों की रक्षा करता है जो ईमान लाए। निस्संदेह अल्लाह विश्वासघाती और कृतघ्न लोगों को पसन्द नहीं करता।

(39) उन लोगों को अनुमति दे दी गई है जिनसे युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उनपर अत्याचार किया गया है। निस्संदेह अल्लाह उन्हें विजय प्रदान करने में समर्थ है।

(40) वे लोग हैं जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए, सिर्फ़ इसलिए कि उन्होंने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है।" और यदि अल्लाह लोगों को न रोकता, कुछ लोगों को दूसरों के माध्यम से, तो मठ, गिरजाघर, यहूदी प्रार्थनागृह और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है, गिरा दी जातीं। और अल्लाह अवश्य ही उन लोगों की सहायता करता है जो उसकी सहायता करते हैं। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(41) वे वे लोग हैं कि यदि हम उन्हें धरती में अधिकार प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और भलाई का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे। और सारे मामलों का परिणाम अल्लाह ही के लिए है।

(42) और यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो इसी प्रकार नूह और आद और समूद की क़ौम ने भी उनसे पहले अपने नबियों को झुठलाया था।

(43) और इबराहीम की क़ौम और लूत की क़ौम

(44) और मद्यन के लोगों को भी। और मूसा को झुठलाया गया, तो मैंने इनकार करनेवालों के लिए आनन्द बढ़ाया, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। और कैसी थी मेरी निंदा।

(45) और हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट कर दिया, जबकि वे अत्याचार कर रही थीं। फिर वे उजड़ गईं। और कितने ही कुएँ और ऊँचे महल भी हमने विनष्ट कर दिए।

(46) क्या वे देश भर में घूम-फिरकर नहीं आए कि उनके पास तर्क करने के लिए हृदय और सुनने के लिए कान हों? क्योंकि आँखें नहीं, बल्कि वे हृदय जो सीने में हैं, अंधे हो गए हैं।

(47) और वे तुमसे कहते हैं कि यातना में जल्दी करो। किन्तु अल्लाह अपने वादे से कभी पीछे नहीं हटता। और तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन उन हज़ार वर्षों के बराबर है जिन्हें तुम गिनते हो।

(48) और कितनी ही बस्तियों को मैंने सुख भोगने में लगा दिया, जबकि वे अत्याचार कर रही थीं, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया, और अन्तिम ठिकाना तो मेरा ही है।

(49) कह दो, "ऐ लोगो! मैं तो बस तुम्हें स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।"

(50) अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए क्षमा और उत्तम जीविका है।

(51) किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों के विरुद्ध विद्रोह किया, ताकि उन्हें असफल कर सकें, वही लोग जहन्नम में पड़नेवाले हैं।

(52) और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल या नबी भेजा, वह जब कुछ बोलता तो शैतान उसमें कुछ ग़लतफ़हमी डाल देता था। लेकिन अल्लाह शैतान की बातों को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(53) ताकि शैतान जो कुछ फेंकता है, उसे उन लोगों के लिए आज़माइश में डाल दे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल कठोर हो गए हैं। और निश्चय ही अत्याचारी लोग बहुत ही मतभेद में पड़े हुए हैं।

(54) ताकि वे लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया, जान लें कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है और वे इस पर ईमान लाएँ और उनके दिल इसके प्रति समर्पित हो जाएँ। और निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को सीधा मार्ग दिखाने वाला है जो ईमान लाए हैं।

(55) किन्तु जो लोग इनकार करने लगे, वे इस विषय में संदेह में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि अचानक उन पर क़ियामत आ जाए या उनपर किसी अपवित्र दिन की यातना आ जाए।

(56) उस दिन राज्य अल्लाह के लिए है। वही उनके बीच फ़ैसला कर देगा। फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे प्रसन्नता के जन्नतों में होंगे।

(57) और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानजनक यातना है।

(58) और जो लोग अल्लाह के मार्ग में हिजरत करके गए, फिर या तो मारे गए या मर गए, अल्लाह उन्हें अवश्य अच्छी रोज़ी देगा, और निस्संदेह अल्लाह ही सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।

(59) वह उन्हें अवश्य ही ऐसे प्रवेश द्वार पर पहुँचाएगा जिससे वे प्रसन्न होंगे, और निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, सहनशील है।

(60) और जो व्यक्ति अन्याय का बदला उसी प्रकार देगा जैसा उसपर अत्याचार किया गया और फिर उसपर अत्याचार किया गया, अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, क्षमाशील है।

(61) यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और इसलिए कि अल्लाह सुनता, देखता है।

(62) यह इसलिए कि अल्लाह सत्य है और जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं वह मिथ्या है और इसलिए कि अल्लाह सर्वोच्च, महान है।

(63) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आकाश से वर्षा बरसाता है और धरती हरी-भरी हो जाती है? निस्संदेह अल्लाह अति सूक्ष्म, सर्वज्ञ है।

(64) उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, और निस्संदेह अल्लाह निःसन्देह, प्रशंसनीय है।

(65) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने धरती में जो कुछ है और समुद्र में चलनेवाली नौकाओं को भी अपने आदेश से तुम्हारे अधीन कर रखा है? और वह आकाश को भी धरती पर गिरने से रोकता है, परन्तु उसकी अनुमति के बिना। निस्संदेह अल्लाह लोगों के प्रति अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(66) और वही है जिसने तुम्हें जीवन दिया, फिर वही तुम्हें मारता है, फिर वही तुम्हें जीवन देगा। निश्चय ही मनुष्य बड़ा कृतघ्न है।

(67) हमने प्रत्येक समुदाय के लिए रीति-रिवाज़ निर्धारित कर दिए हैं, जिन्हें वे अपनाते हैं। अतः वे तुमसे किसी मामले में झगड़ा न करें, बल्कि उन्हें अपने रब की ओर बुलाओ। निस्संदेह तुम सीधे मार्ग पर हो।

(68) और यदि वे तुमसे झगड़ें तो कह दो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

(69) और अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा, जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो।

(70) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाश और धरती में है? निस्संदेह वह पुस्तक में लिखा है। निस्संदेह वह अल्लाह के लिए सरल है।

(71) और वे अल्लाह से हटकर उसकी बन्दगी करते हैं जिसका उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और न वे उसका कुछ ज्ञान रखते हैं। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।

(72) और जब हमारी आयतें उनके सामने स्पष्ट प्रमाण के रूप में पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो तुम इनकार करनेवालों के चेहरों पर नापसन्दगी पहचान लेते हो। वे उनपर आक्रमण करने ही वाले हैं जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाते हैं। कह दो, "तो क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे भी बुरी क्या चीज़ है? वह आग है जिसका वादा अल्लाह ने इनकार करनेवालों से किया है, और वह बहुत बुरी जगह है।"

(73) ऐ लोगो! एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। तो उसे सुनो। निस्संदेह, अल्लाह के अतिरिक्त जिन लोगों को तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे उसी उद्देश्य से एकत्र हुए हों। और यदि मक्खी उनसे कोई चीज़ चुरा ले जाए, तो वे उसे उससे वापस नहीं ले सकते। पीछा करनेवाला और पीछा किया जानेवाला दोनों ही कमज़ोर हैं।

(74) उन्होंने अल्लाह का सही मूल्यांकन नहीं किया। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(75) अल्लाह फ़रिश्तों और लोगों में से रसूलों को चुनता है। निस्संदेह अल्लाह सुनने, देखनेवाला है।

(76) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके बाद होगा। और अल्लाह ही की ओर सब मामले पलटकर जानेवाले हैं।

(77) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! रुको और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो और अच्छे कर्म करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

(78) और अल्लाह के लिए उसी के योग्य प्रयास से संघर्ष करो। उसी ने तुम्हें चुन लिया है और धर्म में तुमपर कोई कठिनाई नहीं डाली, तुम्हारे पिता इबराहीम के धर्म में। उसने तुम्हें पहले भी और इस आयत में भी मुसलमान बनाया है, ताकि रसूल तुमपर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो। अतः नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूती से थामे रहो। वही तुम्हारा संरक्षक है, संरक्षक अच्छा है और सहायक भी अच्छा है।

सूरा 23: **ٱلْمُؤْمِنُون‎ (अल-मुमिनुन)** - विश्वास करने वाले

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) निस्संदेह ईमान वाले सफल हो गये।

(2) जो लोग अपनी प्रार्थनाओं में विनम्र हैं,

(३) जो व्यर्थ की बातों से बचते हैं,

(4) जो ज़कात (दान) देते हैं,

(5) जो अपनी पवित्रता की रक्षा करते हैं,

(6) परन्तु अपनी पत्नियाँ या अपने दाहिने हाथों के स्वामी के साथ, तो वे निर्दोष नहीं हैं।

(7) फिर जो लोग इससे आगे की इच्छा रखेंगे, वही लोग उल्लंघनकारी हैं।

(8) जो लोग अपनी अमानतों और वादों के पक्के हैं,

(9) और जो लोग अपनी नमाज़ें ठीक से पढ़ते हैं:

(10) वही उत्तराधिकारी हैं।

(11) जो फ़िरदौस के उत्तराधिकारी होंगे, वे उसमें सदैव रहेंगे।

(12) और हमने मनुष्य को मिट्टी के रस से पैदा किया।

(13) फिर हमने उसे वीर्य की बूँद बनाकर एक स्थिर स्थान पर रख दिया।

(14) फिर हमने वीर्य को एक चिपचिपा थक्का बनाया, फिर हमने थक्के को एक गांठ बनाया, फिर हमने उस गांठ को हड्डियों में बदल दिया, फिर हमने हड्डियों को मांस से ढक दिया, फिर हमने उसे एक और रचना में विकसित किया। अतः अल्लाह बहुत धन्य है, जो सर्वोत्तम सृष्टिकर्ता है।

(15) फिर उसके बाद तुम्हें अवश्य मरना है।

(16) फिर निश्चय ही क़ियामत के दिन तुम जीवित किये जाओगे।

(17) और हमने तुम्हारे ऊपर सात मार्ग बनाये और हम सृष्टि से कभी बेखबर नहीं रहते।

(18) और हमने आकाश से पानी उचित मात्रा में बरसाया, फिर उसे धरती में स्थिर कर दिया, और हम उसे दूर करने पर भी सामर्थ्य रखते हैं।

(19) फिर उसी से हम तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ उगाते हैं, जिनमें तुम्हारे लिए बहुत-से फल होते हैं और तुम उनसे खाते भी हो।

(20) और एक वृक्ष जो सीनै पर्वत से निकलता है, जो तेल और खानेवालों के लिए मसाला पैदा करता है।

(21) और तुम्हारे लिए पशुओं में एक शिक्षा है। हम उनके पेटों से तुम्हें पानी पिलाते हैं। उनमें तुम्हारे लिए बहुत-से लाभ हैं। और तुम उनसे खाते भी हो।

(22) और तुम उनपर और नावों पर सवार किये जाओगे।

(23) और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तो उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम उससे डरते नहीं?"

(24) किन्तु उसकी क़ौम के इनकार करनेवालों में से जो लोग थे, उन्होंने कहा, "यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है, जो तुमपर प्रभुत्व जमाना चाहता है। यदि अल्लाह चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता। हमने अपने पूर्वजों में ऐसा कभी नहीं सुना।

(25) वह तो पागल आदमी है, इसलिए कुछ समय तक उसके बारे में सोचो।

(26) नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मुझे झुठलाया है।"

(27) अतः हमने उसकी ओर वह्यी भेजी कि "हमारी निगरानी में और हमारी वह्यी के अनुसार कश्ती बनाओ। फिर जब हमारा आदेश आ जाए और तन्दूर भर जाए तो प्रत्येक प्राणी में से दो जोड़े और अपने परिवार के लोगों को उसमें डाल दो, सिवाय उनके जिनके विरुद्ध आदेश निकल चुका हो। और जिन लोगों ने अत्याचार किया है, उनके विषय में मुझसे न पूछो। वे तो डूबकर मरेंगे।

(28) और जब तुम और तुम्हारे साथी नाव पर सवार हो जाओ तो कहो, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अत्याचारी लोगों से बचाया।"

(29) कह दो कि हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान पर उतरने दे। और तू ही सबसे अच्छा शरण देनेवाला है।

(30) निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं और हम अवश्य ही अपने बन्दों की परीक्षा लेते रहते हैं।

(31) फिर हमने उनके पश्चात् एक और पीढ़ी उत्पन्न की।

(32) और हमने उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम उससे डरते नहीं?"

(33) और उसकी क़ौम के प्रमुख लोगों ने, जिन्होंने इनकार किया और आख़िरत का इनकार किया, जबकि हमने उन्हें सांसारिक जीवन में सुख-सुविधाएँ प्रदान की थीं, कहा, "यह तो तुम्हारे ही जैसा एक मनुष्य है। जो तुम खाते हो, वही खाता है और जो तुम पीते हो, वही पीता है।

(34) और यदि तुम अपने जैसे किसी व्यक्ति की बात मानो तो निश्चय ही तुम घाटे में रहोगे।

(35) क्या वह तुमसे वादा करता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ रह जाओगे तो फिर जीवित किये जाओगे?

(36) बहुत ही दूर की बात है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है!

(37) हमारा सांसारिक जीवन ही शेष है; हम मरते हैं और जीवित रहते हैं, और हमारा पुनरुत्थान नहीं होगा।

(38) वह तो बस एक आदमी है जिसने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है। हम उसपर विश्वास नहीं करेंगे।

(39) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मुझे झुठलाया है।"

(40) अल्लाह ने कहा, "वे शीघ्र ही पछतानेवाले हो जायेंगे।"

(41) फिर उनपर न्याय की आंधी ने कब्ज़ा कर लिया और हमने उन्हें मैल बना दिया। अतः अत्याचारी लोग दूर हो जाएँ।

(42) फिर हमने उनके पश्चात् अन्य नस्लें उत्पन्न कीं।

(43) कोई भी राष्ट्र अपनी समय-सीमा को न तो पहले पूरा कर सकता है, न ही उसमें देरी कर सकता है।

(44) फिर हमने अपने रसूलों को एक के बाद एक भेजा। जब कोई रसूल अपनी क़ौम के पास आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने उन्हें एक-दूसरे के पीछे लगा दिया और उन्हें कहानियाँ बना दिया। तो जो लोग ईमान नहीं लाते, वे दूर हो जाएँ।

(45) फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।

(46) फ़िरऔन और उसके गिरोह की ओर, किन्तु वे बड़े अहंकारी और अहंकारी लोग थे।

(47) उन्होंने कहा, "क्या हम अपने जैसे दो व्यक्तियों पर ईमान लाएँ, जबकि उनकी जातियाँ हमारी दास हैं?"

(48) अतः उन्होंने उनको झुठला दिया और वे विनाश में सम्मिलित हो गये।

(49) और हमने मूसा को किताब प्रदान की, ताकि वे मार्ग पा लें।

(50) और हमने मरयम के बेटे और उसकी माँ को एक निशानी बनाया और उन्हें एक ऊँची ज़मीन में पनाह दी, जिसमें समतल ज़मीन और बहता हुआ पानी था।

(51) ऐ रसूलों! अच्छी चीज़ों से खाओ और अच्छे कर्म करो। निस्संदेह, जो कुछ तुम करते हो, मैं उसे भली-भाँति जानता हूँ।

(52) और निश्चय ही ये तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है और मैं ही तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मुझसे डरो।

(53) किन्तु उन्होंने अपने-अपने मामलों को आपस में ही विभिन्न सम्प्रदायों में बाँट लिया, और प्रत्येक सम्प्रदाय अपने-अपने धन से प्रसन्न था।

(54) अतः तुम उन्हें कुछ समय तक उनकी उलझन में ही छोड़ दो।

(55) क्या वे समझते हैं कि जो कुछ हम उन्हें धन और सन्तान प्रदान करते हैं,

(56) क्या इसलिए कि हम उनके लिए भलाई जल्दी लाते हैं? बल्कि वे समझते नहीं।

(57) जो लोग अपने पालनहार के भय से घबरा गये।

(58) और जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाए।

(59) और जो अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते।

(60) और जो लोग देते हैं, इस दशा में कि उनके दिल डरते हैं कि वे अपने रब की ओर लौटकर जायेंगे।

(61) वे लोग अच्छे कर्मों में शीघ्रता करते हैं और उसमें दूसरों से आगे निकल जाते हैं।

(62) और हम किसी प्राणी को उसके सामर्थ्य के अनुसार ही दायित्व देते हैं और हमारे पास सत्य बोलने वाली पुस्तक है। और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा।

(63) किन्तु उनके दिल इस बात पर उलझन में पड़े हुए हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं, उसके अतिरिक्त उनके और भी कर्म हैं।

(64) यहाँ तक कि जब हम उनके धनवानों को यातना में पकड़ लेंगे, तो वे तुरन्त सहायता के लिए पुकारने लगेंगे।

(65) "आज चिल्लाओ मत। निस्संदेह हमारी ओर से तुम्हें कोई सहायता प्राप्त नहीं होगी।

(66) मेरी आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाई जा चुकी थीं, किन्तु तुम उल्टे पाँव फिर रहे थे।

(67) अहंकार में आकर रात में बातें करते और बुरी बातें कहते हैं।

(68) तो क्या उन्होंने अल्लाह के वचन पर विचार नहीं किया या उनके पास वह चीज़ आ गई जो उनके पूर्वजों के पास नहीं आई थी?

(69) या क्या उन्होंने अपने रसूल को नहीं पहचाना, फिर उसे झुठलाया?

(70) या वे कहते हैं कि "उसमें पागलपन है।" बल्कि वह तो उनके पास सत्य लेकर आया, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग सत्य से घृणा करते हैं।

(71) यदि सत्य उनकी इच्छाओं के पीछे चलता तो आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, सब बिगड़ जाते, बल्कि हम उनके पास उनकी शिक्षा लेकर आये हैं, किन्तु वे अपनी शिक्षा से मुँह मोड़ लेते हैं।

(72) या तुम उनसे पारिश्रमिक माँगते हो? तुम्हारे रब का बदला सबसे अच्छा है और वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।

(73) और तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो।

(74) किन्तु जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे मार्ग से भटक गये।

(75) और यदि हम उनपर दया भी करें और उनसे दुःख दूर कर दें, तो भी वे अपनी अवज्ञा में लगे रहेंगे और अन्धे होकर भटकते रहेंगे।

(76) और हमने उन्हें यातना में पकड़ लिया, किन्तु न तो वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने विनम्रता से प्रार्थना की।

(77) यहाँ तक कि जब हम उनके लिए कठोर यातना का द्वार खोल देंगे, तो वे तुरन्त उसमें निराश होकर पड़ जायेंगे।

(78) और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान, आँख और दिल पैदा किये। फिर तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।

(79) और वही है जिसने तुम्हें धरती में फैलाया और उसी की ओर तुम एकत्र किये जाओगे।

(80) और वही है जो जीवन देता है और मारता है और उसी के लिए रात और दिन का आना-जाना है। तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

(81) बल्कि वे तो वही कहते हैं जो पहले के लोग कहते थे।

(82) उन्होंने कहा, "क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ रह जाएँगे, तो क्या हम पुनः जीवित किये जाएँगे?

(83) हमसे और हमारे पूर्वजों से भी इसी का वादा किया गया है। यह तो केवल पूर्ववर्ती लोगों की कहानियाँ हैं।

(84) कह दो, "यदि तुम जानो तो धरती और उसमें जो कोई है, यह किसका है?"

(85) वे कहेंगे, "अल्लाह के लिए।" कहो, "तो क्या तुम याद नहीं करते?"

(86) कहो, "सात आकाशों का रब और बड़े सिंहासन का रब कौन है?"

(87) वे कहेंगे, "वे अल्लाह के हैं।" कह दो, "तो क्या तुम उससे डरते नहीं?"

(88) कह दो, "किसके हाथ में है सारे राज्य का शासन? और वह रक्षा करता है, जबकि कोई उससे रक्षा नहीं कर सकता। यदि तुम जानो?"

(89) वे कहेंगे, "सब कुछ अल्लाह का है।" कहो, "फिर तुम कहाँ धोखे में पड़े हो?"

(90) बल्कि हमने उनके पास सत्य पहुँचा दिया, और वे झूठे हैं।

(91) अल्लाह ने कोई पुत्र नहीं बनाया और न उसके साथ कोई पूज्य-प्रभु हुआ है। यदि कोई होता तो प्रत्येक पूज्य-प्रभु जो कुछ पैदा करता, उसे ले लेता और कोई न कोई दूसरे पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता। निश्चय ही अल्लाह उससे महान है, जो कुछ वे वर्णन करते हैं।

(92) वह परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाला है। वह उच्च है उससे, जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(93) कह दो, "ऐ मेरे रब! यदि तू मुझे वह चीज़ दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है,

(94) अतः मेरे रब! मुझे अत्याचारी लोगों में न डाल।

(95) और हम तुम्हें वह दिखाने में समर्थ हैं, जिसका वादा हमने उनसे किया था।

(96) बुराई को उससे दूर करो जो उत्तम है। जो कुछ वे वर्णन कर रहे हैं, हम उससे भली-भाँति परिचित हैं।

(97) कह दो, "ऐ मेरे रब! मैं शैतानों की भड़काहट से तेरी शरण चाहता हूँ।

(98) और मैं तेरी शरण चाहता हूँ, मेरे पालनहार! कि वे मेरे पास उपस्थित न हों।

(99) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आ जाती है तो वह कहता है कि हे मेरे पालनहार! मुझे लौटा दे।

(100) ताकि जो कुछ मैं पीछे छोड़ आया हूँ उसमें अच्छा काम करूँ। कदापि नहीं, वह तो बस एक बात कह रहा है। और उनके पीछे एक बाधा है, उस दिन तक के लिए जब वे पुनः जीवित किये जायेंगे।

(101) फिर जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो उस दिन उनमें कोई रिश्तेदारी न रहेगी और न वे एक-दूसरे के विषय में कुछ पूछेंगे।

(102) फिर जिनके पलड़े भारी होंगे, वही सफल होंगे।

(103) किन्तु जिनके पलड़े हल्के हैं, वही लोग अपने प्राणों से वंचित हो गये, और वे सदैव नरक की आग में रहेंगे।

(104) आग उनके चेहरों को जला डालेगी और वे उसमें मुँह बनाए रहेंगे।

(105) "क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई गईं, फिर भी तुम उन्हें झुठलाते रहे?"

(106) वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हम पर हमारा दुर्भाग्य आ पड़ा और हम भटके हुए लोग थे।

(107) ऐ हमारे रब! हमें उससे दूर कर दे। यदि हम फिर जाएँ तो निश्चय ही अत्याचारी होंगे।

(108) वह कहेगा, "तुम उसमें अपमानित होकर रहो और मुझसे बात न करो।"

(109) मेरे बन्दों में से एक गिरोह ने कहा कि ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आये। अतः हमें क्षमा कर और हमपर दया कर। और तू ही सबसे अधिक दयावान है।

(110) किन्तु तुमने उनका उपहास किया, यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उनपर हँसने लगे।

(111) निश्चय ही मैंने आज उन्हें उनके धैर्य का प्रतिफल दिया है। वे ही सफल होनेवाले हैं।

(112) वह कहेगा, "तुम धरती में कितने वर्ष रहे?"

(113) वे कहेंगे, "हम एक दिन या एक दिन का कुछ भाग बचे रहे। तो उनसे पूछ लो जो गिनती करते हैं।"

(114) वह कहेगा, "तुम थोड़े ही ठहरे, यदि तुम जानते होते।

(115) तो क्या तुमने यह समझ लिया था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर कभी लौटकर नहीं आओगे?

(116) अतः महान है अल्लाह, वह प्रभुत्वशाली, सत्य है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वह सिंहासन का स्वामी है।

(117) और जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य पूज्य को पुकारे, जिसका उसके पास कोई प्रमाण न हो, तो उसका हिसाब तो उसके रब के पास है। निश्चय ही इनकार करनेवाले सफल नहीं होंगे।

(118) कह दो, "ऐ मेरे रब! क्षमा कर और दया कर। और तू ही सबसे अधिक दयावान है।"

सूरा 24: **ٱلنُّور (अन-नूर)** - द लाइट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) यह एक सूरा है जिसे हमने अवतरित किया और अनिवार्य ठहराया और हमने इसमें स्पष्ट निशानियाँ अवतरित कीं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

(2) और व्यभिचारिणी और व्यभिचारी दोनों को सौ-सौ कोड़े मारो, और यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो, तो उन पर दया करना तुम्हें अल्लाह के धर्म से न रोके और ईमान वालों का एक गिरोह उनकी यातना का साक्षी बने।

(3) व्यभिचारी किसी व्यभिचारिणी या मूर्तिपूजक के अतिरिक्त किसी से विवाह नहीं करता, और व्यभिचारिणी से भी कोई विवाह नहीं करता, सिवाय व्यभिचारी या मूर्तिपूजक के। यह ईमान वालों पर हराम किया गया है।

(4) और जो लोग पाकदामन स्त्रियों पर आरोप लगाएँ और चार गवाह न लाएँ, तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनसे कभी गवाही न लो। और वही लोग अवज्ञाकारी हैं।

(5) परन्तु जो लोग इसके पश्चात् तौबा कर लें और सुधार कर लें, निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(6) और जो लोग अपनी पत्नियों पर दोष लगाते हैं, और उनके पास स्वयं उनके अतिरिक्त कोई गवाह नहीं होता, तो उनमें से एक की गवाही चार गवाहियाँ होंगी, अल्लाह की कि वह सच्चा है।

(7) और पाँचवी यह कि यदि वह झूठा हो तो उसपर अल्लाह की लानत हो।

(8) किन्तु यदि वह चार बार अल्लाह की शपथ लेकर यह गवाही दे कि वह झूठा है, तो इससे उस पर अज़ाब नहीं पड़ेगा।

(9) और पाँचवी यह कि यदि वह सच्चा हो तो अल्लाह का प्रकोप उसपर हो।

(10) और यदि तुमपर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता न होती तो... निस्संदेह अल्लाह तौबा स्वीकार करनेवाला, तत्वदर्शी है।

(11) निश्चय ही जो लोग झूठ लेकर आए वे तुममें से एक गिरोह हैं। इसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए पाप के कारण उसका जो भाग है, वह है। और जिसने उसका अधिक भाग अपने ऊपर ले लिया, उसके लिए बड़ी यातना है।

(12) जब तुमने उसे सुना तो ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ अपने-अपने को अच्छा क्यों न समझने लगे और कहने लगे कि यह तो खुला झूठ है?

(13) उन्होंने चार गवाह क्यों न पेश किये? और जब वे गवाह पेश न करें तो अल्लाह के निकट वे ही झूठे हैं।

(14) और यदि तुमपर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दयालुता संसार और आख़िरत में न होती तो तुमपर उस झूठ के कारण बड़ी यातना पड़ती जिसमें तुम फँसे हुए थे।

(15) जबकि तुमने उसे अपनी ज़बानों से ग्रहण किया और अपने मुँह से वह कहा जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान न था और तुमने उसे तुच्छ समझा, हालाँकि वह अल्लाह के निकट अत्यन्त भारी था।

(16) और जब तुमने उसे सुना तो क्यों न कहा कि इस विषय में बात करना हमारे अधिकार में नहीं है। तू पवित्र है, यह तो बहुत बड़ी बदनामी है।

(17) अल्लाह तुम्हें डराता है कि यदि तुम ईमानवाले हो तो कभी भी ऐसी हरकतों की ओर न लौटो।

(18) अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोल खोलकर बयान करता है और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(19) जो लोग चाहते हैं कि यह व्यभिचार ईमानवालों में फैला दिया जाए, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दुखद यातना है। अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

(20) और यदि तुमपर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दया न होती, और अल्लाह अत्यन्त दयावान है।

(21) ऐ ईमान लाने वालों! शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। और जो शैतान के पदचिन्हों पर चलेगा, तो वही व्यभिचार और अत्याचार का आदेश देता है। और यदि तुमपर अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दया न होती तो तुममें से कोई कभी पवित्र न होता। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र कर देता है। और अल्लाह सुननेवाला, जाननेवाला है।

(22) और तुममें से जो लोग नेक और मालदार हैं, वे क़सम न खाएँ कि अल्लाह के मार्ग में अपने रिश्तेदारों, मुहताजों और मुहताजों की मदद न करेंगे, बल्कि उन्हें चाहिए कि वे क्षमा करें और अनदेखी करें। क्या तुम नहीं चाहोगे कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे? निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(23) जो लोग पवित्र, अज्ञानी और ईमानवाली स्त्रियों पर झूठा आरोप लगाते हैं, वे संसार और आख़िरत में धिक्कार किये गये हैं और उनके लिए बड़ी यातना है।

(24) जिस दिन उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनके पैर उनके विरुद्ध गवाही देंगे कि वे क्या करते रहे हैं।

(25) उस दिन अल्लाह उन्हें उनका सच्चा बदला अवश्य देगा और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही प्रत्यक्ष सत्य है।

(26) बुरी स्त्रियाँ बुरे पुरुषों के लिए हैं और बुरे पुरुष बुरी स्त्रियों के लिए हैं और अच्छी स्त्रियाँ अच्छे पुरुषों के लिए हैं और अच्छे पुरुष अच्छी स्त्रियों के लिए हैं। वे लोग जो कुछ निन्दक कहते हैं उससे निर्दोष हैं। उनके लिए क्षमा और उत्तम जीविका है।

(27) ऐ ईमान वालो! अपने घरों के अलावा किसी दूसरे घर में प्रवेश न करो, जब तक कि तुम स्वागत न कर लो और उनके निवासियों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए अच्छा है। शायद तुम्हें शिक्षा दी जाए।

(28) और यदि तुम किसी को उसमें न पाओ तो वहाँ प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें अनुमति न दे दी जाए। और यदि तुमसे कहा जाए कि "वापस लौट जाओ" तो लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र है। और अल्लाह जानता है कि तुम क्या करते हो।

(29) यदि तुम उन घरों में प्रवेश करो जो तुम्हारे लिए सुविधाजनक हों, तो तुमपर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।

(30) ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। यही उनके लिए ज़्यादा पाक है। निस्संदेह अल्लाह उनसे ख़बर रखता है जो कुछ वे करते हैं।

(31) और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपने शर्मीले अंगों की रक्षा करें और अपने श्रृंगार को केवल उसी के सामने प्रकट न करें जो उनके प्रत्यक्ष होने का कारण हो और अपने बुर्के को अपने सीने पर लपेट लें और अपने श्रृंगार को केवल अपने पतियों, अपने पिताओं, अपने पतियों के पिताओं, अपने बेटों, अपने पतियों के बेटों, अपने भाइयों, अपने भाइयों के बेटों, अपनी बहनों के बेटों, अपनी स्त्रियों, अपने दाहिने हाथों के अंगों, या उन पुरुषों के सामने जो शारीरिक इच्छा नहीं रखते, या उन बच्चों के सामने प्रकट न करें जो अभी स्त्रियों के शर्मीले अंगों से परिचित नहीं हैं। और वे अपने श्रृंगार में से जो कुछ छिपाते हैं उसे प्रकट करने के लिए अपने पैर न पटकें। और ऐ ईमानवालो, तुम सब लोग तौबा करके अल्लाह की ओर लौट आओ, ताकि तुम सफल हो सको।

(32) और अपने अविवाहितों से और अपने दास-दासियों में से भले लोगों से विवाह कर लो। यदि वे निर्धन हों तो अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह से समृद्ध कर देगा। और अल्लाह अत्यन्त व्यापक, सर्वज्ञ है।

(33) लेकिन जो लोग विवाह न कर सकें वे रुक जाएँ, यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह से समृद्ध कर दे। और जो लोग तुम्हारे हाथों में से किसी से अनुबंध चाहते हैं, तो यदि तुम जानते हो कि उनमें भलाई है तो उनसे अनुबंध कर लो और अल्लाह के उस माल में से जो उसने तुम्हें दिया है उन्हें दे दो। और अपनी दासियों को वेश्यावृत्ति के लिए विवश न करो, यदि वे सांसारिक जीवन के लाभ के लिए पवित्रता चाहती हों। और यदि कोई उन्हें विवश करे तो निश्चय ही अल्लाह उनके विवश होने के पश्चात अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(34) और हमने तुम्हारी ओर स्पष्ट आयतें और उदाहरण अवतरित किए हैं, उन लोगों के द्वारा जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। और यह नसीहत है उन लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते हैं।

(35) अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है। उसके प्रकाश की मिसाल एक आले की तरह है जिसके भीतर एक दीपक है। वह दीपक शीशे के भीतर है। शीशा मानो एक चमकता हुआ तारा है जो किसी मुबारक जैतून के पेड़ से प्रकाशित हो रहा है, जो न तो पूरब का है और न पश्चिम का। उसका तेल आग से भी अछूता रहता है। प्रकाश पर प्रकाश। अल्लाह जिसे चाहता है अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखाता है। और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(36) अल्लाह ने घरों में ऐसे आले बनाए हैं जिनके बनाए जाने का आदेश दिया है और ताकि उनमें उसका नाम लिया जाए, और सुबह और शाम को उनमें उसकी तसबीह की जाए।

(37) वे लोग हैं जिन्हें न तो व्यापार और न ही क्रय-विक्रय अल्लाह की याद, नमाज़ और ज़कात से विचलित कर सकता है। वे उस दिन से डरते हैं, जिसमें दिल और आँखें उलट जाएँगी।

(38) ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कर्मों के अनुसार बदला दे और अपने अनुग्रह से उन्हें और बढ़ाए। और अल्लाह जिसे चाहता है बिना हिसाब के रोज़ी देता है।

(39) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, उनके कर्म उस मृगतृष्णा के समान हैं, जिसे प्यासा व्यक्ति पानी समझता है, फिर जब उसके पास पहुँचता है तो पाता है कि वह कुछ नहीं है, परन्तु अल्लाह को अपने सामने पाता है, फिर वह उसे उसका पूरा-पूरा हक़ देगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

(40) या वे उस अथाह सागर के समान हैं जो लहरों से ढका हुआ है, उस पर लहरें हैं, उस पर बादल हैं, अँधेरे हैं, कुछ बादल दूसरे पर हैं। जब कोई अपना हाथ बढ़ाता है तो उसे मुश्किल से दिखाई देता है। और जिसे अल्लाह ने प्रकाश न दिया हो, उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।

(41) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह की तसबीह वह सब लोग करते हैं जो आकाशों और धरती में हैं और पक्षी भी जो पंख फैलाए हुए हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी नमाज़ और तसबीह को जानता है और अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं।

(42) और अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती का राज्य और अल्लाह ही की ओर पहुँचना है।

(43) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को चलाता है? फिर उन्हें इकट्ठा करता है, फिर उनका एक समूह बनाता है, फिर तुम देखते हो कि उनमें से वर्षा निकलती है। और वह आकाश से पहाड़ बरसाता है, जिनमें ओले हैं, फिर उनसे जिसे चाहता है मार डालता है और जिससे चाहता है रोक देता है। उसकी बिजली की चमक से तो लगभग आँखों की रोशनी चली जाती है।

(44) अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है, निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए शिक्षा है जो दृष्टि रखते हैं।

(45) और अल्लाह ने हर एक जीवधारी को जल से पैदा किया है। उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, उनमें से कुछ दो पैरों पर चलते हैं और उनमें से कुछ चार पैरों पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(46) हमने स्पष्ट आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है।

(47) किन्तु वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम आज्ञापालन करते हैं, फिर उनमें से एक गिरोह इसके बाद भी मुँह फेर लेता है, और वे लोग ईमान वाले नहीं हैं।

(48) और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है कि वह उनके बीच फ़ैसला कर दे, तो उनमें से एक गिरोह तुरन्त मुँह फेर लेता है।

(49) किन्तु यदि उनका अधिकार उनके हाथ में है तो वे उसके पास आज्ञाकारी होकर आते हैं।

(50) क्या उनके दिलों में रोग है? या उन्होंने संदेह किया है? या उन्हें डर है कि अल्लाह या उसका रसूल उनपर अत्याचार करेगा? बल्कि वे ही अत्याचारी हैं।

(51) जब ईमानवाले अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएँ कि वह उनके बीच फ़ैसला कर दे, तो उनका कथन यही है कि वे कहते हैं, "हमने सुना और मान लिया।" और वही लोग सफल होनेवाले हैं।

(52) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे और अल्लाह से डरे और उससे डरे, तो वही लोग सफल होंगे।

(53) और वे अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़सम खाते हैं कि यदि तुम उन्हें आदेश दोगे तो अवश्य निकल पड़ेंगे। कह दो, "क़सम न खाओ। आज्ञाकारिता तो सर्वविदित है। निस्संदेह अल्लाह उससे परिचित है जो कुछ तुम करते हो।"

(54) कह दो, "अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो। फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो उस पर तो बस वही दायित्व है जो उस पर है और तुम पर वही दायित्व है जो तुम पर है। यदि तुम उसकी आज्ञा मानोगे तो मार्ग पा जाओगे। और रसूल पर तो बस स्पष्ट सूचना देने का दायित्व है।"

(55) तुममें से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनसे अल्लाह ने वादा किया है कि वह उन्हें धरती में उत्तराधिकार प्रदान करेगा, जैसा कि उनसे पहले वालों को प्रदान किया था और वह उनके लिए उनका धर्म स्थापित करेगा, जिसे उसने उनके लिए प्राथमिकता दी है और वह उनके डर के पश्चात उनके लिए निश्चिन्तता का स्थान ले लेगा, क्योंकि वे मेरी बन्दगी करते हैं और मेरे साथ किसी को साझी नहीं ठहराते। फिर जो इसके पश्चात भी इनकार करेगा, वही लोग अवज्ञाकारी हैं।

(56) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रसूल की आज्ञा मानो, ताकि तुमपर दया की जाए।

(57) यह कदापि न समझो कि इनकार करनेवाले लोग धरती में अधर्म का कारण बन रहे हैं। उनका ठिकाना आग है और वह बुरी जगह है।

(58) ऐ तुम जो ईमान लाए हो! तुम्हारे जो लोग तुम्हारे दाहिने हाथों के अधीन हैं और जो लोग अभी तुम्हारे बीच में यौवन को नहीं पहुँचे हैं, वे तुमसे तीन समयों में प्रवेश करने की अनुमति माँगें: प्रातः की नमाज़ से पहले, और जब तुम दोपहर को अपने वस्त्र उतारते हो, और रात की नमाज़ के बाद। ये तुम्हारे लिए तीन समय हैं। इनके बाद न तुम पर कोई दोष है और न उन पर, क्योंकि वे तुम्हारे बीच लगातार आते-जाते रहते हैं - तुममें से कुछ दूसरे लोगों के बीच। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट करता है, और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(59) और जब तुम्हारे बच्चे वयस्क हो जाएँ तो उन्हें अनुमति माँगनी चाहिए, जैसा कि उनके पहले के बच्चों ने किया था। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(60) और जो स्त्रियाँ प्रसव-पूर्व हो चुकी हैं और विवाह की आशा नहीं रखतीं, उन पर कोई दोष नहीं कि वे अपने वस्त्र उतार दें, किन्तु श्रृंगार न करें, परन्तु उनके लिए संयम रखना ही अच्छा है। और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

(61) न अंधे पर कोई बाध्यता है, न लंगड़े पर, न बीमार पर, न तुम पर जब तुम अपने घरों से खाओ, या अपने पिता के घरों से, या अपनी माताओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचा के भाइयों के घरों से, या अपनी चचेरी बहनों के घरों से, या अपनी माँ के भाइयों के घरों से, या अपनी माँ की बहनों के घरों से, या उन घरों से जिनकी कुंजियाँ तुम्हारे पास हैं, या अपने मित्र के घर से, तो तुमपर कोई दोष नहीं कि तुम एक साथ खाओ या अलग-अलग। परन्तु जब तुम घरों में प्रवेश करो तो एक-दूसरे को अल्लाह की ओर से शुभ सलाम कहो। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट करता है, ताकि तुम समझ सको।

(62) ईमान वाले तो बस वे लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और जब किसी काम से उससे मिलें तो उससे अनुमति लेने तक वहाँ से न हटें। जो लोग तुमसे अनुमति माँगते हैं, वही लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं। अतः जब वे तुमसे अपने किसी काम के लिए अनुमति माँगें तो उनमें से जिसे चाहो अनुमति दे दो और अल्लाह से उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(63) और तुम आपस में रसूल की पुकार को एक दूसरे की पुकार न बनाओ। अल्लाह तुममें से उन लोगों को जानता है जो दूसरों के द्वारा छिपकर निकल जाते हैं। अतः जो लोग उसके आदेश से असहमत होते हैं, वे डरें कि कहीं उन्हें कोई फितना न आ पड़े या कोई दुखद यातना न आ जाए।

(64) निस्संदेह अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में है। वह जानता है कि तुम जिस पर खड़े हो, और वह दिन भी जानता है जब वे उसकी ओर लौटाए जाएँगे। और वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया है। और अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

# सूरा 25: **ٱلْفُرْقَان‎ (अल-फुरकान)** - भेदभाव

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) बहुत बरकत वाला है वह, जिसने अपने बन्दे पर विवेक उतारा, ताकि वह सारे संसार के लिए सचेत करनेवाला हो।

(2) वही है जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है, और उसने न किसी को अपना पुत्र बनाया और न अपने राज्य में किसी को साझी बनाया, उसी ने हर चीज़ पैदा की और उसका ठीक-ठीक क्रम रखा।

(3) फिर भी उन्होंने उसके अतिरिक्त ऐसे देवता बना लिए हैं जो कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकते, बल्कि वे स्वयं उत्पन्न किए गए हैं, जिनमें न तो कोई हानि है, न कोई लाभ, और न ही उनमें मृत्यु, न जीवन और न ही पुनरुत्थान का अधिकार है।

(4) और जिन लोगों ने सत्य को झुठलाया, वे कहते हैं कि यह तो बस एक झूठ है, जिसे उसने गढ़ा और दूसरों ने भी इसमें उसकी सहायता की। निस्संदेह उन्होंने अन्याय और झूठ किया है।

(5) और वे कहते हैं, "ये प्राचीन लोगों की कहानियाँ हैं, जो उसने लिख ली थीं और वे उसे सुबह-शाम सुनाई जाती हैं।"

(6) कह दो, "जो आकाशों और धरती का रहस्य जानता है, उसी ने उसे उतारा है। निस्संदेह, वही अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(7) और वे कहते हैं, "यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है? इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया जो इसके साथ सचेत करनेवाला होता?

(8) या इस कारण कि उसे कोई ख़जाना या बाग़ नहीं दिया गया जिससे वह खाए?" और ज़ालिम कहते हैं, "तुम तो बस एक ऐसे आदमी का अनुसरण कर रहे हो जो जादू में पड़ा हुआ है।"

(9) देखो, वे तुम्हारे सामने कैसी-कैसी दृष्टान्त-कथाएँ प्रस्तुत करते हैं, किन्तु वे भटक गए हैं और मार्ग नहीं पाते।

(10) बहुत ही बरकतवाला है वह, जो चाहे तो तुम्हें इससे भी अच्छी चीज़ दे - ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिए महल बनाए।

(11) किन्तु उन्होंने क़ियामत को झुठला दिया और जिन लोगों ने क़ियामत को झुठलाया, उनके लिए हमने भड़कती हुई ज्वाला तैयार कर रखी है।

(12) जब वह उन्हें दूर से देखेगा, तो वे उसकी भयंकर दहाड़ और कराह सुनेंगे।

(13) और जब वे उसके किसी तंग स्थान में जंजीरों से जकड़े हुए डाल दिये जायेंगे, तो वहाँ विनाश का आह्वान करेंगे।

(14) "आज केवल एक विनाश का आह्वान मत करो, बल्कि अनेक विनाशों का आह्वान करो!"

(15) कह दो, "क्या यह अच्छा है या सदा का जन्नत, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है? वह उनके लिए प्रतिफल और अंतिम ठिकाना है।"

(16) वहाँ उन्हें वह मिलेगा जो वे चाहेंगे और वे उसमें सदैव रहेंगे। यह तुम्हारे रब की ओर से वादा है जिसे वह पूरा करेगा।

(17) और जिस दिन वह उन्हें उन चीज़ों के साथ इकट्ठा करेगा जिनकी वे अल्लाह के सिवा पूजा करते रहे हैं, तो कहेगा, "क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह कर दिया था या वे मार्ग से भटक गए हैं?"

(18) वे कहेंगे, "पवित्र है तू! हमें तेरे अतिरिक्त किसी अन्य को संरक्षक बनाने का अधिकार नहीं था। किन्तु तूने उन्हें और उनके पूर्वजों को सुख-सुविधाएँ प्रदान कीं, यहाँ तक कि वे स्मरण को भूल गए और भटके हुए लोग हो गए।"

(19) "उन्होंने तुम्हारी बातों को झुठला दिया। अतः न तो तुम टाल सकोगे और न तुम्हारी कोई सहायता की जाएगी।" और तुममें से जो कोई अन्याय करेगा, उसे हम बड़ी यातना का मज़ा चखाएँगे।

(20) और हमने तुमसे पहले भी कोई रसूल नहीं भेजा जो न तो खाना खाते थे और न बाज़ारों में चलते-फिरते थे। और हमने तुममें से एक को दूसरे के लिए परीक्षा बना दिया। तो क्या तुम उन्हें बर्दाश्त करोगे? और तुम्हारा रब सब कुछ देखनेवाला है।

(21) और जो लोग हमारी मुलाक़ात की आशा नहीं रखते, वे कहते हैं कि "हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं भेजे जाते या हम अपने रब को क्यों नहीं देखते?" निस्संदेह वे अपने दिलों में बहुत घमंडी हैं और हद से आगे बढ़ गए हैं।

(22) जिस दिन वे फ़रिश्तों को देख लेंगे, अपराधियों के लिए कोई शुभ सूचना न होगी और वे कहेंगे, "कोई ऐसी सीमा हो जिसे पार न किया जा सके।"

(23) और जो कर्म उन्होंने किये हैं, उनकी ओर हम अवश्य पलटेंगे और उन्हें मिट्टी में मिला देंगे।

(24) उस दिन जन्नत वालों के लिए सबसे अच्छा ठिकाना और सबसे सुंदर विश्राम स्थल होगा।

(25) जिस दिन आकाश बादलों से फट जाएगा और फ़रिश्ते एक के बाद एक उतारे जायेंगे।

(26) उस दिन सच्चा राज्य अत्यन्त दयावान अल्लाह का होगा और वह इनकार करनेवालों के लिए बड़ा कठिन दिन होगा।

(27) और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ काटेगा तो कहेगा कि काश! मैं भी रसूल के साथ राह पर चलता!

(28) काश, मैंने ऐसे व्यक्ति को अपना मित्र न बनाया होता!

(29) उसने मुझे उस स्मरण से भटका दिया, जबकि वह मेरे पास आ चुका था। और शैतान तो मनुष्य का विश्वासघाती है।

(30) और रसूल कहेगा, "ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ दिया है।"

(31) इसी प्रकार हमने प्रत्येक नबी के लिए अत्याचारियों में से शत्रु नियुक्त कर दिए हैं। किन्तु तुम्हारा रब ही मार्गदर्शक और सहायक के रूप में पर्याप्त है।

(32) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं कि "उस पर क़ुरआन एक साथ क्यों नहीं उतारा गया?" ताकि हम उसके द्वारा तुम्हारे दिलों को मज़बूत करें और हमने उसे धीरे-धीरे पढ़कर सुनाया है।

(33) और वे तुम्हारे पास कोई उदाहरण लेकर नहीं आएँगे, परन्तु हम तुम्हारे पास सत्य और उत्तम व्याख्या लेकर आएँ।

(34) जो लोग जहन्नम की ओर एकत्र होंगे, उनके लिए सबसे बुरा स्थान होगा और वे मार्ग से सबसे अधिक भटके हुए होंगे।

(35) और हमने मूसा को किताब प्रदान की और उसके भाई हारून को उसका सहायक बनाया।

(36) और हमने कहा, "उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया।" फिर हमने उन्हें पूर्णतः विनष्ट कर दिया।

(37) और जब नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया तो हमने उन्हें डुबा दिया और उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया और ज़ालिमों के लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(38) और आद, समूद, रस्स के वासी और उनके बहुत से वंश भी।

(39) हमने उनमें से प्रत्येक के लिए उदाहरण प्रस्तुत किये, फिर हमने उन्हें विनष्ट कर दिया।

(40) और वे उस नगर से होकर गुज़रे जिस पर बुरी वर्षा हुई, क्या उन्होंने उसे नहीं देखा? निश्चय ही वे उसके पुनः जीवित होने की आशा नहीं रखते।

(41) और जब वे तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा उपहास करते हैं और कहते हैं, "क्या यह वही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

(42) यदि हम अपने पूज्यों पर दृढ़ न रहते, तो वह हमें उनसे भटका देता। किन्तु जब वे यातना देखेंगे, तो शीघ्र ही जान लेंगे कि मार्ग से सबसे अधिक भटकनेवाला कौन है।

(43) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा है जो अपनी इच्छा को ही अपना पूज्य बना लेता है, तो क्या तुम उसका संरक्षक बनोगे?

(44) क्या तुम समझते हो कि उनमें से अधिकतर सुनते या समझते हैं? वे तो बस चौपायों के समान हैं, वास्तव में वे और भी अधिक भटक गये हैं।

(45) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारा रब छाया को कैसे फैलाता है? यदि वह चाहता तो उसे स्थिर कर देता। फिर हमने सूर्य को उसका मार्गदर्शक बनाया।

(46) फिर हम उसे धीरे-धीरे अपनी ओर एकत्रित कर लेंगे।

(47) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को ओढ़नी और नींद को विश्राम बनाया और दिन को जागरण बनाया।

(48) और वही है जिसने अपनी दयालुता के प्रतीक के रूप में हवाएँ भेजीं और हमने आकाश से स्वच्छ जल बरसाया।

(49) ताकि इसके द्वारा हम एक मृत भूमि को पुनर्जीवित कर सकें और जो हमने बनाया है उसकी प्यास बुझा सकें: पशुधन और कई पुरुष।

(50) और हमने उसे उनके बीच बाँट दिया है, ताकि वे सोच-विचार करें। किन्तु अधिकतर लोग तो केवल कृतघ्नता का इनकार करते हैं।

(51) यदि हम चाहते तो प्रत्येक नगर में एक सचेत करनेवाला भेज देते।

(52) अतः तुम इनकार करनेवालों की बात न मानो, बल्कि इसी (क़ुरआन) के द्वारा उनसे बड़ी लड़ाई लड़ो।

(53) और वही है जिसने दो सागरों को एक साथ मिला दिया। एक मीठा और एक सुहाना, और एक खारा और एक कड़वा। और उनके बीच एक बाधा और एक दुर्गम रुकावट बना दी।

(54) और वही है जिसने मनुष्य को पानी से पैदा किया और उसे नातेदारी और सम्बन्धी बनाया और तुम्हारा पालनहार प्रभुत्वशाली है।

(55) किन्तु वे अल्लाह से हटकर ऐसी चीज़ की बन्दगी करते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकती है और न हानि पहुँचा सकती है। और इनकार करनेवाला अपने रब के विरुद्ध सहयोगी है।

(56) और हमने तुम्हें शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर ही भेजा है।

(57) कह दो, "मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, परन्तु जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग अपना ले।"

(58) और उस जीवित पर भरोसा रखो जो कभी नहीं मरता और उसकी प्रशंसा से उसकी स्तुति करो। वह अपने बन्दों के पापों से भली-भाँति परिचित है।

(59) वही है जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ, वह अत्यन्त दयावान है। अतः उससे पूछो जो उसके विषय में ज्ञान रखता हो।

(60) और जब उनसे कहा जाता है कि "अत्यंत दयावान को सजदा करो" तो वे कहते हैं, "अत्यंत दयावान क्या है? क्या हम उसी को सजदा करें जिसका आदेश तूने हमें दिया है?" और इससे तो उनकी घृणा और बढ़ जाती है।

(61) बहुत ही शुभ है वह व्यक्ति जिसने आकाश में तारागण बनाए और उनमें एक दीपक (सूर्य) और एक प्रकाशमान चन्द्रमा रखा।

(62) और वही है जिसने रात और दिन को क्रम-क्रम से बनाया है, उसके लिए जो कोई चाहे कि स्मरण करे या कृतज्ञता दर्शाना चाहे।

(63) और रहमान के बन्दे वे हैं जो धरती में विनम्रता से चलते हैं और जब अज्ञानी उनसे पूछते हैं तो कहते हैं कि "सलाम हो।"

(64) और जो लोग रात को सजदा करते हुए और अपने पालनहार के सामने खड़े होकर बिताते हैं।

(65) और जो लोग कहते हैं कि "ऐ हमारे पालनहार! हमसे जहन्नम की यातना दूर कर दे। निस्संदेह उसकी यातना सदैव बनी रहने वाली विनाश है।"

(66) वास्तव में, यह रहने और ठहरने के लिए बहुत ही ख़राब जगह है।"

(67) और जो लोग जब ख़र्च करते हैं तो न तो फिजूलखर्ची करते हैं और न कंजूसी करते हैं, बल्कि वे बीच में हैं।

(68) और जो लोग अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को नहीं पुकारते और न उस आत्मा को मारते हैं जिसे अल्लाह ने पवित्र ठहराया है, परन्तु न्याय के कारण नहीं और न व्यभिचार करते हैं, तो जो कोई ऐसा करेगा, वही दण्ड के योग्य है।

(69) क़ियामत के दिन उसकी यातना दोगुनी कर दी जाएगी और वह उसमें सदैव अपमानित रहेगा।

(70) परन्तु जो लोग तौबा कर लें, ईमान लाएँ और अच्छे कर्म करें, अल्लाह उनके बुरे कर्मों को भलाई में बदल देगा, और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(71) और जो व्यक्ति तौबा कर ले और अच्छे कर्म करे, तो वह अल्लाह की ओर तौबा कर लेता है।

(72) और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते और जब व्यर्थ की बातों से गुज़र जाते हैं तो गौरव से गुज़र जाते हैं।

(73) और जो लोग हैं, जब उन्हें उनके पालनहार की आयतों से सावधान कर दिया जाता है, तो वे उनपर अन्धे और बहरे नहीं हो जाते।

(74) और जो लोग कहते हैं कि "ऐ हमारे रब! हमें हमारी पत्नियों से और हमारी संतान से हमारी आँखों में प्रसन्नता प्रदान कर और हमें डर रखनेवालों का मार्ग दिखा।"

(75) उन्हें उनके धैर्य के बदले में उच्च कोठरियाँ प्रदान की जाएँगी और वहाँ उनका स्वागत सलाम और सलाम के साथ किया जाएगा।

(76) वे सदैव वहीं रहेंगे। क्या ही उत्तम निवास और निवास स्थान है वह!

(77) कह दो, "यदि तुम दुआ न करते तो मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता। तुमने झुठलाया है। अब शीघ्र ही यातना आनी है।"

# सूरा 26: ٱلشُّعَرَاء‎ (अश-शुअरा') - कवि

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) ता सीन मीम.

(2) ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

(3) शायद तुम दुःख से ग्रस्त हो जाओगे क्योंकि वे विश्वास नहीं करते।

(4) यदि हम चाहें तो उनपर आकाश से कोई निशानी उतार दें, जिससे उनकी गर्दनें झुक जाएँ।

(5) किन्तु उनके पास अत्यंत दयावान की ओर से कोई अनुस्मरण (सिखाई) नहीं आती, परन्तु वे उससे मुँह फेर लेते हैं।

(6) उन्होंने झुठलाया, किन्तु शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे किस बात का उपहास कर रहे थे।

(7) क्या वे नहीं देखते कि हमने पृथ्वी पर पौधों की कितनी उत्तम प्रजातियाँ उगाई हैं?

(8) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उस पर ईमान नहीं लाते।

(9) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(10) याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि अत्याचार करनेवालों के पास जाओ।

(11) फ़िरऔन की क़ौम के पास। क्या वे अल्लाह से नहीं डरते?

(12) मूसा ने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे।

(13) मेरी छाती भारी हो गई है और मेरी जीभ थक गई है; इसलिए हारून को मेरे साथ भेजो।

(14) उन्होंने मुझ पर भी अभियोग लगाया है, और मुझे डर है कि वे मुझे मार डालेंगे।”

(15) अल्लाह ने कहा, "नहीं! तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ। हम तुम्हारी बात सुनते हुए तुम्हारे साथ हैं।

(16) फ़िरऔन के पास जाओ और कहो, "हम सारे संसार के रब के भेजे हुए हैं।

(17) इसराइल की संतान को हमारे साथ जाने दो।'"

(18) फ़िरऔन ने कहा, "क्या हमने तुझे बचपन से ही अपने बीच में नहीं पाला? और क्या तू अपने जीवन के कई वर्ष हमारे बीच में नहीं रहा?

(19) फिर भी तुमने यह काम किया है जो तुमने किया है, और तुम कृतघ्नों में से एक हो।"

(20) मूसा ने उत्तर दिया, "मैंने यह तब किया था जब मैं खोए हुए लोगों के बीच था।

(21) अतः मैं डरकर तुम्हारे पास से भाग गया; किन्तु मेरे रब ने मुझे बुद्धि प्रदान की और मुझे रसूलों में से बना दिया।

(22) और तुम मुझ पर इसी उपकार का आरोप लगाते हो कि तुमने इसराइल की संतान को गुलाम बना लिया है?"

(23) फ़िरऔन ने पूछा, "और सारे संसार का पालनहार कौन है?"

(24) मूसा ने कहा, "हे आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब! यदि तुम ईमान लाओ।"

(25) फ़िरऔन ने अपने आस-पास के लोगों से कहा, "क्या तुम नहीं सुनते?"

(26) मूसा ने कहा, "वह तुम्हारा रब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब है।"

(27) फ़िरऔन ने कहा, "जो रसूल तुम्हारे पास भेजा गया है, वह तो पागल है।"

(28) मूसा ने कहा, "वह पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब है। यदि तुम समझो।"

(29) फ़िरऔन ने कहा, "यदि तुम मेरे अलावा किसी अन्य को ईश्वर चुनोगे तो मैं तुम्हें अवश्य ही कैद कर लूँगा।"

(30) मूसा ने कहा, "क्या होगा यदि मैं तुम्हें कुछ स्पष्ट दिखाऊँ?"

(31) फ़िरऔन ने कहा, "यदि तुम सच्चे हो तो दिखाओ।"

(32) तब उसने अपनी लाठी डाली, और देखो, वह एक स्पष्ट साँप बन गया।

(३३) और उसने अपना हाथ बढ़ाया, और क्या देखा कि वह देखने वालों के साम्हने श्वेत हो गया।

(34) फ़िरऔन ने अपने आस-पास के हाकिमों से कहा, “यह सचमुच एक कुशल जादूगर है,

(35) जो अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल देना चाहता है। तो फिर तुम क्या सलाह देते हो?"

(36) उन्होंने कहा, "उसे और उसके भाई को विदा कर दो और नगरों में लोगों को इकट्ठा करने के लिए भेज दो।

(37) हर कुशल जादूगर तुम्हें ले आए।

(38) अतः जादूगर एक निश्चित दिन पर निश्चित समय पर एकत्र हुए।

(39) और लोगों से कहा गया कि क्या तुम सब लोग इकट्ठे हो?

(40) शायद हम जादूगरों का अनुसरण करेंगे यदि वे विजयी हों।"

(41) जब जादूगर आये तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, "यदि हम विजय प्राप्त करें तो क्या हमें कोई इनाम मिलेगा?"

(42) फ़िरऔन ने कहा, "हाँ, और तुम अवश्य मेरे निकटतम लोगों में से होगे।"

(43) मूसा ने उनसे कहा, “जो कुछ तुम फेंकने वाले हो, उसे फेंक दो।”

(44) तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और कहा, "फ़िरऔन की शक्ति से हम अवश्य विजयी होंगे।"

(45) तब मूसा ने अपनी लाठी नीचे डाली, और देखा कि उसने उन चीज़ों को निगल लिया जो उन्होंने जाली बनाई थीं।

(46) फिर जादूगर सजदे में गिर पड़े।

(47) उन्होंने कहा, "हम सारे संसार के रब पर ईमान लाए।

(48) मूसा और हारून का रब।

(49) फ़िरऔन ने कहा, "क्या तुम उस पर ईमान लाए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता? वास्तव में वह तुम्हारा गुरु है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तुम जल्द ही जान जाओगे! मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ और पैर काट दूँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा।"

(50) उन्होंने कहा, "हमें इसकी कोई परवाह नहीं, हम तो अपने रब की ओर ही लौटकर जानेवाले हैं।

(51) हमें आशा है कि हमारा रब हमारे पापों को क्षमा कर देगा, क्योंकि हम ही पहले ईमानवाले हैं।

(52) और हमने मूसा की ओर प्रकाशना की कि "मेरे बन्दों को लेकर रात को निकल पड़ो। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।"

(53) तब फ़िरौन ने नगरों में लोगों को इकट्ठा करने के लिए भेजा,

(54) और कहा: "ये तो बस एक छोटा सा समूह है,

(55) और उन्होंने हमें उकसाया।

(56) लेकिन हम सभी अच्छी तरह से तैयार हैं।

(57) फिर हमने उन्हें बाग़ों और चश्मों से निकाला।

(58) खजाने और एक महान निवास से.

(59) और ऐसा ही हुआ, और हमने इसराईल की संतान को उसका उत्तराधिकारी बना दिया।

(60) और उन्होंने सूर्योदय होते ही उनका पीछा किया।

(61) जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़ लिये गये।"

(62) मूसा ने कहा, "नहीं! मेरा रब मेरे साथ है। वही मुझे मार्ग दिखाएगा।"

(63) फिर हमने मूसा की ओर प्रकाशना की कि "अपनी लाठी से समुद्र पर प्रहार करो।" तो वह फट गई और उसका प्रत्येक भाग एक बड़े पर्वत के समान हो गया।

(64) और हम वहाँ दूसरों के पास पहुँचे।

(65) हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया।

(66) फिर हमने बाकियों को डुबो दिया।

(67) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उस पर ईमान नहीं लाते।

(68) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(69) और उसने उनको इबराहीम का वृत्तान्त सुनाया।

(70) जबकि उसने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किसकी पूजा करते हो?

(71) उन्होंने कहा, "हम मूर्तियों की पूजा करते हैं और उन्हीं पर समर्पित रहते हैं।"

(72) उसने कहा, "क्या वे तुम्हारी बात सुनते हैं, जब तुम उन्हें पुकारते हो?

(73) क्या वे तुम्हें लाभ पहुँचाते हैं या हानि पहुँचाते हैं?"

(74) उन्होंने कहा, "नहीं, बल्कि हमने अपने बाप-दादाओं को ऐसा ही करते पाया है।"

(75) उसने कहा, "अब क्या तुमने सोचा कि तुम किसकी पूजा करते हो?

(७६) तुम और तुम्हारे प्राचीन पिता?

(77) वे मेरे शत्रु हैं, परन्तु समस्त संसार के रब के।

(78) वही है जिसने मुझे पैदा किया और वही मुझे मार्ग दिखाता है।

(79) और जो मुझे खाने-पीने को देता है।

(80) और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो वही मुझे अच्छा करता है।

(81) और वह मुझे मार डालेगा और फिर मुझे जीवन देगा।

(82) और मुझे आशा है कि वह क़ियामत के दिन मेरे पापों को क्षमा कर देगा।

(83) "ऐ मेरे रब! मुझे बुद्धि प्रदान कर और मुझे नेक लोगों के साथ शामिल कर।

(84) और मुझे आनेवाली नस्लों में अच्छा नाम प्रदान कर।

(85) और मुझे स्वर्ग के उत्तराधिकारियों में से बना दे।

(86) और मेरे पिता को क्षमा कर दे, क्योंकि वह पथभ्रष्टों में से थे।

(87) और मुझे अपमानित न करो उस दिन जिस दिन वे पुनः जीवित किये जायेंगे।

(88) जिस दिन न धन काम आएगा और न सन्तान।

(89) परन्तु जो शुद्ध हृदय लेकर अल्लाह के पास आये।

(90) और जन्नत उन लोगों के लिए निकट कर दी जाएगी जो अल्लाह से डरते रहेंगे।

(91) और जहन्नम खुलेआम भटकनेवालों के लिए खोल दी गयी है।

(92) और उनसे कहा जाएगा कि वह चीज़ कहाँ है जिसकी तुम पूजा करते थे?

(93) क्या वे अल्लाह के सिवा तुम्हारी सहायता कर सकते हैं या अपनी सहायता स्वयं कर सकते हैं?

(94) और वे उसमें डाल दिये जायेंगे, वे और कुपथ लोग,

(95) और इब्लीस की सेना, सब एक साथ।

(96) वे उसमें झगड़ते हुए कहेंगे,

(97) "अल्लाह की क़सम! हम स्पष्ट रूप से गुमराही में थे।

(98) जबकि हमने तुम्हारी तुलना सारे संसार के रब से की थी।

(99) और हमें गुमराह करनेवाले तो अपराधी ही हैं।

(100) अब हमारे पास कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं रहा।

(101) न ही कोई सच्चा दोस्त.

(102) यदि हमें एक और अवसर मिलता तो हम ईमानवालों में से होते।

(103) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उसपर ईमान नहीं लाते।

(104) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(105) नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया,

(106) जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

(107) निश्चय मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(108) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(109) और मैं तुमसे इसपर कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सारे संसार के पालनहार के पास है।

(110) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(111) उन्होंने कहा, "क्या हम तुमपर ईमान लाएँ, जबकि हममें से सबसे विनम्र लोग तुम्हारा अनुसरण करें?"

(112) उसने कहा, "मैं कैसे जानूँ कि वे क्या कर रहे थे?

(113) उनका हिसाब तो मेरे पालनहार के पास है, यदि तुम समझो।

(114) और मैं ईमानवालों को हरगिज़ नहीं निकालूँगा।

(115) मैं तो बस एक स्पष्ट चेतावनी देनेवाला हूँ।

(116) उन्होंने कहा, "ऐ नूह! यदि तूने बाज़ न आया तो तू भी संगसार किए जानेवालों में से होगा।"

(117) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया।

(118) अतः मेरे और उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दे और मुझे और उन ईमानवालों को जो मेरे साथ हैं बचा ले।"

(119) अतः हमने उसे और जो लोग उसके साथ भरी हुई नाव में थे, उन्हें बचा लिया।

(120) फिर हमने बाकी लोगों को डुबो दिया।

(121) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उसपर ईमान नहीं लाते।

(122) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(123) आद ने रसूलों को झुठलाया,

(124) जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

(125) निश्चय मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(126) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(127) और मैं इसपर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सारे संसार के पालनहार के पास है।

(128) क्या तुम मज़ाक में हर पहाड़ी पर स्मारक बनाते हो?

(129) और क्या तुम अपने लिए महल बनाते हो, इस आशा से कि तुम सदैव जीवित रहोगे?

(130) और जब तुम मारते हो तो क्या क्रूरता से मारते हो?

(131) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(132) उससे डरो जिसने तुम्हें वह ज्ञान दिया है जो तुम जानते हो।

(133) उसने तुम्हें चौपाये और बच्चे दिये।

(134) और बाग़ और चश्में।

(135) मैं तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

(136) उन्होंने कहा, "हमारे लिए तो बराबर है, चाहे तुम सचेत करो या सचेत करनेवालों में से न हो।

(137) यह प्राचीन लोगों की रीति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

(138) और हम पर कोई अत्याचार नहीं होगा।

(139) उन्होंने झुठला दिया, तो हमने उन्हें विनष्ट कर दिया। निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

(140) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(141) झुठलाया समूद ने रसूलों को,

(142) जबकि उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

(143) निश्चय मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(144) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(145) और मैं इसपर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सारे संसार के पालनहार के पास है।

(146) क्या तुम यहाँ सुरक्षित रहोगे, जो तुम्हारे पास है?

(147) बागों और झरनों में,

(148) और खेत और कोमल फलवाले खजूर के वृक्ष?

(149) और क्या तुम पहाड़ों में घर खोदकर गर्व करते हो?

(150) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(151) और तुम अवज्ञाकारियों का आदेश न मानो।

(152) जो धरती पर बिगाड़ बोते हैं और भलाई को बढ़ावा नहीं देते।

(153) उन्होंने कहा, "तू तो बस जादू किया हुआ व्यक्ति है।

(154) तुम तो बस हमारे जैसे एक आदमी हो। यदि तुम सच्चे हो तो कोई निशानी ले आओ।

(155) उसने कहा, "यह ऊँटनी है, पानी पीने की इसकी बारी है और तुम दोनों की बारी है, प्रत्येक की एक निश्चित दिन पर।

(156) और उसमें बुराई न करो, अन्यथा तुमपर बड़े दिन की यातना आ पड़ेगी।

(157) किन्तु उन्होंने उसे मार डाला और पश्चाताप में भर गये।

(158) इस प्रकार उनपर यातना आ गयी, इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

(159) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(160) लूत की क़ौम ने रसूलों को झूठा करार दिया,

(161) जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

(162) निश्चय मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(163) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(164) और मैं इसपर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सारे संसार के पालनहार के पास है।

(165) तू सभी प्राणियों में मनुष्यों के सबसे निकट है,

(166) और अपनी पत्नियाँ छोड़ दो, जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया है। निश्चय ही तुम लोग अत्याचारी लोग हो।

(167) उन्होंने कहा, "ऐ लूत! यदि तुम न रुके तो अवश्य ही निकाले जानेवालों में से हो जाओगे।"

(168) उसने कहा, "मैं तुम्हारे आचरण से घृणा करता हूँ।

(169) ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घरवालों को उससे बचा जो वे कर रहे हैं।

(170) अतः हमने उसे और उसके सारे घरवालों को बचा लिया।

(171) परन्तु एक वृद्ध स्त्री (उसकी पत्नी) पीछे रह गयी।

(172) फिर हमने बाकी लोगों को विनष्ट कर दिया।

(173) और हमने उनपर पत्थरों की वर्षा कर दी, तो सावधान किये गये लोगों पर तो यह वर्षा कितनी बुरी थी!

(174) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उसपर ईमान नहीं लाते।

(175) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(176) अय्यका वालों ने रसूलों को झुठलाया,

(177) जबकि शुऐब ने उनसे कहा, "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

(178) निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(179) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(180) और मैं तुमसे इसपर कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सारे संसार के रब के पास है।

(181) उचित नाप-तौलकर काम करो और ठगनेवालों में से न हो जाओ।

(182) और बराबर तराजू से तौल लो।

(183) और लोगों से उनका हक न छीनो और न धरती में बिगाड़ पैदा करके अत्याचार करो।

(184) उससे डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है, तुम भी और इससे पहलेवाले भी।

(185) उन्होंने कहा, "तू तो बस जादू किया हुआ व्यक्ति है।

(186) तुम तो हमारे जैसे ही एक आदमी हो, और हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

(187) यदि तुम सच्चे हो तो आकाश के टुकड़े हमपर बरसा दो।

(188) उसने कहा, "जो कुछ तुम करते हो, मेरा रब ही भली-भाँति जानता है।"

(189) किन्तु उन्होंने झुठला दिया और उन्हें एक अँधेरे दिन की यातना आ पड़ी। निश्चय ही वह एक बड़े दिन की यातना थी।

(190) निस्संदेह इसमें बड़ी निशानी है, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग उसपर ईमान नहीं लाते।

(191) और निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(192) निश्चय ही ये क़ुरआन सारे संसार के रब की ओर से अवतरित है।

(193) विश्वासयोग्य आत्मा [गेब्रियल] ने उसे नीचे उतारा

(194) ताकि तुम सचेत करनेवालों में से हो जाओ।

(195) स्पष्ट अरबी में.

(196) और इसका उल्लेख पहले की किताबों में भी आ चुका है।

(197) क्या यह उनके लिए निशानी नहीं कि बनी इसराईल के विद्वान उसे पहचान लें?

(198) और यदि हम इसे किसी परदेशी पर भी अवतरित करते,

(199) और यदि वह उनको इसे पढ़कर सुनाता तो वे उसपर ईमान न लाते।

(200) इसी प्रकार हमने उसे अपराधियों के दिलों में डाल दिया।

(201) वे उसपर ईमान नहीं लाएँगे जब तक दुखद यातना न देख लें।

(202) जो अचानक उनपर आ पड़ेगी, जबकि वे उसकी आशा भी नहीं करेंगे।

(203) और वे कहेंगे, "क्या हमें कुछ समय मिलेगा?"

(204) क्या वे यह माँगते हैं कि हमारी यातना शीघ्र आ जाए?

(205) क्या तुमने देखा कि यदि हम उन्हें जीवन प्रदान करें,

(206) फिर आ गयी उनको वह चीज़, जिसका वादा किया गया था?

(207) जो कुछ उन्होंने भोगा, वह उनके किसी काम न आएगा।

(208) और हमने किसी बस्ती को उसके डरानेवाले के बिना विनष्ट नहीं किया।

(209) और यह एक नसीहत है कि हम अत्याचारी नहीं हैं।

(210) शैतानों ने उसे नहीं गिराया।

(211) यह उनको शोभा नहीं देता, न वे ऐसा करने में समर्थ हैं।

(212) निश्चय ही वे सुनने से रोके रखे गये हैं।

(213) अतः अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य पूज्य को न पुकारो, अन्यथा तुम भी यातना पानेवालों में सम्मिलित हो जाओगे।

(214) और अपने निकटस्थ सम्बन्धियों को सचेत करो।

(215) और जो ईमानवाले तुम्हारे पीछे आएँ, उनकी ओर अपना सिर झुका लो।

(216) यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें तो कह दो, "तुम जो कुछ करते हो, उससे मैं निर्दोष हूँ।"

(217) और भरोसा रखो उस प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दयावान पर।

(218) जो तुम्हें देखता है, जब तुम नमाज़ में खड़े होते हो,

(219) और तुम्हारा सजदा करनेवालों में आना-जाना।

(220) निस्संदेह वही सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(221) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किसपर उतरते हैं?

(222) वे प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं।

(223) वे जो सुनते हैं, उसे प्रसारित करते हैं, और उनमें अधिकतर झूठे हैं।

(224) और जो कवि हैं, उनका अनुसरण तो केवल भटके हुए लोग ही करते हैं।

(225) क्या तुम नहीं देखते कि वे हर घाटी में भटकते हैं,

(226) और वे कहते हैं कि वे क्या नहीं करते?

(227) परन्तु जो लोग ईमान लाए, अच्छे कर्म किए, अल्लाह को बार-बार याद किया और ज़ुल्म सहने के पश्चात् बचाव किया, और जो लोग अवज्ञाकारी हैं, वे शीघ्र ही जान लेंगे कि उनका क्या परिणाम होगा।

# सूरा 27: ٱلنَّمْل‎ (अन-नमल) - चींटियाँ

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ता, सीन, ये पवित्र क़ुरआन की आयतें हैं, जो एक स्पष्ट पुस्तक है।

(2) मार्गदर्शन और शुभ सूचना है ईमान वालों के लिए।

(3) जो नमाज़ क़ायम करते हैं, ख़ैरात देते हैं और आख़िरत पर भरोसा रखते हैं।

(4) जिन लोगों ने आख़िरत का इनकार किया, उनके लिए हमने उनके कर्म आकर्षक बना दिए हैं। अतः वे अंधे होकर भटक रहे हैं।

(5) वही लोग हैं जिनके लिए सबसे बुरी यातना है और आख़िरत में वही सबसे बड़े घाटे में रहेंगे।

(6) और निश्चय ही तुम्हें क़ुरआन उसकी ओर से मिला है जो अत्यन्त तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

(7) याद करो जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है, मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास कोई समाचार या कोई जलता हुआ अंगारा लेकर आऊँगा, ताकि तुम ताप सको।

(8) जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे पुकारा गया, "वह व्यक्ति जो आग में है और वह भी जो उसके चारों ओर है, पवित्र है अल्लाह, सारे संसार का पालनहार।

(9) ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी।

(10) अपनी लाठी नीचे फेंक दो। जब उसने देखा कि वह साँप की तरह हिल रही है, तो वह पीछे मुड़ा और भाग गया, पीछे मुड़कर नहीं देखा। "ऐ मूसा! डरो मत! निस्संदेह मेरे पास रसूलों को कोई डर नहीं है,

(11) परन्तु वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, फिर यदि वे तौबा कर लें और अच्छा कर्म करें तो मैं अत्यन्त क्षमाशील, दयावान हूँ।

(12) और अपना हाथ अपने दामन में डाल, तो वह उजला और बेदाग निकलेगा। यह फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिए नौ निशानियों में से एक है। निश्चय ही वे एक अत्याचारी लोग हैं।"

(13) फिर जब उनके पास हमारी खुली निशानियाँ आईं तो वे कहने लगे, "यह तो बिलकुल जादू है।"

(14) और उन्होंने उनको झुठला दिया, यद्यपि वे निश्चिन्त थे, अन्याय और अहंकार के कारण। तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ।

(15) और हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया था। उन्होंने कहा, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत-से ईमानवाले बन्दों पर वरीयता दी।"

(16) और सुलैमान ने दाऊद का स्थान लिया और कहा, "हे लोगों! हमें पक्षियों की भाषा सिखाई गई है और हमें सब कुछ दिया गया है। वास्तव में, यह एक स्पष्ट वरदान है।"

(17) और सुलैमान के लिए उसके जिन्न, मनुष्य और पक्षी, पंक्तियों में सजे हुए इकट्ठे हुए।

(18) यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा: "ऐ चींटियों, अपने घरों में प्रवेश करो ताकि सुलैमान और उसकी सेनाएँ अनजाने में तुम्हें कुचल न दें।"

(19) वह उसकी बातों से प्रसन्न होकर मुस्कुराया और कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे अपनी उस कृपा का आभार प्रकट करने की शक्ति दे जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की है, और मुझे ऐसे भले काम करने की शक्ति दे जिनसे तू प्रसन्न होता है। और अपनी दया से मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल कर।"

(20) फिर उसने पक्षियों का निरीक्षण किया और कहा: "मैं हुपु को क्यों नहीं देख पा रहा हूँ? क्या वह शायद अनुपस्थित है?

(21) मैं निश्चित रूप से उसे कठोर दंड दूँगा या उसे मार डालूँगा, जब तक कि वह मेरे पास कोई स्पष्ट औचित्य न लाये।"

(22) किन्तु उसने आने में देर न की और कहा, "मैंने वह जान लिया है जो तुम नहीं जानते, और मैं तुम्हारे लिए सबा से विश्वसनीय समाचार लाया हूँ।

(23) मुझे एक ऐसी स्त्री मिली है जो उन पर राज्य करती है, जो सब कुछ से सुसज्जित है और जिसके पास एक भव्य सिंहासन है।

(24) मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह के बजाय सूर्य को सजदा करते हुए पाया। शैतान ने उनके कर्मों को उनकी दृष्टि में सुन्दर बना दिया है, और उन्हें मार्ग से भटका दिया है, ताकि वे मार्ग पर न चलें।

(25) ताकि वे अल्लाह को सजदा न करें, जो आकाशों और धरती में छिपी हुई चीज़ों को प्रकट करता है और जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो।

(26) अल्लाह, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वोच्च सिंहासन का स्वामी है।

(27) [सुलैमान] ने कहा, "हम देखेंगे कि तुमने सच कहा है या तुम झूठों में से हो।

(28) मेरा यह पत्र ले लो और उन्हें दे दो; फिर जाकर देखो कि वे क्या उत्तर देते हैं।”

(29) [रानी] ने कहा: "हे महानुभावो, मेरे पास एक महान पत्र आया है।

(30) यह सुलैमान की ओर से है और इसमें लिखा है: "अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयावान है।"

(31) मुझपर अहंकार न करो, बल्कि आज्ञाकारी होकर मेरे पास आओ।

(32) उसने कहा, "ऐ महानुभावो! मेरे मामले में मुझे सलाह दो। मैं तुम्हारे बिना कोई निर्णय नहीं करूँगा।"

(33) उन्होंने कहा, "हम तो वीर योद्धा हैं, किन्तु निर्णय तुम्हारे हाथ में है। अतः तुम सोच लो कि तुम क्या आदेश देते हो।"

(34) उसने कहा: "वास्तव में, जब राजा किसी शहर में प्रवेश करते हैं, तो वे उसे तबाह कर देते हैं और उसके सबसे अच्छे निवासियों को अपमानित करते हैं। ऐसा वे करते हैं।

(35) मैं उनके पास उपहार भेजूँगा और देखूँगा कि दूत क्या लेकर आते हैं।

(36) जब वे सुलैमान के पास आए तो उसने कहा, "क्या तुम मुझे धन से सहायता करोगे? अल्लाह ने मुझे जो दिया है, वह उससे कहीं उत्तम है जो उसने तुम्हें दिया है। निस्संदेह, तुम ही अपने उपहारों का आनन्द लेते हो।

(37) उनके पास लौट जाओ। हम ऐसी सेनाओं के साथ उनके पास आएंगे जिनका वे सामना नहीं कर सकेंगे, और हम उन्हें अपमानित और पराजित करके वहां से निकाल देंगे।

(38) [सुलैमान] ने कहा, "ऐ सरदारों! तुममें से कौन है जो अपना सिंहासन मेरे पास लाए, इससे पहले कि वे मेरे सामने आज्ञाकारी होकर आएं?"

(39) जिन्नों में से एक शक्तिशाली व्यक्ति ने कहा, "मैं इसे आपके पास ले आऊंगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें। मैं ऐसा करने में शक्तिशाली और विश्वसनीय हूँ।"

(40) एक व्यक्ति जो किताब का जानकार था, उसने कहा, "मैं उसे पलक झपकते ही तुम्हारे पास ले आता हूँ।" जब उसने उसे अपने सामने रखा हुआ देखा तो कहा, "यह मेरे रब की कृपा से है, ताकि वह मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञ होता हूँ या कृतघ्न। जो कृतज्ञ होगा, वह अपने ही लाभ के लिए है। और जो कृतघ्न होगा, तो जान ले कि मेरा रब बड़ा धनवान, बड़ा दानी है।"

(41) उसने कहा, "उसका सिंहासन बदल दो। देखते हैं कि वह उसे पहचानती है या नहीं, या वह उन लोगों में से होगी जो उसे नहीं पहचानते।"

(42) जब वह आई तो उससे कहा गया कि क्या यह तुम्हारा सिंहासन है? उसने कहा कि यह वही है। (सुलैमान ने कहा) हमें उससे पहले ही ज्ञान प्रदान किया गया था और हम आज्ञाकारी हो गए।

(43) अल्लाह के सिवा जिन चीज़ों की वह पूजा करती थी, उन्होंने उसे भटका दिया। निस्संदेह वह इनकार करनेवालों में से थी।

(44) उससे कहा गया, "महल में प्रवेश करो।" जब उसने उसे देखा तो उसे लगा कि वह गहरा पानी है और उसने अपनी टाँगें खोल दीं। (सुलैमान ने) कहा, "यह तो एक ऐसा महल है जिसपर काँच की पक्की ईंटें लगी हुई हैं।" उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है और मैं सुलैमान के साथ अल्लाह के सामने झुकती हूँ, जो सारे संसार का रब है।"

(45) और हमने समूद की ओर उनके भाई सालाह को भेजा, "अल्लाह की बन्दगी करो।" किन्तु वे दो गिरोह हो गये, जो एक दूसरे से झगड़ते रहे।

(46) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई क्यों चाहते हो? तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं माँगते कि तुमपर दया की जाए?"

(47) उन्होंने कहा, "हम तुम्हारे पास और तुम्हारे साथियों के पास एक बुरा शकुन लेकर आये हैं।" उसने कहा, "तुम्हारा शकुन अल्लाह के पास है। निश्चय ही तुम एक ऐसे लोग हो, जो परीक्षा में पड़नेवाले हो।"

(48) शहर में नौ व्यक्ति थे जो पृथ्वी पर भ्रष्टाचार फैलाते थे और अच्छाई को बढ़ावा नहीं देते थे।

(49) उन्होंने कहा, "हम अल्लाह की क़सम खाते हैं कि हम उसपर और उसके घरवालों पर रात को आक्रमण करेंगे। फिर उसके उत्तराधिकारी से कहेंगे कि हमने उसके घरवालों का विनाश नहीं देखा और हम सच्चे हैं।"

(50) उन्होंने चालें चलीं और हमने भी चालें चलीं, और वे जानते भी नहीं।

(51) अब देखो कि उनकी चाल का क्या परिणाम हुआ? हमने उनको और उनकी पूरी क़ौम को विनष्ट कर दिया।

(52) देखो, उनके घर उनके अधर्म के कारण उजड़ गये हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो बुद्धि रखते हैं।

(53) और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और अल्लाह से डरते रहे।

(54) याद करो लूत को, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम घृणित काम करते हो, यद्यपि तुम भली-भाँति देखते हो?

(55) क्या तुम स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों के पास वासना से जाते हो? निश्चय ही तुम अज्ञानी लोग हो।

(56) किन्तु उसकी क़ौम के लोगों ने उत्तर दिया, "लूत के परिवार को अपने नगर से निकाल दो। वे लोग पवित्र रहना चाहते हैं।"

(57) इस प्रकार हमने उसे और उसके घरवालों को बचा लिया, परन्तु उसकी पत्नी को छोड़ दिया और हमने यह भी तय कर दिया कि वह पीछे रह जानेवालों में से है।

(58) और हमने उनपर विनाश की वर्षा बरसाई। वह वर्षा उन लोगों के लिए कितनी बुरी थी, जिन्हें सावधान कर दिया गया था।

(59) कह दो, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है और सलामती है उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने चुन लिया। क्या अल्लाह उससे अच्छा है जिसे वे साझीदार मानते हैं?"

(60) जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया फिर उसके द्वारा हमने उसमें बाग़ उगाए। तुम्हारे बस में नहीं था कि उनके वृक्ष उगाते। क्या अल्लाह के सिवा कोई और पूज्य है? निश्चय ही वे भटके हुए लोग हैं।

(61) जिसने धरती को स्थिर बनाया और उसमें नदियाँ और पहाड़ बनाए और दो सागरों के बीच एक दीवार बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य है? निस्संदेह उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(62) जो मुहताज की पुकार सुनकर उसकी प्रार्थना स्वीकार करता है और बुराई को दूर करता है और तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य है? बहुत कम लोग विचार करते हैं।

(63) वही है जो थल और जल के अँधेरों में तुम्हें मार्ग दिखाता है और अपनी दयालुता की शुभ सूचना देने के लिए हवाओं को भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य है? अल्लाह उससे बड़ा है जो लोग उसका साझी ठहराते हैं।

(64) वह है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है और आकाशों तथा धरती से उसकी जीविका चलाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य है? कहो, "यदि तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण लाओ।"

(65) कह दो, "अल्लाह के सिवा आकाशों और धरती में कोई ग़ैब नहीं जानता। और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएँगे।"

(66) निश्चय ही उनका आख़िरत के विषय में ज्ञान गड़बड़ है। निश्चय ही वे संदेह में पड़े हुए हैं। निश्चय ही वे उससे अनभिज्ञ हैं।

(67) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं, "क्या जब हम और हमारे पूर्वज मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या हम पुनः जीवित किये जायेंगे?

(68) इसका वादा हमसे किया गया था, हमसे और हमारे पूर्वजों से भी; ये तो पूर्वजों की कहानियाँ मात्र हैं।

(69) कह दो, "धरती में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा हुआ।"

(70) और तुम उनपर शोक न करो और न उनकी चालों से घबराओ।

(71) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(72) कह दो, "संभव है कि जिस चीज़ को तुम शीघ्रता से प्राप्त करना चाहते हो, वह निकट ही हो।"

(73) निश्चय ही तुम्हारा पालनहार लोगों पर अत्यन्त अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु उनमें से अधिक्तर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

(74) और तुम्हारा रब जानता है जो कुछ उनके सीनों में छिपा है और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं।

(75) आकाशों और धरती में कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है, परन्तु स्पष्ट किताब में।

(76) निस्संदेह यह क़ुरआन बनी इस्राईल को अधिकतर बातें बता रहा है, जिनमें वे मतभेद कर रहे हैं।

(77) और वह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।

(78) निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच अपने फ़ैसले से फ़ैसला कर देगा और वह प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ है।

(79) अतः तुम अल्लाह पर भरोसा रखो, निस्संदेह तुम स्पष्ट सत्य पर हो।

(80) तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को पुकार सुना सकते हो, जब वे पीठ फेर लें।

(81) और तुम अंधों को उनकी भटकन से मार्ग नहीं दिखा सकते, तुम तो बस उसी को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी हो।

(82) और जब उनपर फ़ैसला आ जाएगा तो हम उनके लिए धरती से एक प्राणी निकालेंगे जो उनसे बात करेगा, क्योंकि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।

(83) जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से उन लोगों का एक समूह इकट्ठा करेंगे जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, फिर वे सफ़ों में बिठाये जायेंगे।

(84) यहाँ तक कि जब वे आएँगे तो अल्लाह कहेगा, "क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया, जबकि तुम उनका ज्ञान नहीं जानते थे? या तुम क्या कर रहे थे?"

(85) और जो कुछ उन्होंने किया है, उसके कारण उनपर आज्ञा आ जायेगी और वे बोल न सकेंगे।

(86) क्या वे नहीं देखते कि हमने रात को तुम्हारे लिए आराम के लिए बनाया है और दिन को तुम्हारे लिए देखने के लिए? इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(87) जिस दिन नरसिंगा फूँका जाएगा, आकाशों और धरती में सभी भयभीत हो जायेंगे, परन्तु वे लोग जिन्हें अल्लाह चाहेगा, और सभी उसके पास अपमानित होकर आयेंगे।

(88) तुम देखोगे कि पहाड़, जिनके बारे में तुम सोचते थे कि वे स्थिर हैं, बादलों की तरह गुज़र रहे हैं। यह अल्लाह का काम है, जिसने हर चीज़ को परिपूर्ण कर दिया है। निस्संदेह वह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(89) जो कोई भलाई लेकर आएगा, उसके लिए उससे भी अच्छी चीज़ होगी और वे उस दिन की भयावहता से सुरक्षित रहेंगे।

(90) और जो कोई बुराई लेकर आएगा, वह मुँह के बल आग में डाल दिया जायेगा। तुम्हें तो बस उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते रहे।

(91) कह दो, "मुझे आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर के रब की बन्दगी करूँ, जिसे उसने आदरणीय बनाया है। हर चीज़ उसी की है। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से रहूँ।

(92) और क़ुरआन की तिलावत करो। जो मार्ग पर चला गया, उसने अपने ही लाभ के लिए ऐसा किया। और जो पथभ्रष्ट हो जाए, कह दो, "मैं तो बस सावधान करनेवालों में से हूँ।"

(93) कह दो, "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है। वह शीघ्र ही तुम्हें अपनी आयतें दिखा देगा और तुम उन्हें जान लोगे। तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो कुछ तुम करते हो।

# सूरा 28: **ٱلْقَصَص‎ (अल-क़ैस)** - कहानियाँ

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) ता सीन मीम.

(2) ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।

(3) हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ भाग सत्य-सत्य सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

(4) निश्चय ही फ़िरऔन ने धरती में अपने आपको बड़ा बना लिया और उसके निवासियों को गुटों में विभाजित कर दिया, उनमें से एक पर अत्याचार किया, उसने उनके बेटों को मार डाला और उनकी बेटियों को छोड़ दिया, निश्चय ही वह बिगाड़ करने वालों में से था।

(5) किन्तु हम चाहते थे कि धरती में जो लोग अत्याचारग्रस्त हैं, उनपर कृपा करें और उन्हें नेता और उत्तराधिकारी बनाएँ।

(6) उन्हें धरती पर स्थापित करो और फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वह दिखा दो जिससे वे डरते थे।

(7) और हमने मूसा की माँ को वह्यी भेजी कि "उसे दूध पिलाओ, फिर जब तुम्हें उसके लिए भय हो तो उसे नदी में डाल दो, फिर न डरो और न शोकाकुल हो। हम उसे तुम्हारे पास वापस लाएँगे और उसे रसूलों में से बना देंगे।"

(8) अतः फ़िरऔन के घरवालों ने उसे इकट्ठा किया, ताकि वह उनका शत्रु और दुःख का कारण बन जाए। निःसंदेह फ़िरऔन, हामान और उनकी सेनाएँ अपराधी थीं।

(9) फ़िरऔन की पत्नी ने कहा, "यह मेरे और तुम्हारे लिए ख़ुशी की बात है; इसे न मारो। शायद यह हमारे काम आए या हम इसे अपना बेटा बना लें।" लेकिन वे समझ नहीं पाए [कि क्या होने वाला है]।

(10) मूसा की माँ का दिल खाली हो गया, वह सब कुछ प्रकट करने वाली थी, यदि हमने उसके दिल को ईमानवालों में शामिल होने की शक्ति न दी होती।

(11) उसने उसकी बहन से कहा, “उसके पीछे चलो।” इसलिए वह उसे दूर से देखती रही, लेकिन उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया।

(12) पहले तो हमने उसे दूध पिलाने से मना कर दिया, फिर [बहन] ने कहा: "क्या मैं आपको एक ऐसे परिवार के बारे में बता सकती हूँ जो आपके लिए उसकी देखभाल करेगा और उसके प्रति दयालु होगा?"

(13) अतः हमने उसे उसकी माँ की ओर लौटा दिया, ताकि वह प्रसन्न हो और दुखी न हो, और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है। किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(14) जब वह वयस्क हो गया और बड़ा हो गया, तो हमने उसे बुद्धि और ज्ञान प्रदान किया। इसी प्रकार हम उपकार करनेवालों को बदला देते हैं।

(15) मूसा ने उस समय नगर में प्रवेश किया जब लोग भ्रमित थे और उसने दो व्यक्तियों को आपस में झगड़ते हुए देखा, एक उसकी जाति का था और दूसरा उसके शत्रुओं का। उसकी जाति के एक व्यक्ति ने शत्रु के विरुद्ध उससे सहायता माँगी तो मूसा ने उसे अनजाने में ही मार डाला। मूसा ने कहा, "यह शैतान का काम है। वह तो स्पष्ट शत्रु है जो लोगों को गुमराह करता है।"

(16) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया है। अतः मुझे क्षमा कर दे।" उसने उसे क्षमा कर दिया। निस्संदेह, वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(17) उसने कहा, "ऐ रब! तेरी कृपादृष्टि ने मुझ पर जो कृपा की है, उसकी बदौलत मैं अत्याचारियों का समर्थन नहीं करूँगा।"

(18) अगले दिन जब वह भयभीत और सतर्क होकर नगर में से होकर जा रहा था, तो देखो, जिस व्यक्ति ने कल उससे सहायता माँगी थी, उसने उसे फिर पुकारा। मूसा ने उससे कहा, "तू सचमुच एक बड़ा उपद्रवी है।"

(19) जब उसने उस पर प्रहार करना चाहा जो दोनों का शत्रु था, तो उसने कहा, "ऐ मूसा! क्या तुम मुझे भी उसी प्रकार मार डालना चाहते हो जिस प्रकार तुमने कल एक व्यक्ति को मार डाला? क्या तुम पृथ्वी पर केवल अत्याचारी बने रहना चाहते हो, शांति स्थापित करने वाले नहीं?"

(20) एक आदमी शहर के सबसे दूर के इलाके से दौड़ता हुआ आया और कहा, "ऐ मूसा! सरदार लोग तुम्हें मार डालने की साज़िश कर रहे हैं। इसलिए भाग जाओ। मैं तुम्हारा सच्चा सलाहकार हूँ।"

(21) मूसा भयभीत और सावधान होकर नगर से बाहर निकला और प्रार्थना की, "ऐ मेरे रब! मुझे अत्याचारी लोगों से बचा।"

(22) जब वह मदयन की ओर जा रहा था तो उसने कहा, "मुझे आशा है कि मेरा रब मुझे सीधे मार्ग पर ले चलेगा।"

(23) जब वह मदयन के कुएँ पर पहुँचा तो उसने देखा कि कुछ आदमी पानी पी रहे हैं और उनके पीछे दो औरतें अपने जानवरों को पकड़े खड़ी हैं। उसने पूछा: "तुम्हें क्या हो रहा है?" उन्होंने जवाब दिया: "जब तक चरवाहे पानी पीना बंद नहीं कर देते, हम पानी नहीं पी सकते; हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।"

(24) मैं उन्हें पानी पिलाऊँगा, फिर वह छाया में चला गया और कहा: "मेरे भगवान, मुझे उस भलाई की आवश्यकता है जो आप मुझे भेजेंगे।"

(25) उन दोनों स्त्रियों में से एक स्त्री विनम्रता से चलती हुई उसके पास आई और बोली, "मेरे पिता तुम्हें बुला रहे हैं, ताकि हम लोगों को पानी पिलाने के कारण तुम्हें इनाम दें।" जब वह उसके पास आई और उसे अपनी कहानी सुनाई, तो पिता ने कहा, "डरो मत, तुम अन्यायियों के हाथ से बचकर आई हो।"

(26) उनमें से एक ने कहा, "हे मेरे पिता, उसे काम पर रख लीजिए। जो सबसे अच्छा काम आप कर सकते हैं, वह मजबूत और भरोसेमंद है।"

(27) उसने कहा, "मैं अपनी दो बेटियों में से एक का विवाह तुमसे करना चाहता हूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ वर्ष तक मेरे लिए काम करो। यदि तुम दस वर्ष पूरे कर लो तो यह तुम्हारी ओर से एक उपकार होगा। मैं इस शर्त को तुम्हारे लिए कठिन नहीं बनाना चाहता। यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम मुझे नेक लोगों में पाओगे।"

(28) मूसा ने कहा, "यह बात मेरे और तुम्हारे बीच निश्चित हो चुकी है। मैं जो भी शर्त पूरी करूँ, मुझपर कोई शत्रुता न होगी। हम जो कुछ कहते हैं, अल्लाह उसका संरक्षक है।"

(29) जब मूसा ने अपना समय पूरा किया और अपने परिवार के साथ चला गया, तो उसने पहाड़ की ढलान पर एक आग देखी। उसने अपने परिवार से कहा, "यहाँ ठहरो, मैंने एक आग देखी है। शायद मैं तुम्हारे लिए कोई खबर या जलती हुई लकड़ी लाऊँ, ताकि तुम अपने आप को गर्म कर सको।"

(30) जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे घाटी के दाहिने किनारे से, बरकत वाले स्थान पर, वृक्ष के पास से पुकारा गया: "ऐ मूसा! वास्तव में मैं अल्लाह हूँ, सारे संसार का पालनहार।"

(31) "अपनी लाठी डाल दे।" जब उसने देखा कि वह साँप की तरह हिल रही है, तो मुँह फेरकर भाग गया और फिर वापस न लौटा। (अल्लाह ने कहा:] "ऐ मूसा! निकट आ और डरो नहीं, तुम सुरक्षित हो।

(32) अपना हाथ अपने सीने में डालो, वह बिना कष्ट के सफेद होकर बाहर आ जाएगा। अपना हाथ अपने पास दबाओ और भय पर विजय पाओ। ये तुम्हारे रब की ओर से फ़िरऔन और उसके सरदारों के लिए दो निशानियाँ हैं। निश्चय ही वे लोग बड़े टेढ़े लोग हैं।"

(33) मूसा ने कहा, "ऐ मेरे रब! मैंने उनमें से एक को मार डाला है और मुझे डर है कि वे मुझे भी मार डालेंगे।

(34) मेरा भाई हारून मुझसे अधिक बोलने में निपुण है; उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेजो, ताकि वह मेरी बातों की पुष्टि करे। मुझे डर है कि वे मेरी बात का खंडन करेंगे।”

(35) [अल्लाह] ने कहा, "हम तुम्हारे भाई के द्वारा तुम्हारी भुजा को सुदृढ़ करेंगे और तुम्हें अधिकार प्रदान करेंगे, फिर वे तुमपर हावी न हो सकेंगे। हमारी निशानियों से तुम दोनों और जो कोई तुम्हारा अनुसरण करेगा, वही विजयी होगा।"

(36) जब मूसा उनके पास हमारी स्पष्ट निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा, "यह तो घड़सा हुआ जादू है। हमने अपने पूर्वजों में कभी इसका उल्लेख नहीं सुना।"

(37) मूसा ने कहा, "मेरा रब भली-भाँति जानता है कि कौन उसके पास से मार्गदर्शन लेकर आता है और कौन अन्तिम परिणाम पानेवाला है। निश्चय ही अत्याचारी लोग सफल नहीं होते।"

(38) फ़िरऔन ने कहा, "ऐ सरदारों! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी और ख़ुदा को नहीं जानता। ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी पर आग जलाओ और मेरे लिए एक मीनार बनाओ, ताकि मैं मूसा के ख़ुदा के पास जा सकूँ। वास्तव में मैं उसे झूठा मानता हूँ।"

(39) उसने और उसकी सेनाओं ने धरती में अकारथ घमण्ड किया और उन्होंने समझ लिया कि वे हमारे पास कभी लौटकर नहीं आएँगे।

(40) अतः हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया। अब अत्याचारियों का अन्त देखो।

(41) हमने उन लोगों को मार्गदर्शक बनाया जो आग की ओर पुकारते थे, और क़ियामत के दिन उनकी कोई सहायता न की जाएगी।

(42) हमने उनपर संसार में लानत भेजी और क़ियामत के दिन वे घृणा करनेवालों में से होंगे।

(43) इसके पश्चात कि हम पिछली जातियों को विनष्ट कर चुके, हमने मूसा को किताब प्रदान की, ताकि वह लोगों के लिए प्रकाश, मार्गदर्शन और दयालुता हो, ताकि वे ध्यान करें।

(44) जब हमने मूसा को आदेश दिया था, तो तुम पश्चिमी छोर पर नहीं थे और न तुम गवाहों में से थे।

(45) किन्तु हमने नस्लों को उत्पन्न किया, फिर उनकी आयु बढ़ा दी। तुम मदयन के लोगों में से नहीं थे कि उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाते, परन्तु हम ही भेजने वाले हैं।

(46) जब हमने पुकारा, तो तुम पहाड़ पर नहीं थे, परन्तु यह तुम्हारे रब की ओर से दयालुता बनकर आई, ताकि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करनेवाला नहीं आया, ताकि वे विचार करें।

(47) और ऐसा न हो कि जब उनपर उनके कर्मों के कारण कोई विपत्ति आ पड़े तो वे कहें कि हे हमारे पालनहार! तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुसरण करें और ईमानवालों में से हो जाएँ?

(48) फिर जब हमारी ओर से उनके पास सत्य आया तो उन्होंने कहा, "जो मूसा को दिया गया था, वह उसे क्यों नहीं दिया गया?" क्या उन्होंने उसको झुठलाया जो मूसा को दिया गया था? उन्होंने कहा, "ये दो जादू हैं, जो एक दूसरे की सहायता करते हैं।" उन्होंने कहा, "हम इनमें से किसी पर भी ईमान नहीं लाते।"

(49) कह दो, "अच्छी बात है, अल्लाह की ओर से कोई ऐसी किताब लाओ जो हम दोनों से बेहतर मार्गदर्शन दे, ताकि मैं उसका अनुसरण करूँ, यदि तुम सच्चे हो।"

(50) यदि वे तुम्हारी बात न मानें तो जान लो कि वे अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं। उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छाओं का अनुसरण करे। निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(51) हमने उनके पास बात उतारी है, ताकि वे विचार करें।

(52) जिन लोगों को हमने किताब इससे पहले दी थी, वे उस पर ईमान लाए।

(53) और जब यह आयत उनके सामने पढ़ी जाती है तो वे कहते हैं कि हम इसपर ईमान लाए। यह हमारे रब की ओर से सत्य है। हम तो इससे पहले भी आज्ञाकारी थे कि यह हमारे पास आई।

(54) ऐसे लोगों को उनका बदला दोगुना दिया जाएगा, क्योंकि उन्होंने धैर्य रखा, भलाई के साथ बुराई का इनकार किया और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है, उसमें से ख़र्च किया।

(55) जब वे व्यर्थ की बातें सुनते हैं तो उससे मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "हमारे कर्म हमारे अधिकार में हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे अधिकार में हैं। तुमपर सलामती हो। हम अज्ञानी लोगों की खोज नहीं करते।"

(56) तुम जिसे चाहो मार्ग दिखा नहीं सकते, किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है मार्ग दिखा देता है। और वह मार्ग पानेवालों को भली-भाँति जानता है।

(57) वे कहते हैं, "यदि हम तेरे बताए मार्ग पर चलें तो हम अपने देश से निकाल दिए जाएँगे।" क्या हमने उनके लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं बनाया है, जहाँ हमारी ओर से हर प्रकार के फल प्रवाहित होते हैं? किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

(58) हमने कितनी ही बस्तियों को विनष्ट कर दिया जो अपने धन पर घमण्ड करती थीं। ये उनके घर हैं, जो उनके पश्चात् थोड़े ही लोगों के अतिरिक्त कभी आबाद नहीं हुए। और हम ही उनके उत्तराधिकारी थे।

(59) तुम्हारा रब इन बस्तियों को विनष्ट न करता, यदि उनकी माताओं के पास कोई रसूल न भेजता, जो उन्हें हमारी आयतें सुनाता। हम इन बस्तियों को विनष्ट न करते, यदि उनके निवासी अत्याचारी न होते।

(60) जो कुछ तुम्हें दिया गया है वह सांसारिक जीवन का आनन्द और शोभा है, किन्तु जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और अधिक स्थायी है। क्या तुम समझते नहीं?

(61) क्या वह व्यक्ति, जिससे हमने कोई अच्छा वादा किया हो कि वह उसे पूरा करेगा, उस व्यक्ति के समान है जिसे हमने सांसारिक जीवन में सुख प्रदान किया हो, फिर क़ियामत के दिन वह यातना में डाला जाएगा?

(62) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, फिर कहेगा, "मेरे वे साझी कहाँ हैं, जिन्हें तुम ढूँढ़ रहे थे?"

(63) जिनपर फ़ैसला आ गया है वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! यही वे लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह कर दिया। हमने उन्हें गुमराह कर दिया, जिस प्रकार हमने स्वयं गुमराह किया था। हमने तुझसे पहले उनसे विमुख हो गए थे। हम तो पूजक नहीं थे।"

(64) उनसे कहा जाएगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ। वे उन्हें बुलाएँगे, किन्तु वे उत्तर न देंगे और वे यातना देखेंगे। यदि वे मार्गदर्शन पर चलते!

(65) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, फिर कहेगा, "तुमने रसूलों को क्या उत्तर दिया?"

(66) उस दिन उनके लिए समाचार अस्पष्ट हो जायेंगे और वे उससे परामर्श भी न कर सकेंगे।

(67) किन्तु जो व्यक्ति तौबा कर ले और ईमान लाये और अच्छे कर्म करे, तो संभवतः वह प्रसन्नचित्त लोगों में होगा।

(68) तुम्हारा रब जो चाहता है पैदा करता है और चुनता है, उन्हें कोई अधिकार नहीं कि वे चुनाव करें। पवित्र है अल्लाह और वह उससे बड़ा है जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(69) तुम्हारा रब जानता है जो कुछ उनके दिल छिपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं।

(70) वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी के लिए संसार और आख़िरत में प्रशंसा है, उसी के लिए न्याय का अधिकार है और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

(71) कह दो, "क्या तुमने विचार किया है? यदि अल्लाह तुम्हारे लिए क़ियामत के दिन तक एक रात बना दे, तो अल्लाह के अतिरिक्त कौन सा पूज्य-प्रभु तुम्हें प्रकाश दे सकेगा? क्या तुम सुनते नहीं?"

(72) कह दो, "क्या तुमने विचार किया? यदि अल्लाह तुम्हारे लिए दिन को सदैव के लिए कर दे, यहाँ तक कि क़ियामत के दिन तक के लिए, तो अल्लाह के सिवा कौन ऐसा पूज्य-प्रभु है जो तुम्हारे लिए रात को चैन की रात ला सके? क्या तुम देखते नहीं?"

(73) उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन पैदा किए, ताकि तुम आराम करो और उसका अनुग्रह चाहो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

(74) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, फिर कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन्हें तुम ढूँढ़ रहे थे?"

(75) हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह चुन लेंगे और कहेंगे, "लाओ अपना प्रमाण।" वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह के पास है और जो कुछ उन्होंने घड़ रखा था, वह उनसे दूर हो जाएगा।

(76) क़ारूनमूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके साथ बहुत ही अहंकार किया। हमने उसे ऐसे ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियाँ शक्तिशाली लोगों के समूह के लिए भारी बोझ बन जातीं। उसकी क़ौम ने उससे कहा, "ज़्यादा गर्व न कर, निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो बहुत अधिक गर्व करते हैं।

(77) अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से अंतिम घर की खोज करो और दुनिया में अपना हिस्सा न भूलो। अच्छाई करो जैसा अल्लाह ने तुम्हारे साथ किया है। धरती में बिगाड़ की तलाश न करो, क्योंकि अल्लाह बिगाड़ करने वालों को पसन्द नहीं करता।

(78) उसने कहा, "यह मुझे उस ज्ञान के कारण दिया गया है जो मेरे पास है।" क्या उसे मालूम नहीं था कि अल्लाह ने उससे पहले उन लोगों को विनष्ट कर दिया था जो उससे अधिक शक्तिशाली और अधिक धनवान थे? किन्तु अपराधियों से उनके पापों के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा।

(79) फिर वह अपनी शान-शौकत के साथ अपनी क़ौम के सामने आया। जो लोग सांसारिक जीवन के इच्छुक थे, उन्होंने कहा, "काश! हमें भी वह मिलता जो क़ारून को दिया गया था। वह तो बड़ा सौभाग्यशाली है।"

(80) किन्तु जिन लोगों को ज्ञान दिया गया था, उन्होंने कहा कि "अफसोस है तुमपर! अल्लाह की ओर से प्रतिफल उस व्यक्ति के लिए उत्तम है जो ईमान लाया और अच्छे कर्म किए। किन्तु उसे केवल धैर्यवान ही प्राप्त करेगा।"

(81) हमने उसे और उसके घर को धरती में धंसा दिया, फिर न अल्लाह के मुक़ाबले में उसका कोई सहायक था और न वह अपनी रक्षा कर सकता था।

(82) जो लोग कल उसकी जगह होना चाहते थे, उन्होंने कहा, "अहा! यह तो स्पष्ट है कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसकी जीविका बढ़ा देता है या सीमित कर देता है। यदि अल्लाह ने हम पर अनुग्रह न किया होता, तो हमें भी डुबो देता। अहा! इनकार करनेवाले सफल नहीं होते।"

(83) यह अन्तिम घर हमने उन लोगों के लिए रखा है जो धरती में श्रेष्ठता की इच्छा नहीं रखते और न बिगाड़ पैदा करते हैं। अच्छा परिणाम तो नेक लोगों के लिए है।

(84) जो भलाई लेकर आएगा, उसके लिए अच्छा है और जो बुराई लेकर आएगा, तो जिन लोगों ने बुराई की है, उन्हें उसके बदले में कुछ नहीं दिया जाएगा, जो वे करते रहे हैं।

(85) जिसने तुमपर क़ुरआन थोपा है, वही तुम्हें लौटाकर वापस ले जाएगा। कह दो, "मेरा रब भली-भाँति जानता है कि कौन मार्गदर्शन लेकर आया और कौन स्पष्ट रूप से गुमराही में पड़ा है।"

(86) तुम आशा नहीं रखते थे कि यह किताब तुम्हारी ओर अवतरित होगी, परन्तु तुम्हारे रब की ओर से दयालुता के रूप में। अतः तुम इनकार करने वालों का समर्थन न करो।

(87) और अल्लाह की आयतों से मुँह न मोड़ो, इसके पश्चात कि वे तुम्हारी ओर अवतरित हो चुकी हैं। और अपने रब को पुकारो और मुशरिकों में से न हो जाओ।

(88) अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य पूज्य को न पुकारो। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। प्रत्येक चीज़ नष्ट हो जाती है, परन्तु उसका मुख ही नष्ट होता है। उसी के लिए न्याय का अधिकार है और उसी की ओर तुम लौटकर जाओगे।

# सूरा 29: ٱلْعَنْكَبُوت‎ (अल-अंकबुत) - मकड़ी

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) क्या मनुष्य यह सोचते हैं कि उन्हें बिना परखे यह कहने के लिए छोड़ दिया जा सकता है कि, "हम विश्वास करते हैं"?

(3) हमने उनसे पहले वालों की परीक्षा ली थी, ताकि अल्लाह जान ले कि कौन सच्चा है और कौन झूठा।

(4) या जो लोग बुराई करते हैं, वे यह सोचते हैं कि वे उससे बच सकते हैं? यह कितना बुरा निर्णय है!

(5) जो कोई अल्लाह से मिलने की आशा रखता हो, तो जान लो कि अल्लाह का ठहराया हुआ समय अवश्य आएगा। वास्तव में, वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(6) जो व्यक्ति प्रयास करता है, वह अपने ही भले के लिए प्रयास करता है। निस्संदेह अल्लाह सृष्टि से पूर्णतः स्वतंत्र है।

(7) रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, हम उनके बुरे कर्मों को अवश्य मिटा देंगे और उन्हें उनके अच्छे कर्मों के अनुसार बदला देंगे।

(8) हमने मनुष्य को आदेश दिया है कि अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। फिर यदि वे तुमपर दबाव डालें कि तुम मेरा साझीदार बनो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानो। तुम मेरी ही ओर लौटकर जाओगे, फिर मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम क्या करते रहे हो।

(9) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, हम उन्हें अवश्य अच्छे लोगों में शामिल करेंगे।

(10) लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं, फिर यदि अल्लाह के मार्ग में उन पर अत्याचार हो तो लोगों की परीक्षा को अल्लाह की ओर से यातना समझो, फिर यदि तुम्हारे रब की ओर से तुम्हें सहायता प्राप्त हो जाए तो वे कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह मनुष्यों के दिलों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति नहीं जानता?

(11) अल्लाह जानता है उन लोगों को जो ईमान लाए और वह झूठों को भी जानता है।

(12) जिन लोगों ने इनकार किया, वे ईमान लानेवालों से कहते हैं कि "तुम हमारे मार्ग पर चलो, हम तुम्हारे पापों का भार उठा लेंगे।" किन्तु वे अपने पापों का भार कदापि नहीं उठाएँगे। वास्तव में वे झूठे हैं।

(13) वे अपने बोझ स्वयं उठाएँगे तथा अपने बोझ के अतिरिक्त अन्य बोझ भी उठाएँगे और क़ियामत के दिन उनसे पूछा जाएगा कि वे क्या-क्या घड़ते रहे थे।

(14) हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर बुलाया, तो वह उनके बीच एक हज़ार वर्ष रहा, पचास वर्ष से कम। फिर उन पर तूफ़ान आया, जबकि वे अत्याचार कर रहे थे।

(15) किन्तु हमने उसे और कश्तीवालों को बचा लिया और उसे समस्त संसार के लिए एक निशानी बना दिया।

(16) और इबराहीम को याद करो, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह की बन्दगी करो और उससे डरते रहो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम जानते।

(17) तुम अल्लाह को छोड़कर मूर्तियों की पूजा करते हो और झूठ घड़ते हो। अल्लाह को छोड़कर जिनकी पूजा करते हो वे तुम्हारे लिए कुछ रोज़ी नहीं दे सकते। अतः अल्लाह से रोज़ी मांगो और उसी की बन्दगी करो और उसी का आभार मानो। उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।

(18) फिर यदि तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले भी बहुत सी जातियों ने झुठलाया है। और रसूल तो केवल स्पष्ट संदेश पहुँचाने का कार्य करता है।

(19) क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह किस प्रकार सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है? यह अल्लाह के लिए सरल है।

(20) कह दो, "धरती में चलो-फिरो और देखो कि उसने सृष्टि का आरम्भ किस प्रकार किया। फिर अल्लाह अन्तिम पीढ़ी को उत्पन्न करेगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वशक्तिशाली है।"

(21) वह जिसे चाहता है यातना देता है और जिसपर चाहता है दया करता है। और उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।

(22) और तुम उससे न धरती में बच सकते हो और न आकाश में। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा न कोई संरक्षक है और न सहायक।

(23) जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उससे मिलने का इनकार किया, वे मेरी दयालुता से निराश हो गये। उनके लिए दुखद यातना है।

(24) उसकी क़ौम के लोगों ने तो बस यही कहा कि "उसे मार डालो या जला दो।" किन्तु अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(25) इबराहीम ने कहा, "तुमने सांसारिक जीवन में आपसी प्रेम के कारण अल्लाह के स्थान पर मूर्तियों को बनाया, फिर क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे को झुठलाओगे और एक-दूसरे पर लानत भेजोगे। तुम्हारी शरण आग है और तुम्हारा कोई सहायक न होगा।"

(26) लूत उसपर ईमान लाया और कहा, "मैं अपने रब की ओर प्रवास करूँगा। निस्संदेह, वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

(27) हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए और उसकी संतान को नबूवत और किताब प्रदान की, और हमने उसे संसार में उसका प्रतिफल प्रदान किया और आख़िरत में भी वह नेक लोगों में से होगा।

(28) और लूत को याद करो, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "तुम लोग ऐसे बुरे काम कर रहे हो, जो किसी प्राणी ने पहले कभी नहीं किए।

(29) तुम लोगों के पास जाते हो, डाकुओं में लिप्त हो और अपने ठिकानों में घिनौने काम करते हो। किन्तु उसकी क़ौम के लोगों ने कहा, "यदि तुम सच्चे हो तो हम पर अल्लाह की यातना उतार दो।"

(30) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! इस बिगाड़नेवाले लोगों के विरुद्ध मेरी सहायता कर।"

(31) और जब हमारे फ़रिश्ते इबराहीम के पास शुभ सूचना लेकर आए तो कहने लगे, "हम इस बस्ती के लोगों को विनष्ट कर देनेवाले हैं। निस्संदेह वे अत्याचारी हैं।"

(32) उसने कहा, "लेकिन लूत तो वहाँ रहता है।" उन्होंने उत्तर दिया, "हम जानते हैं कि वहाँ कौन रहता है। हम उसे और उसके परिवार को बचा लेंगे, परन्तु उसकी पत्नी को नहीं, जो पीछे रह जानेवालों में से होगी।"

(33) जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए तो वह उनके कारण बहुत दुखी हुआ और अपने आपको असहाय महसूस करने लगा। उन्होंने कहा, "डरो मत और दुखी मत हो। हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे, परन्तु तुम्हारी पत्नी को, जो पीछे रह जानेवालों में से होगी।

(34) हम इस नगर के निवासियों पर उनके भ्रष्टाचार के कारण आकाश से यातना उतारेंगे।"

(35) और हमने इसकी एक स्पष्ट निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दी है जो सोच-विचार करें।

(36) और मिद्यानियों की ओर उनके भाई शोऐब को भेजा, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो और अन्तिम दिन की आशा रखो और धरती में फ़साद न फैलाओ।"

(37) उन्होंने उसे झूठा कहा, और उन पर भूकम्प आ गया; और भोर होते-होते वे अपने घरों में मरे पड़े थे।

(38) और आद और समूद के लोगों को याद करो, उनकी बर्बादियाँ तुम्हारे लिए स्पष्ट हैं। शैतान ने उनके लिए बुरे कर्मों को आकर्षक बना दिया और उन्हें सीधे मार्ग से भटका दिया, यद्यपि वे बुद्धि से युक्त थे।

(39) और क़ारून, फ़िरऔन और हामान को भी मूसा ने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए, किन्तु उन्होंने धरती में अहंकार किया और वे बच न सके।

(40) हमने उनमें से प्रत्येक को उसके गुनाह के कारण मारा। किसी पर हमने पत्थरों की वर्षा की, किसी पर चिल्लाकर प्रहार किया, किसी को धरती में डुबो दिया और किसी को डुबा दिया। अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया।

(41) जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को अपना संरक्षक बना लेते हैं, वे उस मकड़ी के समान हैं जो अपना घर बनाती है। सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का है, काश वे जानते।

(42) निस्संदेह अल्लाह जानता है, जो कुछ लोग उससे हटकर पुकारते हैं। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(43) ये वे दृष्टान्त हैं जो हम मनुष्यों के सामने प्रस्तुत करते हैं, परन्तु केवल बुद्धिमान ही इन्हें समझते हैं।

(44) अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया, इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है।

(45) जो कुछ तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है उसे पढ़ो और नमाज़ पर पाबंद रहो। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से सुरक्षा प्रदान करती है। अल्लाह का ज़िक्र उससे कहीं बढ़कर है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(46) किताबवालों से केवल अच्छे तरीक़े से बहस करो, सिवाय उन लोगों के जो उनमें से अत्याचारी हैं। कह दो, "जो कुछ हमारी ओर अवतरित हुआ और जो कुछ तुम्हारी ओर अवतरित हुआ, उसपर हम ईमान लाए। हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही है, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।"

(47) इस प्रकार हमने तुम्हारी ओर किताब उतारी। जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उस पर ईमान लाए और उनमें से कुछ लोग ईमान लाए। और केवल इनकार करनेवाले ही हमारी आयतों को झुठलाते हैं।

(48) इससे पहले न तो तुमने कोई किताब पढ़ी और न उसे अपने दाहिने हाथ से लिखा, अन्यथा इनकार करने वाले लोग संदेह में पड़ जाते।

(49) और ये तो उन लोगों के दिलों में खुली निशानियाँ हैं जिन्हें ज्ञान दिया गया। हमारी आयतों को झुठलाने वाले तो केवल अत्याचारी ही हैं।

(50) और वे कहते हैं, "उसके रब की ओर से उसपर कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?" कह दो, "सब निशानियाँ अल्लाह के पास हैं और मैं तो बस स्पष्ट चेतावनी देनेवाला हूँ।"

(51) क्या यह उनके लिए काफ़ी नहीं कि हमने तुम्हारी ओर किताब उतारी, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? इसमें दया और चेतावनी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

(52) कह दो, "मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही गवाह के रूप में काफ़ी है। वह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है।" रहे वे लोग जो झूठ पर ईमान लाए और अल्लाह का इनकार किया, वही घाटे में पड़े।

(53) वे तुमसे प्रार्थना कर रहे हैं कि यातना को शीघ्र करो। यदि यातना का समय निश्चित न होता तो उनपर यातना आ चुकी होती। किन्तु वह उनपर अचानक आ जायेगी, उनके जानने के बिना।

(54) वे तुमसे यातना में शीघ्रता करने को कहते हैं, किन्तु निश्चय ही नरक इनकार करनेवालों को घेर लेगा।

(55) जिस दिन यातना उनपर ऊपर से और उनके पैरों के नीचे से छा जायेगी, वह उनसे कहेगा, "जो कुछ तुम करते रहे हो, उसका मज़ा चखो।"

(56) ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए! मेरी धरती बहुत बड़ी है। अतः मेरी ही इबादत करो।

(57) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है, फिर तुम सब हमारी ओर लौटाये जाओगे।

(58) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, हम उन्हें जन्नत में ऊँचे-ऊँचे भवनों में रखेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे वहाँ सदैव रहेंगे और अच्छे कर्म करने वालों का बदला बहुत अच्छा है।

(59) जो धैर्य रखते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

(60) बहुत से प्राणी ऐसे हैं जो अपनी जीविका स्वयं नहीं चलाते, अल्लाह उन्हें भी जीविका प्रदान करता है और तुम्हें भी। वह सुनता, जानता है।

(61) यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया और सूर्य और चन्द्रमा को किसने वश में किया, तो वे कहेंगे, "अल्लाह ने।" फिर वे कैसे मुँह मोड़ सकते हैं?

(62) अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उदारता से प्रदान करता है या सीमित करता है। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ है।

(63) यदि तुम उनसे पूछो कि आकाश से पानी किसने बरसाया और धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित किया, तो वे कहेंगे, "अल्लाह ने।" कह दो, "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है।" किन्तु उनमें से अधिकतर लोग समझते नहीं।

(64) यह सांसारिक जीवन तो बस खेल और मनोरंजन है, वास्तव में आख़िरत का घर ही सच्चा जीवन है, यदि वे जानते।

(65) जब वे नाव पर सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसके प्रति सच्चे होकर। फिर जब वह उन्हें बचा लेता है और किनारे पर पहुँचा देता है, तो वे उसके साझी ठहराते हैं।

(66) अतः जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसे उन्होंने झुठला दिया और वे भोग-विलास में डूब गए। किन्तु शीघ्र ही वे जान लेंगे।

(67) क्या वे नहीं देखते कि हमने मक्का को सुरक्षित स्थान बनाया है, जबकि उसके आस-पास के लोग अपहरण किये जा रहे हैं? तो क्या वे झूठ पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की कृपा को झुठलाते हैं?

(68) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले या जब सत्य उसके पास आ जाए तो उसे झुठला दे? क्या इनकार करनेवालों के लिए जहन्नम में कोई घर नहीं है?

(69) जो लोग हमारे लिए संघर्ष करेंगे, हम उन्हें अवश्य अपने मार्ग दिखायेंगे। निस्संदेह अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

# सूरा 30: **ٱلرُّوم‎ (Ar-Rum)** - रोमन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) रोमन पराजित हुए

(3) पड़ोसी देश में। लेकिन अपनी हार के बाद, वे जीतेंगे

(4) कुछ वर्षों के अन्दर, पहले और बाद का आदेश अल्लाह ही के लिए है। उस दिन ईमान वाले बहुत प्रसन्न होंगे।

(5) अल्लाह की सहायता से। वह जिसे चाहता है विजय प्रदान करता है। और वह प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(6) यह अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे से कभी नहीं चूकता, किन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

(7) वे तो केवल सांसारिक जीवन का प्रत्यक्ष ज्ञान रखते हैं, परन्तु परलोक से बेखबर हैं।

(8) क्या वे अपने ऊपर विचार नहीं करते? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे हक़ के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत-से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार करते हैं।

(9) क्या उन्होंने धरती में फिरकर नहीं देखा कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे, और उन्होंने धरती को जोता-बोया और उससे अधिक आबाद किया, जितना उन्होंने किया। और उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए। अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया।

(10) फिर जिन लोगों ने बुराई की, उनका परिणाम और भी बुरा हुआ। उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनपर हँसे।

(11) अल्लाह ही सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है, फिर तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे।

(12) और जिस दिन क़ियामत आ जायेगी, अपराधी निराश हो जायेंगे।

(13) जिन लोगों को उन्होंने साझी ठहराया था, उनमें से उनका कोई सिफ़ारिश करनेवाला न होगा और वे अपने देवताओं से इन्कार कर देंगे।

(14) और जिस दिन क़ियामत आ जायेगी, उस दिन वे विभाजित हो जायेंगे।

(15) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे आनन्द के बाग़ में होंगे।

(16) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों और आख़िरत में मिलने को झुठलाया, वही लोग यातना की ओर ले जाये जायेंगे।

(17) अतः जब तुम शाम को आओ और जब सुबह उठो तो अल्लाह की तसबीह करो।

(18) आकाशों और धरती में, सूर्यास्त के समय और दोपहर के समय, उसी की स्तुति है।

(19) वही जीवित को मुर्दों में से और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और धरती को उसके मरने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी उसकी ओर लौटाए जाओगे।

(20) और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर तुम लोग बिखरे हुए मनुष्य हो।

(21) और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही तरह की पत्नियाँ पैदा कीं, ताकि तुम उनसे सुख पाओ और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया स्थापित कर दी। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें।

(22) और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभेदन। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ज्ञान रखते हैं।

(23) और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना भी है और यह कि तुम उसका अनुग्रह चाहो। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ध्यान दें।

(24) और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, ताकि तुम डर और आशा रखो और आकाश से पानी बरसाता है, जिससे धरती मर चुकी है, उसके पश्चात जीवित हो जाती है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें।

(25) और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश पर स्थिर रहते हैं। फिर जब वह धरती से तुम्हें एक आवाज़ देकर बुलाएगा तो तुम तुरन्त बाहर निकल आओगे।

(26) आकाशों तथा धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। सब उसके अधीन हैं।

(27) वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है, और उसके लिए यह और भी सरल है। आकाशों और धरती में सर्वोच्च आदर्श उसी के लिए है, और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(28) वह तुम्हारे सामने तुम्हारी ही ओर से एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि क्या तुमने अपने बन्दों में से किसी को उन अच्छी चीज़ों में साझीदार बनाया है जो हमने तुम्हें प्रदान की हैं, ताकि तुम उनमें बराबर हो जाओ? इसी प्रकार हम आयतों को उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं जो समझ रखते हैं।

(29) किन्तु अत्याचारी लोग अज्ञानता के कारण अपनी इच्छाओं के पीछे चले जाते हैं। जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो, उसे कौन मार्ग दिखायेगा? उनका कोई सहायक नहीं।

(30) अतः अपना रुख शुद्ध धर्म की ओर मोड़ो, अर्थात उस मूल स्वभाव की ओर जिससे अल्लाह ने मनुष्य को पैदा किया। अल्लाह की रचना में कोई परिवर्तन नहीं। यही सच्चा धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग उसे नहीं जानते।

(31) उसी की ओर लौट आओ, उससे डरो, नमाज़ क़ायम करो और उसके साझीदारों में से न हो जाओ।

(३२) जो लोग अपने धर्म को विभाजित करके सम्प्रदाय बन गये, उनमें से प्रत्येक समूह जो कुछ उसके पास है, उसका आनंद उठा रहा है।

(33) जब लोगों पर कोई मुसीबत आती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं और उसी की ओर ध्यानपूर्वक देखते हैं। फिर जब वह उन्हें अपनी दयालुता का स्वाद चखाता है तो उनमें से कुछ लोग अपने रब का साझीदार बन जाते हैं।

(34) और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसे झुठला दें। अतः तुम कुछ समय तक आनन्द मनाओ, किन्तु शीघ्र ही तुम जान जाओगे।

(35) क्या हमने उनपर उस चीज़ के सम्बन्ध में कोई प्रमाण उतारा है जिसे वे साझी ठहराते हैं?

(36) और जब हम लोगों को दयालुता का स्वाद चखाते हैं तो वे प्रसन्न हो जाते हैं, किन्तु जब उनके कर्मों के कारण उन पर कोई विपत्ति आ पड़ती है तो वे निराश हो जाते हैं।

(37) क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिसे चाहता है सीमित कर देता है। इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(38) अतः अपने सम्बन्धियों को उसका हक़ दो, मिस्कीनों को और मुसाफ़िरों को। यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह का प्रसन्नता चाहते हैं। वही लोग सफल होने वाले हैं।

(39) और जो कुछ तुम दूसरों के खर्च पर अपना माल बढ़ाने के लिए ब्याज में देते हो, वह अल्लाह के निकट नहीं बढ़ता, परन्तु जो कुछ तुम अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा से दान करते हो, तो वे लोग उससे कई गुना अधिक दान कर चुके होते हैं।

(40) अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रोज़ी दी, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जिलाएगा। क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो ऐसा कर सके? पवित्र है वह! वह उससे कहीं अधिक ऊँचा है, जिसे वे साझीदार मानते हैं।

(41) धरती और समुद्र में बिगाड़ पैदा हो गया है, मनुष्यों के हाथों की बनाई हुई चीज़ों के कारण। ताकि वह उन्हें उनके बनाए हुए का मज़ा चखाए, शायद वे फिरें।

(42) कह दो, "धरती में चलो-फिरो और देखो कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ। उनमें अधिकतर लोग मुश्रिक थे।"

(43) अतः तुम अपना रुख सीधे धर्म की ओर मोड़ लो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए, जिसे वापस नहीं लाया जा सकेगा। उस दिन वे विभाजित हो जायेंगे।

(44) जिसने इनकार किया, उसका इनकार उसी पर पड़ेगा; और जिसने अच्छा काम किया है, उसने अपने लिए अच्छाई तैयार की है,

(45) ताकि अल्लाह उन लोगों को अपने अनुग्रह से पुरस्कृत करे जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए। निस्संदेह वह इनकार करनेवालों को पसन्द नहीं करता।

(46) और उसकी निशानियों में से है हवाओं को शुभ सूचना देनेवाला बनाना, ताकि तुम उसकी दयालुता का स्वाद चखो और ताकि तुम उसके आदेश से नौका चलाओ और ताकि तुम उसके अनुग्रह की खोज करो, शायद तुम कृतज्ञता दिखाओ।

(47) और हमने तुमसे पहले भी उनकी क़ौम की ओर रसूल भेजे, वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए, फिर हमने उन लोगों से बदला लिया जिन्होंने बुराई की, और ईमान वालों की सहायता करना हमारा कर्तव्य था।

(48) अल्लाह ही है जो हवाएँ भेजता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर उन्हें आकाश में फैलाता है जैसा चाहता है, फिर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उनसे वर्षा निकलती है, फिर जब वह उसे अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है उतारता है, तो वे प्रसन्न होते हैं।

(49) यद्यपि इससे पहले कि वह उनपर अवतरित होती, वे निराश हो चुके थे।

(50) अतः अल्लाह की दयालुता के लक्षणों पर ध्यान दो कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। वास्तव में वही मुर्दों को जीवित करने वाला है और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(51) और यदि हम उनकी ओर हवा भेजें, तो वे उसे पीला देखेंगे, तो उसके बाद वे इनकार कर देंगे।

(52) तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को पुकार सुना सकते हो, जब वे पीठ फेर लें।

(53) और तुम अंधों को उनकी उलझन से निकाल नहीं सकते, तुम तो बस उन लोगों को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी रहे।

(54) अल्लाह ही है जिसने तुम्हें निर्बल पैदा किया, फिर तुम्हारी निर्बलता के पश्चात तुम्हें शक्ति प्रदान की, फिर तुम्हारी शक्ति के पश्चात तुम्हें निर्बल और बूढ़ा बना दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह सर्वज्ञ, प्रभुत्वशाली है।

(55) और जिस दिन क़ियामत आएगी तो अपराधी क़सम खाएँगे कि वे बस एक घड़ी ही ठहरे थे। इस प्रकार वे मुँह फेर रहे थे।

(56) किन्तु वे लोग जिन्हें ज्ञान और ईमान प्रदान किया गया, कहेंगे, "तुम क़ियामत के दिन तक अल्लाह के आदेश पर बने रहे, फिर देखो, क़ियामत का दिन आ गया, किन्तु तुम उसे नहीं जानते थे।"

(57) उस दिन अपराधियों की बहानेबाज़ी व्यर्थ होगी और न उनसे कोई प्रायश्चित माँगा जाएगा।

(58) और हमने इस क़ुरआन में लोगों के सामने हर प्रकार की मिसालें पेश कर दी हैं। फिर यदि तू उनके पास कोई निशानी ले आए तो इनकार करनेवाले कहेंगे, "तुम तो बस झूठे लोग हो।"

(59) इस प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो नहीं जानते।

(60) अतः धैर्य रखो, निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग संदेह में हैं, वे तुम्हें कष्ट न पहुँचाएँ।

# सूरा 31: لُقْمَان‎ (लुकमान) - लुकमान

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) ये तत्वदर्शी पुस्तक की आयतें हैं,

(3) मार्गदर्शन और दया उन लोगों के लिए जो अच्छे कर्म करते हैं,

(4) जो नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और आख़िरत पर ईमान रखते हैं।

(5) वे अपने रब की ओर से मार्ग पा लेंगे और वही सफल होंगे।

(6) लोगों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अज्ञानता के कारण व्यर्थ की बातें करते हैं, ताकि उन्हें अल्लाह के मार्ग से भटका दें और उसका उपहास करें। ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है।

(7) जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह अहंकार में भर जाता है, मानो उसने उन्हें सुना ही न हो, मानो उसके कानों में बहरापन हो। अतः उसे दुखद यातना सुना दो।

(8) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए सुखदायी जन्नतें हैं।

(9) यह अल्लाह का सच्चा वादा है। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(10) उसने आकाश को बिना किसी खंभे के बनाया और धरती पर पहाड़ बनाए ताकि वह तुम्हारे साथ न हिले और उस पर हर प्रकार के जीव-जन्तु बिखेर दिए और हमने आकाश से पानी बरसाया और उससे धरती पर हर प्रकार के अच्छे-अच्छे पौधे उगाए।

(11) यह अल्लाह की रचना है। अब मुझे दिखाओ कि उसके सिवा और किस चीज़ ने रचना की है। निश्चय ही अत्याचारी लोग स्पष्ट रूप से गुमराही में पड़े हुए हैं।

(12) और हमने लुक़मान को बुद्धि प्रदान की, "अल्लाह का आभार मान। जो आभार मानेगा, वह अपने ही भले के लिए ऐसा करेगा। और जो कृतघ्न होगा, उसे जान लेना चाहिए कि अल्लाह अत्यन्त निःसंकोच, अत्यन्त प्रशंसनीय है।"

(13) और जब लुकमान ने अपने बेटे से कहा, "ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ किसी को साझी न बनाना। निस्संदेह, अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराना बहुत बड़ा अन्याय है।"

(14) और हमने मनुष्य को आदेश दिया है कि अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करे। उसकी माँ ने उसे बहुत कमज़ोरियों के साथ जन्म दिया और उसका दूध छुड़ाने का समय दो वर्ष का है। तो मेरे और अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। मेरे ही पास लौटना है।

(15) फिर यदि वे तुमपर दबाव डालें कि तुम मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को साझी बनाओ जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं, तो उनकी बात न मानो, बल्कि संसार में भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करो और उस व्यक्ति के मार्ग पर चलो जो मेरी ओर श्रद्धा से तत्पर हो। फिर तुम मेरी ओर लौटकर आओगे और मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुमने किया है।

(16) "ऐ मेरे बेटे! यदि वह राई के दाने के बराबर भी हो और किसी चट्टान में, या आकाश में, या धरती में छिपी हो, तो भी अल्लाह उसे प्रकाशित कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त अन्तर्यामी, तत्वदर्शी है।

(17) ऐ मेरे बेटे! नमाज़ अदा करो, भलाई का हुक्म दो और बुराई से रोको, और जो कुछ तुम पर आए उसे धैर्य से सहन करो। यह कर्म में संकल्प की निशानी है।

(18) और लोगों से अपना मुँह न मोड़ो और धरती में अहंकार से न चलो। निस्संदेह अल्लाह हर अहंकारी और अहंकारी को पसन्द नहीं करता।

(19) अपनी चाल में संयम रखो और अपनी आवाज़ धीमी रखो। वास्तव में सबसे अप्रिय आवाज़ गधे की रेंकना है।"

(20) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब तुम्हारे अधीन कर दिया है और तुमपर अपनी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुकंपाएँ बरसाई हैं? फिर भी लोगों में से कुछ लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, बिना किसी ज्ञान, मार्गदर्शन और बिना किसी प्रकाश की किताब के।

(21) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा है, उसका अनुसरण करो तो कहते हैं कि नहीं, हम तो उसी का अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। और यद्यपि शैतान उन्हें आग की यातना की ओर बुलाए?

(22) जो व्यक्ति अल्लाह के प्रति समर्पित हो और उपकार करनेवाला हो, उसने सबसे मजबूत हाथ पकड़ लिया, और हर चीज़ का परिणाम अल्लाह ही के लिए है।

(23) और जो इनकार करे, तो उसके इनकार से तुम दुखी न हो। उन्हें हमारी ही ओर लौटना है। और जो कुछ वे करते रहे, हम उन्हें बता देंगे। निस्संदेह अल्लाह सीनों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है।

(24) हम उन्हें थोड़े समय तक सुख प्रदान करेंगे, फिर उन्हें कठोर यातना में डाल देंगे।

(25) और यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे अल्लाह ने। कह दो कि सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है। किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(26) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। निस्संदेह अल्लाह ही अत्यन्त प्रशंसनीय है।

(27) यदि धरती के सभी वृक्ष पंख हो जाएं और समुद्र स्याही हो जाए और उनमें सात समुद्र और जोड़ दिए जाएं तो भी अल्लाह की बातें समाप्त न होंगी। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(28) तुम सबको पैदा करना और उठाना उसी के लिए है, एक ही प्राणी के समान। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

(29) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में प्रविष्ट कराता है, और उसने सूर्य और चन्द्रमा को वश में कर रखा है, कि वे सब अपने-अपने नियत समय की ओर दौड़ रहे हैं, और यह कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो?

(30) यह इसलिए कि अल्लाह सत्य है और जो कुछ वे उससे हटकर पुकारते हैं वह मिथ्या है और इसलिए कि अल्लाह सर्वोच्च, महान है।

(31) क्या तुम नहीं देखते कि कश्तियाँ अल्लाह के अनुग्रह से समुद्र में चलती हैं, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाए? निस्संदेह, इसमें प्रत्येक धैर्यवान और कृतज्ञता दिखाने वाले व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं।

(32) और जब अँधेरे की लहर उनपर छा जाती है तो वे अल्लाह को पुकारते हैं, फिर जब वह उन्हें सूखी ज़मीन पर पहुँचा देता है तो उनमें से कुछ लोग संयम से चलते हैं और हमारी आयतों को कोई झुठलाता नहीं, बस हर एक नाशुक्रे विश्वासघाती।

(33) ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जब न बाप अपने बेटे का भला करेगा और न बेटा अपने बाप का। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः तुम सांसारिक जीवन से धोखा न खाओ और न धोखा देनेवाला तुम्हें अल्लाह से दूर कर दे।

(34) निश्चय ही अल्लाह ही क़ियामत का ज्ञान रखता है। वही वर्षा करता है। वही गर्भों में जो कुछ है उसे जानता है। कोई नहीं जानता कि कल वह क्या कमाएगा और न कोई जानता है कि वह किस देश में मरेगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, ख़बर रखनेवाला है।

# सूरा 32: ٱلسَّجْدَة‎ (अस-सजदा) - साष्टांग प्रणाम

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) अलिफ़, लाम, मीम।

(2) और जो किताब अवतरित हुई है, उसमें कोई संदेह नहीं, वह सारे संसार के रब की ओर से है।

(3) या वे कहते हैं कि क्या उसने इसे घड़ लिया है? बल्कि यह तुम्हारे रब की ओर से सत्य है, ताकि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करनेवाला नहीं आया, ताकि वे मार्ग पा लें।

(4) वही अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई संरक्षक है और न सिफ़ारिश करनेवाला। तो क्या तुम विचार नहीं करते?

(5) वह आकाश से लेकर पृथ्वी तक प्रत्येक मामले का संचालन करता है, फिर सब लोग उसी की ओर चढ़ेंगे, एक दिन में जिसकी अवधि तुम्हारे एक हजार वर्ष के बराबर होगी।

(6) वह ग़ैब और ज़ाहिर का जाननेवाला, प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(7) जिसने हर चीज़ को परिपूर्ण बनाया और मिट्टी से मनुष्य की रचना शुरू की।

(8) फिर उसने अपनी संतान को एक तुच्छ तरल पदार्थ की बूंद से बनाया।

(9) फिर उसने उसे बनाया और उसमें अपनी रूह फूँकी और तुम्हें सुनने, देखने और दिल दिए, फिर भी तुम कम कृतज्ञ हो।

(10) और वे कहते हैं, "क्या जब हम धरती में बिखर जाएँगे, तो हम किसी नई सृष्टि में होंगे?" निस्संदेह वे अपने रब से मिलने पर ईमान नहीं रखते।

(11) कह दो, "मृत्यु का फ़रिश्ता जो तुम्हारे ऊपर है, वह तुम्हें मार डालेगा, फिर तुम अपने रब की ओर लौटा दिए जाओगे।"

(12) यदि तुम देख पाते कि अपराधी अपने रब के आगे सिर झुकाते हैं कि "ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया। अतः हमें लौटा दे, हम अच्छा करेंगे। हमें पूरा विश्वास है।"

(13) यदि हम चाहते तो प्रत्येक प्राणी को मार्ग प्रदान कर देते, किन्तु मेरा वचन सत्य हो गया कि मैं जहन्नम को जिन्नों और मनुष्यों दोनों से भर दूँगा।

(14) "अब चखो, क्योंकि तुम अपने इस दिन की मुलाकात को भूल गए हो। हम तुम्हें भूल गए हैं। जो कुछ तुम करते रहे हो, उसके बदले में अनन्त यातना का स्वाद चखो।"

(15) हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाए, जो जब उन्हें याद दिलाया जाए तो सजदा करते हैं और अपने रब की प्रशंसा बिना किसी अभिमान के करते हैं।

(16) वे अपने बिस्तरों से उठकर खड़े हो जाते हैं और अपने रब को भय और आशा के साथ पुकारते हैं और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है, उसमें से दान करते हैं।

(17) कोई नहीं जानता कि उनके किये के बदले में उन्हें कौन सी छुपी हुई खुशी मिलने वाली है।

(18) क्या जो ईमान लाया वह उस व्यक्ति के समान है जो कुटिल है? वे दोनों एक जैसे नहीं हैं।

(19) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ठिकाना पनाह देनेवाले बाग़ हैं, यह उनके कर्मों का बदला है।

(20) किन्तु जो लोग अवज्ञाकारी हैं, उनका ठिकाना आग है। जब भी वे उसमें से निकलना चाहेंगे, तो उसी ओर लौटा दिए जाएँगे। उनसे कहा जाएगा कि "उस आग की यातना चखो, जिसे तुमने झुठलाया था।"

(21) और हम उन्हें बड़ी यातना से पहले छोटी यातना का मज़ा चखाएँगे, ताकि वे फिरें।

(22) उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसे उसके रब की आयतें याद दिला दी जाएँ, फिर वह उनसे मुँह फेर ले? निश्चय ही हम अत्याचारियों से बदला लेंगे।

(23) और हमने मूसा को किताब प्रदान की, अतः अब तुम उससे मिलने में कोई संदेह न रखो और हमने उसे बनी इसराईल के लिए मार्गदर्शन बनाया।

(24) और हमने उन्हें उनमें से सरदार बनाया, जो हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे। निश्चय ही वे धैर्यवान थे और हमारी आयतों पर पूर्ण विश्वास रखते थे।

(25) निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उसका फ़ैसला कर देगा, जिसपर वे मतभेद कर रहे थे।

(26) क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि उनसे पहले हमने कितनी ही जातियों को विनष्ट कर दिया, जबकि वे अपने घरों से गुज़रती थीं। इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं। क्या वे सुनते नहीं?

(27) क्या वे नहीं देखते कि हम सूखी ज़मीन पर पानी लाते हैं और उसमें फ़सल उगाते हैं, जिससे वे और उनके पालतू जानवर अपना पेट भरते हैं? क्या वे नहीं देखते?

(28) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो इसका फ़ैसला कब होगा?"

(29) कह दो, "निर्णय के दिन ईमान इनकार करनेवालों के लिए कुछ लाभ न पहुँचाएगा और न उन्हें कोई मुहलत दी जाएगी।"

(30) अतः तुम उनसे मुँह फेर लो और प्रतीक्षा करो, वे भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

# सूरा 33: ٱلْأَحْزَاب‎ (अल-अज़ाब) - कोयलावादी

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ नबी! अल्लाह से डरो और इनकार करनेवालों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(2) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसका अनुसरण करो। निस्संदेह अल्लाह उससे अवगत है जो कुछ तुम करते हो।

(3) अल्लाह पर भरोसा रखो, अल्लाह तुम्हारा रक्षक होने के लिए पर्याप्त है।

(4) अल्लाह ने मनुष्य में दो दिल नहीं बनाए। उसने तुम्हारी पत्नियों को तुम्हारी माँ नहीं बनाया, जबकि तुम उनसे कहते हो कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ के समान हो। और उसने तुम्हारी गोद ली हुई संतानों को तुम्हारी सगी संतानों के समान नहीं बनाया। ये तो केवल वे शब्द हैं जो तुम अपने मुँह से कहते हो, किन्तु अल्लाह सत्य बोलता है और सीधा मार्ग दिखाता है।

(5) उन्हें उनके बाप-दादों के नाम से पुकारो। अल्लाह के नज़दीक यही ज़्यादा नेक है। अगर तुम उनके बाप-दादों को न जानते हो तो वे तुम्हारे ईमान वाले भाई और तुम्हारे शागिर्द हैं। अगर तुम उसमें ग़लती कर बैठें तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। लेकिन जो कुछ तुम्हारे दिल जान-बूझकर करना चाहें उसमें गुनाह है। अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला, दयावान है।

(6) नबी ईमान वालों से उनके अपने आप से ज़्यादा नज़दीक हैं और उनकी पत्नियाँ उनकी माँओं की तरह हैं। अल्लाह की किताब के अनुसार रिश्तेदारों का एक दूसरे पर ईमान वालों और मुहाजिरों से ज़्यादा हक़ है, सिवाय इसके कि तुम अपने दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार करो। यह किताब में लिखा है।

(7) और याद करो जब हमने पैग़म्बरों से उनका वचन लिया और तुमसे भी और नूह से और इबराहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से, हमने उनसे एक गंभीर वचन लिया,

(8) ताकि वह सच्चे लोगों से उनकी ईमानदारी का हिसाब ले और उसने इनकार करनेवालों के लिए दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(9) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो तुमपर हुई, जबकि सेनाएँ तुमपर चढ़ आयीं और उसने उनपर आँधी और फ़रिश्तों की सेनाएँ भेजीं जिन्हें तुम देख नहीं सके। अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे भली-भाँति देख रहा है।

(10) जबकि वे तुमपर ऊपर से और नीचे से आक्रमण कर रहे थे, और जब तुम्हारी आँखें धुंधली हो गयीं और तुम्हारे दिल गले तक आ पहुँचे, और तुम अल्लाह के विषय में विभिन्न प्रकार की कल्पनाएँ करने लगे।

(11) वहाँ ईमान वालों की परीक्षा हुई और वे एक बड़े उथल-पुथल से हिल गए।

(12) जबकि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी थी कहने लगे कि अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे बस धोखे का वादा किया है।

(13) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब के लोगों! यहाँ तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है, वापस चले जाओ। और उनमें से एक गिरोह ने नबी से अनुमति माँगी और कहा कि हमारे घर सुरक्षित नहीं हैं। हालाँकि वे सुरक्षित नहीं थे, वे तो बस भागना चाहते थे।

(14) यदि उन पर शहर की ओर से हमला किया गया होता और उन्हें धर्मत्याग के लिए उकसाया गया होता, तो वे निश्चित रूप से बिना देर किए ऐसा कर लेते।

(15) और उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि वे मुँह न मोड़ेंगे, और जो वादा उन्होंने किया था, अल्लाह उसका हिसाब लेगा।

(16) कह दो, "यदि तुम मृत्यु या हत्या से भागोगे तो भागने से तुम्हें कुछ लाभ नहीं होगा। तुम उससे केवल थोड़े समय तक ही आनंद उठा सकोगे।"

(17) कह दो, "अल्लाह से तुम्हें कौन बचा सकता है, यदि वह तुम्हारे लिए कोई हानि या दया चाहे?" वे अल्लाह के अतिरिक्त अपने लिए न कोई संरक्षक पाएंगे और न कोई सहायक।

(18) अल्लाह तुममें से उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो रोकते हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि "हमारे साथ चलो", किन्तु वे युद्ध में कभी-कभार ही शामिल होते हैं।

(19) वे तुम्हारे साथ कंजूसी करते हैं। जब तुम पर भय आ जाता है, तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी ओर आँखें घुमाते हैं, जैसे कोई मृत्यु के भय से बेहोश हो गया हो। फिर जब भय चला जाता है, तो वे धन के लोभी होकर अपनी तीखी ज़बानों से तुम पर प्रहार करते हैं। वे ईमान नहीं लाते, अतः अल्लाह ने उनके कर्मों को व्यर्थ कर दिया है। और यह अल्लाह के लिए सरल है।

(20) वे समझते हैं कि मित्र राष्ट्र चले नहीं गए। और यदि मित्र राष्ट्र वापस आएँ, तो वे चाहेंगे कि वे रेगिस्तान में बद्दुओं के बीच होते और तुम्हारे बारे में पूछते। और यदि वे तुम्हारे बीच होते, तो वे बहुत कम लड़ते।

(21) निश्चय ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में उत्तम आदर्श है उन लोगों के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखते हैं और अल्लाह को बार-बार याद करते हैं।

(22) और जब ईमानवालों ने अपने साथियों को देखा तो कहा, "यही तो अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा।" और इससे उनका ईमान और आज्ञाकारिता और अधिक बढ़ गई।

(23) ईमानवालों में कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किया हुआ अपना वचन पूरा किया, उनमें से कुछ ने अपना वचन पूरा कर दिया, कुछ अभी प्रतीक्षा कर रहे हैं, और उन्होंने अपने निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं किया।

(24) ताकि अल्लाह चाहे तो सच्चे लोगों को उनकी सच्चाई का बदला दे और चाहे तो मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे या उनकी तौबा क़बूल कर ले। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(25) अल्लाह ने इनकार करनेवालों को उनके क्रोध में भगा दिया, उनके लिए कुछ लाभ न पहुँचाया और अल्लाह ने ईमानवालों को युद्ध से बचा लिया। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(26) और उसने किताब वालों में से उन लोगों को, जो उनके सहायक थे, उनके किलों से नीचे गिरा दिया और उनके दिलों में भय भर दिया। उनमें से कुछ को तुमने क़त्ल कर दिया और कुछ को बन्दी बना लिया।

(27) और उसने तुम्हें उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बनाया और ऐसी ज़मीन भी जिस पर तुमने कभी पाँव नहीं रखा और अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(28) ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दो कि यदि तुम सांसारिक जीवन और उसके आभूषणों की इच्छा रखती हो तो आओ, मैं तुम्हें उचित प्रतिफल प्रदान करूँगा और तुम्हें दयालुता से विदा करूँगा।

(29) किन्तु यदि तुम अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहते हो, तो अल्लाह ने तुम्हारे शुभचिंतकों के लिए बड़ा प्रतिफल तैयार कर रखा है।

(30) ऐ नबी की बीवियों! तुममें से जो कोई घोर बदकारी करेगी, तो उसके लिए दोगुनी सज़ा है। और यह अल्लाह के लिए आसान है।

(31) और तुममें से जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का बन्दा हो और अच्छे कर्म करे, उसे हम दोगुना बदला देंगे और हमने उसके लिए भरपूर रोज़ी तैयार कर रखी है।

(32) ऐ नबी की बीवियों! तुम किसी दूसरी औरत की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरने वाली हो तो अपनी बात में बहुत ज़्यादा नरमी न बरतो, कहीं ऐसा न हो कि जिसके दिल में बीमारी हो वह बुरी नीयत रखे, बल्कि ऐसी बात बोलो जो ठीक हो।

(33) अपने घरों में रहो और अपने आपको सजाओ मत, जैसा कि अज्ञानता के दिनों में किया जाता था। नमाज़ अदा करो, ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो। ऐ घराने के लोगो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि तुममें से सारी गंदगी दूर कर दे और तुम्हें पूरी तरह से पाक-साफ़ कर दे।

(34) और जो कुछ तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और तत्वदर्शिता की बातें पढ़ी जाती हैं, उन्हें याद करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त अन्तर्यामी, तत्वदर्शी है।

(35) निश्चय ही मुसलमान पुरुष और स्त्रियाँ, ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ, डर रखने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और स्त्रियाँ, धैर्य रखने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, नम्र पुरुष और स्त्रियाँ, दान देने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, उपवास रखने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, अपने सतीत्व की रक्षा करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को बार-बार याद करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ, अल्लाह ने उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है।

(36) जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें तो ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्री को कोई अधिकार नहीं कि वे अपने फ़ैसले में कोई विकल्प रखें। और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा की, वह स्पष्ट रूप से भटक गया।

(37) और याद करो जब तुमने उस व्यक्ति से कहा था जिस पर अल्लाह ने अनुग्रह किया था और जिसे तुमने लाभ पहुँचाया था कि अपनी पत्नी को अपने पास रखो और अल्लाह से डरो, जबकि तुम अपने मन में वह छिपा रहे थे जो अल्लाह प्रकट करने वाला था और लोगों से डरते रहे जबकि डरने का अधिकार अल्लाह से ज़्यादा है। फिर जब ज़ैद ने उससे अपनी इच्छा पूरी कर ली तो हमने उसका विवाह तुमसे कर दिया, ताकि ईमान वालों को अपने दत्तक पुत्रों की पिछली पत्नियों से विवाह करने में कोई बाधा न हो, जबकि वे उनसे अलग हो चुके हों। और अल्लाह का आदेश पूरा हो गया।

(38) अल्लाह ने जो कुछ पैग़म्बर के लिए निर्धारित किया है, उसमें उसके लिए कोई दोष नहीं है। यह अल्लाह का मार्ग है, उनके साथ जो उससे पहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का आदेश एक निश्चित आदेश है।

(39) जो लोग अल्लाह के सन्देश पहुँचाते हैं और उससे डरते हैं और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से नहीं डरते, और हिसाब-किताब के लिए अल्लाह ही पर्याप्त है।

(40) मुहम्मद तुम्हारे लोगों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के मुहर हैं और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(41) ऐ ईमान वालो! अल्लाह को याद करो।

(42) और सुबह-शाम उसकी स्तुति करते रहो।

(43) वही है जो तुमपर कृपा करता है और उसके फ़रिश्ते, ताकि तुम्हें अँधेरों से प्रकाश की ओर मार्ग दिखाएँ और वह ईमानवालों पर अत्यन्त दयावान है।

(44) जिस दिन वे उससे मिलेंगे, उनका अभिवादन "शांति" होगा और उसने उनके लिए बड़ा प्रतिफल तैयार कर रखा है।

(45) ऐ नबी! हमने आपको साक्षी, शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है।

(46) और अल्लाह की अनुमति से उसे पुकारनेवाला और प्रकाश का चिराग़।

(47) और ईमानवालों को शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बड़ी कृपा है।

(48) और इनकार करनेवालों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो और न उनपर ध्यान दो। बल्कि अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह अल्लाह ही संरक्षक के लिए काफ़ी है।

(49) ऐ ईमान वालो! जब तुम ईमानवाली स्त्रियों से विवाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले ही तलाक दे दो, तो उनपर कोई हिसाब नहीं। अतः उन्हें प्रतिफल दे दो और उन्हें सम्मानपूर्वक विदा कर दो।

(50) ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नियाँ हलाल कर दी हैं, जिन्हें तुमने महर दिया है और जो तुम्हारे दाहिने हाथ के पास है, जो अल्लाह ने तुम्हें लूट में दिया है और तुम्हारे चचाओं और फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामों और मौसियों की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आई हैं और जो ईमानवाली औरत नबी के लिए पेश आती है, अगर नबी उससे शादी करना चाहें तो यह सिर्फ़ तुम्हारे लिए है, दूसरे ईमानवालों के लिए नहीं। हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमने उनकी पत्नियाँ और जो उनके दाहिने हाथ के पास है, उनके बारे में क्या हुक्म दिया है, ताकि तुम पर कोई तकलीफ़ न आए और अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला, दयावान है।

(51) तुम उनमें से जिसे चाहो विदा कर दो और जिसे चाहो ग्रहण करो। और यदि तुम उन चीज़ों में से कोई चाहो जिसे तुमने छोड़ रखा है, तो इसमें कोई गुनाह नहीं। यह अधिक उचित है, ताकि वे तसल्ली पाएँ, दुखी न हों और जो कुछ तुम उन्हें दो उससे संतुष्ट हो जाएँ। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह सर्वज्ञ, अत्यन्त क्षमाशील है।

(52) तुम्हारे लिए हलाल नहीं है कि तुम इनके अलावा किसी और औरत से शादी करो और न अपनी बीवियों को किसी और से बदलो, चाहे उनका हुस्न तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न लगे, सिवाय उन औरतों के जो तुम्हारे दाहिने हाथ की हो। और अल्लाह सब कुछ देखनेवाला है।

(53) ऐ ईमान वालो! रसूल के घरों में तब तक न जाओ जब तक कि खाना तैयार न हो जाए। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो अंदर जाओ और जब तुम खा लो तो बातचीत किए बिना चले जाओ। यह बात रसूल को परेशान करती है लेकिन वह तुम्हें बताने में शर्म महसूस करते हैं, लेकिन अल्लाह सच्चाई से शर्मिंदा नहीं है। और जब तुम उनसे [पैगंबर की पत्नियों] कुछ मांगो तो परदे के पीछे से मांगो। यह तुम्हारे और उनके दिलों के लिए ज़्यादा साफ़ है। तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुँचाना जायज़ नहीं है और न ही उनके बाद उनकी पत्नियों से शादी करना। यह अल्लाह की नज़र में बहुत बड़ा गुनाह होगा।

(54) चाहे तुम कुछ प्रकट करो या छिपाओ, अल्लाह हर चीज़ से अवगत है।

(55) उन पर अपने पिताओं, अपने बेटों, अपने भाइयों, अपने भाइयों के बेटों, अपनी बहनों, अपनी स्त्रियों और जो कुछ उनके हाथ में है, उसके प्रति कोई दोष नहीं है। और अल्लाह से डरते रहो, निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है।

(56) निस्संदेह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम उसपर दुरूद भेजो और सलामती का सलाम कहो।

(57) जिन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल पर अत्याचार किया अल्लाह ने उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की है और उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

(58) और जो लोग ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को उनके हक़ के बिना कष्ट पहुँचाते हैं, वे अपने ऊपर बदनामी और खुला पाप ले आते हैं।

(59) ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों और ईमान वालों की स्त्रियों से कह दो कि वे अपने-अपने कपड़ों से अपना शरीर ढाँप लें। यह अधिक उचित है, ताकि वे पहचानी जाएँ और उन्हें सताया न जाए। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(60) यदि मुनाफ़िक़, वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है और वे लोग जो मदीना में उत्पात मचाते हैं, वे न रुकें तो हम तुम्हें उनके विरुद्ध धकेल देंगे, फिर वे वहाँ तुम्हारे पड़ोसी बनकर थोड़े ही समय तक रहेंगे।

(61) जहाँ कहीं वे पाए जाएँ, वे शापित हैं; उन्हें बिना दया के पकड़ लिया जाएगा और मार दिया जाएगा।

(62) यही अल्लाह का मार्ग है और इसी से पहले वाले लोग भी गुज़रे। और तुम अल्लाह के मार्ग में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे।

(63) लोग तुमसे क़ियामत के विषय में पूछते हैं। कह दो, "उसका ज्ञान अल्लाह ही को है।" फिर वह तुम्हें क्या बताता है? कदाचित क़ियामत निकट हो।

(64) निश्चय ही अल्लाह ने इनकार करनेवालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर दी है।

(65) वे सदैव वहीं रहेंगे, न उन्हें कोई संरक्षक मिलेगा, न कोई सहायक।

(66) जिस दिन उनके चेहरे आग की ओर फेर दिए जाएँगे, वे कहेंगे, "काश! हमने अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानी होती!"

(67) और वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमने अपने नेताओं और अपने बड़े लोगों की बात मान ली, फिर भी उन्होंने हमें गुमराह कर दिया।"

(68) हे हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे और उनपर बड़ी लानत कर।

(69) ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने मूसा पर ज़ुल्म किया, किन्तु अल्लाह ने उसे उनकी बातों से दोषमुक्त कर दिया और वह अल्लाह के निकट सम्मान सहित हो गया।

(70) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।

(71) वह तुम्हारे कर्मों को सुधार देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा। और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन किया, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

(72) हमने आकाशों और धरती और पहाड़ों को अमानत दी थी, किन्तु उन्होंने अमानत स्वीकार नहीं की और डर गए, किन्तु मनुष्य ने अमानत स्वीकार कर ली। वास्तव में वह अत्याचारी, अज्ञानी है।

(73) इसी प्रकार अल्लाह मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ महिलाओं को और मुश्रिकों और मुश्रिकों को भी यातना देगा और अल्लाह ईमानवाले पुरुषों और ईमानवालों की तौबा क़बूल करेगा। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

# सूरा 34: **سَبَأ‎ (सबा')** - शीबा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, सब उसी का है। आख़िरत में भी प्रशंसा उसी के लिए है। वह तत्वदर्शी, ख़बर रखनेवाला है।

(2) वह जानता है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ आकाश की ओर चढ़ता है। और वह अत्यन्त दयावान, क्षमाशील है।

(3) जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं, "हम पर कभी क़ियामत नहीं आएगी।" कह दो, "हाँ, मेरे रब की क़सम! वह तुम्हारे पास ज़रूर आएगी। वह परोक्ष का जाननेवाला है।" उससे कोई चीज़ नहीं छुपती, यहाँ तक कि आकाश और धरती में कण भर भी नहीं, न कोई छोटी चीज़ न कोई बड़ी, परन्तु वह एक स्पष्ट किताब में दर्ज है।

(4) ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें बदला दे। उनके लिए क्षमा और उदारतापूर्ण जीविका है।

(5) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाना चाहा, उनके लिए दुखद यातना है।

(6) जो लोग ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, उन्होंने देख लिया कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर अवतरित हुआ है, वह सत्य है और प्रभुत्वशाली, प्रशंसनीय प्रभु के मार्ग का मार्गदर्शक है।

(7) और इनकार करनेवाले कहते हैं, "क्या हम तुम्हें वह आदमी बताएँ जो तुम्हें बता दे कि जब तुम पूरी तरह बिखर जाओगे तो फिर से पैदा किये जाओगे?"

(8) क्या उसने अल्लाह पर झूठ घड़ रखा है या वह पागल हो गया है? बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाए, वे यातना और बड़ी गुमराही में पड़े हुए हैं।

(9) क्या वे नहीं देखते कि उनके आगे क्या है और उनके पीछे क्या है, आकाश में और धरती में? यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में डुबा दें या उन पर आकाश के टुकड़े उतार दें। निस्संदेह इसमें प्रत्येक बन्दे के लिए एक निशानी है जो (अल्लाह की ओर) तत्पर हो जाए।

(10) और हमने दाऊद को अपनी ओर से एक वरदान दिया कि "ऐ पहाड़ों और पक्षियों! उसके साथ गाओ!" और हमने उसके लिए लोहे को नरम कर दिया।

(11) [उससे कहा]: “बड़ी-बड़ी झिलमें गढ़ो और उनकी कड़ियाँ अच्छी तरह बुन लो।” और भलाई करो, क्योंकि मैं अच्छी तरह देख रहा हूँ कि तुम क्या करते हो।

(12) और हमने सुलैमान के लिए हवा बनाई, सुबह की दिशा एक महीने की थी और शाम की दिशा भी एक महीने की थी। और हमने उसके लिए पिघले हुए ताँबे का एक सोता बहा दिया। और जिन्नों में से कुछ ऐसे भी थे जो उसके पहले उसके रब की आज्ञा से काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे आदेश से भटका, हमने उसे आग की यातना चखाई।

(13) उन्होंने उसके लिए वह सब बनाया जो उसने चाहा: महल, मूर्तियाँ, झील जैसे हौद और बड़े-बड़े हंडे। "ऐ दाऊद के घराने! कृतज्ञता दिखाओ!" किन्तु मेरे बन्दों में से बहुत कम कृतज्ञता दिखानेवाले हैं।

(14) जब हमने उसकी मृत्यु का आदेश दे दिया तो उसकी मृत्यु का संकेत उन्हें उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को कुतर रहा था। और जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर स्पष्ट हो गया कि यदि वे परोक्ष को जानते होते तो अपमानजनक यातना में न रहते।

(15) साबिई लोगों के लिए उनके घर में एक निशानी थी: दो बाग़, एक दाहिनी ओर और एक बाईं ओर। "अपने रब की रोज़ी खाओ और उसका शुक्र अदा करो। तुम्हारे लिए एक अच्छी ज़मीन है और एक बख्शनेवाला रब है।"

(16) किन्तु वे फिर गए, तो हमने उन पर बाँध की बाढ़ भेज दी और उनके बाग़ों के स्थान पर कड़वे फल, झाऊ और कंटीले कमल उगा दिए।

(17) और हमने उन्हें उनकी नाशुक्री का बदला दिया। क्या हम नाशुक्री करनेवालों के अतिरिक्त किसी और को इस प्रकार दण्ड देते हैं?

(18) और हमने उनके और उन नगरों के बीच, जिनको हमने बरकत दी थी, स्पष्ट दिखाई देनेवाले गाँव बना दिए थे और उनके बीच मध्यम दूरी निर्धारित कर दी थी कि "उनमें रात और दिन निश्चिन्त होकर चलो।"

(19) किन्तु उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब! हमारी यात्राओं की दूरी बढ़ा दे।" अतः उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया। अतः हमने उन्हें कहानियाँ बना दीं और उन्हें तितर-बितर कर दिया। निस्संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान और कृतज्ञता व्यक्त करनेवाले के लिए निशानियाँ हैं।

(20) और इबलीस को उनके विषय में जो संदेह था वह सत्य हो गया। वे सब उसके पीछे चले, सिवाय ईमानवालों के एक गिरोह के।

(21) उसे उनपर बस इतना ही अधिकार था कि वह जान ले कि कौन आख़िरत पर ईमान रखता है और कौन संदेह में है। और तुम्हारा रब हर चीज़ का रक्षक है।

(22) कह दो, "अल्लाह के सिवा जिनको तुम पूज्य कहते हो, उन्हें पुकारो। न उनका आकाशों में एक कण के बराबर भी वज़न है और न उनका उनमें कोई हिस्सा है और न उनकी ओर से अल्लाह के लिए कोई सहायता है।"

(23) उसके पास कोई सिफ़ारिश काम नहीं आती, परन्तु उसी के लिए जिसे वह अनुमति दे। जब उनके दिलों से भय दूर हो जाएगा तो वे कहेंगे, "तुम्हारे रब ने क्या कहा?" वे कहेंगे, "सत्य।" और वह सर्वोच्च, महान है।

(24) कहो, "आकाशों और धरती से तुम्हें रोज़ी कौन देता है?" कह दो, "अल्लाह! हममें से कोई तो सीधा मार्ग पर है या खुली गुमराही में।"

(25) कह दो, "जो कुछ हमने किया है, उसके विषय में तुमसे कुछ नहीं पूछा जाएगा और न जो कुछ तुम करते हो, उसके विषय में हमसे कुछ पूछा जाएगा।"

(26) कह दो, "हमारा रब हम सबको एकत्र करेगा, फिर हमारे बीच सत्य के साथ निर्णय करेगा। वह निर्णय करनेवाला, जाननेवाला है।"

(27) कह दो, "मुझे उन लोगों को दिखाओ, जिन्हें तुमने उसका साझीदार ठहराया है। बल्कि वह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

(28) और हमने तुम्हें सारे लोगों के लिए केवल शुभ सूचना देनेवाला और सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(29) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(30) कह दो, "तुम्हारे लिए एक दिन निश्चित कर दिया गया है। तुम न तो उसमें एक घड़ी भी विलंब कर सकते हो और न उसे आगे बढ़ा सकते हो।"

(31) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं, "हम इस क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएँगे और न उस पर जो इससे पहले आया है।" यदि तुम देखते कि जब अत्याचारी अपने रब के सामने आएँगे, तो वे अपनी बातों से एक-दूसरे को कैसे धिक्कारेंगे। जो लोग अत्याचार के शिकार हुए, वे उन लोगों से कहेंगे, जो अहंकारी थे, "यदि तुम न होते, तो हम ईमान वाले होते।"

(32) जो लोग अहंकारी थे, वे उन लोगों से जो अत्याचार में पड़े थे कहेंगे, "क्या हमने तुम्हें मार्गदर्शन देने से रोका था, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका था? नहीं, बल्कि अत्याचारी तो तुम ही थे।"

(33) जो लोग अत्याचार के शिकार हुए, वे अहंकारियों से कहेंगे, "नहीं, बल्कि यह तो तुम्हारी ही चाल थी, रात-दिन, जब तुमने हमें आदेश दिया कि हम अल्लाह पर ईमान न लाएँ और उसे अपना समान न बनाएँ।" और जब वे यातना देखेंगे, तो अपनी ग्लानि छिपा लेंगे। और हम इनकार करनेवालों की गर्दनों में ज़ंजीरें डाल देंगे। उन्हें तो बस उसी का बदला दिया जाएगा, जो वे करते रहे।

(34) और हमने जिस बस्ती में कोई सचेत करनेवाला भेजा, वह तो इस कारण हुआ कि उसके धनवानों ने कहा कि "जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गए थे, हम उसपर ईमान नहीं लाते।"

(35) उन्होंने कहा, "हमारे पास अधिक धन और संतान है, अतः हम दण्डित नहीं किये जायेंगे।"

(36) कह दो, "मेरा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है सीमित कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।"

(37) न तो तुम्हारे माल और न तुम्हारी संतान तुम्हें हमसे नज़दीक लाएगी, बल्कि वे लोग ही हैं जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। उनके लिए उनके कर्मों का कई गुना बदला है और वे सुरक्षित ऊपरी कमरों में होंगे।

(38) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाना चाहा, वही यातना में डाले जायेंगे।

(39) कह दो, "मेरा रब अपने बन्दों की रोज़ी जिसे चाहता है बढ़ा देता है और जिसे चाहता है सीमित कर देता है। और जो कुछ तुम ख़र्च करते हो, वह तुम्हें प्रतिफल देता है। और वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।"

(40) और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा, फ़रिश्तों से कहेगा, "क्या उन्होंने तुम्हारी इबादत की थी?"

(41) वे कहेंगे, "पवित्र है तू! हमारा रक्षक तू ही है, वे नहीं। वास्तव में वे जिन्नों की पूजा करते थे, उनमें से अधिकतर लोग उनपर ईमान लाए।"

(42) "आज तुम न तो एक दूसरे को लाभ पहुँचा सकोगे और न एक दूसरे को हानि पहुँचा सकोगे।" और हम उन अत्याचारियों से कहेंगे, "उस आग की यातना का मज़ा चखो, जिसे तुमने झुठलाया था।"

(43) और जब हमारी खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं, "यह तो बस एक आदमी है जो चाहता है कि तुमको उससे अलग कर दे जिसकी पूजा तुम्हारे बाप-दादा करते थे।" और वे कहते हैं, "यह तो बस एक झूठ है।" और जिन लोगों ने इनकार किया, जब सत्य उनके पास आता है तो वे कहते हैं, "यह तो बस खुला जादू है।"

(44) किन्तु हमने उन्हें न तो कोई पुस्तक दी है, जिससे वे अध्ययन करें और न हमने तुमसे पहले उनके पास कोई सचेत करनेवाला भेजा है।

(45) उनसे पहले जो लोग झुठला चुके हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया था, उसका दसवाँ हिस्सा भी वे न पा सके। और उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया। मेरी कितनी बड़ी फटकार थी!

(46) कह दो, "मैं तुमसे एक बात की ताकीद करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए दो-दो करके या अकेले उठो, फिर सोच-विचार करो। तुम्हारे साथी में कोई नासमझी नहीं है। वह तो तुम्हें कड़ी यातना से पहले केवल सावधान करनेवाला है।"

(47) कह दो, "मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। वह तो तुम्हारे ही लिए है। मेरा बदला तो अल्लाह ही के पास है और वह हर चीज़ पर नज़र रखता है।"

(48) कह दो, "मेरा रब ही सत्य उतारता है। वह परोक्ष का भी जाननेवाला है।"

(49) कह दो, "सत्य आ चुका है, असत्य न तो आरंभ हो सकता है और न कभी दोहरा सकता है।"

(50) कह दो, "यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँगा तो अपने ही विरुद्ध पथभ्रष्ट हो जाऊँगा। और यदि मैं मार्ग पर चलूँगा तो उसी के द्वारा जो मेरे रब ने मेरी ओर प्रकाशना की है। निस्संदेह, वह सब कुछ सुननेवाला, समीप रहनेवाला है।"

(५१) काश मैं देख पाता कि कब वे आतंक से जकड़े जाएंगे और भागने की कोई संभावना नहीं रहेगी और उन्हें निकट के स्थान से पकड़ लिया जाएगा!

(52) और वे कहेंगे, "हम उसपर ईमान लाए।" किन्तु वे इतनी दूर से वहाँ कैसे पहुँचेंगे?

(53) किन्तु उन्होंने पहले ही झुठला दिया था और दूर से ही रहस्य के विषय में अनुमान लगाया था।

(54) और उनके और उनकी इच्छा के बीच एक खाई डाल दी जाएगी, जैसा कि उनसे पहले उनके जैसे लोगों के साथ डाल दिया गया था। वे बहुत ही संदेह में थे।

# सूरा 35: **فَاطِر‎ (फ़ातिर)** - निर्माता

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) प्रशंसा है अल्लाह के लिए, जो आकाशों और धरती का रचयिता है, जिसने फ़रिश्तों को दो, तीन और चार पंखों वाला रसूल बनाया। वह सृष्टि में जो चाहता है बढ़ा देता है, निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखने वाला है।

(2) अल्लाह लोगों पर जो दया करता है, उसे कोई रोक नहीं सकता और जो कुछ वह रोक लेता है, उसे उसके पश्चात कोई नहीं छोड़ सकता। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(3) ऐ लोगो! अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो तुम पर हुई है। क्या अल्लाह के अलावा कोई और पैदा करनेवाला है जो तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी देता हो? उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम कैसे गुमराह हो जाते हो?

(4) यदि वे तुम्हें झूठा समझते हैं तो तुमसे पहले जो भी रसूल आए हैं वे भी झूठे थे। अल्लाह ही को हर चीज़ बताई जाती है।

(5) ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है। सांसारिक जीवन तुम्हें धोखा न दे और न धोखेबाज़ अल्लाह के विषय में तुम्हें धोखा दे।

(6) शैतान तुम्हारा शत्रु है, अतः तुम भी उससे शत्रु जैसा व्यवहार करो। वह अपने अनुयायियों को आग में पड़नेवालों में बुलाता है।

(7) जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए कठोर यातना है, किन्तु जिन लोगों ने ईमान लाया और अच्छे कर्म किए, उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

(8) और उससे बुरा कौन होगा जिसके लिए उसके बुरे कर्म अच्छे कर दिए जाएँ फिर वह उन्हें अच्छा समझे। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है। अतः तुम उन पर पछताने में अपना समय बरबाद न करो, अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।

(9) अल्लाह ही है जो हवाएँ भेजता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम उन्हें मृत भूमि पर ले जाते हैं, और हम ही पानी बरसाते हैं, फिर हम उससे हर प्रकार के फल उगाते हैं, यही है पुनरुत्थान, शायद तुम याद करो।

(10) जो कोई शक्ति चाहे, उसे जान लेना चाहिए कि सारी शक्ति अल्लाह ही की है। अच्छी बात उसी की ओर चढ़ती है और अच्छे कर्म उसे ऊँचा उठाते हैं। और जो लोग बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए कठोर यातना है और उनकी चालें विफल होकर रहेंगी।

(11) अल्लाह ने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर तुमको जोड़े बनाए। कोई स्त्री गर्भवती नहीं होती और न बच्चा देती है, जब तक कि वह उसे न जानता हो। और किसी की आयु न घटती है, जब तक कि वह किसी पुस्तक में न लिख दी जाए। निस्संदेह यह अल्लाह के लिए सरल है।

(12) दोनों समुद्र एक जैसे नहीं हैं, एक मीठा, स्वाद में अच्छा, पीने में आसान है; दूसरा खारा और कड़वा है। दोनों से तुम ताज़ा मांस खाते हो और उनसे गहने निकालते हो जो तुम पहनते हो। और तुम उनमें जहाज़ों को चलते हुए देखते हो, ताकि तुम उसकी कृपा की तलाश करो और शुक्र करो।

(13) वह रात को दिन में और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को वश में कर रखा है, दोनों एक निश्चित समय तक चलते हैं। वही अल्लाह तुम्हारा रब है, राज्य उसी का है। उसके सिवा जिनको तुम पुकारते हो, उनके पास खजूर के बीज के बराबर भी छिलका नहीं है।

(14) और यदि तुम उनको पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनते और यदि सुन भी लें तो उत्तर न दे सकें और क़ियामत के दिन वे तुम्हारी साझीदारी से इन्कार कर देंगे और तुम्हें कोई ख़बर देनेवाला नहीं, वह जो बाख़बर है।

(15) ऐ लोगो! तुम अल्लाह के यहाँ मोहताज हो। हालाँकि अल्लाह अत्यन्त धनवान, प्रशंसनीय है।

(16) यदि वह चाहता तो तुम्हें मिटा देता और तुम्हारे स्थान पर एक नई सृष्टि उत्पन्न कर देता।

(17) अल्लाह के लिए यह कोई कठिन बात नहीं है।

(18) कोई भी प्राणी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यदि कोई प्राणी बोझ से दबा हुआ किसी को उसे उठाने के लिए पुकारे, तो कुछ भी नहीं उठाया जा सकता, चाहे वह कोई निकट सम्बन्धी ही क्यों न हो। तुम तो केवल उन्हीं को सचेत कर सकते हो जो अपने रब से डरते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। और जो व्यक्ति अपने आपको पवित्र कर लेता है, वह अपने आपको पवित्र कर लेता है। अन्ततः अल्लाह ही की ओर लौटना है।

(19) अंधा और देखने वाला बराबर नहीं हैं,

(20) न अंधकार, न प्रकाश,

(21) न छाया और न तपती धूप।

(22) और जीवित और मृतक समान नहीं हैं। निस्संदेह अल्लाह कब्रों में पड़े लोगों को सुनता है।

(23) तुम तो बस सावधान करनेवाले हो।

(24) हमने तुम्हें सत्य के साथ शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है। कोई समुदाय ऐसा नहीं है जिसके पास सचेत करने वाला न आया हो।

(25) यदि वे तुम्हें झूठा समझते हैं तो उनसे पहले के लोगों ने भी अपने रसूलों को झूठा समझा था, जो स्पष्ट प्रमाणों और किताब और प्रकाशमान किताब के साथ आये थे।

(26) फिर मैंने उन लोगों को पकड़ लिया जिन्होंने इनकार किया। फिर मेरी क्या ही नाराजगी थी!

(27) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है, हम उससे विभिन्न रंगों के फल उगाते हैं, और पहाड़ों में विभिन्न रंगों की सफेद और लाल धारियाँ होती हैं, और कुछ गहरे काले रंग की भी।

(28) अतः मनुष्यों, पशुओं और चौपायों में विभिन्न प्रकार के रंग हैं। उसके बन्दों में केवल ज्ञानी ही अल्लाह से डरते हैं। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील है।

(29) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़ैरात करते हैं, चाहे छुपे हों या खुले आम, वे ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी विफल न होगा।

(30) ताकि वह उन्हें उनका पूरा-पूरा बदला प्रदान करे और अपने अनुग्रह में से उनपर अधिक अनुग्रह करे। निस्संदेह वह अत्यन्त क्षमाशील, कृतज्ञतापूर्ण है।

(31) जो किताब हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है, वह सत्य है, जो उससे पहले आयी है, उसकी पुष्टि करती है। निस्संदेह अल्लाह भली-भाँति जाननेवाला, अपने बन्दों को देखनेवाला है।

(32) फिर हमने अपने बन्दों में से जिन लोगों को चुना है, उन्हें किताब का वारिस बनाया है। उनमें से कोई ऐसा है जो अपने ऊपर अत्याचार करता है, कोई ऐसा है जो सीधा मार्ग अपनाता है, कोई ऐसा है जो अल्लाह की अनुमति से अच्छे कर्मों में श्रेष्ठ है। यही सबसे बड़ी नेमत है।

(33) वे सदैव के बाग़ों में प्रवेश करेंगे, उनमें सोने और मोतियों के कंगन होंगे और उनके वस्त्र रेशमी होंगे।

(34) और वे कहेंगे, "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे सारा दुःख दूर कर दिया। निस्संदेह हमारा रब अत्यन्त क्षमाशील, कृतज्ञतापूर्ण है।"

(35) जिसने अपनी कृपा से हमें स्थिरता के धाम में निवास कराया है, जहाँ न तो कोई परिश्रम और न ही थकावट हमें छू सकती है।

(36) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनपर मृत्यु का आदेश है और न उनकी यातना हल्की की जाएगी। इसी प्रकार हम प्रत्येक अकृतज्ञ व्यक्ति को बदला देते हैं।

(37) और वे पुकारेंगे कि "ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले, ताकि हम भलाई करें, जैसा हम पहले नहीं करते थे।" क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी कि जो कोई विचार करना चाहे, विचार कर ले? और क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करनेवाला नहीं आया? तो चखो, क्योंकि अधर्मियों का कोई सहायक नहीं।

(38) निस्संदेह अल्लाह आकाशों तथा धरती की छिपी हुई बातों को जानता है और वह जानता है जो कुछ दिलों में है।

(39) वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया। जो इनकार करेगा, उसका इनकार उसी पर है। और इनकार करनेवालों का इनकार उनके रब के प्रति उनके क्रोध को और बढ़ा देता है और उनकी हानि को और बढ़ा देता है।

(40) कह दो, "क्या तुमने अपने उन साझीदारों को देखा है, जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ कि उन्होंने धरती में क्या-क्या पैदा किया है? या उनका आकाश में कोई हिस्सा है? या हमने उन्हें कोई किताब दी है, ताकि वे स्पष्ट प्रमाण पा सकें?" बल्कि अत्याचारी तो एक-दूसरे को धोखे के वादे ही करते हैं।

(41) निस्संदेह अल्लाह आकाशों और धरती को सम्भालता है, ताकि वे गिर न पड़ें, और यदि वे गिर पड़ें तो उसके पश्चात कोई उन्हें सम्भालनेवाला नहीं। और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(42) और उन्होंने अल्लाह की क़समें खाईं कि यदि उनके पास कोई सचेत करनेवाला आ जाए तो वे अन्य सभी समुदायों से अधिक मार्ग पर होंगे, किन्तु जब उनके पास कोई सचेत करनेवाला आ गया तो उससे उनकी घृणा और बढ़ गई।

(43) धरती में अहंकार करने और बुरी चालें चलने के कारण। बुरी चाल तो उन्हीं पर पड़ती है जो उसे चलते हैं। क्या वे पहले वाले के परिणाम के अतिरिक्त किसी और चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं? तुम अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे और न अल्लाह के नियम से कोई विचलन पाओगे।

(44) क्या वे धरती पर चले नहीं कि देखें कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे। अल्लाह को न आकाशों में कोई चीज़ रोक सकती है और न धरती में। निस्संदेह वह सर्वज्ञ, प्रभुत्वशाली है।

(45) यदि अल्लाह लोगों को उनके कर्मों की सज़ा देना चाहे तो धरती पर किसी भी प्राणी को न छोड़े, परन्तु वह उन्हें एक निश्चित समय तक स्थगित रखता है। फिर जब उनका समय आ जाता है तो अल्लाह अपने बन्दों पर नज़र रखता है।

# सूरा 36: **يس‎ (या-सिन)** - या-सिन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) या सीन.

(2) क़ुरआन की क़सम जो हिकमत से भरपूर है।

(3) निश्चय ही तू रसूलों में से है।

(4) सीधे रास्ते पर.

(5) अल्लाह तआला अत्यन्त दयावान की ओर से अवतरित हुआ।

(6) ताकि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पूर्वज सचेत नहीं किये गये और वे लापरवाह हो गये।

(7) उनमें से अधिकतर के विषय में बात सच हो चुकी है, अतः वे विश्वास नहीं करेंगे।

(8) हमने उनकी गर्दनों में ठोड़ी तक बेड़ियाँ डाल दी हैं, ताकि उनके सिर ऊपर उठ जाएँ।

(9) और हमने उनके आगे भी एक आड़ बना दी है और उनके पीछे भी एक आड़ बना दी है और उनकी आँखों पर परदा डाल दिया है। अब वे देखते नहीं।

(10) चाहे तुम उन्हें सचेत करो या न करो, उनके लिए बराबर है। वे ईमान नहीं लाएँगे।

(11) तू तो केवल उन लोगों को सचेत करता है जो अनुस्मृति का अनुसरण करते हैं और रहमान से छुपकर डरते हैं। अतः क्षमा और उदार प्रतिदान की शुभ सूचना दे।

(12) हम मुर्दों को जीवित करते हैं और जो कुछ उन्होंने अनुमान किया है उसे लिख लेते हैं और जो कुछ उन्होंने छोड़ा है उसे भी लिख लेते हैं। और हमने हर चीज़ को स्पष्ट पुस्तक में लिख रखा है।

(13) उनसे नगर के निवासियों का दृष्टान्त कहो, जब दूत आये।

(14) जब हमने उनकी ओर दो रसूल भेजे, तो उन्होंने उनको झुठला दिया। तो हमने तीसरे रसूल से उनकी शक्ति बढ़ाई। वे बोले, "हम तो तुम्हारी ओर भेजे गए हैं।"

(15) उन्होंने कहा, "तुम तो हमारे जैसे ही मनुष्य हो। रहमान ने तो कुछ भी अवतरित नहीं किया। तुम तो बस झूठ बोलते हो।"

(16) उन्होंने कहा, "हमारा रब जानता है कि हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

(17) और हमारा काम केवल स्पष्ट संचार है।"

(18) उन्होंने कहा, "हमें तुम्हारे बारे में एक अपशकुन है। यदि तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें अवश्य संगसार कर देंगे और तुम्हें हमारी ओर से दुखद यातना मिलेगी।"

(19) उन्होंने कहा, "तुम्हारा अपशकुन तुम्हारे ही ऊपर है। क्या जब तुम्हें चेतावनी दी जाती है, तो तुम ऐसा ही करते हो? निश्चय ही तुम बड़े अत्याचारी लोग हो।"

(20) और नगर के छोर से एक आदमी जल्दी-जल्दी आया और कहने लगा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! रसूलों के पीछे चलो!

(21) उनका अनुसरण करो जो तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं चाहते और सीधे मार्ग पर हैं।

(22) और मैं उसकी बन्दगी क्यों न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और जिसकी ओर तुम लौटकर जाओगे?

(23) क्या मैं उसके अतिरिक्त कोई और पूज्य बनाऊँ? यदि अत्यन्त दयावान मुझे कोई हानि पहुँचाए, तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे बचा सकेंगे।

(24) तब तो मैं स्पष्टतः ग़लत हो जाऊंगा.

(25) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया हूँ। अतः मेरी बात सुनो।

(26) कहा गया कि "स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।" उसने कहा कि काश मेरी क़ौम जानती।

(27) जैसा कि मेरे रब ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे प्रतिष्ठित लोगों में शामिल कर दिया।

(28) और हमने उसकी क़ौम पर उसके पश्चात आकाश से कोई सेना नहीं भेजी, और न हम भेजने के इच्छुक थे।

(29) एक ही चीख निकली और देखो, वे बुझ गये।

(30) अफ़सोस लोगों पर! जो रसूल उनके पास आता है, वे उसका उपहास करते हैं।

(31) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर दिया, वे कभी भी उनकी ओर लौटकर नहीं आने वाले।

(32) और सभी लोग हमारे सामने अवश्य लाये जायेंगे।

(33) और उनके लिए निशानी है मृत धरती। हम उसे जीवित करते हैं और उसमें से अन्न निकालते हैं, जिससे वे भोजन करते हैं।

(34) और हमने उसमें खजूर के बाग़ और अंगूर के बाग़ उगाए और उनमें चश्में फूटने दिए।

(35) ताकि वे उसके फलों में से खाएँ और अपने हाथों के कामों में से खाएँ। क्या वे कृतज्ञ न होंगे?

(36) पवित्र है वह जिसने सारे जोड़ों को पैदा किया। धरती जो पैदा करती है, उसमें से, स्वयं उनमें से और उसमें से भी जिसे वे नहीं जानते।

(37) और रात उनके लिए एक निशानी है। और हम उनसे दिन छीन लेते हैं। फिर वे अँधेरे में पड़ जाते हैं।

(38) और सूर्य अपने स्थान की ओर दौड़ता है, यह अल्लाह, अत्यन्त तत्वदर्शी का आदेश है।

(39) और हमने चाँद को कई अवस्थाएँ प्रदान कीं, यहाँ तक कि वह फिर एक पुराने टेढ़े खजूर के वृक्ष जैसा हो गया।

(40) सूर्य को चन्द्रमा से आगे निकलने की शक्ति नहीं है, न ही रात दिन से आगे निकल सकती है। प्रत्येक एक कक्षा में तैरता है।

(41) और उनके लिए निशानी यह है कि हम उनकी संतान को भरी हुई नाव में लेकर आये।

(42) और हमने उनके लिए ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिनपर वे चलते हैं।

(43) और यदि हम चाहें तो उन्हें डुबा दें, फिर न उनका कोई सहायक होगा और न वे बच सकेंगे।

(44) परन्तु यह कि हम उन्हें एक निश्चित अवधि तक सुख-सुविधा प्रदान करें।

(45) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ तुम्हारे आगे है और जो कुछ तुम्हारे पीछे है उससे डरो, ताकि तुमपर दया की जाए।

(46) जब उनके पास उनके रब की ओर से कोई निशानी भी नहीं आती तो वे मुँह फेर लेते हैं।

(47) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से दो तो इनकार करनेवाले ईमान लानेवालों से कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएँ जो यदि अल्लाह चाहे तो अपने आपको खिलाए? तुम तो स्पष्ट रूप से गुमराह हो।

(48) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(49) वे किसी और चीज़ का इंतज़ार नहीं कर रहे हैं, बस एक चीख़ की जो उन्हें बहस करते समय पकड़ लेगी।

(50) फिर वे न वसीयत कर सकेंगे और न अपने घरवालों के पास लौट सकेंगे।

(51) और जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो वे कब्रों से निकलकर अपने रब की ओर दौड़ेंगे।

(52) वे कहेंगे, "अफ़सोस! हमें हमारे विश्राम-स्थान से किसने जगाया? यही तो है जिसका वादा रहमान ने किया था और रसूलों ने भी सच कहा था।"

(53) वह तो बस एक ही पुकार होगी, फिर देखो, सब लोग हमारे सामने आ जायेंगे।

(54) उस दिन किसी प्राणी पर ज़रा भी अत्याचार न किया जायेगा और तुम्हें तो बस उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते रहे।

(55) उस दिन जन्नत वाले प्रसन्न होंगे।

(56) वे और उनकी पत्नियाँ छाया में, आलीशान तख़्तों पर टेक लगाए हुए बैठे होंगे।

(57) उन्हें उनके फल मिलेंगे और जो कुछ वे चाहेंगे वह मिलेगा।

(58) "सलाम" दयालु पालनहार का शब्द है।

(59) ऐ अपराधियों! आज ही मुँह फेर लो!

(60) क्या मैंने तुम्हें आदेश नहीं दिया था कि ऐ आदम की सन्तान! शैतान की बन्दगी न करो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

(61) और मेरी ही बन्दगी करो, यही सीधा मार्ग है।

(62) फिर भी उसने तुममें से बहुतों को गुमराह कर दिया, क्या तुम नहीं समझते?

(63) यही वह जहन्नम है जिसका वादा तुमसे किया गया था।

(64) आज अपने आपको जला डालो, उस बात के कारण जिसे तुमने झुठलाया था।

(65) आज हम उनके मुँह बंद कर देंगे, और उनके हाथ हमसे बोलेंगे, और उनके पैर उनके कामों की गवाही देंगे।

(66) और यदि हम चाहें तो उनकी आँखें फोड़ दें, फिर वे मार्ग की ओर दौड़ पड़ें, किन्तु वे कैसे देख सकेंगे?

(67) और यदि हम चाहें तो उन्हें उसी स्थिति में बदल दें, जहाँ वे हैं, फिर न तो वे आगे बढ़ सकते हैं और न पीछे हट सकते हैं।

(68) और जिसे हम दीर्घायु प्रदान करते हैं, उसका स्वभाव बदल देते हैं। क्या वे समझते नहीं?

(69) और हमने उसे न तो कविता सिखाई है और न वह उसके लिए उपयुक्त है। यह तो बस एक नसीहत है और स्पष्ट क़ुरआन है।

(70) ताकि जीवितों को सचेत कर दे और ताकि इनकार करनेवालों पर बात पूरी हो जाए।

(71) क्या वे नहीं देखते कि हमने उनके लिए चौपाये पैदा किए हैं, जो हमारे हाथों ने बनाए हैं और वे उनपर प्रभुता रखते हैं।

(72) और हमने उन्हें उनके लिए पालतू बना दिया। कुछ तो उनके सवार हैं और कुछ वे खाते हैं।

(73) और वे उससे लाभ उठाते हैं और पीते हैं, तो क्या वे कृतज्ञ नहीं होंगे?

(74) और उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य बना लिए, आशा रखते हुए कि उन्हें सहायता मिलेगी।

(75) वे उनकी सहायता नहीं कर सकते, परन्तु वे उनकी रक्षा के लिए खड़ी हुई सेना बन जायेंगे।

(76) जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम दुःखी न हो। हम जानते हैं जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं।

(77) क्या मनुष्य को यह नहीं मालूम कि हमने उसे वीर्य की बूँद से पैदा किया है और वह तो खुला हुआ शत्रु है!

(78) और उसने हमारे सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया, अपनी ही रचना को भूलकर, और कहा, "कौन हड्डियों को जिलाएगा, जबकि वे मिट्टी हो जाएँगी?"

(79) कह दो, "जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया है, वही उन्हें जीवित करेगा और वह सारी सृष्टि को जानता है।"

(80) जो तुम्हारे लिए हरी लकड़ी से आग निकालता है, और देखो, तुम उससे आग जलाते हो।

(81) क्या वह उन लोगों के समान किसी को भी पैदा नहीं कर सकता जिन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया? हाँ, अवश्य! और वह पैदा करनेवाला, सर्वज्ञ है।

(82) जब वह कुछ तय करता है, तो वह सिर्फ कहता है "हो", और वह हो जाता है।

(83) पवित्र है वह, जिसके हाथ में हर चीज़ की प्रभुता है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

# सूरा 37: ٱلصَّافَّات‎ (अस-सफ़ाफ़त) - मेज़बान

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क्योंकि जो [स्वर्गदूत] पंक्तिबद्ध होकर खड़े हैं,

(2) जो लोग बलपूर्वक अस्वीकार करते हैं,

(3) और जो लोग ज़िक्र (याद) पढ़ते हैं,

(4) निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर एक है।

(5) आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब, पूर्व का रब।

(6) हमने निकटतम आकाश को तारों की सुंदरता से सजाया है,

(7) और हम उसे प्रत्येक सरकश शैतान से बचाते हैं।

(8) वे उच्च परिषद की बात नहीं सुन सकते और उन्हें हर तरफ से निशाना बनाया जा रहा है,

(9) वे अस्वीकार किये गये और उनके लिए सदैव यातना है।

(१०) और यदि कोई कुछ चुराने की कोशिश करता है, तो उसे ज्वलंत चमक से पीछा किया जाता है।

(11) उनसे पूछो कि तुम्हें पैदा करना अधिक कठिन है या जो हमने पैदा किया है? निस्संदेह हमने उन्हें लसदार मिट्टी से पैदा किया है।

(12) तुम तो अचम्भा करते हो, परन्तु वे उपहास करते हैं।

(13) और जब उनको याद दिलाया जाता है तो वे ध्यान नहीं देते।

(14) और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो उसका उपहास करते हैं।

(15) और वे कहते हैं, "यह तो खुला जादू है।

(16) जब हम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम सचमुच पुनर्जीवित होंगे?

(17) और हमारे पूर्वज भी?

(18) कह दो, "हाँ, और तुम अपमानित किये जाओगे।"

(19) यह केवल एक चिल्लाहट होगी, और देखो, वे देखेंगे।

(20) वे कहेंगे, "अफ़सोस हम पर! यह क़ियामत का दिन है।"

(21) "यह निर्णय का दिन है, जिसे तुमने झुठलाया था।"

(22) "उन लोगों को इकट्ठा करो जिन्होंने अत्याचार किया, उनके साथियों को, और उन सब को जिनकी वे पूजा करते थे।

(23) अल्लाह के स्थान पर उन्हें नरक के मार्ग पर ले चलो।

(24) "और उन्हें रोको, उनसे पूछताछ की जानी चाहिए।"

(25) "तुम्हारे साथ क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद क्यों नहीं करते?"

(26) उस दिन वे पूर्णतया पराजित हो जायेंगे।

(27) और वे एक दूसरे की ओर मुँह करके प्रश्न करेंगे।

(28) वे कहेंगे, "तू हमारे पास प्रमाण लेकर आया है।"

(29) वे कहेंगे, "नहीं, तुम ही ईमान लाए।

(30) हम तुमपर कुछ अधिकार न रखते थे, वास्तव में तुम अवज्ञाकारी लोग थे।

(31) इस प्रकार हमारे प्रभु का वचन हम पर सत्य हो गया। हम अवश्य ही यातना का स्वाद चखेंगे।

(32) हमने तुम्हें इसलिए गुमराह कर दिया क्योंकि हम स्वयं गुमराह हो गए थे।

(33) उस दिन वे सब यातना में साझी होंगे।

(34) हम दोषियों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

(35) और जब उनसे कहा गया कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं तो वे अहंकार करने लगे।

(36) और उन्होंने कहा, "क्या हमें सचमुच एक पागल कवि के लिए अपने देवताओं को छोड़ देना चाहिए?"

(37) निश्चय ही वह सत्य लेकर आया और उसने रसूलों को पुष्टि प्रदान की।

(38) निश्चय ही तुम दुःखदायी यातना का स्वाद चखोगे।

(39) और तुम्हें तो बस उसी का बदला दिया जाएगा जो तुमने किया है।

(40) परन्तु अल्लाह के सच्चे बन्दे।

(41) उनके लिए एक प्रसिद्ध रोज़ी है।

(42) फल, और वे सम्मानित होंगे,

(43) आनन्द के बागों में,

(४४) सिंहासन पर, एक दूसरे के सामने।

(45) उन्हें शुद्ध पेय का प्याला परोसा जाएगा,

(४६) श्वेत, पीने वालों के लिए स्वादिष्ट,

(47) जिससे सिर दर्द या चक्कर न आए।

(48) और उनके बगल में पवित्र चेहरे और बड़ी आँखों वाली लड़कियाँ होंगी,

(४९) अच्छी तरह से संरक्षित अंडे की तरह।

(50) और वे एक दूसरे की ओर मुँह करके प्रश्न करेंगे।

(51) उनमें से एक कहेगा, "मेरा एक साथी था।

(52) उन्होंने कहा, "क्या तुम ईमानवालों में से हो?"

(53) जब हम मर जायेंगे और धूल और हड्डियाँ बन जायेंगे, तो क्या सचमुच हमारा न्याय होगा?'"

(54) वह कहेगा, "क्या तुम देखना चाहते हो?"

(55) फिर वह दृष्टि करेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा।

(56) वह कहेगा, "अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे विनष्ट करनेवाले थे!

(57) यदि मेरे पालनहार की कृपा न होती तो मैं भी दण्डितों में सम्मिलित होता।

(58) "यह सच नहीं है कि हम फिर कभी नहीं मरेंगे,

(59) यदि हमारी पहली मृत्यु न हुई, तो हमें दण्ड न मिलेगा?"

(60) निस्संदेह यही बड़ी सफलता है।

(६१) कार्यकर्ताओं को ऐसे पुरस्कार के लिए प्रयास करना चाहिए।

(62) क्या यह आतिथ्य उत्तम है या ज़क़्क़ूम का वृक्ष?

(63) निश्चय ही हमने इसे अत्याचारियों के लिए परीक्षा बना दिया है।

(64) यह एक वृक्ष है जो पाताल की तह से निकलता है।

(६५) जिनके फल राक्षसों के सिर के समान हैं।

(66) और वे उसमें से खाएँगे और उससे अपना पेट भरेंगे।

(67) फिर उनके ऊपर उबलते पानी का मिश्रण होगा।

(68) फिर वे जहन्नम में लौटकर जायेंगे।

(69) उन्होंने अपने बाप-दादा को खोया हुआ पाया।

(70) और वे शीघ्रता से अपने मार्ग पर चल पड़े।

(71) और उनसे पहले भी बहुत-से पुराने लोग भटक चुके हैं।

(72) और हमने उनके बीच सचेत करनेवाले भेजे।

(73) अब देखो, उन लोगों का क्या परिणाम हुआ, जिन्हें सावधान कर दिया गया था।

(74) परन्तु अल्लाह के सच्चे बन्दे।

(75) और नूह ने हमें पुकारा, तो हम उत्तम उत्तर देनेवाले हैं।

(76) और हमने उसे और उसके घरवालों को बड़ी मुसीबत से बचा लिया।

(77) और हमने उसकी सन्तान को जीवित रखा।

(78) और हमने उसके लिए आनेवाली नस्लों में एक निशानी छोड़ी है।

(79) "नूह पर समस्त सृष्टि में शांति हो!"

(80) इसी प्रकार हम अच्छे कर्म करनेवालों को बदला देते हैं।

(81) निस्संदेह वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

(82) फिर हमने बाकी लोगों को डुबो दिया।

(83) और निश्चय ही उसके अनुयायियों में इबराहीम भी था।

(84) जबकि वह शुद्ध हृदय लेकर अपने रब के पास आया।

(85) जबकि उसने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा, "तुम किसकी पूजा करते हो?

(86) क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त झूठे पूज्य चाहते हो?

(87) तुम सारे संसार के पालनहार के विषय में क्या सोचते हो?"

(88) फिर उसने तारों की ओर देखा,

(89) उसने कहा, "मैं तो बीमार हूँ।"

(90) अतः वे उससे मुँह फेरकर चले गये।

(91) फिर वह उनके देवताओं के पास गया और कहा, "क्या तुम नहीं खाते?

(९२) तुम्हें क्या हो गया है, तुम बोलते क्यों नहीं हो?

(93) फिर उसने अपने दाहिने हाथ से उनपर प्रहार किया।

(94) फिर वे शीघ्रता से उसकी ओर दौड़े।

(95) उसने कहा, "तुम जो कुछ गढ़ते हो, उसकी पूजा करो।

(96) हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है, फिर तुम क्या करते हो?

(97) उन्होंने कहा, "इसके लिए एक भट्टी बनाओ और उसे भड़कती हुई आग में डाल दो।"

(98) उन्होंने चाहा कि उनके लिए जाल बिछा दें, किन्तु हमने उन्हें अत्यन्त अपमानित कर दिया।

(99) उसने कहा, "मैं अपने रब की ओर जा रहा हूँ, वही मुझे मार्ग दिखाएगा।

(100) ऐ मेरे रब! मुझे नेक लोगों में से एक बेटा प्रदान कर।

(101) फिर हमने उसे एक धैर्यवान लड़के की शुभ सूचना दी।

(102) फिर जब वह उस उम्र को पहुँचा कि वह उसका साथ दे सकता था, तो उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे! मैंने स्वप्न में देखा है कि मैं तुझे क़ुर्बान कर रहा हूँ। तू क्या समझता है?" उसने कहा, "ऐ मेरे पिता! जो आदेश तुम्हें दिया गया है, वह करो। यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम मुझे धैर्य रखनेवालों में पाओगे।"

(103) जब दोनों ने समर्पण कर दिया तो उसने उसे अपने माथे पर फैला लिया।

(104) हमने उसको पुकारा कि ऐ इबराहीम!

(105) तुमने स्वप्न को पूरा कर दिया, इसी प्रकार हम उपकार करनेवालों को बदला देते हैं।

(106) निस्संदेह यह स्पष्ट प्रमाण है।

(107) और हमने उसे एक शानदार क़ुरबानी के द्वारा छुड़ाया।

(108) और हमने उसके लिए आनेवाली नस्लों में एक निशानी छोड़ी है।

(109) "शांति हो इब्राहीम पर!"

(110) इसी प्रकार हम उपकार करनेवालों को बदला देते हैं।

(111) निस्संदेह वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

(112) और हमने उसे इसहाक़ की शुभ सूचना दी, जो कि नेक लोगों में से एक नबी था।

(113) और हमने उसपर और इसहाक़ पर कृपा की, और उनकी संतान में से कुछ ऐसे भी हैं जो उपकार करनेवाले हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो अपने ऊपर स्पष्ट अत्याचारी हैं।

(114) और हमने मूसा और हारून पर उपकार किया।

(115) और हमने उनको और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत से बचा लिया।

(116) और हमने उनकी सहायता की, तो वे सफल हुए।

(117) और हमने उन्हें स्पष्ट पुस्तक प्रदान की।

(118) और हमने उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।

(119) और हमने उनके लिए आनेवाली नस्लों में एक निशानी छोड़ी है।

(120) "शांति हो मूसा और हारून पर!"

(121) इसी प्रकार हम उपकार करनेवालों को बदला देते हैं।

(122) निश्चय ही वे दोनों हमारे ईमानवाले बन्दों में से थे।

(123) और निश्चय ही एलिय्याह भी रसूलों में से था।

(124) जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम अल्लाह से डरते नहीं?

(125) बाल को पुकारो और श्रेष्ठ सृष्टिकर्ता को त्याग दो,

(126) क्या अल्लाह तुम्हारा रब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब है?

(127) किन्तु उन्होंने उसे झुठला दिया, अतः वे अवश्य यातना में पड़ेंगे।

(128) परन्तु अल्लाह के सच्चे बन्दे।

(129) और हमने उसके लिए आनेवाली नस्लों में एक निशानी छोड़ी है।

(130) "एलियाह पर शांति हो!"

(131) इसी प्रकार हम उपकार करनेवालों को बदला देते हैं।

(132) निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले बन्दों में से था।

(133) और निश्चय ही लूत भी रसूलों में से था।

(134) जबकि हमने उसे और उसके सारे घरवालों को बचा लिया।

(135) परन्तु एक बूढ़ी स्त्री जो नष्ट होनेवालों में रह गयी।

(136) फिर हमने शेष को विनष्ट कर दिया।

(137) और तुम प्रातःकाल तो उनपर से गुज़र जाते हो।

(138) और रात को भी, तो क्या तुम समझते नहीं?

(139) और निश्चय ही यूनुस भी रसूलों में से था।

(140) जब वह लदे हुए जहाज़ पर सवार होकर भागा,

(141) उसने चिट्ठियाँ डालीं और वह हारने वालों में से था।

(142) फिर मछली ने उसे निगल लिया, जबकि वह अपराधी था।

(143) यदि वह पवित्रता का गुणगान करनेवालों में न होता,

(144) वह क़ियामत के दिन तक उसके गर्भ में रहेगा।

(145) किन्तु हमने उसे एक निर्जन तट पर फेंक दिया, जबकि वह बीमार था।

(146) और हमने उसके ऊपर एक कलश उगा दिया।

(147) और हमने उसे एक लाख या उससे अधिक लोगों की ओर भेजा।

(148) और वे ईमान ले आये, तो हमने उन्हें कुछ समय तक सुख सुविधा प्रदान की।

(149) उनसे पूछो, "क्या तुम्हारे रब की कसम! उसके लिए बेटियाँ होंगी और तुम्हारे लिए बेटे?"

(150) क्या हमने स्त्रियों के फ़रिश्तों को उस समय पैदा किया जब तुम मौजूद थे?

(151) वे झूठ बोलकर कहते हैं कि

(152) "अल्लाह ने पैदा किया है।" निस्संदेह वे झूठे हैं।

(153) क्या उसने बेटों के बजाय बेटियों को चुना?

(154) तुम्हें क्या हो गया है? तुम क्या फ़ैसला करते हो?

(155) क्या आपको नहीं लगता?

(156) या तुम्हारे पास स्पष्ट प्रमाण है?

(157) अतः लाओ अपनी किताब, यदि तुम सच्चे हो!

(158) और उन्होंने ख़ुदा और जिन्न के बीच रिश्तेदारी स्थापित कर दी है, हालाँकि जिन्न भली-भाँति जानते हैं कि वे अवश्य ही न्याय के लिए प्रस्तुत किये जायेंगे।

(159) पवित्र है अल्लाह उससे अधिक जो वे उसका गुणगान करते हैं।

(160) परन्तु अल्लाह के सच्चे बन्दे।

(161) न तुम, न वह जिसे तुम पूजते हो।

(162) तुम किसी को गुमराह कर सकते हो,

(163) परन्तु जो जहन्नम में जानेवाले हैं।

(164) [और फ़रिश्तों ने कहा], "हममें से कोई ऐसा नहीं जिसका कोई पद न हो।

(165) और हम ही पंक्तिबद्ध खड़े रहनेवाले लोग हैं।

(166) और हम ही पवित्रता का गुणगान करनेवाले हैं।

(167) तथा उन्होंने कहा कि:

(168) "यदि हमारे पास पूर्वजों जैसी स्मृति होती,

(169) हम अवश्य अल्लाह के सच्चे बन्दों में से होंगे।

(170) किन्तु उन्होंने उसपर विश्वास नहीं किया, शीघ्र ही वे जान लेंगे।

(171) और हमारा आदेश हमारे भेजे हुए बन्दों को दे दिया गया था।

(172) वही लोग विजयी हैं।

(173) और निश्चय ही हमारी सेना विजयी होगी।

(174) अतः तुम उनसे कुछ समय तक दूर रहो।

(175) देखो, वे शीघ्र ही देख लेंगे।

(176) क्या वे हमारी यातना को शीघ्र लाने की माँग कर रहे हैं?

(177) जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो वह उन लोगों के लिए बुरी सुबह होगी जिन्हें सावधान कर दिया गया था!

(178) अतः तुम उनसे कुछ समय तक दूर रहो।

(179) देखो, वे शीघ्र ही देख लेंगे।

(180) पवित्र है तुम्हारा पालनहार, वह महान् प्रभु, उससे कहीं अधिक जो वे वर्णन करते हैं।

(181) सलाम हो दूतों पर।

(182) और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

# सूरा 38: **ص‎ (Ṣāad)** - दुखद

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) साद, क़ुरआन की कसम, जो पूरी तरह से डराने वाला है।

(2) किन्तु इनकार करनेवाले तो अहंकार और कलह में डूबे हुए हैं।

(3) हमने उनसे पहले कितनी पीढ़ियों को नष्ट कर दिया है! वे चिल्लाए, लेकिन खुद को बचाने के लिए कोई समय नहीं बचा था।

(4) उन्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि उनके पास उनकी ही क़ौम में से एक सचेत करनेवाला आया है। और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं, "यह तो झूठा जादूगर है।"

(5) "क्या उसने देवताओं को एक ईश्वर में बदल दिया है? सचमुच, यह वास्तव में एक अजीब बात है!"

(6) और उनके बीच के कुलीन लोग यह कहते हुए चले गए, कि जाओ और अपने देवताओं के पास रहो: यह वास्तव में एक वांछनीय बात है।

(7) हमने नवीनतम धर्म में ऐसा कुछ भी नहीं सुना है; यह एक मनगढ़ंत झूठ के अलावा और कुछ नहीं है।

(8) क्या वह हममें से चुना गया है कि नसीहत पाए? निश्चय ही वे मेरी नसीहत पर संदेह करते हैं, क्योंकि उन्होंने अभी तक मेरी यातना का स्वाद नहीं चखा है।

(9) क्या उनके पास तुम्हारे प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दाता रब की दयालुता के ख़जाने हैं?

(10) या वे आकाशों और धरती पर और जो कुछ उनके बीच है, उसपर अधिकार रखते हैं? तो फिर उन्हें चाहिए कि वे जिस किसी साधन से आकाश पर चढ़ सकें, चढ़ जाएँ।

(11) वे संघियों की पंक्तियों के बीच हार के लिए नियत सेना हैं।

(12) और उनसे पहले नूह की क़ौम, आद और फ़िरऔन के क़बीले ने भी झुठलाया।

(13) और समूद, लूत की क़ौम और अयका के निवासी; ये सब मित्र सेनाएँ थीं।

(14) उनमें से किसी ने रसूलों को झुठलाया नहीं, अतः वे मेरी यातना के योग्य हो गये।

(15) और ये लोग तो बस एक पुकार का इन्तजार कर रहे हैं, जिसमें देर नहीं होगी।

(16) और वे कहते हैं, "ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही हमें हमारा हिस्सा शीघ्र दे।"

(17) जो कुछ वे कहते हैं, उस पर धैर्य रखो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो शक्तिमान था। वह भी बहुत बार अल्लाह की ओर ध्यान करता था।

(18) हमने पहाड़ों को वश में कर लिया, ताकि वे सूर्यास्त और सूर्योदय के समय उसके साथ उसकी तसबीह करें।

(19) और पक्षी इकट्ठे हो गए; सब के सब उसकी ओर मुड़े।

(20) हमने उसके राज्य को सुदृढ़ किया और उसे बुद्धि और न्याय की क्षमता प्रदान की।

(21) क्या उसके मंदिर की दीवार फांदने वाले मुद्दइयों की कहानी आप तक पहुंची है?

(22) जब वे दाऊद के पास आए, तो वह डर गया। उन्होंने कहा, "डरो मत, क्योंकि हम दो मुद्दई हैं; हम में से एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है। हमारे बीच सच्चाई से फ़ैसला करो। अन्याय न करो, बल्कि हमें सीधे मार्ग पर ले चलो।"

(23) "यह मेरा भाई है, उसके पास निन्यानबे भेड़ें हैं, परन्तु मेरे पास एक है। वह कहता है, 'उसे मुझे दे दो,' और वह मुझ पर प्रबल हो गया।"

(24) [दाऊद] ने कहा, "उसने अन्याय किया है कि तुमसे कहा कि अपनी भेड़ों को उसके साथ जोड़ दो। बहुत से साझीदार एक-दूसरे पर अत्याचार करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, किन्तु वे बहुत कम हैं।" और दाऊद को मालूम हो गया कि हमने उसकी परीक्षा ली है। अतः उसने अपने रब से क्षमा मांगी और सजदे में गिरकर तौबा कर ली।

(25) इस प्रकार हमने उसे क्षमा कर दिया। निस्संदेह उसके लिए हमारे पास निकटता और अच्छा ठिकाना है।

(26) ऐ दाऊद! हमने तुम्हें धरती पर एक प्रतिनिधि बनाया है। अतः लोगों के बीच सत्य के साथ फ़ैसला करो और अपनी इच्छाओं का अनुसरण न करो, क्योंकि वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगी। निश्चय ही जो लोग अल्लाह के मार्ग से विमुख हो गए, उनके लिए हिसाब के दिन को भूल जाने के कारण कठोर यातना है।

(27) हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे व्यर्थ नहीं पैदा किया। यह इनकार करनेवालों का अनुमान है। इनकार करनेवालों के लिए आग की विनाशलीला है।

(28) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, धरती में बिगाड़ पैदा करने वालों के समान मानें या फिर हम नेक लोगों को दुष्टों के समान मानें?

(29) यह एक बरकतवाली किताब है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि बुद्धिवाले इसकी आयतों पर ग़ौर करें और उससे शिक्षा ग्रहण करें।

(30) और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया। वह कितना अच्छा बन्दा था। वह हमारी ओर ही बार-बार लौटता था।

(३१) जब एक शाम उसे बढ़िया, तेज़ दौड़ने वाले घोड़े भेंट किए गए,

(32) उसने कहा, "मैंने अपने रब की याद से अधिक धन को प्रिय समझा।" यहाँ तक कि सूर्य डूब गया और रात के पर्दे में छिप गया।

(33) "उन्हें मेरे पास वापस लाओ!" और उसने उनके पंजे और गर्दन पर अपना हाथ फिराना शुरू कर दिया।

(34) और हमने सुलैमान की परीक्षा ली थी, उसके सिंहासन पर एक शव रखकर, फिर उसने तौबा कर ली।

(35) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर जो मेरे पश्चात किसी को न मिले। निस्संदेह, तू बड़ा दानी है।"

(36) हमने उसपर वश में कर दिया कि वह जिस ओर चाहता, धीरे-धीरे बहता था।

(37) और दुष्टात्माएँ, सभी निर्माणकर्ता और गोताखोर,

(38) और अन्य को जंजीरों में जकड़ दिया गया।

(39) "यह हमारा उपहार है; बिना हिसाब दिए दो या रोक लो।"

(40) और उसके लिए हमारे पास निकटता और अच्छा ठिकाना है।

(41) और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा, "निश्चय ही शैतान ने मुझे दुःख और पीड़ा पहुँचाई है।"

(४२) "अपना पैर थपथपाओ: देखो, धोने और पीने के लिए ताज़ा पानी बह रहा है।"

(43) और हमने उसे उसका परिवार और उसके बराबर कुछ लौटा दिया, यह हमारी ओर से दयालुता है और बुद्धि वालों के लिए एक नसीहत है।

(44) "अपने हाथ में एक गट्ठा ले लो और उससे मारो और अपनी क़सम न तोड़ो।" हमने उसे धैर्यवान पाया। वह कितना अच्छा बन्दा था! वह अक्सर हमसे बात करता था।

(45) और हमारे बन्दों इबराहीम, इसहाक़ और याकूब को याद करो जो शक्तिशाली और दूरदर्शी थे।

(46) हमने उन्हें केवल एक ही बात से पवित्र किया है - वह है सदैव रहने वाले स्थान का स्मरण।

(47) और हमारे यहाँ वे ही सर्वोत्तम चुने हुए लोगों में से हैं।

(48) और इसमाईल, इलीशा और ज़ुल-किफ़्ल को याद करो, उनमें से प्रत्येक श्रेष्ठतम है।

(49) यह एक नसीहत है, और निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए अच्छा प्रतिफल है।

(50) सदा के बाग़, जिनके द्वार उनके लिए खोल दिए जाएँगे।

(51) वे वहाँ विश्राम करेंगे, और खूब फल और पेय माँगेंगे।

(52) और उनके साथ पवित्र दृष्टि वाले, एक ही युग के साथी होंगे।

(53) यह तुमसे हिसाब के दिन का वादा है।

(54) निश्चय ही यह हमारी रोज़ी है, जो कभी समाप्त नहीं होगी।

(55) और ऐसा ही हुआ, और निश्चय ही अत्याचारियों के लिए बहुत ही बुरा परिणाम है।

(56) नरक, जिसमें वे जलेंगे, वह कितना भयानक बिस्तर है!

(57) तो फिर वे खौलता हुआ जल और सड़ा हुआ जल चखें।

(58) और विभिन्न प्रकार की अन्य समान [सज़ाएँ]।

(59) "देखो, तुम्हारे साथ एक गिरोह निकलेगा।" (आग वालों से कहा जाएगा,) "उनके लिए कोई जगह नहीं है, वे तो आग में जलेंगे।"

(60) वे कहेंगे, "तुम्हारे लिए कोई स्वागत नहीं है। तुमने हमारे लिए स्वागत तैयार कर रखा है। यह तो बहुत बुरा स्थान है!"

(61) वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! जो लोग हमारे लिए आग की यातना तैयार कर रहे हैं, उनके लिए आग की यातना दोगुनी कर दो।"

(62) और वे कहेंगे, "हम अपने बीच उन लोगों को क्यों नहीं देखते जिन्हें हमने दुष्टों में गिना था?

(63) और हम किसका मज़ाक उड़ा रहे थे? या शायद हमारी आँखें उन्हें धोखा दे गईं?"

(64) वास्तव में, यह नरकवासियों के झगड़े हैं।

(65) कह दो कि मैं तो बस एक सचेत करनेवाला हूँ, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अकेला सर्वोच्च है।

(66) वह आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब है, वह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील है।

(67) कह दो, "ये बड़ी ख़बर है।

(68) और तुम उससे मुँह फेर लेते हो।

(६९) जब वे विवाद कर रहे थे तब मुझे उच्च परिषद के बारे में कोई जानकारी नहीं थी,

(70) मेरी ओर तो बस यही प्रकाशना की गई है कि मैं स्पष्ट रूप से सचेत करनेवाला हूँ।

(71) जबकि तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, "मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनानेवाला हूँ।

(72) फिर जब मैं उसको बना लूँ और उसमें अपनी रूह फूंक दूँ तो उसे सजदा करो।

(73) तब सब फ़रिश्ते एक साथ ज़मीन पर गिर पड़े।

(74) परन्तु इबलीस, वह बड़ा अहंकारी था और इनकार करनेवालों में से था।

(75) अल्लाह ने कहा, "ऐ इबलीस! जो चीज़ मैंने अपने हाथों से पैदा की है, उसके आगे सजदा करने से तुझे क्या रोकता है? क्या तू अभिमानी है या तू यह समझता है कि तू सर्वोच्च लोगों में से है?"

(76) उसने कहा, "मैं उससे श्रेष्ठ हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से।"

(77) उसने कहा, "यहाँ से चला जा। निश्चय ही तू धिक्कार योग्य है।"

(78) और क़ियामत के दिन तक तुमपर मेरी लानत है।

(79) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे, जिस दिन वे पुनः जीवित किये जायेंगे।"

(80) अल्लाह ने कहा, "निश्चय ही तुम उन लोगों में से हो जिन्हें मुहलत प्रदान की गयी है।

(81) नियत समय के दिन तक।

(82) उसने कहा, "तेरी शक्ति की सौगन्ध! मैं उन सबको अवश्य भटका दूँगा।

(83) परन्तु उनमें से तेरे सच्चे बन्दे ही होंगे।

(84) अल्लाह ने कहा, "यह सत्य है और मैं भी सत्य कहता हूँ।

(85) मैं नरक को तुझसे और तेरे सब अनुयायियों से भर दूँगा।

(86) कह दो, "मैं तुमसे इसपर कोई बदला नहीं माँगता और न मैं उन लोगों में से हूँ जो अपने ऊपर ऐसी बात थोपते हैं जो वे नहीं हैं।"

(87) यह और कुछ नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक चेतावनी है।

(88) और एक निश्चित समय के पश्चात् तुम अवश्य ही इसकी सच्चाई जान लोगे।

# सूरा 39: **ٱلزُّمَر‎ (अज़-ज़ुमर)** - समूह

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(2) हमने तुम्हारी ओर यह किताब इसलिए उतारी है कि तुम अल्लाह की बन्दगी निष्ठापूर्वक करो।

(3) क्या अल्लाह ही की इबादत का हक नहीं है? और जो लोग उससे हटकर दूसरे संरक्षक बना लेते हैं, वे कहते हैं, "हम तो उनकी इबादत इसलिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह के नज़दीक पहुँचा दें।" निस्संदेह अल्लाह ही उनके बीच उन मामलों में फ़ैसला कर देगा जिनमें वे मतभेद कर रहे हैं। और अल्लाह झूठों और नाशुक्रे लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

(4) यदि अल्लाह को कोई पुत्र चाहिए होता तो अपनी पैदा की हुई चीज़ों में से जिसे चाहता चुन लेता। पवित्र है वह! वह अल्लाह अकेला, सर्वोच्च शासक है।

(5) उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया। उसने रात को दिन पर और दिन को रात पर ढाँप दिया। उसने सूर्य और चन्द्रमा को वश में कर लिया, जिनमें से प्रत्येक अपने नियत समय की ओर दौड़ता है। क्या वह प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील नहीं है?

(6) उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे लिए आठ चौपाये उतारे। [1](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\37-38-39.docx#user-content-fn-1) और उसने तुम्हें तुम्हारी माँओं के गर्भ में तीन अँधेरों में पैदा किया। [2](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\37-38-39.docx#user-content-fn-2) वह अल्लाह है, तुम्हारा रब। उसी का राज्य है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम मुँह कैसे फेर सकते हो?

(7) यदि तुम कृतघ्न हो तो जान लो कि अल्लाह तो अत्यन्त क्षमाशील है, और अपने बन्दों की कृतघ्नता को पसन्द नहीं करता। किन्तु यदि तुम कृतघ्न होगे तो वह प्रसन्न होगा। कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हारे रब की ओर लौटना है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो। निश्चय ही वह दिलों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है।

(8) जब कोई व्यक्ति किसी मुसीबत में फँस जाता है तो वह अपने रब को पुकारता है और उसी की ओर तौबा करता है। फिर जब वह उसे अपनी ओर से कोई वरदान प्रदान करता है तो वह उसे भूल जाता है जिसके लिए उसने पहले उसे पुकारा था और अल्लाह के बराबर लोगों को ठहराता है, ताकि वह लोगों को उसके मार्ग से भटका दे। उससे कह दो, "थोड़ी देर तक अपने कुफ़्र का मज़ा ले लो। निश्चय ही तुम आग वाले हो।"

(9) जो व्यक्ति रात में सजदा करता है या खड़ा रहता है, आख़िरत से डरता है और अपने रब की दया की आशा रखता है, तो क्या वह उस व्यक्ति के बराबर है जो नहीं जानता? कह दो, "क्या वे लोग बराबर हैं जो जानते हैं और वे लोग जो नहीं जानते?" विचार करने वाले तो बस समझ रखने वाले हैं।

(10) कह दो, "ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए हो! अपने रब से डरते रहो। जो लोग दुनिया में अच्छा काम करेंगे, उन्हें अच्छा बदला मिलेगा। अल्लाह की ज़मीन बहुत बड़ी है। जो लोग धैर्य से काम लेंगे, उन्हें बेहिसाब बदला मिलेगा।

(11) कह दो, "मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूँ, उसी की बन्दगी करूँ।

(12) और मुझे आज्ञा दी गई कि मैं आज्ञा माननेवालों में प्रथम रहूँ।"

(13) कह दो, "यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे उस बड़े दिन की यातना का भय है।"

(14) कह दो, "मैं अल्लाह की बन्दगी करता हूँ, उसी की बन्दगी करता हूँ।

(15) और जो चाहो उसे पूजो, उससे हटकर। कह दो, "वास्तव में घाटे में वे लोग हैं जो क़ियामत के दिन अपने आपको और अपने घरवालों को घाटे में डालेंगे। निस्संदेह यह तो खुली हुई हानि है।"

(16) उनके ऊपर आग की परतें होंगी और उनके नीचे भी आग की परतें होंगी। इस प्रकार अल्लाह अपने बन्दों को डराता है: "ऐ मेरे बन्दों! मुझसे डरो।"

(17) जो लोग मूर्तियों की पूजा से बचते हैं और अल्लाह की ओर रुख करते हैं, उनके लिए शुभ सूचना है। अतः मेरे बन्दों को शुभ सूचना दे दो।

(18) जो लोग कलाम सुनते हैं और उसके सर्वोत्तम रूप का अनुसरण करते हैं, वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया और वही लोग समझ रखनेवाले हैं।

(19) क्या तुम उस व्यक्ति को आग से बचा सकते हो, जिसपर यातना का आदेश पूरा हो चुका है?

(20) किन्तु जो लोग अपने रब से डरते रहेंगे, उनके लिए एक के ऊपर एक कमरे बनाए जाएँगे, जिनके नीचे नहरें बहेंगी। यह अल्लाह का वादा है, और अल्लाह अपने वादे से कभी असफल नहीं होता।

(21) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है, फिर उसे धरती में झरनों की तरह बहा देता है, फिर उससे विभिन्न रंगों की फसलें उगाता है, फिर वे मुरझा जाती हैं, फिर तुम देखते हो कि वे पीली पड़ जाती हैं, फिर वह उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देता है, निश्चय ही इसमें बुद्धि वालों के लिए एक नसीहत है।

(22) क्या वह व्यक्ति जिसका दिल अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और जो अपने रब की रौशनी में हो, उस व्यक्ति के समान हो सकता है जिसका दिल कठोर हो गया हो? विनाश है उन लोगों के लिए जिनके दिल अल्लाह की याद से कठोर हो गए! वे खुली गुमराही में हैं।

(23) अल्लाह ने बेहतरीन कलाम (बात) उतारी है, एक किताब जो एक जैसी और बार-बार दोहराई गई है। [3](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\37-38-39.docx#user-content-fn-3) जिससे अपने रब से डरने वालों की खालें काँप उठती हैं। फिर अल्लाह की याद से उनकी खालें और उनके दिल नरम पड़ जाते हैं। यही अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिए वह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसका कोई हिदायत करनेवाला नहीं।

(24) जो कोई क़ियामत के दिन अपने चेहरे को सबसे बुरी यातना से बचा लेगा, वह बच जाएगा? और ज़ालिमों से कहा जाएगा, "जो कुछ तुमने कमाया है, उसे चखो।"

(25) उनसे पहले जो लोग भी थे उन्होंने झुठलाया, तो उनपर यातना वहाँ से आ पड़ी, जहाँ से वे उसकी आशा भी नहीं करते थे।

(26) अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में अपमान का मज़ा चखाया, किन्तु आख़िरत की यातना तो इससे भी बड़ी है, यदि वे जानते।

(27) हमने इस क़ुरआन में लोगों के सामने हर प्रकार की मिसालें पेश कर दी हैं, ताकि वे सोच-विचार करें।

(28) अरबी भाषा में बिना किसी विकृति के क़ुरआन, ताकि लोग अल्लाह से डरें।

(29) अल्लाह ने एक ऐसे व्यक्ति की मिसाल बयान की है जो अलग-अलग स्वामियों पर आश्रित है और एक ऐसे व्यक्ति की जो एक स्वामी पर आश्रित है। तो क्या वे दोनों अपनी स्थिति में समान हैं? प्रशंसा अल्लाह के लिए है! किन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।

(30) निश्चय ही तुम भी मरोगे और वे भी मरेंगे।

(31) फिर क़ियामत के दिन तुम अपने रब के पास एक दूसरे से झगड़ोगे।

(32) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोले और जब सत्य उसके पास आए तो उसे झुठला दे? क्या इनकार करनेवालों के लिए जहन्नम में कोई ठिकाना नहीं है?

(33) और जो सत्य लेकर आया और जिसने उसकी पुष्टि की, वही लोग धर्मी हैं।

(34) उनके लिए उनके रब के पास जो कुछ वे चाहेंगे, वह है। यही दान देनेवालों का बदला है।

(35) अतः अल्लाह उनसे उनके बुरे कर्मों को मिटा देगा और उन्हें उनके अच्छे कर्मों का बदला देगा।

(36) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है? बल्कि वे लोग तुम्हें डराना चाहते हैं, उन लोगों से जो अल्लाह को छोड़कर पूजते हैं। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं।

(37) और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे, तो कोई पथभ्रष्ट नहीं कर सकता। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रतिशोध लेनेवाला नहीं है?

(38) यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे, "अल्लाह ने।" कह दो, "क्या तुमने उन लोगों पर ध्यान दिया है, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो? यदि अल्लाह मुझे कष्ट पहुँचाना चाहे, तो क्या वे उसे दूर कर देंगे? या यदि वह मुझ पर दया करना चाहे, तो क्या वे उसे रोक देंगे?" कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसी पर भरोसा करनेवाले हैं।"

(39) कह दो कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम जो करना चाहते हो करो, मैं भी करूँगा। शीघ्र ही तुम जान लोगे।

(40) जो ऐसी सज़ा पाएगा जो उसे अपमानित करेगी और जिस पर ऐसी यातना आएगी जो हमेशा तक रहेगी।

(41) हमने तुमपर यह किताब लोगों के लिए सत्य के साथ उतारी है। जो व्यक्ति मार्ग पर चलेगा, वह अपने लाभ के लिए चलेगा और जो पथभ्रष्ट होगा, वह अपने ही नुकसान के लिए चलेगा। तुम पर उनका कोई दायित्व नहीं है।

(42) अल्लाह प्राणों को उनकी मृत्यु के समय वापस ले लेता है और जो सोते समय नहीं मरते, उन्हें भी वापस ले लेता है। जिनको उसने मृत्यु का आदेश दे दिया है, उन्हें अपने पास रख लेता है और शेष को एक निश्चित अवधि तक वापस भेज देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें।

(43) क्या वे अल्लाह से हटकर सिफ़ारिश करनेवाले बनाते हैं? कह दो, "यद्यपि उनके पास कुछ भी नहीं है और वे बुद्धि भी नहीं रखते?"

(44) कह दो, "सारी सिफ़ारिश अल्लाह के लिए है और आकाशों तथा धरती का राज्य उसी का है। फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।"

(45) जब अल्लाह, एकमात्र का उल्लेख किया जाता है, तो जिन लोगों ने आख़िरत से इनकार किया, उनके दिल सिकुड़ जाते हैं, किन्तु जब उसके सिवा किसी और का उल्लेख किया जाता है, तो वे प्रसन्न हो जाते हैं।

(46) कह दो, "ऐ अल्लाह! आकाशों और धरती के रचयिता, छिपे और प्रत्यक्ष के जाननेवाले! तू ही अपने बन्दों के बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा, जिसमें वे मतभेद कर रहे थे।"

(47) यदि अत्याचारियों के पास धरती में जो कुछ है, वह सब होता और उससे भी अधिक, तो वे क़ियामत के दिन अपने आपको कठोर यातना से बचाने के लिए उसे अर्पित कर देते। और अल्लाह की ओर से उन्हें वह बात प्रकट हो जाएगी, जिसका उन्होंने विचार भी नहीं किया था।

(48) और जो बुरे कर्म उन्होंने किये हैं, वे उनपर खुल जायेंगे और वह चीज़, जिसका वे उपहास करते थे, उन्हें घेर लेगी।

(49) जब किसी व्यक्ति पर कोई मुसीबत आती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई वरदान प्रदान करते हैं तो कहता है, "यह तो मेरा हक़ है।" निश्चय ही यह एक परीक्षा है, किन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

(50) यही बात उनसे पहले के लोगों ने भी कही, किन्तु जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया, उससे उन्हें कोई लाभ न हुआ।

(51) और इस प्रकार उनके कर्मों का परिणाम उनपर आ पड़ा। और उनमें से जो लोग अत्याचारी थे, वे अपने कर्मों के परिणाम में दुःखी होंगे, और वे बच न सकेंगे।

(52) क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है या सीमित कर देता है? निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(53) कह दो, "ऐ मेरे बन्दों! जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ। निस्संदेह अल्लाह सारे गुनाहों को क्षमा कर देने वाला है। वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(54) अपने रब की ओर तौबा कर लो और उसके आगे झुक जाओ, इससे पहले कि तुमपर यातना आ जाए। उसके बाद तुम्हारी कोई सहायता नहीं की जाएगी।

(55) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसमें से सर्वोत्तम का अनुसरण करो, इससे पहले कि तुमपर अचानक यातना आ पड़े और तुम उसका अनुभव भी न कर सको।

(56) ताकि कोई यह न कहे कि अफ़सोस कि मैंने अल्लाह के विषय में जो लापरवाही की, और यह कि मैं उपहास करनेवालों में से था।

(57) या कहो कि यदि अल्लाह ने मुझे मार्ग दिखाया होता तो मैं भी नेक लोगों में शामिल होता।

(58) या जब वह दण्ड देखे तो कहे, 'काश मुझे एक और अवसर मिलता, तो मैं भी उपकार करनेवालों में शामिल होता।'"

(59) "हाँ, मेरी आयतें तुम्हारे पास आ चुकी थीं, फिर भी तुमने उन्हें झुठला दिया और तुम अहंकारी हो गए और इनकार करनेवालों में से हो गए।"

(60) क़ियामत के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था, उनके चेहरे छुपे हुए होंगे। क्या जहन्नम अभिमानियों का निवास स्थान नहीं है?

(61) अल्लाह डर रखनेवालों को बचा लेगा और उन्हें मुक्ति प्रदान करेगा। न कोई बुराई उन्हें छू सकेगी और न वे शोकाकुल होंगे।

(62) अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करनेवाला है और वह सबका रक्षक है।

(63) आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के लिए हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वही घाटे में पड़े।

(64) कह दो, "ऐ अज्ञानियों! क्या तुम मुझे अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की बन्दगी करने का आदेश देते हो?"

(65) और यह बात तुम्हारी ओर और उन लोगों की ओर भी प्रकाशना की जा चुकी है जो तुमसे पहले आए हैं कि "यदि तुम अल्लाह का साझी ठहराओगे तो तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायेंगे और तुम घाटे में पड़ जाओगे।"

(66) बल्कि अल्लाह की बन्दगी करो और कृतज्ञता दिखानेवालों में से बनो।

(67) उन्होंने अल्लाह का उचित मूल्यांकन नहीं किया। क़ियामत के दिन सारी धरती उसके अधीन होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा। पवित्र है वह। वह उससे परे है जिसे वे साझी ठहराते हैं।

(68) जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो आकाश और धरती में जितने लोग हैं वे सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, सिवाय उन लोगों के जिन्हें अल्लाह चाहेगा। फिर जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो वे खड़े होकर देखेंगे।

(69) धरती अपने पालनहार के प्रकाश से चमक उठेगी, किताब रखी जायेगी, नबियों और गवाहों को पेश किया जायेगा, और उनके बीच न्याय के साथ फैसला किया जायेगा और किसी पर अन्याय न होगा।

(70) प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का फल मिलेगा। परमेश्वर भली-भाँति जानता है कि वे क्या करते हैं।

(71) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे समूह बनाकर जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे। जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके रक्षक उनसे कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे ही बीच से कोई रसूल नहीं आया था जो तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाता और तुम्हें इस दिन के आने से डराता?" वे कहेंगे, "हाँ, किन्तु इनकार करनेवालों पर तो यातना का आदेश पूरा हो चुका है।"

(72) कहा जाएगा, "जहन्नम के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उसमें सदैव निवास करोगे।" अहंकारियों के लिए वह कितना बुरा निवास स्थान है!

(73) और जो लोग अपने रब से डरते हैं, वे समूह बनाकर जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे। जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके रक्षक उनसे कहेंगे, "तुम पर सलाम हो। तुम अच्छे रहे हो। उसमें प्रवेश करो और सदैव उसमें रहो।"

(74) और वे कहेंगे, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे किया अपना वादा पूरा किया और हमें धरती का उत्तराधिकारी बनाया, ताकि हम जहाँ चाहें जन्नत में रहें।" अच्छा ही अच्छा बदला है उन लोगों के लिए जिन्होंने अच्छे कर्म किए!

(75) और तुम फ़रिश्तों को अर्श के चारों ओर अपने रब की प्रशंसा करते हुए देखोगे। और उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा, "सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है।"

# सूरा 40: **ग़ाफ़िर** - क्षमा करने वाला

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा, मीम.

(2) किताब का अवतरण अल्लाह तआला की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ है।

(3) जो गुनाहों को क्षमा कर दे, तौबा क़बूल कर ले, सज़ा देने वाला और बहुत कुछ देने वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की ओर लौटना है।

(4) अल्लाह की आयतों में झगड़ने वाले वही लोग हैं जो इनकार करते हैं। अतः तुम उनकी धरती में भटकन से धोखा न खाओ।

(5) उनसे पहले नूह की क़ौम और उसके बाद के लोगों ने भी झुठलाया और हर समुदाय ने अपने रसूल को पकड़ने की साज़िश रची और सत्य को झुठलाने के लिए झूठ से झगड़ने लगे। फिर मैंने उन्हें मारा। फिर मेरी यातना क्या थी!

(6) इस प्रकार तुम्हारे रब का वचन उन लोगों पर सत्य हो गया जिन्होंने इनकार किया। वही लोग आग में पड़नेवाले हैं।

(7) अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते और उसके आस-पास के लोग अपने रब की प्रशंसा करते हैं और उस पर ईमान लाते हैं और ईमान लाने वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे रब! तू अपनी दयालुता और अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे हुए है। अतः जो लोग तौबा कर लें और तेरे मार्ग पर चलें, उन्हें क्षमा कर दे और उन्हें जहन्नम की यातना से बचा ले।

(8) ऐ हमारे रब! उन्हें उन जन्नतों में दाखिल कर जिसका वादा तूने उनसे किया है। उनके साथ उनके बाप-दादा, उनकी पत्नियाँ और उनकी संतानें भी हैं। निस्संदेह, तू ही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(9) उन्हें बुरे कर्मों से बचा ले, क्योंकि जिस किसी को तूने बुराई से बचाया है, उस दिन तेरी दया उस पर होगी। यही बड़ी सफलता है।

(10) इनकार करनेवालों को यह घोषणा कर दी जाएगी कि, "अल्लाह की तुमसे घृणा, उस घृणा से भी अधिक है जो तुमने स्वयं अपने प्रति की थी, जबकि तुम्हें ईमान की ओर बुलाया गया था, फिर तुमने उसे झुठला दिया।"

(11) वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! तूने हमें दो बार मारा और दो बार जिलाया। अब हम अपने गुनाहों को स्वीकार कर लें। क्या कोई उपाय है?"

(12) "यह इसलिए कि जब तुमने अल्लाह को पुकारा तो तुमने इनकार किया, किन्तु जब कोई चीज़ उसका साझी बनी तो तुम ईमान लाए। और फ़ैसला अल्लाह के लिए है, जो सर्वोच्च, महान है।"

(13) वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और आकाश से तुम्हारी ओर जीविका उतारता है, किन्तु वह केवल उन्हीं को याद करता है जो उसकी ओर पलटते हैं।

(14) अतः अल्लाह की बन्दगी करो और उसकी सच्ची इबादत करो, चाहे इससे इनकार करनेवाले नाराज़ ही क्यों न हों।

(15) वह सर्वोच्च दर्जा वाला, अर्श का स्वामी है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी वह्यी (प्रकाशना) उतारता है, ताकि वे आख़िरत के दिन से सावधान करें।

(16) जिस दिन सब लोग प्रकट हो जायेंगे, उनमें से कुछ भी अल्लाह से छिपा न रहेगा। (कहा जायेगा) कि आज राज्य किसका है? (उत्तर होगा) कि अल्लाह ही एकमात्र प्रभुत्वशाली है।

(17) आज प्रत्येक प्राणी को उसके किए का बदला दिया जाएगा। आज कोई अन्याय न होगा। निस्संदेह अल्लाह हिसाब लेने में शीघ्रता करने वाला है।

(18) उन्हें उस आने वाले दिन से डराओ, जब इनकार करनेवालों के दिल घुट जायेंगे और अत्याचारियों का कोई मित्र न होगा, जिससे वे प्रेम करें और न कोई सिफ़ारिश करनेवाला होगा जिसकी बात वे सुनें।

(19) वह आँखों की छिपी हुई झलक को जानता है और सीनों की छिपी हुई बातें भी जानता है।

(20) अल्लाह न्यायपूर्वक निर्णय करता है, किन्तु वे लोग जिन्हें उससे हटकर पुकारते हैं, वे कुछ निर्णय नहीं करते। निस्संदेह अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है।

(21) क्या वे धरती में फिरे नहीं कि देखें कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे और धरती में अधिक निशान छोड़ गए। किन्तु अल्लाह ने उन्हें उनके पापों के कारण मारा और उनका कोई न था जो अल्लाह से उनकी रक्षा करता।

(22) यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, किन्तु उन्होंने इनकार किया। अतः अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निस्संदेह वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, अत्यन्त कठोर दण्ड देनेवाला है।

(23) और हमने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।

(24) फ़िरऔन, हामान और क़ारून के पास भेजा, किन्तु उन्होंने कहा, "वह जादूगर और झूठा है।"

(25) और जब उसने हमारे पास से उनके पास सत्य लाया तो उन्होंने कहा, "जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं, उनके बेटों को मार डालो और उनकी पत्नियों को जीवित रहने दो।" किन्तु इनकार करनेवालों का धोखा तो बस असफलता है।

(26) फ़िरऔन ने कहा: "मुझे मूसा को मार डालने दो, और उसे अपने रब को पुकारने दो। मुझे डर है कि वह तुम्हारा धर्म बदल देगा या देश में फ़साद फैलाएगा।"

(27) मूसा ने कहा, "मैं अपने रब और तुम्हारे रब की शरण चाहता हूँ, हर उस अहंकारी व्यक्ति से जो हिसाब के दिन इनकार करेगा।"

(28) फ़िरऔन के घराने में से एक ईमानवाले ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा कि क्या तुम किसी व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है? वह तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे लिए स्पष्ट प्रमाण लेकर आया है। यदि वह झूठ बोलेगा तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और यदि वह सच बोलेगा तो जो कुछ वह तुमसे वादा करेगा, उसका कुछ हिस्सा तुम्हारे ऊपर आएगा। निश्चय ही अल्लाह अवज्ञाकारी और झूठ बोलनेवाले को मार्ग नहीं दिखाता।

(29) ऐ मेरी क़ौम! आज हुकूमत तुम्हारी है और तुम धरती पर हुकूमत कर रहे हो। लेकिन अगर अल्लाह की सज़ा हम पर आ जाए तो हमें उससे कौन बचाएगा?" फ़िरऔन ने कहा: "मैं तुम्हें वही दिखाता हूँ जो मैं देखता हूँ और मैं तुम्हें सिर्फ़ नेकी के रास्ते पर ले चलता हूँ।"

(30) फिर जो ईमान लाया उसने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए ऐसे दिन से डरता हूँ, जिस दिन गुटबाज़ी होगी।

(31) और जैसा नूह और आद और समूद की क़ौम का और उनके बाद वालों का हुआ। अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।

(32) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हारे लिए उस दिन से डरता हूँ जब तुम पर मुलाक़ात होगी।

(33) जिस दिन तुम मुँह फेरकर भागोगे, अल्लाह से तुम्हारा कोई बचाव करनेवाला न होगा और जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे, उसका कोई मार्ग दिखानेवाला नहीं।

(34) यूसुफ़ तुम्हारे पास पहले भी स्पष्ट प्रमाण लेकर आ चुका था, किन्तु जो कुछ वह तुम्हारे पास लाया था, उसमें तुम सन्देह में न पड़े। यहाँ तक कि उसके मरने के पश्चात तुमने कहा कि अल्लाह उसके बाद कोई रसूल नहीं भेजेगा। इस प्रकार अल्लाह अवज्ञाकारियों और संदेहियों को भटका देता है।

(35) जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, जबकि उनके पास कोई प्रमाण नहीं आया। अल्लाह और ईमान वालों के निकट उनका बहुत बड़ा तिरस्कार है। इस प्रकार अल्लाह प्रत्येक अहंकारी और अत्याचारी के दिलों पर मुहर लगा देता है।"

(36) फ़िरऔन ने कहा, "ऐ हामान! मेरे लिए एक ऊँची मीनार बनाओ, शायद मैं सड़कों तक पहुँच सकूँ,

(37) ताकि मैं मूसा के ईश्वर का पता लगा सकूँ, यद्यपि मैं उसे झूठा समझता हूँ।" इस प्रकार फ़िरऔन के बुरे कर्म उसके लिए आकर्षक हो गए और वह मार्ग से भटक गया। किन्तु फ़िरऔन का धोखा विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

(38) और जो व्यक्ति ईमान लाया उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें सच्चाई के मार्ग पर ले चलूँगा।

(39) ऐ मेरी क़ौम! सांसारिक जीवन तो क्षणभंगुर सुख है, जबकि आख़िरत तो स्थायी निवास है।

(40) जो व्यक्ति बुरा कर्म करेगा, उसका बदला भी उतना ही होगा, और जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, और वह ईमानवाला हो, वह जन्नत में प्रवेश करेगा और उसे भरपूर रोज़ी दी जाएगी।

(41) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें मुक्ति की ओर क्यों बुलाता हूँ, जबकि तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो?

(42) तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं अल्लाह को झुठलाऊँ और उसका साझीदार बनाऊँ जिसका मुझे कुछ ज्ञान नहीं, जबकि मैं तुम्हें बुला रहा हूँ अल्लाह की ओर, जो अत्यन्त क्षमाशील है।

(43) यह बात स्पष्ट है कि जिस चीज़ की ओर तुम मुझे बुला रहे हो, उसका न तो इस जीवन में कोई प्रभाव है और न ही आख़िरत में। और यह कि हमारा लौटना अल्लाह की ओर है और उल्लंघनकर्ता आग में पड़नेवाले हैं।

(44) जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ, उसे तुम शीघ्र ही स्मरण करोगे। मैं अपना भाग्य अल्लाह के हाथ में सौंपता हूँ। निस्संदेह अल्लाह अपने बन्दों पर नज़र रखनेवाला है।

(45) फिर अल्लाह ने उसे उनकी चालों से बचा लिया, और फ़िरऔन की क़ौम को बुरी यातना ने घेर लिया।

(46) वह आग है जिसमें वे प्रातःकाल और सायंकाल डाले जाएँगे। और जिस दिन क़ियामत आएगी, "फ़िरऔन की क़ौम को कड़ी यातना में डाल दो।"

(47) और जब लोग आग में झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग अभिमानियों से कहेंगे, "हमने तुम्हारा अनुसरण किया था। अब क्या तुम हमारे लिए आग का कुछ भाग हल्का कर सकते हो?"

(48) अभिमानी कहेंगे, "हम तो सब के सब भीतर ही हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों के बीच फ़ैसला कर दिया है।"

(49) और जो लोग आग में पड़ेंगे वे जहन्नम के सिपाहियों से कहेंगे, "अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमें यातना के दिन से बचा ले।"

(50) वे कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आए थे?" वे कहेंगे, "हाँ।" वे कहेंगे, "अच्छा, तुम पुकारो।" किन्तु इनकार करनेवालों की पुकार तो बस उलझन है।

(51) हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की इस संसार में भी सहायता करेंगे और उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे।

(52) जिस दिन अत्याचारियों की बहानेबाज़ी कुछ काम न आएगी। उनपर लानत है और उनके लिए सबसे बुरा निवास होगा।

(53) हमने मूसा को मार्गदर्शन प्रदान किया और इसराईल की संतान को किताब का उत्तराधिकारी बनाया।

(५४) समझदार लोगों के लिए एक मार्गदर्शक और चेतावनी के रूप में।

(55) अतः धैर्य रखो, निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है। अपने गुनाहों की क्षमा मांगो और संध्या तथा प्रातः अपने रब की प्रशंसा बयान करो।

(56) जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, और उनके पास कोई प्रमाण नहीं आया, उनके दिलों में तो बस घमण्ड है, किन्तु वे उस तक नहीं पहुँच सकते। अतः अल्लाह की शरण में जाओ। वास्तव में वही सुनने वाला, देखने वाला है।

(57) आकाशों और धरती की रचना मनुष्यों की रचना से कहीं अधिक बड़ी है, किन्तु अधिकतर लोग यह नहीं जानते।

(58) अंधा और देखने वाला बराबर नहीं हैं, न ही अंधकार और प्रकाश,

(59) न छाया, न तपती धूप, न जीवित और न मृतक समान हैं। निस्संदेह अल्लाह कब्रों में पड़े लोगों को जिसे चाहता है अपनी बात सुनाता है, किन्तु तुम कब्रों में पड़े लोगों को नहीं सुना सकते।

(60) तुम्हारे रब ने कहा, "मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूँगा। जो लोग अभिमान के कारण मेरी बन्दगी से इन्कार करते हैं, वे अपमानित होकर नरक में जायेंगे।"

(61) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम आराम करो और दिन बनाया, ताकि तुम देख सको। निस्संदेह अल्लाह लोगों पर बड़ा अनुग्रह करनेवाला है, किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखाते।

(62) वही अल्लाह है, तुम्हारा रब, हर चीज़ का पैदा करनेवाला। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम कैसे मुँह फेर सकते हो?

(63) इसी प्रकार, अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले लोग ठुकरा दिए गए।

(64) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को स्थिर स्थान बनाया और आकाश को छत बनाया, और तुम्हें बनाया और सुन्दर बनाया और तुम्हें अच्छी-अच्छी जीविका प्रदान की। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बरकतवाला अल्लाह है, सारे संसार का रब।

(65) वह जीवित है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसी को पुकारो और उसी की इबादत करो, सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

(66) कह दो, "मुझे तो उन लोगों की बन्दगी से रोका गया है जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुके हैं और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सारे संसार के रब के आगे झुक जाऊँ।"

(67) वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर किसी चिपचिपी चीज़ से, फिर तुम्हें संतान की अवस्था में उत्पन्न किया, फिर तुम्हें वयस्कता की अवस्था में पहुँचाया, फिर तुम वृद्ध हो गये, यद्यपि तुममें से कुछ उससे पहले ही मर जाते हैं, ताकि तुम अपने लिए निर्धारित अवधि को पहुँचो और समझो।

(68) वह जीवन देनेवाला और मृत्यु देनेवाला है। जब वह कोई काम करने का आदेश देता है तो केवल कहता है, "हो जा" और वह हो जाता है।

(69) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं कि वे सत्य से मुँह मोड़ लेते हैं?

(70) जिन लोगों ने किताब को और उसको झुठलाया, जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा, वे शीघ्र ही जान लेंगे।

(71) जब उनके गले में कॉलर और जंजीरें होंगी, उन्हें घसीटा जाएगा

(72) फिर वे आग में जलाए जाएँगे।

(73) फिर उनसे कहा जाएगा कि वह चीज़ कहाँ है जिसे तुम साझी ठहराते थे?

(74) वे कहेंगे, "उन्होंने हमें छोड़ दिया। इससे पहले हमने किसी को नहीं पुकारा।" इस प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों को गुमराही में छोड़ देता है।

(75) यह इसलिए हुआ कि तुम धरती पर अकारण गर्व करते रहे और इसलिए कि तुम अहंकारी थे।

(76) अतः जहन्नम के द्वारों से प्रवेश करो, उसमें सदैव रहोगे। अहंकारियों का ठिकाना कितना बुरा है!

(77) अतः धैर्य रखो। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है। यदि हम तुम्हें उसका कुछ भाग दिखा दें, जिसका उनसे वादा किया था या हम तुम्हें पहले ही मार डालें, तो भी वे हमारी ओर ही लौटाए जाएंगे।

(78) हमने तुमसे पहले भी बहुत से रसूल भेजे हैं, उनमें से कुछ की बातें हमने तुमसे बयान की हैं और कुछ की नहीं। किसी रसूल का यह अधिकार नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई निशानी लेकर आए। फिर जब अल्लाह का आदेश आ जाएगा तो सत्य स्थापित हो जाएगा और जो लोग झूठ बोल रहे थे, वे खो बैठेंगे।

(79) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाये बनाए, ताकि तुम उनपर सवार हो सको और उनसे अपना पेट भर सको।

(80) और उसी से तुम दूसरे लाभ प्राप्त करते हो और उसी के द्वारा अपने दिलों की इच्छाएँ पूरी करते हो। उसी पर और नावों में तुम यात्रा करते हो।

(81) और वह तुम्हें अपनी आयतें दिखाता है, तो फिर तुम अल्लाह की किन-किन आयतों को झुठलाओगे?

(82) क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया ताकि देखें कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? वे उनसे अधिक संख्या में थे, अधिक शक्तिशाली थे, और धरती में अधिक निशानियाँ छोड़ गए, किन्तु जो कुछ उन्होंने अर्जित किया, उसमें से कुछ भी उनके काम न आया।

(83) जब उनके पास रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आये तो वे अपने ज्ञान पर प्रसन्न हुए, किन्तु जिस चीज़ का वे उपहास कर रहे थे, उसने उन्हें घेर लिया।

(84) और जब उन्होंने हमारी यातना देखी तो कहा, "हम एक अल्लाह पर ईमान लाए हैं और हमने उसका जो साझी ठहराया था, उससे इन्कार किया।"

(85) किन्तु उनका ईमान उनके कुछ काम न आया, इसके पश्चात कि उन्होंने हमारी यातना देख ली। यही अल्लाह का अपने बन्दों के प्रति आचरण है। इस प्रकार इनकार करनेवाले घाटे में पड़ गये।

# सूरा 41: **فُصِّلَت‎ (फ़ुशिलात)** - छंद की व्याख्या

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा, मीम.

(2) यह अल्लाह की ओर से अवतरित हुई है, जो अत्यन्त दयावान है।

(3) एक किताब जिसकी आयतें विस्तार से बयान की गई हैं, एक अरबी क़ुरआन उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं,

(4) शुभ समाचार और चेतावनी के रूप में; किन्तु उनमें से अधिकतर भटक गए हैं और सुनते नहीं।

(5) और वे कहते हैं, "जिस चीज़ की ओर तूने हमें बुलाया है, उससे हमारे दिल पर पर्दा पड़ा हुआ है और हमारे कानों में बहरापन है और हमारे और तेरे बीच पर्दा है। तो तुम ऐसा ही करो, हम वही करेंगे।"

(6) कह दो, "मैं तो बस तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ। तुम्हारी ओर वह्यी की गई है कि तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है। अतः उसी की ओर तौबा करो और उससे क्षमा की प्रार्थना करो। विनाश है मुश्रिकों के लिए!

(7) जो ज़कात नहीं देते और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते।

(8) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए निरंतर प्रतिफल है।

(9) कह दो, "क्या तुम उसको झुठलाते हो जिसने धरती को दो दिन में पैदा किया और उसी के समान बनाया? वही सारे संसार का रब है।"

(10) उसी ने धरती में स्थिर पर्वत बनाए, उसे बरकत दी और चार दिन में उसमें जीविका स्थापित कर दी, जो भी माँगे उसके लिए बराबर-बराबर।

(11) फिर उसने आकाश की ओर रुख किया, जबकि वह धुआँ बन चुका था, फिर उसने आकाश से और धरती से कहा, "तुम दोनों आओ, चाहे स्वेच्छा से या अनिच्छा से।" उन्होंने कहा, "हम आज्ञाकारी होकर आते हैं।"

(12) और इस प्रकार उसने सात आकाशों में दो दिन में उन्हें पूरा कर दिया और प्रत्येक आकाश में उसका कार्य प्रेतात्मा द्वारा भेजा। और हमने निचले आकाश को दीपों और सुरक्षा से सुसज्जित किया। यह प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का आदेश है।

(13) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मैं तुम्हें उस बिजली से सावधान करता हूँ, जैसी आद और समूद पर गिरी थी।"

(14) जब उनके पास रसूल आगे-पीछे से आए और कहने लगे कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करो तो उन्होंने कहा कि यदि हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को भेज देता। अतः हम उस चीज़ को मानने से इन्कार करते हैं जिसके साथ तुम भेजे गए हो।

(15) और आद के लोगों ने धरती में अकारथ घमण्ड किया और कहा, "कौन हमसे अधिक शक्तिशाली है?" क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने उन्हें पैदा किया है, उनसे अधिक शक्तिशाली है? किन्तु उन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया।

(16) फिर हमने बुरे दिनों में उनके बीच तेज़ हवा भेजी, ताकि वे सांसारिक जीवन में अपमान का स्वाद चखें, किन्तु आख़िरत की यातना उससे भी अधिक अपमानजनक है, और वे सहायता न पा सकेंगे।

(17) और रहे समूद, तो हमने उन्हें मार्ग दिखाया, किन्तु उन्होंने मार्ग के स्थान पर अन्धेपन को प्राथमिकता दी। अतः उनके कर्मों के कारण अपमानजनक यातना का वज्र उनपर पड़ा।

(18) और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और डरते रहे।

(19) और जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र किये जायेंगे, वे मार्ग पर चलाये जायेंगे।

(20) जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उनके कान, उनकी आँखें और उनकी खालें उनके कामों के विरुद्ध गवाही देंगी।

(21) और वे अपनी खालों से कहेंगे, "तुमने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी?" वे कहेंगे, "अल्लाह ने हमें बोलनेवाला बनाया है, वही हर चीज़ को बोलनेवाला है। वही है जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।"

(22) और तुम अपने आपको छिपा न सके कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध गवाही दें, किन्तु तुमने यह समझ लिया कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसमें से बहुत कुछ नहीं जानता।

(23) तुम्हारा यह विचार जो तुमने अपने रब के विषय में किया था, उसने तुम्हें नष्ट कर दिया और तुम घाटे में पड़नेवालों में हो गये।

(24) यदि वे धैर्य रखें तो उनका ठिकाना आग ही है और यदि वे अनुग्रह चाहें तो वे उन लोगों में से न होंगे जिन्हें अनुग्रह प्रदान किया गया है।

(25) और हमने उनके लिए ऐसे साथी बनाए जो अपनी आँखों में अपने आगे और पीछे की चीज़ों को सुंदर बनाते थे। और उन पर बात वैसी ही उतरी जैसी उनसे पहले जिन्नों और मनुष्यों में से इसी प्रकार की कौमों पर उतरी थी। निश्चय ही वे घाटे में पड़े।

(26) और इनकार करनेवालों ने कहा, "इस क़ुरआन को न सुनो और इसके पाठ में व्यर्थ की बातें न करो, ताकि तुम श्रेष्ठ बन जाओ।"

(27) किन्तु हम इनकार करनेवालों को कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे और उनके सबसे बुरे कर्मों का बदला उन्हें देंगे।

(28) और अल्लाह के शत्रुओं का बदला यही है: आग। उनके लिए सदैव रहने का घर है, क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया।

(29) और इनकार करनेवाले कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमें उन जिन्नों और मनुष्यों को दिखा दे, जिन्होंने हमें गुमराह किया है, ताकि हम उनपर कब्ज़ा कर लें, ताकि वे सबसे नीच लोगों में से हो जाएँ।"

(30) जो लोग कहते हैं कि "हमारा रब अल्लाह है," फिर धैर्य से काम लेते हैं, उन्हीं पर फ़रिश्ते उतरेंगे और कहेंगे कि "न डरो और न शोकाकुल हो, बल्कि उस जन्नत की शुभ सूचना प्राप्त करो जिसका वादा तुमसे किया गया है।

(31) हम तुम्हारे मित्र हैं वर्तमान जीवन में भी तथा आख़िरत में भी। वहाँ तुम्हें वह मिलेगा जो तुम्हारा जी चाहेगा और वहाँ तुम्हें वह मिलेगा जो तुम माँगोगे।

(32) यह दयालु क्षमाशील की ओर से आतिथ्य है।

(33) और उससे बढ़कर बात करनेवाला कौन होगा जो अल्लाह की ओर बुलाए, अच्छा काम करे और कहे कि मैं तो मुसलमान हूँ।

(34) भलाई और बुराई एक समान नहीं हैं। भलाई को भलाई से दूर करो। फिर देखो, जिसके बीच शत्रुता थी, वह तुम्हारे और तुम्हारे बीच मित्र के समान हो जायेगा।

(35) किन्तु यह केवल धैर्य रखने वालों को प्रदान किया जाता है और यह केवल सौभाग्यशाली लोगों को प्रदान किया जाता है।

(36) और यदि शैतान की ओर से कोई प्रलोभन तुम्हारे पास आये तो अल्लाह की शरण में जाओ। निस्संदेह वही सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(37) उसकी निशानियों में से रात और दिन, सूर्य और चन्द्रमा हैं। तुम सूर्य और चन्द्रमा को सजदा न करो, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उनको पैदा किया है, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

(38) किन्तु यदि वे अभिमान करें तो जो लोग तुम्हारे रब के पास हैं, वे रात-दिन उसकी तसबीह करते रहते हैं और वे कभी थकते नहीं।

(39) और उसकी निशानियों में से यह भी है कि तुम धरती को सूखा हुआ देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह फूल जाती है, और फूल जाती है। निश्चय ही जिसने उसे जिलाया, वही मुर्दों को भी जिलाएगा। निश्चय ही वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(40) निश्चय ही जो लोग हमारी आयतों में हेर-फेर करते हैं, वे हमसे बचकर नहीं जा सकते। उससे अच्छा कौन है जो आग में डाला जाएगा या उससे जो क़ियामत के दिन सुरक्षित निकल आएगा? जो चाहो करो, निस्संदेह वह जो कुछ तुम करते हो उसे देख रहा है।

(41) जिन लोगों ने उस अनुस्मरण को झुठलाया, जबकि वह उनके पास आई, वे जान लें कि वह बड़ी भारी किताब है।

(42) मिथ्यात्व तुम्हारे आगे या पीछे से नहीं आता, वह तो अत्यन्त तत्वदर्शी प्रशंसनीय की ओर से अवतरित होता है।

(43) तुमसे तो बस वही कहा जा रहा है जो तुमसे पहले के रसूलों से कहा जा चुका है। निस्संदेह तुम्हारा रब क्षमाशील भी है और दुखद यातना भी देने वाला है।

(44) यदि हम इसे किसी विदेशी भाषा में क़ुरआन बनाते तो वे कहते, "इसकी आयतें स्पष्ट क्यों नहीं की गईं? एक विदेशी भाषा में संदेश और एक अरबी संदेशवाहक?" कहो, "जो लोग ईमान लाए, उनके लिए यह मार्गदर्शन और शिफ़ा है। किन्तु जो लोग इनकार करते हैं, उनके कानों में बोझ है और यह उनके लिए अन्धापन है। वे दूर स्थान से बुलाए जा रहे हैं।"

(45) और हमने मूसा को किताब दी थी, फिर भी उसमें मतभेद हो गया। और यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले से कोई बात न लिखी होती, तो उनके बीच उसका फ़ैसला कर दिया जाता। किन्तु मैं तो उसके विषय में बहुत संदेह में हूँ।

(46) जो व्यक्ति अच्छा काम करता है, वह अपने ही लाभ के लिए करता है और जो व्यक्ति बुरा काम करता है, वह अपने ही विरुद्ध करता है। और तुम्हारा रब अपने बन्दों पर कभी अत्याचार नहीं करता।

(47) उसी की ओर क़ियामत का ज्ञान भेजा गया है। न तो उसके प्याले से कोई फल निकलता है और न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न कोई बच्चा पैदा करती है, परन्तु उसके ज्ञान से। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा कि "मेरे साझी कहाँ हैं?" तो वे कहेंगे कि हम तुम्हें शुभ सूचना देते हैं कि हममें से कोई भी उनका गवाह नहीं है।

(48) और जिस चीज़ को वे पहले पुकार रहे थे, वही उन्हें छोड़ देगी और वे जान लेंगे कि उनके लिए कोई बचने का रास्ता नहीं है।

(49) मनुष्य अच्छाई का आह्वान करते कभी नहीं थकता; लेकिन यदि बुराई उसे छू लेती है, तो वह निराश हो जाता है, सारी आशा खो देता है।

(50) और यदि हम उसे अपनी दयालुता का स्वाद चखाएँ, इसके पश्चात कि उस पर कोई मुसीबत आ चुकी हो, तो वह कहेगा, "यह तो मेरा हक है और मैं नहीं समझता कि वह घड़ी आएगी। और यदि मैं अपने रब की ओर लौटा दिया जाऊँ, तो उसके पास मेरे लिए इससे भी अधिक अच्छा है।" किन्तु हम इनकार करनेवालों को उनके किए की खबर अवश्य दे देंगे और उन्हें कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे।

(51) जब हम मनुष्य पर कोई उपकार करते हैं तो वह मुँह फेर लेता है और पीछे हट जाता है, किन्तु जब उसपर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो लम्बी-लम्बी दुआएँ माँगता है।

(52) कह दो, "क्या तुमने सोचा कि वह अल्लाह की ओर से है, फिर भी तुम उसे झुठलाते हो? उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन हो सकता है जो घोर मतभेद में पड़ा हो?"

(53) हम उन्हें अपनी निशानियाँ आकाश में तथा उनके भीतर दिखा देंगे, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि वह सत्य है। क्या यह पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर साक्षी है?

(54) निश्चय ही वे अपने रब से मिलने के विषय में संदेह में हैं। निस्संदेह वह हर चीज़ को घेरे हुए है।

# सूरा 42: **ٱلشُّورى‎ (अश-शूरा)** - परामर्श

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा, मीम.

(2) ऐन, सीन, कफ़.

(3) इसी प्रकार अल्लाह, जो प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है, तुम्हारी ओर उसी प्रकार प्रकाशना करता है जिस प्रकार तुमसे पहले लोगों की ओर प्रकाशना करता था।

(4) उसी का है जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है। और वह सर्वोच्च, प्रभुत्वशाली है।

(5) उनके ऊपर आकाश फटने को है, और फ़रिश्ते अपने रब की तसबीह करते हुए धरती वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(6) और जो कोई उससे हटकर किसी और को संरक्षक बनाएगा, अल्लाह उनपर निगरानी रखेगा, और तुम उनके संरक्षक नहीं हो।

(7) इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर अरबी भाषा में क़ुरआन अवतरित किया है, ताकि तुम बस्तियों की माँ और उसके आस-पास के लोगों को सचेत करो और उस जमाअत के दिन से सचेत करो, जिसके विषय में कोई संदेह नहीं। उसका एक भाग जन्नत में है और एक भाग आग में।

(8) यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता, किन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में प्रवेश देता है, और अत्याचारियों का न कोई संरक्षक है और न कोई सहायक।

(9) क्या उन्होंने उससे हटकर कोई और संरक्षक बना लिया है? निस्संदेह अल्लाह ही संरक्षक है, वही मुर्दों को जिलाता है और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(10) जिस विषय में तुम मतभेद करो, उसका निर्णय अल्लाह के हाथ में है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मैं रूकूँगा।

(11) आकाशों और धरती को पैदा करनेवाले ने तुम्हें तुम्हारे ही जैसे पत्नियाँ दीं और तुम्हारे लिए दो-दो चौपाये पैदा किए, इस प्रकार वह तुम्हें बढ़ाता है। उसके जैसा कोई नहीं, और वह सुननेवाला, देखनेवाला है।

(12) आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वह जिसपर चाहता है भरपूर कृपा प्रदान करता है और जिसपर चाहता है सीमित कर देता है। वास्तव में वह हर चीज़ को जानने वाला है।

(13) उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया है जिसका आदेश नूह को दिया था और जो हमने तुम्हारी ओर उतारा है और जिसका आदेश हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को दिया था, और कहा था कि "धर्म की स्थापना करो और उसमें विभेद न करो।" तुम उन्हें जिस चीज़ की ओर बुलाते हो, वह मुश्रिकों के लिए कठिन है। अल्लाह जिसे चाहता है अपने लिए चुन लेता है और जो कोई उसकी ओर रूजू करता है, उसे अपनी ओर मार्ग दिखा देता है।

(14) और वे एक दूसरे की ईर्ष्या के कारण अलग हुए, परन्तु इसके पश्चात कि ज्ञान उनके पास आ चुका था। और यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले से ही कोई निश्चित समय न होता, तो उनके बीच पहले ही फ़ैसला हो चुका होता। निश्चय ही जो लोग उनके पश्चात किताब के उत्तराधिकारी हुए, वे उसके विषय में बहुत संदेह में हैं।

(15) अतः तुम लोगों को बुलाओ और जैसा तुम्हें आदेश दिया गया है, उसी प्रकार दृढ़ रहो और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो। कह दो, "मैं उस सारी किताब पर ईमान लाया हूँ जो अल्लाह ने अवतरित की है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब है। हम अपने कर्म करेंगे और तुम अपने कर्म करोगे। हमारे और तुम्हारे बीच कोई विवाद नहीं है। अल्लाह हम सबको एकत्र करेगा और उसी की ओर लौटना है।"

(16) जो लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, इसके पश्चात कि उसकी आयत स्वीकार कर ली गई, तो उनका झगड़ना उनके रब के यहाँ व्यर्थ है। उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है और उन्हीं के लिए कठोर यातना है।

(17) अल्लाह ही है जिसने किताब को सत्य और संतुलन के साथ अवतरित किया। फिर तुम्हें कौन समझा सकता है? कदाचित क़ियामत निकट हो।

(18) जो लोग इनकार करते हैं वे उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और जो लोग ईमान लाए हैं वे उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। निस्संदेह जो लोग क़ियामत के विषय में झगड़ रहे हैं, वे बड़ी भूल में हैं।

(19) अल्लाह अपने बन्दों पर दया करनेवाला है और जिसे चाहता है रोज़ी देता है। और वह प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(20) जो आख़िरत की फ़सल चाहे, हम उसके लिए उसकी फ़सल बढ़ा देंगे और जो दुनिया की फ़सल चाहे, हम उसे उसमें से हिस्सा देंगे, लेकिन आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होगा।

(21) या उनके लिए कोई ऐसा साझीदार है, जिसने उनके लिए दीन में वह चीज़ निर्धारित कर दी है, जिसका अल्लाह ने आदेश नहीं दिया? यदि पहले से कोई बात निर्धारित न होती, तो उन पर पहले ही निर्णय हो चुका होता। निश्चय ही अत्याचारियों के लिए दुखद यातना है।

(22) तुम देखोगे कि अत्याचारी लोग अपने कर्मों से डरते हैं, जो उन पर आ पड़ेगा। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे जन्नत के बाग़ों में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास जो कुछ वे चाहेंगे, वह होगा। यही बड़ी नेमत है।

(23) यह शुभ सूचना है जो अल्लाह अपने बन्दों को देता है, जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। कह दो, "मैं तुमसे अपने रिश्तेदारों से प्रेम के अतिरिक्त कोई बदला नहीं माँगता।" और जो कोई अच्छा कर्म करेगा, हम उसके अच्छे कर्मों में वृद्धि करेंगे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, कृतज्ञतापूर्ण है।

(24) या वे कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे। किन्तु अल्लाह अपने वचनों से झूठ को मिटा देता है और सत्य को पुष्ट करता है। निश्चय ही वह जानता है जो कुछ दिलों में है।

(25) वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है, तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करता है और जो कुछ तुम करते हो वह सब जानता है।

(26) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनकी प्रार्थना वह स्वीकार करता है और अपने अनुग्रह से उन्हें और बढ़ा देता है। किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए कठोर यातना है।

(27) यदि अल्लाह अपने बन्दों को उदारता से रोज़ी देता तो वे धरती में विद्रोह कर देते, किन्तु वह जो चाहता है, संयम से उतारता है। निस्संदेह वह ख़बर रखनेवाला है, और अपने बन्दों पर नज़र रखता है।

(28) वही है जो उनके निराश होने के पश्चात् वर्षा बरसाता है और अपनी दयालुता फैलाता है। वह रक्षक, प्रशंसनीय है।

(29) और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और उनमें प्राणियों का वितरण और वह उन्हें जब चाहे एकत्र करने की सामर्थ्य रखता है।

(30) जो कुछ भी तुमपर विपत्ति आयी, वह तुम्हारे हाथों की कमाई के कारण है। फिर भी, अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील है।

(31) और धरती में तुम्हारे लिए कोई बचने का उपाय नहीं और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और सहायक भी नहीं।

(32) और उसकी निशानियों में से हैं समुद्र में चलने वाले जहाज़ जो पहाड़ों जैसे हैं।

(33) यदि वह चाहे तो वायु को शान्त कर दे, फिर वे उसकी सतह पर स्थिर हो जाएँ। इसमें प्रत्येक धैर्यवान और कृतज्ञता व्यक्त करने वाले व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं।

(34) या फिर वह उन्हें उनके कर्मों के कारण विनष्ट कर देगा, और बहुत कुछ क्षमा भी कर देगा।

(35) ताकि जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें कि उनके लिए कोई बचने का उपाय नहीं।

(36) जो कुछ तुम्हें दिया गया है वह सांसारिक जीवन का एक क्षणिक सुख है, किन्तु जो कुछ अल्लाह के पास है वह उन लोगों के लिए अधिक उत्तम और स्थायी है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा किया।

(37) जो लोग घोर पापों और अश्लीलता से बचते हैं और जब क्रोध करते हैं तो क्षमा कर देते हैं।

(38) जो लोग अपने रब को जवाब देते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, फ़ैसलों में आपस में सलाह-मशविरा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं।

(39) और जो लोग जब उनपर अन्याय होता है तो वे अपना बचाव करते हैं।

(40) बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, फिर जो क्षमा कर दे और मेलमिलाप कर ले, उसका बदला अल्लाह के पास है। निस्संदेह वह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

(४१) जो अन्याय सहने के बाद भी अपना बचाव करता है, वह दोषी नहीं है।

(42) पाप तो उन लोगों पर है जो धरती में अन्याय के साथ अत्याचार करते हैं और अन्याय करते हैं, उनके लिए दुखद यातना है।

(43) किन्तु जो धैर्यवान और क्षमाशील है, वह अपने कार्यों में सच्चा संकल्प दिखाता है।

(44) जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे, उसके पश्चात उसका कोई संरक्षक नहीं। और तुम अत्याचारियों को देखोगे, जब वे यातना को देखेंगे, तो कहेंगे, "क्या कोई पीछे हटने का उपाय है?"

(45) तुम उन्हें उसके सामने अपमानित अवस्था में देखोगे, वे चोरी-चोरी निगाहों से देख रहे होंगे। और जो लोग ईमान लाए, वे कहेंगे, "वास्तव में घाटे में वे लोग हैं, जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आपको और अपने घरवालों को घाटे में डाला।" निश्चय ही अत्याचारी लोग स्थायी यातना में रहेंगे।

(46) अल्लाह के सिवा उनका कोई सहायक नहीं और जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे, उसके लिए कोई मार्ग नहीं।

(47) अपने रब की बात मान लो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए, जिसे टाला न जा सके। उस दिन न तुम्हारे लिए कोई शरण होगी और न तुम इनकार कर सकोगे।

(48) फिर यदि वे मुँह मोड़ लें तो हमने तुम्हें उनका संरक्षक बनाकर नहीं भेजा है, तुम्हारा काम तो बस संदेश पहुँचाना है। जब हम मनुष्य को अपनी दयालुता का स्वाद चखाते हैं तो वह प्रसन्न होता है, किन्तु यदि उसके हाथों के किए हुए कामों के कारण उस पर कोई विपत्ति आ पड़े तो मनुष्य कृतघ्न है।

(49) आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। वह जो चाहता है पैदा करता है। जिसे चाहता है बेटियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है बेटे प्रदान करता है।

(50) या वह उन्हें नर और मादा दोनों प्रदान करता है, फिर जिसे चाहता है बांझ कर देता है। निस्संदेह वह सर्वज्ञ, अत्यन्त प्रभुत्वशाली है।

(51) मनुष्य को यह अधिकार नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, परन्तु वह्यी के द्वारा या परदे के पीछे से या किसी रसूल को भेजकर जो चाहे वह उसकी अनुमति से प्रकट करे। वास्तव में, वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

(52) इसी प्रकार हमने अपने आदेश से तुम्हारी ओर रूह उतारी। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न ईमान। परन्तु हमने उसे प्रकाश बना दिया, जिसके द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं मार्ग दिखा देते हैं। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करते हो।

(53) अल्लाह का मार्ग, जिसका अधिकार है जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है। निश्चय ही सब चीज़ें अल्लाह की ओर लौटकर आती हैं।

# सूरा 43: ٱلزُّخْرُف‎ (अज़-ज़ुख्रुफ़) - आभूषण

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा', मीम.

(2) स्पष्ट पुस्तक के लिए,

(3) हमने इसे अरबी भाषा में क़ुरआन बनाया है, ताकि तुम समझ सको।

(4) निश्चय ही वह हमारे पास किताब में है, वह महान् और तत्वदर्शिता से परिपूर्ण है।

(5) तो क्या हम तुम्हें इस कारण से अनुस्मरण से वंचित कर दें कि तुम अवज्ञाकारी लोग हो?

(6) हमने कितने ही नबियों को भेजा, जो पहले के लोगों की ओर भेजे।

(7) किन्तु जो नबी उनके पास आया, वे उसका उपहास ही करते रहे।

(8) हमने उनसे अधिक शक्तिशाली लोगों को नष्ट कर दिया है, और पूर्वजों का उदाहरण पहले ही बीत चुका है।

(9) यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि उन्हें प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ ने पैदा किया है।

(10) वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए मार्ग बनाये ताकि तुम्हें मार्ग दिखा सके।

(11) जिसने आकाश से उचित मात्रा में जल बरसाया, फिर उसी से हम मुर्दा भूमि को जिलाते हैं, इसी प्रकार तुम भी जीवित किये जाओगे।

(12) वही है जिसने सारे जोड़े पैदा किये और तुम्हें नावें और जानवर दिये जिनपर तुम सवार होते हो।

(13) ताकि तुम उनपर बैठो, फिर अपने रब के उस उपकार को याद करो, जब तुम उनपर बैठे थे। और कहो, "पवित्र है वह, जिसने इसे हमारे अधीन कर दिया, जबकि हम इसे अपने वश में नहीं कर सकते थे।"

(14) और हम अपने रब की ओर लौटकर जानेवाले हैं।

(15) फिर भी वे उसके बन्दों में से एक भाग को उसका भाग ठहराते हैं। वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

(16) क्या उसने अपने द्वारा पैदा किए गए लोगों में से बेटियाँ बना लीं और तुमपर बेटों को प्राथमिकता दी?

(17) और जब उनमें से किसी को वह बात बतायी जाती है जिसे वह अत्यंत दयावान का ठहराता है, तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह उदास हो जाता है।

(18) क्या अल्लाह का सम्बन्ध ऐसे प्राणी से जोड़ा गया है जो आभूषणों के साथ बड़ा हुआ हो और स्पष्ट तर्क करने में असमर्थ हो?

(19) और उन्होंने फ़रिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, स्त्रियाँ बनाया। क्या वे उनकी रचना के साक्षी थे? उनकी गवाही लिखी जाएगी और उनसे प्रश्न किया जाएगा।

(20) वे कहते हैं कि यदि रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कुछ भी ज्ञान नहीं, वे तो बस झूठ बोल रहे हैं।

(21) क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब प्रदान की है, जिसपर वे कायम रहें?

(22) वे कहते हैं, "हमने अपने पूर्वजों को एक धर्म पर चलते हुए पाया है और हम उनके पदचिन्हों पर मार्ग पाते हैं।"

(23) और हमने तुमसे पहले भी जिस बस्ती में कोई सचेत करनेवाला भेजा, उसमें तो केवल यही हुआ कि उसके धनवानों ने कहा कि हमने अपने पूर्वजों को एक धर्म पर पाया है और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चलते हैं।

(24) उसने कहा, "यदि मैं तुम्हारे पास उससे भी अच्छा मार्ग लाऊँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया है?" उन्होंने कहा, "जिस मार्ग पर तुम भेजे गए हो, हम उस पर ईमान नहीं लाते।"

(25) फिर हमने उनको यातना दी, तो देखो कि झुठलानेवालों का परिणाम कैसा हुआ।

(26) और जब इब्राहीम ने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा, "तुम जिसकी पूजा करते हो, मैं उससे निर्दोष हूँ।

(27) परन्तु जिसने मुझे पैदा किया, वही मुझे मार्ग दिखाएगा।

(28) और उसने इस [शब्द] को अपने वंशजों के बीच एक स्थायी शब्द बना दिया, ताकि वे [चिंतन] कर सकें।

(29) बल्कि उन्हें और उनके बाप-दादा को सुख प्रदान करो, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और स्पष्ट रसूल आ जाए।

(30) फिर जब उनके पास सत्य आया तो उन्होंने कहा, "यह तो जादू है और हम इससे इन्कार करते हैं।"

(31) और उन्होंने कहा, "यह क़ुरआन किसी भी नगर में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति पर क्यों नहीं उतारा गया?"

(32) क्या वे लोग हैं जो तुम्हारे रब की दयालुता बाँटते हैं? हमने उनके बीच सांसारिक जीवन में जीविका के साधन बाँट दिए हैं और उनमें से कुछ को दूसरों पर वरीयता दी है, ताकि वे एक दूसरे की सेवा करें। किन्तु तुम्हारे रब की दयालुता उससे कहीं बेहतर है जो वे इकट्ठा करते हैं।

(33) और यदि मनुष्य एक ही समुदाय न हो जाते तो हम उन लोगों के लिए, जिन्होंने अत्यंत दयावान को झुठलाया, उनके घरों के लिए चाँदी की छतें बना देते और चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बना देते।

(34) और उनके घरों के लिए दरवाजे और बैठने के लिए पलंग,

(35) और सोने के आभूषण, ये सब सांसारिक जीवन के सुख-विलास के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं, और आख़िरत तुम्हारे रब के निकट डर रखनेवालों के लिए है।

(36) और जो व्यक्ति अत्यंत दयावान की चेतावनी से मुँह मोड़ेगा, हमने उसके लिए शैतान नियुक्त कर दिया है, जो उसका सदैव साथी रहेगा।

(37) निश्चय ही वे उन्हें मार्ग से रोक देते हैं, तथा समझते हैं कि वे मार्ग पा रहे हैं।

(38) यहाँ तक कि जब मनुष्य हमारे पास आएगा तो कहेगा, "काश! मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम के बराबर दूरी होती!" कितना बुरा साथी है!

(39) परन्तु आज तुम को कुछ लाभ नहीं होगा, क्योंकि तुम ने अन्याय किया है; तुम दण्ड के भागीदार हो।

(40) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अंधे को और उस व्यक्ति को जो स्पष्ट रूप से गुमराह हो, मार्ग दिखा सकते हो?

(41) यदि हम तुम्हें पकड़ भी लें तो भी उनसे बदला लेंगे।

(42) अथवा हम तुम्हें वह सब दिखा देंगे जिसका वादा हमने उनसे किया था। निस्संदेह हम उनपर पूरी शक्ति रखते हैं।

(43) अतः जो कुछ तुम्हारी ओर अवतरित हुआ है, उसे दृढ़तापूर्वक थामे रहो। निस्संदेह तुम सीधे मार्ग पर हो।

(44) निश्चय ही यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए चेतावनी है। और शीघ्र ही तुमसे इसके विषय में पूछा जाएगा।

(45) उनसे पूछो जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा कि क्या हमने अत्यंत दयावान के अतिरिक्त किसी अन्य को पूज्य ठहराया है?

(46) और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। उसने कहा, "मैं सारे संसार के रब की ओर से एक रसूल हूँ।"

(47) फिर जब वह उनके पास हमारी आयतें लेकर आया तो वे हँसने लगे।

(48) और हमने उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाई, परन्तु जो पिछली निशानी से बड़ी थी, और हमने उन्हें यातना में पकड़ा, ताकि वे फिरें।

(49) उन्होंने कहा, "ऐ जादूगर! अपने रब से उस वचन के आधार पर जो उसने तुझसे किया है, हमारे लिए प्रार्थना कर। निश्चय ही हम सीधा मार्ग पा लेंगे।"

(50) फिर जब हमने उनसे यातना हटा ली तो उन्होंने अपना वादा तोड़ दिया।

(51) और फिरौन ने अपनी प्रजा से कहा, हे मेरी प्रजा, क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं है, और क्या ये नदियां जो मेरे पांवों के पास हैं, वे मेरी नहीं हैं? क्या तुम नहीं देखते?

(५२) क्या मैं इस दुष्ट से बेहतर नहीं हूँ जो मुश्किल से अपने आप को व्यक्त कर सकता है?

(53) उसे सोने के कंगन क्यों नहीं दिए गए या उसके साथ स्वर्गदूतों की सेना क्यों नहीं आई?"

(54) इस प्रकार उसने अपनी क़ौम को धोखा दिया और उन्होंने उसकी बात मान ली। वास्तव में वे एक कुटिल लोग थे।

(55) फिर जब उन्होंने हमें उकसाया तो हमने उनसे बदला लिया और उन सबको डुबो दिया।

(56) और हमने उन्हें भावी नस्लों के लिए आदर्श और मिसाल बना दिया।

(57) और जब मरयम के बेटे का उदाहरण दिया गया तो तुम्हारी क़ौम के लोग उसपर हँसने लगे।

(58) और उन्होंने कहा, "क्या हमारे पूज्य उससे अच्छे नहीं हैं?" वे तुम्हारे पास केवल विवाद के लिए ही कुछ लाते हैं। वास्तव में वे झगड़ालू लोग हैं।

(59) वह तो बस एक बन्दा था जिस पर हमने उपकार किया और हमने उसे इसराईल की संतान के लिए आदर्श बनाया।

(60) और यदि हम चाहें तो तुम्हारे बीच से ऐसे फ़रिश्ते भेज दें जो धरती में तुम्हारे उत्तराधिकारी बनें।

(61) और यह क़ियामत की निशानी है। अतः तुम कोई संदेह न करो और मेरा अनुसरण करो। यही सीधा मार्ग है।

(62) और शैतान तुम्हें मना न करे, निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

(63) और जब ईसा स्पष्ट प्रमाण लेकर आये तो उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारे पास तत्वदर्शिता लेकर आया हूँ और ताकि तुम्हारे लिए कुछ बातें स्पष्ट कर दूँ, जिनमें तुम मतभेद करते हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

(64) निस्संदेह अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है। अतः उसी की बन्दगी करो। यही सीधा मार्ग है।

(65) किन्तु उनमें गुट फूट पड़ गये। अतः विनाश है उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचार किया, दुखद दिन की यातना से!

(66) क्या वे आशा रखते हैं कि क़ियामत उनपर अचानक आ पड़ेगी, जबकि उन्हें इसका एहसास भी नहीं है?

(67) उस दिन सभी घनिष्ठ मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जायेंगे, परन्तु वे ही जो डर रखनेवाले हों।

(68) "ऐ मेरे बन्दों! आज तुम न डरोगे और न शोक करोगे,

(69) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी रहे।

(70) अतः तुम और तुम्हारी पत्नियाँ प्रसन्नचित्त होकर जन्नत में प्रवेश करो।

(71) और उन्हें सोने की थालियाँ और प्याले परोसे जाएँगे, और जो कुछ आत्माएँ चाहेंगी और जो कुछ आँखों को भाएगा, वह होगा। "यही वह है जो तुम्हारे कामों के बदले तुम्हें विरासत में दिया जाएगा।

(72) यही वह स्वर्ग है जिसका उत्तराधिकारी तुमको बनाया गया है, उसके बदले में जो तुमने किया।

(73) वहाँ तुम्हें खाने के लिए बहुत सारे फल मिलेंगे।

(74) निश्चय ही अपराधी सदैव नरक की यातना में रहेंगे।

(75) उनके लिए कोई आसान काम नहीं होगा और वे निराश हो जायेंगे।

(76) हमने उनपर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने ही अपने ऊपर अत्याचार किया।

(77) और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा रब हमारा अन्त कर दे। वह कहेगा कि तुम अवश्य बचे रहोगे।

(78) हमने तुम्हारे पास सत्य पहुँचा दिया, किन्तु तुममें से अधिकतर लोग उसे नापसंद करते हैं।

(79) क्या उन्होंने कुछ तय कर लिया है? हम भी तय कर रहे हैं।

(80) क्या वे समझते हैं कि हम उनके रहस्यों और गुप्त बातों को नहीं सुनते? निस्संदेह हमारे रसूल उनमें से प्रत्येक को लिख लेते हैं।

(81) कह दो, "यदि रहमान का कोई पुत्र होता तो मैं सबसे बड़ा बन्दा होता।"

(82) पवित्र है आकाशों और धरती का रब और अर्श का रब, उससे अधिक जो वे उसका गुणगान करते हैं।

(83) उन्हें चाहिए कि वे अपने मिथ्या विश्वासों में डूबे रहें और आनन्द मनाते रहें, यहाँ तक कि वे उस दिन से मिलें, जिसका उनसे वादा किया गया है।

(84) वही आकाशों में भी पूज्य है और वही धरती में भी पूज्य है और वही तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।

(85) बहुत ही शुभ है वह व्यक्ति जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है और जो कुछ उनके बीच है। उसी के पास क़ियामत का ज्ञान है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

(86) और जिनको वे उसके सिवा पुकारते हैं, उनमें सिफ़ारिश करने का अधिकार नहीं, परन्तु जो सत्य की गवाही दें, और जानते हों।

(87) और यदि तुम उनसे पूछो कि उनको किसने पैदा किया तो वे कहेंगे, "अल्लाह ने।" फिर वे कहाँ भटके?

(88) और (सन्देष्टा) कहेंगे, "ऐ मेरे रब! ये लोग इनकार करनेवाले लोग हैं।"

(89) तुम उनसे मुँह फेर लो और कह दो कि "सलामत है!" शीघ्र ही वे जान लेंगे।

# सूरा 44: ٱلدُّخَان‎ (विज्ञापन-दुख़ान) - धूम्रपान

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा, मीम.

(2) क्योंकि किताब तो स्पष्ट है!

(3) और हमने उसे बरकतवाली रात में उतारा है, और हम ही सावधान करनेवाले हैं।

(4) इसमें हर बुद्धिमान प्रश्न का फैसला किया जाता है,

(5) हमारे आदेश से, हम ही भेजनेवाले हैं।

(6) यह तुम्हारे रब की दयालुता है। निस्संदेह वह सब कुछ सुनता, जानता है।

(7) हे प्रभु, आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी। यदि तुम निश्चय कर लेते।

(8) उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है। वही तुम्हारा रब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब है।

(९) फिर भी वे संदेह करते हैं और आनंद लेते हैं।

(10) अतः उस दिन की प्रतीक्षा करो जब आकाश से धुआँ निकलेगा।

(11) जो लोगों को घेर लेगी, यह बड़ी दुःखदायी यातना है।

(12) "ऐ हमारे रब! हमसे यह यातना दूर कर दे। अब हम ईमान ले आए हैं।"

(13) वे कैसे नसीहत पाएँगे, जबकि उनके पास स्पष्ट रसूल आ चुका है?

(14) परन्तु उन्होंने यह कहकर उससे मुँह फेर लिया, “वह दूसरों का शिष्य है; वह तो पागल है!”

(15) निश्चय ही हम यातना को कुछ समय के लिए टाल देंगे, फिर तुम फिर अपने कर्मों की ओर लौटोगे।

(16) जिस दिन हम बड़ी यातना देंगे, उस दिन अवश्य बदला लेंगे।

(17) और हमने उनसे पहले फ़िरऔन की क़ौम को भी आज़माया था, फिर उनके पास एक बड़ा रसूल आया,

(18) "अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारे लिए विश्वसनीय रसूल हूँ।

(19) और अल्लाह पर अहंकार न करो, मैं तुम्हारे पास खुली निशानी लेकर आया हूँ।

(20) और मैं अपने रब और तुम्हारे रब की शरण चाहता हूँ कि तुम मुझे पत्थरवाह न कर दो।

(21) और यदि तुम मुझपर ईमान नहीं लाते तो मुझे छोड़ दो।

(22) फिर उसने अपने रब को पुकारा, "ये लोग तो बहुत अपराधी हैं।"

(23) "मेरे बन्दों के साथ रात को निकल जाओ। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

(24) समुद्र को शान्त रहने दो; निश्चय ही वे एक ऐसी सेना है जो डूबने के लिए ही बनी है।"

(25) उन्होंने कितने बाग़ और कितने सोते छोड़े हैं,

(26) खेत और एक कुलीन निवास,

(27) और वे वस्तुओं से प्रसन्न होते थे!

(28) और ऐसा ही हुआ, फिर हमने दूसरे लोगों को उसका वारिस बना दिया।

(29) न आकाश उनके लिए रोया और न धरती, और न उन्हें कोई मोहलत दी गयी।

(30) और हमने इसराईल की संतान को अपमानजनक यातना से बचा लिया।

(31) फ़िरऔन की ओर से, निश्चय ही वह अत्याचारियों में बड़ा अहंकारी था।

(32) और हमने उन्हें, जानते हुए, सब से अधिक चुन लिया।

(33) और हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ प्रदान कीं जिनमें स्पष्ट प्रमाण था।

(34) ये लोग कहते हैं कि,

(35) "हमारी पहली मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं है, और हम पुनर्जीवित नहीं होंगे।

(36) अतः यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को जीवित करो।

(37) क्या वे अच्छे हैं या तुब्बा के लोग और उनसे पहले के लोग? हमने उनको विनष्ट कर दिया, क्योंकि वे पापी थे।

(38) और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है उसे मजाक के लिए नहीं पैदा किया।

(39) हमने उन्हें सत्य के साथ ही पैदा किया, किन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं।

(40) निश्चय ही निर्णय का दिन उन सबके लिए निश्चित समय है।

(41) जिस दिन कोई भी मित्र किसी दूसरे को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा और न उसे कोई सहायता ही मिलेगी।

(42) परन्तु वह जिसपर अल्लाह दया करे। निस्संदेह, वह प्रभुत्वशाली, दयावान है।

(43) निश्चय ही ज़क़्क़ूम का वृक्ष

(४४) पापी का भोजन होगा।

(45) पिघली हुई धातु की तरह यह पेट में उबल जाएगा,

(४६) उबलते पानी के समान।

(47) [कहा जाएगा,] पकड़ो उसे और घसीटकर भड़कती हुई आग के बीच में डाल दो।

(48) फिर उसके सिर पर खौलता हुआ पानी डाल दो।

(49) "चखो! तुम जो शक्तिशाली थे, महान थे!

(50) निश्चय ही यही वह बात है जिसके विषय में तुम संदेह में थे।

(51) निश्चय ही डर रखनेवाले लोग सुरक्षित स्थान पर होंगे।

(52) बाग़ों और झरनों के बीच,

(५३) रेशम और जरी के वस्त्र पहने हुए, एक दूसरे के सामने बैठे हुए।

(54) ऐसा ही होगा। और हम उनकी शादी बड़ी आँखों वाली लड़कियों से करेंगे।

(55) वहाँ वे शान्ति और सुरक्षा के साथ हर प्रकार का फल माँग सकेंगे।

(56) वे वहाँ पहली मृत्यु के अतिरिक्त किसी और मृत्यु का स्वाद न चखेंगे और अल्लाह उन्हें जहन्नम की यातना से बचाएगा।

(57) यह तुम्हारे रब की ओर से एक उपकार है। यही बड़ी सफलता है।

(58) हमने तुम्हारी भाषा को सरल बना दिया है, ताकि वे विचार करें।

(59) अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, वे भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

# सूरा 45: ٱلْجَاثِيَة‎ (अल-जथियाह) - घुटने टेकना

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा', मीम.

(2) किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(3) निश्चय ही आकाशों और धरती में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाये।

(4) और तुम्हारी रचना में और जो कुछ उसने फैलाया है उसमें भी उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।

(5) और दिन और रात के क्रम में और उस वर्षा में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है जो सूखी धरती को जिला देती है और हवाओं के बदलने में - बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लें।

(6) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हारे समक्ष सत्यवत् बयान करते हैं। फिर वे अल्लाह और उसकी आयतों के पश्चात किस बात पर विश्वास करेंगे?

(7) हाय हर पापी झूठे पर!

(8) वह अल्लाह की आयतें सुनता है जो उसके सामने पढ़ी जाती हैं, फिर वह अपने अहंकार पर अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही न हो। उसके लिए दुखद यातना की घोषणा कर दो।

(9) और जब वह हमारी आयतों में से कुछ जान लेता है तो उसका उपहास करता है, और ऐसे ही लोगों के लिए अपमानजनक यातना है।

(10) उनके सामने जहन्नम है, जो कुछ उन्होंने इकट्ठा किया है, वह उनके कुछ काम न आएगा और न वे बुत, जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा अपना संरक्षक बना लिया है, उनके लिए कठोर यातना है।

(11) यह मार्गदर्शन है, जिन लोगों ने अपने रब की आयतों को झुठलाया, उनके लिए दुखद यातना है।

(12) अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि उसके आदेश से उसमें नावें चलें और ताकि तुम उसका अनुग्रह चाहो और सम्भव है कि तुम कृतज्ञ हो जाओ।

(13) और उसने तुम्हारे लिए जो कुछ आकाशों और धरती में है, सब कुछ उपलब्ध कराया है। सब कुछ उसी की ओर से है। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें।

(14) ईमान वालों से कह दो कि वे उन लोगों को क्षमा कर दें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते, ताकि वह प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का प्रतिफल दे।

(15) जो कोई भलाई करता है, तो वह अपने लाभ के लिए करता है और जो कोई बुराई करता है, तो वह अपने ही नुकसान के लिए करता है। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे।

(16) निश्चय ही हमने बनी इसराईल को किताब, तत्वदर्शिता और नबूवत प्रदान की और उन्हें अच्छी-अच्छी रोज़ी दी और उन्हें सभी लोगों में श्रेष्ठता प्रदान की।

(17) और हमने उन्हें आदेश की स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। उन्होंने तब ही मतभेद किया जब ज्ञान उनके पास आ गया, और वे आपस में ईर्ष्या के कारण मतभेद करने लगे। निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच क़ियामत के दिन उस बात का फ़ैसला कर देगा जिस पर वे मतभेद कर रहे थे।

(18) फिर हमने तुम्हें आज्ञाकारिता के स्पष्ट मार्ग पर रख दिया है। अतः तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो नहीं जानते।

(19) निश्चय ही वे तुम्हें अल्लाह से किसी बात में बचा नहीं सकेंगे। अत्याचारी एक दूसरे के मित्र हैं, किन्तु अल्लाह ही डर रखनेवालों का रक्षक है।

(20) यह लोगों के लिए स्पष्टीकरण है और मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।

(21) क्या वे लोग जो बुरे कर्म करते हैं, यह समझते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की तरह बना देंगे जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, जीवन और मृत्यु में बराबर। वे लोग गलत फ़ैसला करते हैं।

(22) अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है, ताकि प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों का प्रतिफल मिले और उनपर कोई अत्याचार न किया जाएगा।

(23) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा है जो अपनी इच्छाओं को अपना पूज्य बना लेता है? अल्लाह ने उसे जान-बूझकर गुमराह कर दिया है और उसके कानों और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँखों पर परदा डाल दिया है। अल्लाह के बाद उसे कौन मार्ग दिखाएगा? तो क्या तुम विचार नहीं करते?

(24) और वे कहते हैं, "धरती पर हमारा जीवन ही है। हम मरते हैं और जीते हैं, और हमें काल ही नष्ट करता है।" किन्तु वे इसका कुछ ज्ञान नहीं रखते, वे केवल अटकलें लगाते रहते हैं।

(25) और जब उनको हमारी खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे बस यही कहते हैं कि "यदि तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को हमारे पास लौटा लाओ।"

(26) कह दो, "अल्लाह तुम्हें जीवन देता है, फिर तुम्हें मृत्यु देता है, फिर क़ियामत के दिन तुम्हें इकट्ठा करेगा। इसमें कोई संदेह नहीं, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।"

(27) आकाशों और धरती की प्रभुता अल्लाह ही के लिए है और जिस दिन क़ियामत आएगी, उस दिन जो लोग मिथ्या मार्ग पर चले, वे सब खो बैठेंगे।

(28) और तुम प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल पर देखोगे, प्रत्येक समुदाय को उसकी किताब की ओर बुलाया जाएगा, "आज तुम्हें उसके कर्मों का बदला दिया जाएगा जो तुमने किये हैं।"

(29) "यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे विषय में सत्य प्रकट करती है। जो कुछ तुमने किया, उसे हमने लिख लिया है।"

(30) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनका रब उन्हें अपनी दयालुता में दाखिल कर देगा, यही स्पष्ट सफलता है।

(31) किन्तु जिन लोगों ने झुठलाया, उनसे कहा जाएगा कि क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई गईं? बल्कि तुम तो बड़े अहंकारी और अपराधी लोग थे।

(32) और जब कहा गया कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत के बारे में कोई संदेह नहीं तो तुम कहने लगे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है, बल्कि हम समझते हैं कि वह एक अनुमान है और हमें उसपर यक़ीन नहीं है।

(33) और जो बुराइयाँ उन्होंने की हैं, वे उनके सामने आ जाएँगी और वह चीज़, जिसका वे उपहास करते थे, उन्हें घेर लेगी।

(34) और कहा जाएगा, "आज हम तुम्हें भूल गए हैं, जिस प्रकार तुमने अपने इस दिन के मिलने को भूला है। और तुम्हारा ठिकाना आग है, और तुम्हारा कोई सहायक न होगा।"

(35) यह इसलिए कि तुमने अल्लाह की आयतों को उपहास बना लिया और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखा दे दिया। आज वे वहाँ से निकाले नहीं जाएँगे और न उनसे कोई बहाना स्वीकार किया जाएगा।

(36) सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, वह आकाशों का रब है, धरती का रब है, सारे संसार का रब है।

(37) आकाशों तथा धरती में महिमा उसी की है और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

# सूरा 46: ٱلْأَحْقَاف‎ (अल-अक़क़ाफ़) - द ड्यून्स

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हा, मीम.

(2) इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(3) हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, उसे सत्य और एक निश्चित अवधि के लिए ही पैदा किया है, किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, वे उससे मुँह मोड़ते हैं, जिससे उन्हें सावधान किया गया था।

(4) कह दो, "क्या तुमने सोचा है कि अल्लाह के सिवा तुम किसे पुकारते हो? मुझे दिखाओ कि उन्होंने धरती में क्या पैदा किया है? या आकाश में उनका कोई हिस्सा है? यदि तुम सच्चे हो तो मेरे पास कोई किताब ले आओ जो इससे पहले अवतरित हुई हो या कोई ज्ञान का अवशेष।

(5) उससे बढ़कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारे, फिर क़ियामत तक उसकी बात न मान सके और जो अपनी पुकार से अनजान हों?

(6) और जब लोग इकट्ठे होंगे तो वे उनके शत्रु हो जायेंगे और उनकी उपासना से इन्कार कर देंगे।

(7) और जब हमारी खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जो लोग इनकार करते हैं वे उस सत्य के विषय में जो उनके पास आ चुका है, कहते हैं कि "यह तो खुला जादू है।"

(8) या वे कहें कि उसने इसे घड़ लिया है। कह दो कि यदि मैंने इसे घड़ लिया तो तुम मुझे अल्लाह से किसी प्रकार बचा न सकोगे। जो कुछ तुम मेरे विषय में कहते हो, वह उससे भली-भाँति परिचित है। मेरे और तुम्हारे बीच वही साक्षी के लिए काफ़ी है। वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(9) कह दो, "मैं न तो पहला रसूल हूँ और न मुझे मालूम है कि मुझे या तुम्हें क्या होगा। मैं तो बस उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर अवतरित हुआ है। मैं तो बस स्पष्ट चेतावनी देनेवाला हूँ।"

(10) कह दो, "क्या तुमने सोचा कि वह अल्लाह की ओर से है और तुम उसे नकारते हो, जबकि इसराईल की सन्तान में से एक गवाह ने उसकी मिसाल पेश की और ईमान लाया, और तुम अहंकार कर रहे हो? निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।"

(11) और जिन लोगों ने इनकार किया, वे ईमान लानेवालों के विषय में कहते हैं कि यदि वह अच्छा होता तो वे उसमें हमसे पहले न आते। और चूँकि वे उससे मार्ग पर नहीं चलते, इसलिए कहते हैं कि यह तो बहुत पुराना झूठ है।

(12) और इससे पहले मूसा की किताब मार्गदर्शन और दया के रूप में आई थी। और यह अरबी भाषा में पुष्टि करने वाली किताब है, ताकि अत्याचारियों को डरा दे और शुभ सूचना अच्छे कर्म करने वालों के लिए।

(13) जो लोग कहते हैं कि "हमारा रब अल्लाह है," फिर वे धैर्य से काम लेते हैं, तो न उन्हें कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।

(14) वे जन्नत में जायेंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे, यह उनके कर्मों का प्रतिफल है।

(15) और हमने मनुष्य को आदेश दिया है कि वह अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करे। उसकी माँ ने उसे बहुत कष्ट से जन्म दिया और बहुत कष्ट से जन्म दिया। उसकी गर्भावस्था और दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने की रही। जब वह वयस्क हो गया और चालीस वर्ष का हो गया, तो उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मुझे अपनी उस कृपा का आभार प्रकट करने की प्रेरणा दे, जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की है और अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दे, जो तुझे प्रिय हों। मुझे एक अच्छी संतान प्रदान कर। निश्चय ही मैं तेरे आगे तौबा करता हूँ और मैं आज्ञाकारी लोगों में से हूँ।"

(16) यही वे लोग हैं जिनसे हम उनके अच्छे कर्म स्वीकार करेंगे और उनकी बुराइयों को अनदेखा कर देंगे। वे जन्नत वालों में से होंगे। उनसे सच्चा वादा किया जा चुका है।

(17) किन्तु वह व्यक्ति अपने माता-पिता से कहता है कि "हाय तुम पर! क्या तुम मुझसे वादा करते हो कि मैं फिर से जीवित किया जाऊँगा, जबकि मुझसे पहले भी कई नस्लें थीं?" वे अल्लाह से पुकारते हैं कि "हाय तुम पर! ईमान लाओ! अल्लाह का वादा सच्चा है।" किन्तु वह कहता है कि "ये तो बस पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।"

(18) यही वे लोग हैं जिनपर फ़ैसला आ गया जिन्नों और मनुष्यों की जमातों में से जो उनसे पहले गुज़र चुके। निस्संदेह वही घाटे में रहे।

(19) प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल मिलेगा, ताकि अल्लाह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दे और उन पर कोई अन्याय न हो।

(20) और जिस दिन इनकार करनेवाले लोग आग की ओर डाले जाएँगे, उस दिन कहा जाएगा कि तुमने सांसारिक जीवन में अपनी अच्छी-अच्छी चीज़ें खा लीं और उनका आनंद लिया। आज तुम्हें अपमान की यातना मिलेगी, क्योंकि तुम धरती में अकारण अहंकार करते रहे और इसलिए कि तुम अवज्ञाकारी रहे।

(21) याद करो आद के भाई को, जब उसने टीलों के पास अपनी क़ौम को सावधान किया, तो लोग उससे पहले भी सावधान करते रहे और उसके बाद भी सावधान करते रहे, और कहते रहे, "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम्हारे विषय में एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।"

(22) उन्होंने कहा, "क्या तुम हमें हमारे पूज्यों से दूर करने आए हो? यदि तुम सच्चे हो, तो जो कुछ तुम हमें डराते हो, वह हमारे सामने ले आओ।"

(23) उसने कहा, "ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है। मैं तुम्हें वही बता रहा हूँ, जिसके साथ मुझे भेजा गया है। किन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग अज्ञानी हो।"

(24) जब उन्होंने एक बादल को अपनी घाटियों की ओर आते देखा तो कहा, "यह वह बादल है जो हमारे लिए वर्षा लाएगा।" नहीं, यह वही है जिसकी तुमने माँग की थी: अर्थात् एक ऐसी वायु जो दुखद यातना लेकर आए।

(25) जो अपने रब के आदेश से हर चीज़ को विनष्ट कर देता है और सुबह को तो उनके घरों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता। हम इसी तरह दुष्टों को बदला देते हैं।

(26) हमने उनके लिए वह चीज़ स्थापित कर दी थी जो तुम्हारे लिए स्थापित नहीं की थी और हमने उन्हें कान, आँखें और दिल दिए थे, किन्तु उनके कान, आँखें और दिल उनके कुछ काम न आए, क्योंकि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और जिस चीज़ का वे उपहास करते थे, उसने उन्हें घेर लिया।

(27) और हमने तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को विनष्ट कर दिया और निशानियाँ दोहरा दीं, ताकि वे फिरें।

(28) जिन लोगों को उन्होंने अल्लाह के अलावा अन्य पूज्य बना रखा था, ताकि वे उसके समीप पहुँच सकें, उन्होंने उनकी सहायता क्यों नहीं की? वास्तव में उन्होंने उन्हें छोड़ दिया। यह उनका झूठ था और उन्होंने वही बात गढ़ी थी।

(29) और जब हमने तुम्हारे पास जिन्नों के एक गिरोह को भेजा जो क़ुरआन सुन रहे थे, तो जब वे तुम्हारे पास आए तो कहने लगे, "चुप हो जाओ।" जब वह समाप्त हो गया तो वे अपनी क़ौम के लोगों की ओर सचेत करनेवाले बनकर लौट आए।

(30) उन्होंने कहा, "ऐ हमारी क़ौम के लोगो! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के पश्चात अवतरित हुई, जो उससे पहले की किताबों की पुष्टि करती है और सत्य और सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

(31) ऐ हमारे लोगो! अल्लाह की पुकार को स्वीकार करो और उस पर ईमान लाओ। वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम्हें दुखद यातना से बचाएगा।

(32) और जो व्यक्ति अल्लाह की पुकार को स्वीकार न करे, उसके लिए धरती में बचने का कोई रास्ता नहीं और न अल्लाह के अतिरिक्त उसका कोई संरक्षक होगा। वे स्पष्ट रूप से गुमराही में हैं।

(33) क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और स्वयं थका नहीं, मुर्दों को भी जिलाने की सामर्थ्य रखता है? निस्संदेह वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(34) और जिस दिन इनकार करनेवाले लोग आग में डाले जाएँगे, उनसे कहा जाएगा कि क्या यह सत्य नहीं है? वे कहेंगे कि हाँ, हमारे रब की क़सम। वह कहेगा कि अच्छा, अब उस अज़ाब का मज़ा चखो, जो तुमने इनकार किया।

(35) अतः तुम भी धैर्य रखो, जैसा कि रसूलों ने किया और यह न मांगो कि उन पर यातना जल्दी आ जाए। जिस दिन वे वह देख लेंगे, जिससे उन्हें डराया गया था, तो उन्हें ऐसा लगेगा मानो वे दिन का केवल एक घंटा ही रहे हों। संदेश पहुँचा दिया गया है! जो विनष्ट होगा, वह न्याय के साथ विनष्ट होगा और जो जीवित रहेगा, वह न्याय के साथ जीवित रहेगा। अल्लाह अपने प्राणियों पर अत्याचार नहीं करता।

# सूरा 47: مُحَمَّد‎ (मुअम्मद) - मुहम्मद

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो लोग इनकार करते हैं और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, अल्लाह उनके कर्मों को अकारथ कर देगा।

(2) किन्तु जो लोग ईमान लाए, उन्होंने अच्छे कर्म किए और उस सत्य को स्वीकार कर लिया जो उनके रब की ओर से मुहम्मद पर अवतरित हुआ, अल्लाह उनके पापों को क्षमा कर देगा और उनकी स्थिति सुधार देगा।

(3) यह इसलिए कि काफ़िर झूठ का अनुसरण करते हैं, जबकि ईमान वाले अपने रब की ओर से सत्य का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार अल्लाह लोगों के सामने उनकी मिसालें पेश करता है।

(4) जब तुम युद्ध में इनकार करनेवालों से मिलो तो उनकी गर्दन पर वार करो और जब उन्हें पूरी तरह हरा दो तो उन्हें बाँध दो। फिर उन्हें उदारता से या फिर फिरौती के रूप में छोड़ दो, यहाँ तक कि युद्ध अपना बोझ उतार दे। ऐसा ही हो। यदि अल्लाह चाहता तो उनसे सीधे बदला ले लेता, किन्तु वह तो एक दूसरे के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है। जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए, वह उनके कर्मों को अकारथ नहीं करता।

(5) वह उनका मार्गदर्शन करेगा और उनकी स्थिति सुधारेगा,

(6) और वह उन्हें उस जन्नत में प्रवेश देगा, जिसे उसने उन्हें बता दिया है।

(7) ऐ ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह भी तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे कदमों को सुदृढ़ करेगा।

(8) रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके लिए यातना है, और वह उनके कर्मों को व्यर्थ कर देगा।

(9) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह की नाज़िल को नापसंद किया, अतः उसने उनके सारे काम व्यर्थ कर दिए।

(10) क्या उन्होंने धरती में फिरकर नहीं देखा कि उनसे पहले वालों का क्या परिणाम हुआ? अल्लाह ने उन्हें पूर्णतः विनष्ट कर दिया और ऐसा ही परिणाम इनकार करनेवालों का भी है।

(11) यह इसलिए कि अल्लाह ईमानवालों का रक्षक है, और इनकार करनेवालों का कोई रक्षक नहीं।

(12) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, अल्लाह उन्हें ऐसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और जो लोग इनकार करेंगे, वे कुछ समय तक सुख भोगेंगे और चौपायों की तरह खाएँगे, और उनका ठिकाना आग है।

(13) और हमने बहुत सी बस्तियों को विनष्ट कर दिया जो उस बस्ती से अधिक शक्तिशाली थीं जिसने तुम्हें निकाल दिया था, और उनका कोई सहायक न था।

(14) क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर भरोसा करता है, उस व्यक्ति के समान है जिसके बुरे कर्म बढ़े हुए हों और जो अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता हो?

(15) यह उस जन्नत का वर्णन है जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है। उसमें स्वच्छ जल की नहरें हैं, दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद कभी नहीं बदलेगा, शराब की नहरें हैं जो पीनेवालों को अच्छी लगेंगी और शुद्ध शहद की नहरें हैं। उनके लिए हर प्रकार के फल और उनके रब की ओर से क्षमा है। क्या वे उन लोगों के समान हैं जो सदैव आग में रहेंगे और उन्हें उबलता हुआ पानी दिया जाएगा जो उनके अन्तःकरण को चीर देगा?

(16) उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी बात सुनते हैं, फिर जब वे तुमसे मुँह फेर लेते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान दिया गया है, कहते हैं, "उसने अभी क्या कहा था?" यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं।

(17) किन्तु जो लोग मार्ग पर हैं, अल्लाह उनके मार्ग को और बढ़ा देता है और उन्हें डर-भय प्रदान करता है।

(18) क्या वे उस क़ियामत की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उनपर अचानक आ जाए? निशानियाँ तो प्रकट हो चुकी हैं, फिर जब वह आ जाएगी तो उन्हें क्या लाभ होगा यदि वे याद करें?

(19) अतः जान लो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। अपने गुनाहों की क्षमा याचना करो और ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों की भी क्षमा याचना करो। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को और तुम्हारे निवास-स्थान को जानता है।

(20) जो लोग ईमान लाए हैं, वे कहते हैं कि "कोई सूरा क्यों नहीं उतरी?" किन्तु जब कोई स्पष्ट सूरा उतरती है और उसमें युद्ध का उल्लेख होता है, तो तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है, वे तुम्हारी ओर मृत्युग्रस्त लोगों की आँखों से देख रहे हैं। यह उनके लिए अच्छा है।

(21) आज्ञाकारिता और उचित बातें, फिर जब कोई मामला तय हो जाए तो यदि वे अल्लाह के प्रति निष्ठावान होते तो उनके लिए अच्छा होता।

(22) यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो क्या तुम धरती पर फ़साद फैलाओगे और अपने रिश्तेदारों के रिश्ते तोड़ दोगे?

(23) वही लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है, उन्हें बहरा और उनकी आँखों को अंधा कर दिया है।

(24) क्या वे क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं?

(25) जो लोग इसके पश्चात कि मार्ग उनपर स्पष्ट हो चुका था, मुँह फेरकर चले गए, तो शैतान ही है जिसने उन्हें बहकाया और उन्हें झूठी आशाएँ दीं।

(26) यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से कहा जो अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ों से नाखुश हैं कि "हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे।" किन्तु अल्लाह उनके भेदों को जानता है।

(27) उनका क्या होगा जब फ़रिश्ते उन्हें पकड़ लेंगे और उनके चेहरों और पीठों पर मारेंगे?

(28) यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह को क्रोध दिलानेवाली चीज़ का अनुसरण किया और उससे घृणा की जो उसे प्रिय थी। अतः उसने उनके कर्म व्यर्थ कर दिये।

(29) क्या वे लोग जिनके दिलों में रोग है, यह मानते हैं कि अल्लाह उनपर क्रोध प्रकट नहीं करेगा?

(30) यदि हम चाहें तो उन्हें तुम्हारे सामने प्रकट कर दें, फिर तुम उन्हें उनकी निशानियों से पहचान लोगे, किन्तु तुम उन्हें उनकी बातों से भी पहचान लोगे। अल्लाह तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।

(31) हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे, यहाँ तक कि हम तुममें से जिहाद करनेवालों और धैर्य रखनेवालों को पहचान लें। और हम तुम्हारी नियतियों की परीक्षा लेंगे।

(32) जो लोग इनकार करते हैं और अल्लाह के मार्ग से भटकाते हैं और रसूल का विरोध करते हैं, इसके पश्चात कि उनपर मार्गदर्शन स्पष्ट हो चुका है, वे अल्लाह को कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकते और वह उनके कर्मों को व्यर्थ कर देगा।

(33) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो और अपने कर्मों को व्यर्थ न करो।

(34) जो लोग इनकार करते हैं और अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं फिर इनकार ही करते हुए मर जाते हैं अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा।

(35) अतः तुम निर्बल न बनो और न शांति की प्रार्थना करो, जबकि तुम ही श्रेष्ठ हो। अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे कर्मों का प्रतिफल कम नहीं करेगा।

(36) सांसारिक जीवन तो बस खेल और तमाशा है। यदि तुम ईमान लाओगे और अल्लाह से डरते रहोगे तो वह तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल देगा और तुमसे तुम्हारा माल नहीं मांगेगा।

(37) यदि वह तुमसे उन्हें मांगने पर अड़ा रहे और तुम्हें कठिनाई में डाले, तो तुम अपने आपको कंजूस सिद्ध करोगे और अपना क्रोध प्रकट करोगे।

(38) देखो, तुम्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने के लिए बुलाया गया है, किन्तु तुममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कंजूसी करते हैं। और जो कंजूसी करता है, वह अपने ही लिए नुक़सान करता है। अल्लाह धनवान है और तुम निर्धन हो। यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को ले आएगा, जो तुम्हारे जैसे नहीं होंगे।

# सूरा 48: ٱلْفَتْح‎ (अल-फ़तह) - विजय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) हमने तुम्हें स्पष्ट विजय प्रदान कर दी।

(2) ताकि अल्लाह तुम्हारे पिछले और आने वाले पापों को क्षमा कर दे और तुमपर अपनी अनुकंपा पूरी कर दे और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए।

(3) और ताकि अल्लाह तुम्हें बड़ी सफलता प्रदान करे।

(4) वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में शान्ति उतारी, ताकि वे ईमान में और अधिक बढ़ें। आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(5) ताकि ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे और उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे, यह अल्लाह के निकट बड़ी सफलता है।

(6) और ताकि वह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुश्रिकों और मुश्रिकों को सज़ा दे, जो अल्लाह को बुरा समझते हैं। उन पर मुसीबत आ पड़ेगी और अल्लाह उनसे नाराज़ होगा और उनपर लानत करेगा और उनके लिए जहन्नम तैयार कर देगा। यह कैसी बुरी जगह है!

(7) अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती की सेनाएँ और अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(8) हमने तुम्हें साक्षी, शुभ सूचना देनेवाला, सचेत करनेवाला बनाकर भेजा है।

(9) ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी सहायता करो और उसका आदर करो और सुबह-शाम उसकी स्तुति करते रहो।

(10) जो लोग तुमसे बैअत करते हैं, वे अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है। जो कोई अपना वचन तोड़ता है, वह अपने लिए ही हानि करता है। किन्तु जो कोई अल्लाह से अपना वचन पूरा करेगा, उसका प्रतिफल बहुत अधिक होगा।

(11) जो बद्दू पीछे रह गए वे कहेंगे, "उन्होंने हमसे हमारे माल और हमारे घरवाले छीन लिए। हमारे लिए क्षमा मांगो।" वे अपनी ज़बानों से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं। कह दो, "अल्लाह के पास तुम्हारे लिए कौन सिफ़ारिश कर सकता है, यदि वह तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहे या लाभ पहुँचाना। निस्संदेह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।"

(12) किन्तु तुमने यह समझ लिया कि रसूल और ईमान वाले अपने घरवालों की ओर कभी नहीं लौटेंगे, और यह बात तुम्हारे दिलों में अच्छी लगी, अतः तुमने बुरे विचार रखे और तुम भटके हुए लोग हो।

(13) जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का इनकार करेगा तो जान लो कि हमने इनकार करनेवालों के लिए भड़कती हुई ज्वाला तैयार कर रखी है।

(14) अल्लाह ही के लिए है आकाशों और धरती की बादशाही। वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है दण्ड देता है। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(15) जब तुम लूट का माल लेने निकलोगे तो जो लोग पीछे रह गए हैं वे कहेंगे, "हमें अपने पीछे आने दो।" वे अल्लाह के वचन को बदलना चाहते हैं। कह दो, "तुम हमारे पीछे कदापि न आओगे। अल्लाह ने पहले ही ऐसा कह दिया है।" वे कहेंगे, "तुम तो हमसे ईर्ष्या करते हो।" किन्तु वे बहुत कम समझते हैं।

(16) जो बद्दू पीछे रह गए हैं उनसे कह दो कि "तुम्हें एक बड़ी शक्तिशाली जाति के विरुद्ध बुलाया जाएगा। तुम उनसे तब तक लड़ते रहोगे जब तक वे झुक न जाएं। यदि तुमने आज्ञा का पालन किया तो अल्लाह तुम्हें अच्छा प्रतिफल देगा। किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ोगे, जैसा कि तुमने पहले किया था, तो वह तुम्हें दुखद यातना देगा।"

(17) न अंधे पर कोई गुनाह है, न लंगड़े पर, न बीमार पर। जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर जो मुँह मोड़ेगा, उसे वह दुखद अज़ाब देगा।

(18) अल्लाह ईमानवालों से प्रसन्न हुआ, जब उन्होंने वृक्ष के नीचे तुम्हारी बैअत की। उसने उनके दिलों में जो कुछ था, उसे जान लिया। अतः उसने उनपर शान्ति उतारी और उन्हें शीघ्र ही विजय प्रदान की।

(19) और बहुत-सा माल लूटकर ले आए, जो वे चाहते थे। अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(20) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी लूट का वादा किया है, जिसे तुम पाओगे। उसने तुम्हें यह विजय पहले ही प्रदान कर दी है और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए हैं, ताकि वह ईमान वालों के लिए एक निशानी हो और तुम्हें सीधे मार्ग पर ले चले।

(21) और उसने तुमसे और भी बहुत सी सफलताओं का वादा किया है, जो अभी तक तुम्हें प्राप्त नहीं हुई हैं, किन्तु अल्लाह ने उन्हें स्वीकार कर लिया है। अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

(22) यदि इनकार करनेवाले तुमसे युद्ध करते तो अवश्य ही मुँह फेर लेते और न उन्हें कोई संरक्षक मिलता और न सहायक।

(23) यह अल्लाह का नियम है, जो पहले हो चुका है, और तुम अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे।

(24) वही है जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक लिया, इसके पश्चात कि उसने तुम्हें उनपर विजय प्रदान कर दी। और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(25) ये वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया और तुम्हें मस्जिदे हराम तक पहुँचने से रोका और क़ुरबानी को उनके निर्धारित स्थान से रोक दिया। और यदि ऐसे ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ न होतीं जिन्हें तुम नहीं जानते, तो तुम उनपर अत्याचार करते और अनजाने में अपराध के भागी बनते... (अल्लाह ने तुम्हें रोक दिया है) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में दाखिल कर ले। यदि वे पहचाने जाते तो हम उनमें से इनकार करनेवालों को अवश्य दुखद यातना देते।

(26) जब इनकार करनेवालों ने अपने दिलों में अहंकार और अज्ञानता का अहंकार भर लिया, तो अल्लाह ने अपने रसूल और ईमानवालों पर शांति उतारी और उन्हें परहेज़गार की बात पर स्थिर किया, जिसके वे अधिक हक़दार थे और जो उनके लिए अधिक योग्य थी। और अल्लाह हर चीज़ को जाननेवाला है।

(27) निस्संदेह अल्लाह ने अपने रसूल के स्वप्न को सत्य रूप में प्रमाणित किया है कि यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम मस्जिदे हराम में सुरक्षित प्रवेश करोगे, अपने सिर मुंडाकर या छोटे करवाकर, और बिना किसी भय के। वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे, और उसने उस पर भी विजय निश्चित कर दी है।

(28) वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि वह प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व रखे, और अल्लाह ही साक्षी के लिए पर्याप्त है।

(29) मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। उनके साथ जो लोग हैं, वे काफ़िरों के साथ सख्ती से पेश आते हैं और एक-दूसरे के साथ दयालू हैं। तुम उन्हें रुकूआ और सजदा करते हुए देखते हो, अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता की तलाश में। उनके चेहरों पर उनके सजदों के निशान हैं। तौरात में उनकी यही मिसाल है और इंजील में उनकी मिसाल उस पौधे की तरह है जो अपनी शाखा को उगाता है, फिर उसे मजबूत करता है, यहाँ तक कि वह मजबूत हो जाता है और अपने तने पर सीधा खड़ा हो जाता है। बोने वालों को आश्चर्य में डाल देता है, यहाँ तक कि काफ़िर उनसे नाराज़ हो जाते हैं। अल्लाह ने उन लोगों से क्षमा और बड़े प्रतिफल का वादा किया है जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए।

# सूरा 49: ٱلْحُجَرَات‎ (अल-हुजुरात) - श्लोक

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

(2) ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे ऊँची आवाज़ में बात करो जैसा कि तुम आपस में करते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे सारे कर्म तुम्हारे समझे बिना ही व्यर्थ हो जाएँ।

(3) जो लोग अल्लाह के रसूल के यहाँ धीमी आवाज़ में बोलते हैं, वे वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वा के साथ परखा है। उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

(4) जो लोग तुम्हें अन्तरिक्ष से पुकारते हैं, उनमें अधिकतर लोग समझ नहीं रखते।

(5) यदि वे धैर्य रखते यहाँ तक कि तुम उनके पास निकल आते तो उनके लिए अच्छा होता। किन्तु अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(6) ऐ ईमान वालो! यदि कोई दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे पास कोई सूचना लाए तो उसकी भली-भाँति जाँच कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अज्ञानतावश किसी समुदाय को कष्ट पहुँचा दो, फिर अपने किए पर पछताओ।

(7) और जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह के रसूल भी हैं। यदि वे बहुत-से मामलों में तुम्हारी बात मान लें तो तुम अवश्य ही संकट में पड़ जाओगे। किन्तु अल्लाह ने तुम्हें ईमान से प्रेम करने वाला बनाया और उसे तुम्हारे दिलों में सुन्दर बनाया और कुफ़्र, बुराई और अवज्ञा से तुम्हें घृणा करने वाला बनाया। वे ही मार्ग पर चलने वाले हैं।

(8) अल्लाह के अनुग्रह और उसकी कृपा से। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(9) और यदि ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो उनमें सुलह करा दो। और यदि उनमें से एक दूसरे पर ज़ुल्म करे तो ज़ुल्म करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर लौट आए। और यदि वह लौट आए तो उन दोनों में सुलह करा दो और इंसाफ़ करो। निस्संदेह अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है।

(10) ईमान वाले तो भाई-भाई ही हैं। अतः अपने भाइयों में मेल-मिलाप करा दो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुमपर दया की जाए।

(11) ऐ ईमान वालो! तुममें से कुछ लोग तुम्हारा उपहास न करें। शायद वे लोग जिनका उपहास किया जाता है, वे उपहास करने वालों से बेहतर हैं। औरतें औरतों के साथ ऐसा न करें। शायद वे लोग जिनका उपहास किया जाता है, वे उपहास करने वालों से बेहतर हैं। और एक दूसरे की निन्दा न करो और न एक दूसरे को बुरा-भला कहो। ईमान के बाद एक नाम कितना बुरा है! और जो लोग तौबा न करें, वही ज़ालिम हैं।

(12) ऐ ईमान वालो! बहुत ज़्यादा अनुमान न करो, क्योंकि कुछ अनुमानों में पाप है। और एक दूसरे पर जासूसी न करो और न एक दूसरे पर बड़बड़ाओ। क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाएगा? नहीं, तुम उससे घृणा करोगे। अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

(13) ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें जातियों और जातियों में विभाजित किया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। निश्चय ही तुममें सबसे अधिक श्रेष्ठ वह है जो अल्लाह से सबसे अधिक डरता है। निश्चय ही अल्लाह सर्वज्ञ, ख़बर रखने वाला है।

(14) बद्दू कहते हैं, "हम ईमान लाए हैं।" कह दो, "तुम अभी ईमान नहीं लाए, बल्कि कह दो कि हमने आज्ञा मान ली है, क्योंकि अभी तुम्हारे दिलों में ईमान नहीं आया। यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ कम नहीं करेगा। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।"

(15) वही लोग ईमानवाले हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर कोई संदेह नहीं किया और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया। वही सच्चे हैं।

(16) कह दो, "क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म सिखाते हो, जबकि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है? और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।"

(17) वे इस बात को तुम्हारे ऊपर एहसान समझते हैं कि उन्होंने आज्ञाकारी होकर समर्पण किया। कह दो, "अपने समर्पण को मुझ पर एहसान न समझो। बल्कि अल्लाह ही है जिसने तुमपर एहसान किया है कि वह तुम्हें ईमान की ओर ले आया, यदि तुम सच्चे हो।"

(18) निश्चय ही अल्लाह आकाशों तथा धरती की छिपी हुई बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति देख रहा है।

# सूरा 50: **ق‎ (क़ाफ़)** – क़ाफ़

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क़ाफ़ - पवित्र क़ुरआन की क़सम!

(2) निश्चय ही वे इस बात पर आश्चर्य करते हैं कि उनके पास उन्हीं की ओर से एक सचेत करनेवाला आया। और जिन लोगों ने इनकार किया, वे कहते हैं, "यह तो बड़ी बड़ी बात है।"

(3) "जब हम मर जाएंगे और धूल में मिल जाएंगे... तो वापस आना तो दूर की बात है!"

(4) हम भली-भाँति जानते हैं कि धरती उनमें से क्या-क्या खाती है और हमारे पास एक ऐसा अभिलेख है जो सबको सुरक्षित रखता है।

(5) बल्कि जब सत्य उनके पास आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया और वे असमंजस में पड़े हुए हैं।

(6) क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया, बिना किसी दरार के?

(7) और धरती को भी हमने फैलाया और उसपर स्थिर पहाड़ बना दिए और उसमें हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उगाई।

(8) यह हर उस बन्दे के लिए चेतावनी और चिंतन है जो [परमेश्वर की ओर] मुड़ता है।

(9) और हम आकाश से पवित्र जल उतारते हैं, जिससे हम बाग़ उगाते हैं और फ़सल के लिए अनाज पैदा करते हैं।

(10) और ओवरलैपिंग तिथियों वाले ऊंचे ताड़ के पेड़,

(11) बन्दों के लिए रोज़ी है और उसी से हम मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं। इसी तरह क़ियामत होगी।

(12) उनसे पहले नूह की क़ौम और रस्स के साथियों और समूद ने झुठलाया,

(13) तथा आद, फिरौन और लूत के भाई,

(14) और अय्यका के साथियों और तुब्बा वालों को भी, इन सबने रसूलों को झुठलाया, और इस प्रकार मेरी धमकी पूरी हो गई।

(15) क्या हम पहली सृष्टि से थक चुके हैं? वास्तव में, वे नई सृष्टि के विषय में संदेह में हैं।

(16) हमने ही मनुष्य को पैदा किया है और हम जानते हैं जो कुछ उसका जी उससे कहता है और हम उससे उसकी गरदन से भी अधिक निकट हैं।

(17) जब दो फ़रिश्ते जो दाएँ और बाएँ बैठे हुए रिकॉर्ड करते हैं,

(18) वह तब तक एक शब्द भी नहीं बोलता जब तक उसके बगल में कोई पर्यवेक्षक [लिखने के लिए] तैयार न हो।

(19) और मृत्यु की पीड़ा सच में आती है: "यही वह है जिससे तुम बचने की कोशिश कर रहे थे।"

(20) और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा। यह खतरे का दिन है।

(21) प्रत्येक आत्मा के साथ एक चालक और एक गवाह होगा।

(22) "निश्चय ही तुम इससे विचलित हो गए थे। हमने तुम्हारा पर्दा तुमसे हटा दिया है। आज तुम्हारी दृष्टि तेज़ हो गई है।"

(23) और उसका साथी कहेगा, 'यही वह चीज़ है जिसे मैंने [हिसाब के लिए] तैयार किया है।'

(24) [ईश्वर कहेगा:] "हर हठीले कृतघ्न व्यक्ति को नरक में डाल दो,

(25) जो भलाई को रोकता है, अपराध करता है और संदेह करता है,

(26) जिसने ईश्वर के अलावा किसी और को ईश्वर बनाया है। उसे कड़ी सज़ा में डालो।

(27) उसका साथी कहेगा, "ऐ हमारे रब! मैंने उसे अवज्ञाकारी नहीं बनाया, बल्कि वह तो बड़ी गुमराही में पड़ा हुआ था।"

(28) "मेरे सामने झगड़ा न करो, मैंने तो तुम्हें पहले ही चेतावनी दे दी है।"

(29) मेरा वचन नहीं बदलता, और मैं सेवकों के प्रति अन्याय नहीं करता।”

(30) जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, "क्या तू भर गई?" तो वह कहेगी, "क्या इससे अधिक कुछ है?"

(31) और जन्नत डर रखनेवालों के लिए निकट कर दी जायेगी, दूर नहीं।

(32) "यही वह बात है जिसका वादा तुमसे किया गया था, उन लोगों से जो फिर से लौट आए और सावधान रहे,

(33) जो गुप्त रूप से अत्यंत कृपालु का भय मानते थे और भक्तिमय हृदय से आते थे।

(34) "इसमें शांति से प्रवेश करो। यह अनंत काल का दिन है।"

(35) वहाँ उन्हें जो कुछ चाहिए वह मिलेगा और हमारे पास इससे भी अधिक है।

(36) हमने उनसे पहले कितनी ही पीढ़ियों को नष्ट कर दिया है, जो उनसे अधिक शक्तिशाली थीं, जो धरती पर घूमती थीं! क्या बचने का कोई रास्ता है?

(37) निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए बड़ी शिक्षा है जो हृदय रखता हो या ध्यानपूर्वक सुनता हो।

(38) हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, सबको छः दिन में पैदा किया। और हममें कोई थकावट नहीं।

(39) अतः जो कुछ वे कहते हैं, उस पर धैर्य से काम लो और अपने रब की स्तुति करते रहो, सूर्योदय से पहले तथा सूर्यास्त से पहले।

(40) और रात में उसकी तसबीह करो और सजदों के अन्त में भी।

(41) और उस दिन की ओर ध्यान दो, जब पुकारनेवाला निकट से पुकारेगा।

(42) जिस दिन वे सचमुच पुकार सुनेंगे, वही क़ियामत का दिन है।

(43) निश्चय ही हम ही जीवन देने वाले तथा मृत्यु देने वाले हैं और हमारी ही ओर लौटना है।

(44) जिस दिन धरती फट जायेगी और वे शीघ्र ही निकल आयेंगे, वही हमारे लिए सरल सभा है।

(45) हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वे कहते हैं। तुम उनपर कोई दबाव नहीं डाल सकते। अतः तुम उन लोगों को क़ुरआन से डरा दो जो मेरी धमकी से डरते हैं।

# सूरा 51: ٱلذَّارِيَات‎ (अध-धारियत) - प्रशंसक

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) उन हवाओं के लिए जो [धूल] को बिखेरती हैं,

(2) और जो लोग [वर्षा का] बोझ उठाते हैं,

(3) और जो हल्के से [समुद्र पर] सरकते हैं,

(4) और जो लोग ऑर्डर वितरित करते हैं,

(5) निश्चय ही जो वचन तुमसे दिया गया है, वह सत्य है।

(6) और यह सच है कि न्याय होगा।

(7) आकाश और उसके पथों के लिए,

(८) सच तो यह है कि आप मतभेद में हैं।

(९) जो विमुख होना चाहता है, वह विमुख हो जाता है।

(10) शापित हो झूठ बोलने वालों पर,

(११) हे अज्ञान में भटकने वालों!

(12) वे पूछते हैं, "क़यामत का दिन कब होगा?"

(13) जिस दिन वे आग में जलाये जायेंगे,

(14) "अपनी यातना का स्वाद चखो! यही वह है जिसे तुमने जल्दी करने के लिए कहा था!".

(15) निश्चय ही डर रखनेवाले लोग बाग़ों और स्रोतों में होंगे।

(16) उन्हें वह सब कुछ मिला जो उनके रब ने उन्हें दिया। इससे पहले वे ­अच्छे कर्म करनेवाले थे।

(17) वे रात को कम सोते थे,

(18) और भोर होते ही उन्होंने क्षमा याचना की,

(19) और उनके धन में निर्धन और दरिद्र को भी अधिकार था।

(20) धरती में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास से काम लें।

(21) और अपने आप में भी। तो क्या तुम विचार नहीं करते?

(22) और आकाश में तुम्हारी रोज़ी है और वह भी जिसका तुमसे वादा किया गया था।

(23) आकाश और धरती के रब की क़सम! यह बिलकुल सच है, जैसा तुम कहते हो।

(24) क्या अब्राहम के सम्मानित अतिथियों की कहानी आप तक पहुँची है?

(25) जब उन्होंने उसके पास आकर कहा, “शान्ति हो!” तो उसने उत्तर दिया, “अज्ञात लोगो, शान्ति हो!”

(26) फिर वह चुपचाप अपने परिवार के पास चला गया और एक मोटा बछड़ा तैयार किया।

(27) उसने उनकी सेवा की और कहा, "क्या तुम नहीं खाते?"

(28) तब वह उनसे डर गया। उन्होंने कहा, “डरो मत!” और उन्होंने उसे एक बुद्धिमान बेटे का शुभ समाचार दिया।

(29) उसकी पत्नी रोती हुई उसके पास आई और मुंह पर थप्पड़ मारते हुए बोली, "मैं एक बांझ बुढ़िया हूँ!"

(30) उन्होंने कहा, "तुम्हारे रब ने ऐसा ही आदेश दिया है। निस्संदेह, वही अत्यन्त तत्वदर्शी, सर्वज्ञ है।"

(31) उसने कहा, "तो फिर ऐ रसूलों! तुम्हारा काम क्या है?"

(32) उन्होंने कहा, "हम एक अपराधी जाति की ओर भेजे गए हैं।

(33) उन पर कठोर मिट्टी के पत्थर फेंकना,

(34) वे तुम्हारे रब के पास अतिक्रमणकारियों के लिए चिन्हित हैं।

(35) किन्तु हमने उनमें से उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए।

(36) हमने वहाँ केवल आज्ञाकारियों का घर पाया।

(37) हमने तुम्हारे लिए एक निशानी छोड़ी है, उन लोगों के लिए जो दुखद यातना से डरते हों।

(38) और मूसा में भी निशानी है, जबकि हमने उसे फ़िरऔन के पास स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा।

(39) किन्तु उसने अपने समर्थकों के साथ पलटकर कहा, "वह कोई जादूगर या भूतग्रस्त व्यक्ति है!"

(40) अतः हमने उसे पकड़ लिया और उसे और उसकी सेना को समुद्रों में फेंक दिया, क्योंकि वह अपराधी था।

(41) और आद में भी एक निशानी है, जब हमने उनपर विनाशकारी आँधी भेजी,

(४२) जिस पर भी गिरता, उसे धूल में मिला देता।

(43) और समूद में भी एक निशानी है, जबकि उनसे कहा गया कि "थोड़ी देर और आनन्द मनाओ।"

(44) किन्तु उन्होंने अपने रब के आदेश का उल्लंघन किया। तो बिजली उनपर गिरी, जबकि वे देखते ही रह गये।

(45) वे न तो उठ सके, न ही उनकी कोई मदद हो सकी।

(46) और उनसे पहले नूह की क़ौम के साथ भी ऐसा ही हुआ था, क्योंकि वे अत्याचारी लोग थे।

(47) हमने आकाश को शक्ति से बनाया है और हम उसे फैलाते भी जा रहे हैं।

(48) और हमने धरती को फैलाया, और हम उसके फैलाने में कितने अच्छे हैं!

(49) और हमने प्रत्येक वस्तु के जोड़े बनाए, ताकि तुम सोच-विचार करो।

(50) अतः अल्लाह की ओर भागो। मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।

(51) और अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पूज्य न बनाओ। मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।

(52) फिर जब कोई रसूल उनके पास आया तो उन्होंने कहा कि वह कोई जादूगर है या कोई भूतग्रस्त व्यक्ति है।

(53) क्या उन्होंने एक दूसरे को यही सलाह दी? नहीं, वे तो अवज्ञाकारी लोग हैं।

(54) अतः तुम उनसे दूर रहो, तुमपर कोई दोष नहीं लगाया जायेगा।

(55) और सावधान करो, निश्चय ही सावधान करना ईमान वालों को लाभ पहुँचाता है।

(56) और मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी बन्दगी करें।

(57) मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खाना खिलाएँ।

(58) निस्संदेह अल्लाह ही पालनहार, प्रभुत्वशाली, अचल है।

(59) जिन लोगों ने अत्याचार किया, उनके लिए भी उनके साथियों के समान ही दण्ड है। अतः उन्हें शीघ्रता न मांगनी चाहिए।

(60) विनाश है उन इनकार करनेवालों के लिए उस दिन के कारण, जिसका उनसे वादा किया गया था।

# सूरा 52: **ٱلطُّور (अṭ-Ṭūr)** - द माउंट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) पहाड़ के लिए!

(2) और एक लिखित पुस्तक के लिए

(3) एक फ्लैट रोल पर!

(4) और प्रेतवाधित घर के लिए!

(5) और ऊंची छत के लिए!

(6) और पूरे सागर के लिए!

(7) निश्चय ही तुम्हारे रब की यातना अवश्य आएगी।

(८) इसे कोई नहीं रोक सकेगा।

(9) जिस दिन आकाश ज़ोर से हिलेगा,

(10) और पहाड़ हिल जायेंगे.

(11) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने इनकार किया।

(12) जो व्यर्थ की बातों में आनन्द लेते हैं।

(13) जिस दिन वे ज़बरदस्ती जहन्नम की आग में धकेल दिए जाएँगे।

(14) "यह वही आग है जिससे तुम इन्कार करते रहे।

(15) क्या यह शायद जादू है, या आप नहीं देखते?

(16) अपने आप को वहाँ जला लो! चाहे तुम धैर्यवान हो या नहीं, तुम्हारे लिए यह एक जैसा ही होगा; तुम्हें केवल वही मिलेगा जिसके तुम हकदार हो।"

(17) निश्चय ही डर रखनेवाले लोग स्वर्गों और शुभ परिस्थितियों में होंगे।

(18) जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया है, उसपर प्रसन्न होंगे और उनका रब उन्हें जहन्नम की यातना से बचा लेगा।

(19) उनसे कहा जाएगा, "खाओ और पियो, अपने किए पर।"

(20) उन्हें पंक्तिबद्ध बिस्तरों पर लेटाकर, हम उन्हें सुन्दर और पवित्र आँखों वाले साथियों से मिला देंगे।

(21) और जो लोग ईमान लाए और उनकी संतान जिन्होंने ईमान लाकर उनका अनुसरण किया, हम उनकी संतान को भी उनके साथ शामिल कर लेंगे और उनके कर्मों में किसी प्रकार की कमी नहीं करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का उत्तरदायी है।

(22) और हम उन्हें फल और मांस प्रदान करेंगे जैसा वे चाहेंगे।

(23) वहाँ वे एक प्याला पिलाएँगे, जिसमें न तो व्यर्थ की बातें होंगी और न पाप।

(24) और वे जवान होकर उनकी सेवा छिपे हुए मोतियों की तरह करेंगे।

(25) वे एक दूसरे की ओर मुँह करके पूछेंगे,

(26) उन्होंने कहा, "हम तो अपने लोगों में डरपोक थे।

(27) किन्तु अल्लाह ने हमपर अनुग्रह किया और हमें कड़कती हुई वायु की यातना से बचा लिया।

(28) और हम उससे पहले भी उसे पुकारते थे, निस्संदेह वह अत्यन्त दयावान है।

(29) अतः तुम सावधान हो जाओ, अपने रब की कृपा से तुम न भविष्यवक्ता हो और न मूर्ख।

(30) या वे कहते हैं, "वह कवि है, हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए कि समय उसे नष्ट कर दे।"

(31) कह दो, "प्रतीक्षा करो। मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करनेवालों में से हूँ।"

(32) क्या उनका मन उन्हें यही आदेश देता है या वे कोई अवज्ञाकारी लोग हैं?

(33) या वे कहते हैं कि "उसने इसे स्वयं ही गढ़ लिया है।" बल्कि वे ईमान नहीं लाते।

(34) अतः यदि वे सच्चे हों तो उन्हें चाहिए कि वे इसी जैसी कोई बात लेकर आएँ।

(35) क्या वे शून्य से उत्पन्न हुए या वे ही रचयिता हैं?

(36) क्या उन्होंने आकाशों और धरती को पैदा किया? कदापि नहीं, वे निश्चय ही नहीं रखते।

(37) क्या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने उन्हीं के पास हैं या वे शासक हैं?

(38) क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर बैठकर वे [ईश्वरीय आदेश] सुनें? तो जो कोई सुनना चाहे, वह स्पष्ट प्रमाण लेकर आए।

(39) क्या उसके लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे होंगे?

(40) क्या तुम उनसे कोई शुल्क माँगते हो ताकि उनपर भारी कर्ज लाद दो?

(४१) क्या उनकी अदृश्य तक पहुँच है और क्या वे लिख रहे हैं?

(42) क्या वे धोखे की योजना बना रहे हैं? निश्चय ही इनकार करने वाले धोखे में पड़ेंगे।

(43) क्या अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई और पूज्य-प्रभु है? पवित्र है अल्लाह, उस साझी से जो वे उसे मानते हैं।

(44) यदि वे आकाश का कोई भाग गिरता हुआ देखते तो कहते, "यह तो इकट्ठा हुआ बादल है।"

(45) अतः छोड़ दो उन्हें, यहाँ तक कि वे अपने दिन तक आ पहुँचें, जिसमें वे अवश्य मारे जायेंगे।

(46) जिस दिन उनका छल-कपट उनके कुछ काम न आएगा और न वे सहायता प्राप्त करेंगे।

(47) निश्चय ही अत्याचारियों के लिए इससे भी अधिक यातना है, किन्तु उनमें से अधिक्तर लोग उसे जानते नहीं।

(48) अपने पालनहार के आदेश पर धैर्य से काम लो, तुम हमारी आँखों के सामने हो और जब उठो तो अपने पालनहार की तसबीह बयान करो।

(49) और रात में उसकी स्तुति करो और तारे डूबते समय भी।

# सूरा 53: ٱلنَّجْم‎ (अन-नज्म) - द स्टार

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) जब तारा डूबेगा तब!

(2) तेरा साथी न तो भटका है, न धोखा खाया है,

(3) और बिना सोचे-समझे बात नहीं करता.

(4) यह और कुछ नहीं, बल्कि एक रहस्योद्घाटन है जो उसमें प्रेरित हुआ,

(5) एक शक्तिशाली ने उसे यह सिखाया,

(6) शक्ति से संपन्न; स्थापित,

(7) जब वह सबसे ऊंचे क्षितिज पर था.

(८) तब वह निकट आकर नीचे उतरा।

(९) जब तक वह दो धनुष दूर या उससे भी करीब न हो जाए।

(10) इस प्रकार उसने अपने सेवक पर वह प्रकाशना की जो उसने अवतरित की थी।

(११) हृदय ने जो देखा उसके विषय में झूठ नहीं बोला।

(12) तो क्या तुम उससे उस बात पर बहस करना चाहते हो जो उसने देखी?

(13) और उसने निश्चय ही उसे फिर देखा,

(14) चरम सीमा के कमल पर,

(15) जिसके निकट निवास का बाग़ है।

(16) जब कमल को ढकने वाली चीज़ ने ढक लिया,

(17) नज़र भटकी नहीं और न ही सीमा से आगे गई.

(18) निश्चय ही उसने अपने रब की ओर से बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।

(19) क्या तुमने अल-लात और अल-उज़्ज़ा पर विचार किया है?

(20) और मनात, तीसरा, दूसरा?

(21) क्या तुम्हारे पास पुरुष हैं और उसके पास स्त्रियाँ हैं?

(22) अब यह एक अनुचित विभाजन है!

(23) ये तो बस नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं और अल्लाह ने इनपर कोई प्रमाण नहीं दिया। वे तो बस अटकलबाज़ी और अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं, हालाँकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।

(२४) क्या मनुष्य को वह मिलेगा जो वह चाहता है?

(25) आख़िरत और वर्तमान जीवन अल्लाह ही के लिए है।

(26) और आकाश में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती, परन्तु इसके पश्चात कि अल्लाह उसे जिसे चाहे और जिससे चाहे अनुमति दे दे।

(27) जिन लोगों ने आख़िरत का इनकार किया, वे फ़रिश्तों को स्त्रियाँ नाम देते हैं।

(28) हालाँकि उन्हें उसका कुछ भी ज्ञान नहीं है, वे तो बस अटकलों पर चलते हैं, और सत्य के मुक़ाबले में अटकलें कुछ काम नहीं आतीं।

(29) अतः तुम उन लोगों से मुँह फेर लो जो हमारी शिक्षा से मुँह मोड़ते हैं और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते।

(30) यह उनके ज्ञान की पराकाष्ठा है। तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह भली-भाँति जानता है जो सीधा मार्ग पर है।

(31) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि वह बुरे कर्म करनेवालों को उनके कर्मों का बदला दे और जो अच्छा कर्म करते हैं उन्हें उत्तम बदला दे।

(32) जो लोग बड़े गुनाहों और अश्लीलता से बचते हैं, सिवाय छोटे गुनाहों के। निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील है। वह तुम्हें भली-भाँति जानता है, जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया और जब तुम अपनी माताओं के पेट में भ्रूण थे। अतः तुम अपनी पवित्रता की प्रशंसा न करो। वह अच्छे लोगों को जानता है।

(33) तूने उसको देखा है जो पीछे मुड़ा,

(34) और थोड़ा दिया और फिर वापस रख लिया?

(35) क्या वह ग़ैब का ज्ञान रखता है कि देख सके?

(36) या उसे मूसा के दस्तावेज़ों की जानकारी नहीं थी।

(37) और अब्राहम के विषय में, जिसने अपना वचन निभाया?

(38) कि कोई किसी दूसरे का बोझ न उठाए,

(39) और उस मनुष्य को उसके परिश्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा,

(40) और उसका प्रयास देखा जाएगा,

(41) तो उसे पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जाएगा।

(42) और यह कि अन्तिम दिन तुम्हारे रब के पास है।

(43) वही है जो किसी को हँसाता है और किसी को रुलाता है।

(44) और वही है जो मृत्यु देता है और जीवन देता है।

(45) और जिसने जोड़े पैदा किये, नर और नारी,

(46) शुक्राणु की एक बूंद से जब यह उत्सर्जित होता है,

(47) और यह कि दूसरी सृष्टि भी उसी की है,

(48) और यह कि वही है जो धन और सन्तुष्टि प्रदान करनेवाला है।

(49) और वह सिरियस का रब है।

(50) तथा वही है जिसने प्राचीन आद को विनष्ट कर दिया।

(51) और समूद को भी, फिर उनमें से कुछ न छोड़ा।

(52) और उनसे पहले नूह की क़ौम भी अधिक अत्याचारी और अधिक अवज्ञाकारी थी।

(53) और उसने उजड़े हुए नगरों को गिरा दिया,

(54) और जिस चीज़ से उसने उन्हें ढका था, उसी से उन्हें ढक दिया।

(55) तो फिर तुम अपने पालनहार की किन-किन अच्छाइयों में संदेह करते हो?

(56) यह भी पिछली चेतावनियों की तरह एक चेतावनी है।

(57) आने वाला समय निकट आ रहा है।

(58) अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी उसका समय नहीं बता सकता।

(59) तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो?

(60) और हंसो और मत रोओ,

(61) जब आप विचलित हों?

(62) अतः अल्लाह को सजदा करो और उसी की बन्दगी करो।

# सूरा 54: ٱلْقَمَر‎ (अल-क़मर) - चंद्रमा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क़यामत करीब आ गई और चाँद दो टुकड़ों में बंट गया।

(2) लेकिन अगर वे कोई संकेत देखते हैं, तो वे पीछे मुड़ते हैं और कहते हैं, "जादू जारी है!"

(3) उन्होंने इनकार किया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया, किन्तु प्रत्येक मामले का अन्त अवश्य आता है।

(4) और उनके पास ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिनसे उन्हें मना कर देना चाहिए था,

(5) बुद्धि तो उत्तम है, परन्तु चेतावनियाँ व्यर्थ हैं।

(6) अभी तो उनसे मुँह फेर लो, जिस दिन पुकारनेवाला उन्हें किसी बड़ी बात की ओर बुलाएगा,

(7) वे तितर-बितर टिड्डियों की तरह झुकी हुई आँखों से कब्रों से बाहर निकलेंगे,

(8) पुकारनेवाले की ओर जल्दी से दौड़ते हुए। इनकार करनेवाले कहेंगे, "यह बड़ा कठिन दिन है!"

(9) उनसे पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया और उन्होंने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा, "अरे मूर्ख!" तो वह झुठलाया गया।

(10) फिर उसने अपने रब को पुकारा कि मैं बहुत परेशान हूँ, अतः मेरी सहायता कर!

(11) और हमने आकाश के द्वार प्रचुर जल के लिए खोल दिये।

(12) और हमने धरती से सोते निकाले, पानी का एक निश्चित क्रम था।

(13) हमने उसे तख्तों और कीलों से बनी एक नाव पर बिठाया,

(14) जो हमारी आँखों के सामने से गुज़रा। यह उन लोगों के लिए बदला है, जो इनकार किए गए।

(15) हमने इसे एक निशानी बनाकर छोड़ दिया है। क्या कोई है जो इसपर विचार करे?

(16) कैसी भयानक थी मेरी यातना और कैसी चेतावनियाँ!

(17) हमने क़ुरआन को याद करने के लिए आसान बना दिया है। तो क्या कोई है जो सोच-विचार करे?

(18) झुठलाया आद ने! कैसी बुरी थी मेरी यातना और कैसी डरानेवाली थी मेरी!

(19) हमने उनपर एक भयंकर आँधी भेजी, निरंतर विपत्ति के दिन में।

(20) जिन्होंने लोगों को इस तरह फाड़ डाला जैसे वे उखाड़े गए ताड़ के तने हों।

(21) कैसी भयानक थी मेरी यातना और कैसी चेतावनियाँ!

(22) हमने क़ुरआन को याद करने के लिए आसान बना दिया है। तो क्या कोई है जो सोच-विचार करे?

(23) समूद ने चेतावनियों को झुठला दिया।

(24) उन्होंने कहा, "क्या हम अपने ही बीच के एक व्यक्ति का अनुसरण करें? अन्यथा हम गुमराही और मूर्खता में पड़ जायेंगे।

(25) क्या वह हम सब में से चुना गया है? निस्संदेह वह बड़ा ही अहंकारी झूठा है।

(26) शीघ्र ही वे जान लेंगे कि वह अहंकारी झूठा कौन है।

(27) निश्चय ही हम उनके पास ऊँटनी को परीक्षा में डालेंगे। अतः तुम उसकी ओर देखो और धैर्य रखो।

(28) उन्हें बता दो कि पानी उनके बीच बाँटा जाएगा, और हर एक को पीने की बारी आएगी।

(29) लेकिन उन्होंने अपने साथी को बुलाया, और उसने आगे बढ़कर उसे मार डाला।

(30) कैसी भयानक थी मेरी यातना और कैसी चेतावनियाँ!

(31) हमने उनपर एक ही पुकार लगाई, तो वे सूखे भूसे के समान हो गये।

(32) हमने क़ुरआन को याद करने के लिए सरल बना दिया है। तो क्या कोई है जो विचार करे?

(33) लूत की जाति ने चेतावनियों को झुठलाया।

(34) और हमने उनपर पत्थरों की वर्षा की, परन्तु हम केवल लूत के घराने को ही बचा सके।

(35) यह हमारी ओर से एक उपकार है। इसी प्रकार हम कृतज्ञता दिखानेवालों को बदला देते हैं।

(36) उसने उन्हें हमारी यातना से सावधान कर दिया था, किन्तु उन्होंने चेतावनियों पर संदेह किया।

(37) उन्होंने उसके मेहमानों को भी बहकाना चाहा, तो हमने उनकी आँखें अन्धी कर दीं। "मेरी यातना और चेतावनियों का मज़ा चखो!"

(38) प्रातःकाल ही उन्हें स्थायी यातना ने घेर लिया।

(39) "मेरी यातना और मेरी चेतावनियों का स्वाद चखो!"

(40) हमने क़ुरआन को स्मरण करने के लिए सरल बना दिया है। तो क्या कोई है जो विचार करे?

(41) फ़िरऔन की क़ौम को भी चेतावनियाँ पहुँचीं,

(42) किन्तु उन्होंने हमारी सारी आयतों को झुठला दिया, अतः हमने उन्हें एक प्रभुत्वशाली प्रभु के हाथ से पकड़ लिया।

(43) क्या तुम्हारे इनकार करनेवाले उनसे अच्छे हैं? या तुम्हारे लिए किताब में कोई क्षमा है?

(44) या वे कहें कि हम एक संगठित और विजयी समूह हैं।

(45) शीघ्र ही सभा पराजित हो जायेगी और वे पीछे हट जायेंगे।

(46) निश्चय ही क़ियामत उन्हीं के लिए नियत है और वह क़ियामत अधिक कठोर और अधिक दुःखदायी है।

(47) निश्चय ही अपराधी गुमराही और मूर्खता में पड़े हुए हैं।

(48) जिस दिन वे मुँह के बल आग में घसीटे जायेंगे, "चलो सक़र का स्वाद चखो!"

(49) हमने प्रत्येक चीज़ को संतुलित रूप से पैदा किया है।

(50) और हमारा आदेश तो बस एक क्षणिक है, जैसे पलक झपकना।

(51) और हमने तुम्हारे साथियों को विनष्ट कर दिया। अब कोई है जो विचार करे।

(52) जो कुछ उन्होंने किया वह अभिलेख में है,

(53) हर छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है।

(54) निश्चय ही भक्तगण बाग़ों और नदियों में होंगे।

(55) एक सर्वशक्तिमान प्रभु के साथ सत्य के स्थान पर।

# सूरा 55: **ٱلرَّحْمَٰن‎ (अर-रहमान)** - दयालु

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) दयालु,

(2) उन्होंने कुरान पढ़ाया.

(३) उसने मनुष्य को बनाया,

(4) उसने उसे वचन सिखाया.

(5) सूर्य और चंद्रमा एक सटीक गणना का पालन करते हैं।

(६) तारे और पेड़ झुक जाते हैं।

(7) उसी ने आकाश को ऊँचा किया और तराजू को स्थापित किया,

(8) ताकि तुम सन्तुलन का उल्लंघन न करो।

(9) वजन सही से सेट करें और तराजू में गड़बड़ी न करें।

(10) उसने धरती को प्राणियों के लिए बनाया,

(11) इसमें फल और ताड़ के पेड़ हैं जिनमें कलियाँ सुरक्षित हैं,

(12) और अनाज जिसमें भूसा और खुशबूदार पौधे हों।

(13) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(14) उसने मनुष्य को मिट्टी से बनाया, मिट्टी के बर्तन की तरह,

(15) और उसने जिन्नों को अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।

(16) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(17) दोनों पूर्वों का रब और दोनों पश्चिमों का रब।

(18) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(19) उसने दो समुद्रों को एक साथ बहा दिया,

(20) उनके बीच एक बाधा है जिसे वे पार नहीं करते।

(21) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(22) मोती और मूंगा दोनों से निकलते हैं।

(23) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(24) और समुद्र में चलने वाले जहाज़ भी उसी के हैं, जो पर्वतों के समान ऊँचे हैं।

(25) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(26) पृथ्वी पर हर चीज़ का नाश होना तय है,

(27) किन्तु तुम्हारे रब का चेहरा सदैव गौरव और आदर से भरा रहेगा।

(28) तुम अपने रब की दोनों नेमतों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(29) आकाशों और धरती में जितने भी हैं, सब उसी से पूछते हैं। वह प्रतिदिन नये काम में लगा रहता है।

(30) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(31) ऐ मनुष्यों और जिन्नों! हम तुमसे अवश्य निपट लेंगे।

(32) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(33) ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह! यदि तुम आकाशों और धरती की सीमाओं को पार कर सको तो करो, किन्तु तुम ऐसा बिना अधिकार के नहीं कर सकते।

(34) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(35) तुम्हारे ऊपर चिंगारियों और पिघले हुए ताँबे की आग भेजी जाएगी, और तुम अपना बचाव नहीं कर सकोगे।

(36) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(37) जब आकाश फट जाएगा और तेल की तरह लाल हो जाएगा।

(38) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(39) उस दिन न तो मनुष्यों से उनके पापों के विषय में पूछा जाएगा और न जिन्न से।

(40) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(41) अपराधी अपने चेहरों से पहचाने जायेंगे, और उनके माथे और पैरों को पकड़ा जायेगा।

(42) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(43) यही वह जहन्नम है जिसका इनकार अपराधी करते हैं।

(44) वे उसके और उबलते पानी के बीच आते-जाते रहेंगे।

(45) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(46) और जो व्यक्ति अपने रब के सामने आने से डरेगा, उसके लिए दो बाग़ हैं।

(47) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(४८) अनेक छायादार शाखाओं वाला।

(49) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(५०) उनमें दो झरने बह रहे हैं।

(51) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(52) उनमें हर प्रकार के फल बहुतायत से हैं।

(53) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(54) ब्रोकेड से सजी क्यारियों पर बैठे हुए, दोनों बगीचों के फल पहुँच के भीतर होंगे।

(55) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(56) उनमें पवित्र चेहरे वाली युवतियाँ हैं, जिन्हें पहले कभी किसी मनुष्य ने या जिन्न ने हाथ नहीं लगाया।

(57) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(५८) माणिक और मूंगे के समान।

(59) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(60) क्या भलाई का प्रतिफल भलाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं है?

(61) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(62) और इन दोनों के अतिरिक्त दो और बाग़ हैं।

(63) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(६४) तीव्र गहरे हरे रंग का।

(65) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(६६) उनमें दो झरने फूटते हैं।

(67) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(68) उनमें मेवे, खजूर और अनार हैं।

(69) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस किस को झुठलाओगे?

(70) उनमें अच्छी और सुंदर स्त्रियाँ भी हैं।

(71) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(72) उरी मंडपों में रखा गया,

(73) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(74) जिसे पहले कभी किसी मनुष्य ने या जिन्न ने नहीं छुआ।

(75) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(७६) हरे कुशन और सुंदर कालीन पर बैठे।

(77) तुम अपने पालनहार की दोनों उपकारों में से किस-किस को झुठलाओगे?

(78) बहुत बरकतवाला है तुम्हारे रब का नाम, जो बड़ाई और आदर से भरा हुआ है।

# सूरा 56: ٱلْوَاقِعَة‎ (अल-वाकिआह) - अपरिहार्य

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जब अपरिहार्य घटना घटित होती है,

(2) कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि ऐसा हुआ था।

(3) वह कुछ को गिराएगा और दूसरों को उठाएगा।

(4) जब धरती ज़ोरदार झटके से हिलती है,

(5) और पहाड़ चूर-चूर हो जायेंगे,

(6) बिखरी धूल बनकर,

(7) और तुम तीन समूहों में विभाजित हो जाओगे:

(८) दाईं ओर वाले - दाईं ओर वाले कौन हैं?

(9) और जो बाईं ओर हैं, वे कौन हैं?

(10) और पूर्वगामी, पूर्वगामी:

(11) वही लोग अल्लाह के सबसे करीब हैं।

(12) सांसारिक प्रसन्नता के बागों में.

(13) पहली पीढ़ियों से एक भीड़,

(14) और कुछ लोग पिछली नस्लों में से हैं।

(15) सोने और रत्नों से सजे बिस्तरों पर,

(16) उन पर एक दूसरे के सामने लेट जाओ।

(17) सदा युवा सेवक उनके चारों ओर चक्कर लगाएंगे,

(18) प्याले, सुराही और शुद्ध पेय के प्याले के साथ,

(19) जिससे न तो उन्हें सिर दर्द होगा और न नशा होगा।

(20) और अपनी पसंद के फल,

(21) और वे पक्षियों का मांस चाहते हैं।

(22) और बड़ी आँखों वाली लड़कियाँ,

(23) छिपे हुए मोतियों की तरह,

(24) उनके किये का पुरस्कार।

(25) वे उसमें व्यर्थ की बातें या पाप का दोष नहीं सुनेंगे,

(26) लेकिन केवल यही अभिवादन: "शांति, शांति।"

(27) और जो दाहिनी ओर हैं, वे कौन हैं?

(28) वे काँटों रहित कमल के बीच होंगे,

(29) और केले के पेड़ फलों से लदे हुए,

(30) और छाया फैलती है,

(31) और बहता हुआ पानी,

(32) और बहुत फल,

(३३) कभी न टोका गया, न मना किया गया,

(34) और ऊंचे बिस्तर.

(35) निश्चय ही हमने उन्हें एक विशेष सृष्टि में पैदा किया।

(36) और हमने उन्हें शुद्ध कुँवारियाँ बनाया।

(37) प्रेमी और सहकर्मी,

(38) दाईं ओर वालों के लिए.

(39) पहली पीढ़ी से एक भीड़,

(40) और पिछली नस्लों से एक गिरोह।

(41) और जो बाईं ओर हैं, वे कौन हैं?

(42) वे जलती हुई हवा और उबलते पानी के बीच में होंगे,

(43) और काले धुएँ की छाया में,

(४४) ताज़ा या सुखद नहीं.

(45) वास्तव में वे विलासिता में रहते थे,

(46) और वे बड़े पाप में लगे रहे,

(47) और उन्होंने कहा, "क्या जब हम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ रह जाएँगे, तो क्या हम फिर से जीवित किये जाएँगे?

(48) और हमारे प्राचीन पूर्वज भी?

(49) कह दो, "प्रथम और अन्तिम,

(50) वे अवश्य ही एक ज्ञात दिन के लिए एकत्र किये जायेंगे।

(51) तो ऐ कुपथ लोगो! तुम जो इनकार करते हो,

(52) तुम लोग अवश्य ही ज़क्कूम के वृक्ष के फल खाओगे।

(53) और तुम उससे अपना पेट भरोगे,

(54) और उस पर उबलता हुआ पानी पीना,

(55) तुम प्यासे ऊँटों की तरह पानी पिओगे।

(56) यही उनका प्रलय के दिन आतिथ्य होगा।

(57) हमने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम ईमान क्यों नहीं लाते?

(58) क्या तुमने देखा है कि तुम क्या स्खलित करते हो?

(59) क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम ही पैदा करनेवाले हैं?

(60) हमने तुम्हारे बीच मृत्यु का आदेश दे दिया है, अब हमें कोई रोक नहीं सकता।

(61) तुम्हें तुम्हारे जैसे अन्य लोगों से प्रतिस्थापित करना और तुम्हें ऐसे रूपों में पुनः निर्मित करना जिन्हें तुम नहीं जानते।

(62) और तुम तो प्रथम सृष्टि को भी जानते थे, फिर विचार क्यों नहीं करते?

(63) क्या तुमने सोचा है कि तुम क्या बोते हो?

(64) क्या तुम उसे बढ़ाते हो या हम बढ़ानेवाले हैं?

(65) यदि हम चाहें तो उसे भूसे में बदल दें, फिर तुम अचम्भे में पड़ जाओगे।

(66) कह रहे हैं, "हम तो सचमुच कर्जदार हैं।

(67) निश्चय ही हम हर चीज़ से वंचित किये गये।

(६८) क्या आपने उस पानी पर विचार किया है जो आप पीते हैं?

(69) क्या तुम उसे बादलों से उतारते हो या हम उसे उतारते हैं?

(70) यदि हम चाहते तो उसे नमकीन बना देते, फिर तुम कृतज्ञ क्यों नहीं होते?

(71) क्या तुमने उस आग पर विचार किया है जिसे तुम जलाते हो?

(72) क्या तुम उसकी लकड़ी उगाते हो या हम उसे उगाते हैं?

(73) हमने उसे एक स्मृति और जीविका बना दिया है, जंगल में यात्रियों के लिए।

(74) अतः अपने सर्वोच्च पालनहार के नाम की महिमा का वर्णन करो।

(७५) मैं तारों की स्थिति की शपथ लेता हूँ—

(76) और यह एक बड़ी शपथ है, यदि तुम जानते-

(77) निश्चय ही यह पवित्र क़ुरआन है।

(78) एक किताब में रखा है,

(७९) जिसे केवल शुद्ध लोग ही छू सकते हैं,

(80) यह समस्त संसार के पालनहार की ओर से उतरन है।

(८१) क्या यह वह भाषण है जिसकी आप उपेक्षा कर रहे हैं?

(82) क्या तुम उससे अपना गुजारा चलाते हो, उसका इन्कार करके?

(83) फिर जब आत्मा गले तक पहुँचती है,

(84) और तुम उस क्षण देखो,

(85) और हम उससे तुमसे अधिक निकट हैं, किन्तु तुम देखते नहीं।

(86) यदि तुम हमारे अधीन न हो,

(87) यदि तुम सच्चे हो तो उसे वापस ले आओ।

(88) यदि वह समीप रहनेवालों में से हो,

(89) फिर उसके लिए सुख-शांति, सुगन्ध और आनन्द का स्वर्ग है।

(90) और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से हो,

(91) फिर कहा जाएगा, "तुम्हें सलाम हो।" दाहिनी ओर वालों की ओर से।

(92) फिर यदि वह झुठलानेवालों में से हो,

(93) फिर उसका आतिथ्य खौलता हुआ पानी होगा।

(94) और वह जहन्नम की आग में जलेगा।

(95) निस्संदेह, यह पूर्णतः सत्य है।

(96) अतः अपने सर्वोच्च पालनहार के नाम की महिमा का वर्णन करो।

# सूरा 57: ٱلْحَدِيد‎ (अल-हदीद) - लोहा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो कुछ आकाशों और धरती में है वह अल्लाह की तसबीह करता है, वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(2) आकाशों और धरती का राज्य उसी का है। वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(3) वही आदि है, अन्तिम है, प्रकट है, छिपा है, और हर चीज़ का ज्ञान रखता है।

(4) वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती में आता है और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ आकाश से चढ़ता है। और जहाँ कहीं तुम हो, वह तुम्हारे साथ है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे देख रहा है।

(5) आकाशों और धरती का राज्य उसी का है और सब चीज़ें अल्लाह की ओर लौटकर आती हैं।

(6) वह रात को दिन में और दिन को रात में प्रविष्ट कराता है, और वह भली-भाँति जानता है कि दिलों में क्या है।

(7) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसमें से दान दो जिसका उसने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया है। तुममें से जो लोग ईमान लाए और दान दिया, उनके लिए बड़ा प्रतिफल है।

(8) तुम अल्लाह पर ईमान क्यों न लाते, जबकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि अपने रब पर ईमान लाओ? यदि तुम ईमानवाले हो तो उसने तुमसे वादा कर लिया है।

(9) वही है जो अपने बन्दे की ओर स्पष्ट निशानियाँ उतारता है, ताकि तुम्हें अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले आए। और निश्चय ही अल्लाह तुमपर अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(10) और तुम अल्लाह के मार्ग में क्यों न दान करो, जबकि आकाशों और धरती का उत्तराधिकार उसी का है? तुममें से जो लोग फ़तेह से पहले दान करते रहे और युद्ध करते रहे, वे बराबर नहीं हैं, बल्कि वे उन लोगों से ऊँचे दर्जे के हैं जिन्होंने बाद में दान किया और युद्ध किया। हालाँकि अल्लाह ने तुम सभी से भलाई का वादा किया है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(11) जो व्यक्ति अल्लाह को अच्छा ऋण देगा, अल्लाह उसे कई गुना बढ़ा देगा, और उसके लिए अच्छा प्रतिफल होगा।

(12) जिस दिन तुम ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को अपने प्रकाश के साथ अपने आगे-आगे और अपने दाहिनी ओर दौड़ते हुए देखोगे, उस दिन कहा जाएगा कि "आज तुम्हारे लिए शुभ सूचना है कि ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें तुम सदैव रहोगे।" यही बड़ी सफलता है।

(13) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें ईमानवालों से कहेंगे कि "तुम हमारी प्रतीक्षा करो कि हम तुम्हारे प्रकाश में से कुछ ले लें।" कहा जाएगा कि "पीछे लौट जाओ और अपने लिए कोई प्रकाश खोजो।" फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसके भीतर एक दरवाज़ा होगा। उसके भीतर दया होगी और बाहर उनके सामने यातना होगी।

(14) वे उनसे कहेंगे, "क्या हम तुम्हारे साथ न थे?" वे कहेंगे, "हाँ, बल्कि तुमने अपने आपको बहकाया और प्रतीक्षा की और संदेह किया और धोखे में पड़े रहे, यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश तुम्हारे पास आ गया। और धोखेबाज़ ने अल्लाह के विषय में तुम्हें धोखा दिया।"

(15) आज तुमसे कोई फ़िदेय नहीं लिया जाएगा और न इनकार करने वालों से। तुम्हारा ठिकाना आग है, वही तुम्हारा स्वामी है। वह कितना बुरा ठिकाना है!

(16) क्या वह समय नहीं आ गया है कि जो लोग ईमान लाए हैं, उनके दिल अल्लाह की याद और जो कुछ सत्य अवतरित हुआ है, उससे विनम्र हो जाएँ और वे उन लोगों की तरह न हों जिन्हें पहले किताब दी गई थी? उनके लिए समय बढ़ा दिया गया है, अतः उनके दिल कठोर हो गए हैं और उनमें से बहुत से लोग बुरे हैं।

(17) जान लो कि अल्लाह ही धरती को उसके मरने के पश्चात जीवन देता है। हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो।

(18) जो पुरुष और स्त्रियाँ दान करेंगे और अल्लाह को अच्छा ऋण देंगे, उनके लिए वह कई गुना कर दिया जाएगा और उनके लिए अच्छा प्रतिफल है।

(19) जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए वही सच्चे हैं और अपने रब के यहाँ शहीद होनेवाले हैं। उन्हीं के लिए उनका बदला और उनका प्रकाश है। और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग जहन्नम में पड़नेवाले हैं।

(20) जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी बस खेल, तमाशा, शृंगार, आपस में डींगें मारना और माल और औलाद के संग्रह में होड़ लगाना है। यह बारिश की तरह है, उससे जो घास उगती है, उससे किसान खुश होते हैं, फिर वह सूख जाती है और तुम देखते हो कि वह पीली पड़ जाती है, फिर वह सूखी घास बन जाती है। और आख़िरत में कड़ी सज़ा है, और अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी और मौज-मस्ती भी है। और दुनिया की ज़िंदगी तो बस एक धोखा है।

(21) अपने रब से क्षमा की आशा करो और एक जन्नत की आशा करो जिसकी चौड़ाई आकाशों और धरती के बराबर है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए। यह अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह जिस पर चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(22) न तुम पर कोई मुसीबत आएगी और न धरती पर, परन्तु वह किताब में लिख ली जाएगी, इससे पहले कि हम उसे प्रकट कर दें। निस्संदेह, यह अल्लाह के लिए सरल है।

(23) ताकि तुम उस चीज़ पर शोक न करो जो तुम्हें नहीं मिली और न उस चीज़ पर प्रसन्न हो जो उसने तुम्हें दी है। और अल्लाह किसी अहंकारी व्यक्ति को पसन्द नहीं करता।

(24) जो लोग कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने पर उकसाते हैं। और जो मुँह मोड़ ले, तो जान लो कि अल्लाह ही अत्यन्त धनवान, प्रशंसनीय है।

(25) हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तराजू भी उतारा, ताकि लोग नेक काम करें और हमने लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी ताकत है और वह लोगों के लिए बहुत लाभदायक है, ताकि अल्लाह उसे जान ले जो उसका और उसके रसूलों का बिना देखे समर्थन करता है। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(26) और हमने नूह और इबराहीम को भेजा, फिर हमने उनकी संतान को नबूवत और किताब दी। उनमें से कुछ लोग सीधे मार्ग पर हैं और उनमें से बहुत-से लोग बुरे मार्ग पर हैं।

(27) फिर हमने अपने रसूलों को उनके पीछे भेजा और मरयम के बेटे ईसा को उनके पीछे भेजा और उसे इंजील प्रदान की। और जो लोग उसके पीछे चले उनके दिलों में हमने दया और रहम पैदा किया। और उन्होंने संन्यासीपन को हमारे हुक्म के बिना ही अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए स्थापित कर लिया। लेकिन उन्होंने उसका पालन उस तरह नहीं किया जैसा उन्हें करना चाहिए था। तो हमने उनमें से जो लोग ईमान लाए, उन्हें उनका बदला दे दिया। लेकिन उनमें से बहुत-से बुरे कर्म करने वाले हैं।

(28) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ। वह तुम्हें अपनी दयालुता से दोगुना प्रदान करेगा और तुम्हें प्रकाश प्रदान करेगा, जिसके द्वारा तुम चलोगे और वह तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(29) ताकि अहले किताब जान लें कि अल्लाह के अनुग्रह पर उनका कोई ज़ोर नहीं है, बल्कि अनुग्रह अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहता है प्रदान करता है, और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

# सूरा 58: **ٱلْمُجَادِلَة‎ (अल-मुजादिला)** - विवाद करने वाली महिला

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अल्लाह ने उस स्त्री की बातें सुन ली हैं जिसने तुमसे अपने पति के विषय में झगड़ते हुए अल्लाह से शिकायत की है। अल्लाह ने तुम्हारी बातें सुन ली हैं। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है।

(2) तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों को तलाक़ देते हैं और कहते हैं कि "तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ हो," तो उन्हें जान लेना चाहिए कि वे उनकी माँ नहीं हैं। उनकी माँएँ तो बस वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है। वे तो बुरी बातें कहते हैं और और अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त क्षमाशील है।

(3) जो लोग इस शब्द से अपनी पत्नियों को तलाक़ दे दें और फिर अपनी कही बात से फिरना चाहें, तो उन्हें चाहिए कि वे यौन संबंध बनाने से पहले एक गुलाम आज़ाद कर दें। यह तुम पर अनिवार्य है, और अल्लाह उससे अवगत है जो तुम करते हो।

(4) जो व्यक्ति ऐसा करने में सक्षम न हो, तो उसे चाहिए कि वह संभोग से पहले दो महीने तक लगातार उपवास रखे। और जो व्यक्ति ऐसा करने में सक्षम न हो, तो उसे चाहिए कि वह साठ मिस्कीनों को खाना खिलाए। यह इसलिए है ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। ये अल्लाह की सीमाएँ हैं और जो लोग इनकार करेंगे, उनके लिए दुखद यातना है।

(5) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वे अपमानित किये जायेंगे, जैसे उनसे पहले के लोग अपमानित किये गये थे। हमने स्पष्ट निशानियाँ अवतरित कर दी हैं, और जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए अपमानजनक यातना है।

(6) जिस दिन अल्लाह उन सबको जीवित करेगा, तो जो कुछ वे करते रहे थे, उसे अल्लाह ने लिख लिया है, किन्तु वे उसे भूल गए हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है।

(7) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसे जानता है? तीन लोगों के बीच कोई गुप्त बात नहीं होती, परन्तु वह चौथा न हो, और पाँच लोगों के बीच कोई गुप्त बात नहीं होती, परन्तु वह छठा न हो, और न छोटे लोगों के बीच कोई गुप्त बात होती है, परन्तु वह उनके साथ न हो, चाहे वे कहीं भी हों। फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा कि वे क्या-क्या करते रहे हैं। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ है।

(8) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें गुप्त रूप से षड्यंत्र करने से रोका गया था? फिर वे उसी ओर लौटते हैं जो उन्हें रोका गया था और पाप, अत्याचार और रसूल की अवज्ञा के लिए षड्यंत्र रचते हैं। और जब वे तुम्हारे पास आते हैं, तो वे तुम्हारा स्वागत उस तरह से नहीं करते जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारा स्वागत किया है और आपस में कहते हैं, "अल्लाह हमें उन बातों के लिए दण्ड क्यों नहीं देता जो हम कहते हैं?" उनके लिए जहन्नम ही पर्याप्त है, वे उसमें जलेंगे। कितना बुरा ठिकाना है!

(9) ऐ ईमान वालो! जब तुम छुपकर सलाह करो तो गुनाह, अत्याचार और रसूल की अवज्ञा के बारे में सलाह न करो, बल्कि नेकी और परहेज़गारी के बारे में सलाह करो और अल्लाह से डरते रहो, जिसकी ओर तुम सब इकट्ठे किये जाओगे।

(10) निःसंदेह यह गुप्त षड्यंत्र शैतान का काम है, ताकि ईमान वालों को कष्ट पहुँचाए, किन्तु वह उन्हें अल्लाह की अनुमति के बिना कुछ नहीं पहुँचा सकता। और ईमान वालों को अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए।

(11) ऐ ईमान वालो! जब तुमसे कहा जाए कि मजलिसों में जगह बनाओ तो जगह बनाओ, अल्लाह तुम्हारे लिए जगह बना देगा। और जब तुमसे कहा जाए कि उठो तो उठो, अल्लाह तुममें से जो लोग ईमान लाए और जो लोग इल्म पाए, उन्हें ऊँचा उठाएगा। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(12) ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से गुप्त रूप से परामर्श करना चाहो तो परामर्श से पहले दान कर दो। यह तुम्हारे लिए उत्तम और पवित्र है। फिर यदि तुम इसका साधन न बना सको तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(13) क्या तुम अपनी सलाह से पहले दान देने से डरते हो? यदि तुम ऐसा न करो और अल्लाह तुमपर दया करे, तो नमाज़ की क़ायम रहो, ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(14) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से मेलजोल रखते हैं जिनपर अल्लाह क्रोधित है? वे न तुममें से हैं और न उनमें से हैं, और वे झूठी क़सम खाते हैं, यद्यपि जानते हैं कि वे झूठ बोल रहे हैं।

(15) अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। निस्संदेह, जो कुछ वे कर रहे हैं, वह बुरा ही है।

(16) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, ताकि वे लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोक दें। उनके लिए अपमानजनक यातना है।

(17) न तो उनके माल और न ही उनकी संतान अल्लाह से उनकी रक्षा कर सकती है। वे आग में पड़नेवाले हैं और उसमें सदैव रहेंगे।

(18) जिस दिन अल्लाह उन सबको जीवित करेगा, वे उसी प्रकार अल्लाह की क़सम खाएँगे, जैसी क़सम वे तुमसे खाते हैं। और समझते हैं कि वे सच्चे हैं। वास्तव में वे झूठे हैं।

(19) शैतान ने उनपर कब्ज़ा कर लिया है और उन्हें अल्लाह की याद भुला दी है। वे शैतान के गिरोह हैं। निस्संदेह शैतान का गिरोह पराजित होने वाला है।

(20) निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वही सबसे अधिक अपमानित होंगे।

(21) अल्लाह ने आदेश दे दिया है कि "मैं और मेरे रसूल प्रभुत्वशाली हैं।" निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है।

(22) तुम उन लोगों में से किसी को नहीं पाओगे जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करनेवालों से मित्रता करते हैं, चाहे वे उनके पिता हों, उनके बेटे हों, उनके भाई हों या उनके सम्बन्धी हों। उसने उनके दिलों में ईमान लिख दिया है और अपनी ओर से उन्हें आत्मा प्रदान की है। और वह उन्हें ऐसे बाग़ों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हुए। वे अल्लाह के गिरोह हैं। निश्चय ही अल्लाह के गिरोह को सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

# सूरा 59: **ٱلْحَشْر‎ (अल-अशआर)** - द गैदरिंग

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो कुछ आकाशों और धरती में है वह अल्लाह की तसबीह करता है, वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(2) वही है जिसने पहली बार अहले किताब में से काफ़िरों को उनके घरों से निकाला था। तुम यह आशा न रखते थे कि वे चले जाएँगे और वे समझते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे। परन्तु अल्लाह वहाँ से उनके पास आया जहाँ से वे आशा न रखते थे और उनके दिलों में भय भर दिया। उन्होंने अपने घरों को अपने हाथों से और ईमान वालों के हाथों से गिरा दिया। अतः ऐ समझो, इससे सीखो।

(3) यदि अल्लाह ने उनपर देश निकाला का आदेश न दिया होता तो उन्हें संसार में ही यातना दे देता और आख़िरत में भी उनके लिए आग की यातना है।

(4) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह का विरोध करेगा, तो अल्लाह कठोर दण्ड देनेवाला है।

(5) तुम जो खजूर का पेड़ काट डालो या उसकी जड़ को बचा रखो, यह अल्लाह की अनुमति से है, ताकि वह अत्याचारियों को विनम्र करे।

(6) और जो माल अल्लाह ने अपने रसूल को बिना युद्ध के दिया है, उसे पाने के लिए तुम्हें घोड़े या ऊँट चलाने की ज़रूरत नहीं थी, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है अधिकार प्रदान करता है, और अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली है।

(7) अल्लाह ने अपने रसूल को नगरवासियों से जो कुछ दिया है, वह अल्लाह का है, रसूल का है, उसके नातेदारों का है, अनाथों का है, मुहताजों का है और मुसाफिरों का है, कहीं ऐसा न हो कि वह केवल तुम्हारे धनवानों के हाथ में चला जाए। अतः जो कुछ रसूल तुम्हें दे, उसे ले लो और जो कुछ उसने तुम्हें हराम किया है, उससे बचो। और अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

(8) और जो ग़रीब प्रवासी अपने घरों से निकाले गए हों और अपनी सम्पत्तियों से वंचित कर दिए गए हों, वे अल्लाह की कृपा और प्रसन्नता चाहते हों और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता करते हों, वही सच्चे हैं।

(9) और जो लोग उनसे पहले मदीना में थे और ईमान पर थे, वे उन लोगों से प्रेम करते हैं जो उनके पास हिजरत करते हैं और जो कुछ उन्हें दिया गया है, उससे उनके दिलों में ईर्ष्या नहीं होती, बल्कि वे उन्हें अपने से अधिक तरजीह देते हैं, यद्यपि वे मोहताज हों। और जो व्यक्ति अपने दिल की लालच से बचा रहे, वही लोग सफल हैं।

(10) और जो लोग उनके पश्चात् आएंगे, वे कहेंगे कि "ऐ हमारे रब! हमें और हमारे उन भाइयों को, जो हमसे पहले ईमान लाए हैं, क्षमा कर दे और हमारे दिलों में उन लोगों के प्रति कोई दुर्भावना न छोड़ जो ईमान लाए हैं। हमारे रब! निस्संदेह तू अत्यन्त दयावान, दयावान है।"

(11) क्या तुमने मुनाफ़िक़ों को अपने काफ़िर भाइयों से, जो किताबवाले थे, यह कहते नहीं देखा कि "यदि तुम निकाले गए तो हम तुम्हारे साथ चलेंगे और तुम्हारे विरुद्ध किसी की बात नहीं मानेंगे और यदि तुमपर आक्रमण किया गया तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे।" किन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे निश्चय ही झूठे हैं।

(12) यदि उन्हें निकाल दिया जाए तो वे उनके साथ नहीं जाएंगे, और यदि उन पर आक्रमण किया जाए तो वे उनकी सहायता नहीं करेंगे, और यदि वे उनकी सहायता भी करें तो वे मुँह फेर लेंगे और फिर उनकी सहायता नहीं की जाएगी।

(13) उनके दिलों में अल्लाह से भी अधिक भय पैदा कर दो। यह इसलिए कि वे अज्ञानी लोग हैं।

(14) वे तुम्हारे विरुद्ध कभी भी एक साथ नहीं लड़ेंगे, सिवाय कि वे गढ़वाले नगरों में या दीवारों के पीछे लड़ें। वे एक दूसरे के प्रति बहुत शत्रुतापूर्ण हैं। तुम सोचते हो कि वे एक हैं, परन्तु उनके दिल बँटे हुए हैं। यह इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो विवेक नहीं रखते।

(15) वे उन लोगों के समान हैं जो उनसे थोड़े समय पहले गुज़रे। उन्होंने अपने कर्मों का फल चख लिया और उनके लिए दुखद यातना है।

(16) शैतान की सी मिसाल है जब वह मनुष्य से कहता है, "ईमान न ला।" फिर जब वह इनकार करने लगा तो कहने लगा, "मैं तुझसे अलग हो रहा हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है।"

(17) उन दोनों का अन्त आग में है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। यही अत्याचारियों का बदला है।

(18) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और हर इंसान को यह देख लेना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या तैयार कर रखा है। अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह उससे वाकिफ़ है जो कुछ तुम करते हो।

(19) और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, अतः अल्लाह ने उन्हें अपने आप को भुला दिया। वही लोग अतिक्रमणकारी हैं।

(20) आग वाले और जन्नत वाले एक समान नहीं हैं, जन्नत वाले तो विजयी हैं।

(21) यदि हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम उसे अल्लाह के डर से झुका हुआ और टूटा हुआ देखते। ये वे उदाहरण हैं जो हम लोगों के सामने रखते हैं, ताकि वे विचार करें।

(22) वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह छिपे और खुले का जाननेवाला है, और वह अत्यन्त दयावान, दयावान है।

(23) वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह बादशाह, पवित्र, शांतिप्रिय, विश्वसनीय, रक्षक, प्रभुत्वशाली, भययोग्य, सर्वोच्च है। पवित्र है अल्लाह उन लोगों से जो उसका साझी ठहराते हैं।

(24) वही अल्लाह है, रचयिता, रचयिता, रचयिता। उसी के लिए अच्छे-अच्छे नाम हैं। आकाशों और धरती में जो कुछ है, सब उसी की तस्बीह करते हैं। और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

# सूरा 60: ٱلْمُمْتَحَنَة‎ (अल-मुमताहानाह) - जांच की गई

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ ईमान लानेवालो! मेरे शत्रुओं और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ, और उनसे प्रेम न करो, जबकि उन्होंने उस सत्य को झुठलाया है जो तुम्हारे पास आया है, और रसूल को और तुम्हें भी निकाल दिया है, क्योंकि तुम अल्लाह, अपने रब पर ईमान रखते हो। यदि तुम मेरे मार्ग पर जिहाद करने और मेरी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए निकले हो, तो तुम उनसे छिपकर प्रेम कैसे कर सकते हो? मैं भली-भाँति जानता हूँ कि तुम क्या छिपाते हो और क्या प्रकट करते हो। और तुममें से जिसने ऐसा किया, वह अवश्य ही सीधे मार्ग से भटक गया।

(2) जब वे तुमसे मिलते हैं तो तुम्हें अपना शत्रु समझते हैं और तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए अपने हाथों और ज़बानों से तुमपर आक्रमण करते हैं और चाहते हैं कि तुम इनकार कर दो।

(3) क़ियामत के दिन न तुम्हारे रिश्तेदार तुम्हें कुछ लाभ पहुँचाएँगे और न तुम्हारी संतान। वही तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा और अल्लाह देख रहा है कि तुम क्या करते हो।

(4) तुम्हारे लिए इबराहीम और उनके साथियों के मामले में एक अच्छी मिसाल है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, "हम तुमसे और अल्लाह के सिवा जिनकी तुम पूजा करते हो उनसे बेपरवाह हैं। हम तुम्हारा इन्कार करते हैं और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए दुश्मनी और द्वेष पैदा हो गया है, जब तक कि तुम अल्लाह पर ईमान न लाओ।" इबराहीम ने अपने पिता से कहा, "मैं तुम्हारे लिए क्षमा माँगूँगा, लेकिन मैं अल्लाह के आगे तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता।" "ऐ हमारे रब! हम तुझ पर भरोसा करते हैं, तेरी ही ओर हम तरसते हैं और तेरी ही ओर हमें लौटना है।

(5) ऐ हमारे रब! हमें इनकार करनेवालों के लिए आज़माइश न बना और हमें क्षमा कर दे। ऐ हमारे रब! निस्संदेह तू अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(6) निश्चय ही तुमने उनमें एक अच्छी मिसाल पाई है उन लोगों के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखते हैं। फिर जो कोई उससे मुँह मोड़े तो जान लो कि अल्लाह ही अत्यन्त धनवान, प्रशंसनीय है।

(7) बहुत संभव है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के बीच मित्रता उत्पन्न कर दे, जिनसे तुम शत्रु थे। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली है, अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(8) अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ न्याय करने से नहीं रोकता जिन्होंने तुमसे धर्म के लिए युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निस्संदेह अल्लाह नेक लोगों को प्रिय है।

(9) अल्लाह तो बस इतना ही मना करता है कि तुम उन लोगों को अपना मित्र बनाओ जिन्होंने तुमसे धर्म के लिए युद्ध किया, तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और निकालने में सहायता की। और जो कोई उन्हें अपना मित्र बनाएगा वही अत्याचारी है।

(10) ऐ ईमान वालो! जब ईमानवाली स्त्रियाँ तुम्हारे पास आएँ तो उनसे जाँच-पड़ताल करो। अल्लाह उनके ईमान को भली-भाँति जानता है। यदि तुम पाओ कि वे ईमानवाली हैं तो उन्हें काफिरों के पास न लौटाओ। न वे उनके लिए हलाल हैं और न वे उनके लिए हलाल हैं। जो कुछ उन्होंने खर्च किया है, उसे उन्हें लौटा दो। और यदि तुम उनसे मेहर देकर विवाह कर लो तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं। जो स्त्रियाँ काफिर हैं, उनसे विवाह न करो। जो कुछ तुमने खर्च किया है, उसे माँग लो और जो कुछ उन्होंने खर्च किया है, उसे वे भी माँग लें। यह अल्लाह का निर्णय है। वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है। अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(11) और यदि तुम्हारी पत्नियों में से कोई कुफ़्र की ओर चली जाए और तुम सफल हो जाओ, तो जिनकी पत्नियाँ कुफ़्र की ओर चली गई हों, उन्हें उतना ही दो जितना उन्होंने ख़र्च किया है। और अल्लाह से डरो, जिस पर तुम ईमान लाए हो।

(12) ऐ नबी! जब ईमानवाली स्त्रियाँ तुम्हारे पास आएँ और वचन लें कि हम अल्लाह का साझी न ठहराएँगी, चोरी न करेंगी, व्यभिचार न करेंगी, अपने बच्चों की हत्या न करेंगी, अपने हाथों और पैरों के बीच झूठ गढ़कर किसी पर निन्दा नहीं करेंगी और भलाई के मामले में तुम्हारी अवज्ञा न करेंगी, तो तुम उनका वचन स्वीकार कर लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा माँग लो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(13) ऐ ईमान वालो! ऐसे लोगों को अपना मित्र न बनाओ जिनपर अल्लाह क्रोधित हो। वे आख़िरत से निराश हो गए हैं, जिस प्रकार इनकार करनेवाले क़ब्र वालों से निराश हो गए हैं।

# सूरा 61: **ٱلصَّفّ‎ (अṣ-Ṣअफ़)** - मेजबान

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो कुछ आकाशों और धरती में है वह अल्लाह की तसबीह करता है, वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(2) ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बातें क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं?

(3) अल्लाह के निकट यह अत्यन्त घृणित बात है कि तुम वह बात कहते हो जो तुम करते नहीं।

(4) निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को पसन्द करता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं, मानो वे एक सघन इमारत हों।

(5) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों सताते हो, जबकि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है? फिर जब वे भटक गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को भटका दिया, और अल्लाह ऐसे लोगों को मार्ग नहीं दिखाता जो गलत राह पर हों।

(6) और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराइल की सन्तान! मैं तुम्हारे पास भेजा गया अल्लाह का रसूल हूँ, जो मुझसे पहले आई तौरात की पुष्टि करता हूँ और एक रसूल की घोषणा करता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला जादू है।

(7) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़ ले, हालाँकि उसे इस्लाम की ओर बुलाया गया हो? अल्लाह ज़ालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता।

(8) वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँहों से बुझा दें, किन्तु अल्लाह अपना प्रकाश पूर्ण करके रहेगा, यद्यपि इनकार करनेवाले उससे घृणा करते हैं।

(9) वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि वह प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व रखे, यद्यपि इनकार करनेवाले उससे घृणा ही करें।

(10) ऐ ईमान वालो! क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें कोई ऐसा काम बताऊँ जिससे तुम दुखद यातना से बच जाओ?

(11) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से लड़ो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम जानो।

(12) वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और तुम्हें स्वर्ग के बाग़ों में भव्य भवनों में प्रवेश देगा। यही बड़ी सफलता है।

(13) और वह तुम्हें वह भी देगा जिसकी तुम चाहत रखते हो। अल्लाह की ओर से सहायता और निकट विजय। ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

(14) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के सहायक बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "अल्लाह के मार्ग में मेरे सहायक कौन हैं?" उन्होंने कहा, "हम अल्लाह के सहायक हैं।" बनी इसराइल में से एक गिरोह ईमान लाया और एक गिरोह इनकार करने लगा। अतः हमने ईमान लानेवालों की उनके शत्रुओं के विरुद्ध सहायता की और वे विजयी हुए।

# सूरा 62: ٱلْجُمُعَة‎ (अल-जुमुआह) - शुक्रवार

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो कुछ आकाशों और धरती में है वह अल्लाह की स्तुति करता है, जो प्रभुत्वशाली, पवित्र, प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(2) वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें अपनी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता है, यद्यपि इससे पहले वे स्पष्ट रूप से गुमराही में थे।

(3) और उन लोगों की ओर भी भेजा है जो अभी तक उनके साथ नहीं जुड़े। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

(4) यह अल्लाह का अनुग्रह है, वह इसे जिसपर चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ा अनुग्रह करनेवाला है।

(5) जिन लोगों पर तौरात का बोझ डाला गया, किन्तु उन्होंने उसे ठीक से नहीं उठाया, उनकी मिसाल उस गधे के समान है जो किताबें ढो रहा हो। और जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं, उनकी मिसाल बहुत बुरी है। अल्लाह ज़ालिमों को मार्ग नहीं दिखाता।

(6) कह दो, "ऐ यहूदियों! यदि तुम दूसरों को छोड़कर अल्लाह के मित्र होने का दावा करते हो, तो यदि तुम सच्चे हो, तो तुम मृत्यु को प्राथमिकता देते हो।"

(7) किन्तु वे कदापि उसकी इच्छा नहीं करेंगे, उसके कारण जो कुछ उनके हाथ पहले कर चुके हैं। अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

(8) कह दो, "जिस मृत्यु से तुम भाग रहे हो, वह अवश्य ही तुम्हें आ पकड़ेगी। फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे, जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञान रखता है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो।"

(9) ऐ ईमान वालो! जब जुमा की नमाज़ की अज़ान हो तो अल्लाह की याद की ओर जल्दी करो और व्यापार छोड़ दो। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम जानो।

(10) जब नमाज़ समाप्त हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का अनुग्रह चाहो और अल्लाह को अधिक याद करो, ताकि तुम सफल हो सको।

(11) किन्तु जब वे कोई व्यापार या मनोरंजन देखते हैं तो उसके पीछे भागते हैं और तुम्हें वहीं छोड़ देते हैं। कह दो, "अल्लाह के पास जो है वह मनोरंजन और व्यापार से कहीं उत्तम है, और अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।"

# सूरा 63: ٱلْمُنَافِقُون‎ (अल-मुनाफिकुन) - पाखंडी

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि तुम अल्लाह के रसूल हो। अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ सचमुच झूठे हैं।

(2) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया और इस प्रकार लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोक दिया। निस्संदेह वे जो कुछ करते हैं वह बहुत बुरा है।

(3) यह इसलिए हुआ कि उन्होंने ईमान लाया, फिर ईमान से इन्कार किया, इसलिए उनके दिलों पर मुहर लग गई, ताकि वे समझ न सकें।

(4) जब तुम उन्हें देखते हो तो उनकी सूरत देखकर तुम्हें आश्चर्य होता है और यदि वे बोलते हैं तो उनकी बातें सुनते हो। वे लकड़ी के लट्ठों के समान हैं जो एक दूसरे से टिके हुए हैं। वे समझते हैं कि हर पुकार उनके विरुद्ध है। वे शत्रु हैं, अतः उनसे बचकर रहो। अल्लाह उन्हें विनष्ट कर दे। वे कितने पथभ्रष्ट हैं!

(5) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह के रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करेंगे तो वे अपना सिर फेर लेते हैं और तुम देखते हो कि वे अहंकार में चले जाते हैं।

(6) चाहे तुम उनसे क्षमा मांगो या न मांगो, उनके लिए बराबर है, अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा। निस्संदेह अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

(7) वे लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च न करो जब तक कि वे बिखर न जाएँ। आकाशों और धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, किन्तु मुनाफ़िक़ लोग समझते नहीं।

(8) वे कहते हैं, "यदि हम मदीना लौट जाएँ तो अवश्य ही आदरणीय परमेश्वर वहाँ से अपमानित लोगों को निकाल देंगे।" किन्तु आदरणीयता अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है, किन्तु मुनाफ़िक़ लोग उसे नहीं जानते।

(9) ऐ ईमान वालो! अपने मालों और अपनी संतानों को अल्लाह की याद से दूर न करो। और जो ऐसा करेगा वही घाटे में रहेगा।

(10) और जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाए और वह कहे कि "ऐ मेरे रब! यदि तू मुझे थोड़ी सी अवधि प्रदान करे तो मैं दान अवश्य करूँगा, ताकि मैं भी नेक लोगों में सम्मिलित हो जाऊँ।"

(11) अल्लाह किसी प्राणी को उसकी नियत तिथि पर मुहलत नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

# सूरा 64: **ٱلتَّغَابُن‎ (अत-तग़ाबुन)** - हानि और लाभ

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो कुछ आकाशों और धरती में है, वह अल्लाह की तसबीह करता है। उसी के लिए राज्य है, उसी की प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

(2) वही है जिसने तुम्हें पैदा किया। तुममें से कुछ लोग इनकार करनेवाले हैं और कुछ लोग ईमानवाले हैं। और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।

(3) उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया और तुम्हें आकार प्रदान किया और तुम्हारे आकार सुन्दर बनाए। उसी की ओर लौटना है।

(4) वह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ दिलों में है।

(5) क्या तुमने उन लोगों के विषय में नहीं सुना जिन्होंने तुमसे पहले इनकार किया? वे अपने कर्मों का फल चख चुके हैं और उनके लिए दुखद यातना है।

(6) यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, किन्तु उन्होंने कहा, "क्या कोई साधारण मनुष्य हमें मार्ग दिखाएगा?" अतः उन्होंने झुठला दिया और मुँह फेर लिया। किन्तु अल्लाह को उनकी कोई आवश्यकता नहीं, अल्लाह धनवान, प्रशंसनीय है।

(7) जिन लोगों ने इनकार किया, उन्होंने यह समझ लिया कि वे कभी उठाए नहीं जाएँगे। कह दो, "मेरे रब की क़सम! तुम अवश्य उठाए जाओगे। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुम्हें बता दिया जाएगा। यह अल्लाह के लिए सरल है।"

(8) अतः तुम अल्लाह और उसके रसूल पर और उस प्रकाश पर ईमान लाओ जो हमने अवतरित किया है। और अल्लाह उससे अवगत है जो कुछ तुम करते हो।

(9) जिस दिन वह तुम्हें जमाअत के दिन के लिए इकट्ठा करेगा, वही धोखे का दिन है। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे कर्म करे, अल्लाह उसके गुनाहों को मिटा देगा और उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उनमें सदैव रहेगा। यही बड़ी सफलता है।

(10) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग आग में पड़नेवाले हैं, जिसमें वे सदैव रहेंगे। कैसी बुरी नियति है उनकी!

(11) तुमपर कोई मुसीबत नहीं आती, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और जो अल्लाह पर ईमान लाए, अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखा देगा। और अल्लाह सर्वज्ञ है।

(12) अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो। फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो हमारे रसूल पर तो बस स्पष्ट संदेश पहुँचाने का दायित्व है।

(13) अल्लाह! उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(14) ऐ ईमान वालो! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतानों में से कुछ लोग तुम्हारे शत्रु हैं। अतः उनसे बचो। फिर यदि तुम क्षमा कर दो, उपेक्षा करो और क्षमाशील बनो तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

(15) तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान तो बस एक परीक्षा है, अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

(16) अतः जितना हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनो, आज्ञापालन करो और ख़र्च करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है। और जो व्यक्ति अपने लालच से बच जाए वही सफल है।

(17) यदि तुम अल्लाह को अच्छा ऋण दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना कर देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह बड़ा कृतज्ञतापूर्ण, दयावान है।

(18) वह ग़ैब और ज़ाहिर का जाननेवाला, प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

# सूरा 65: ٱلطَّلَاق‎ (Aṭ-Ṭalāq) - तलाक

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ नबी! जब तुम अपनी बीवियों को तलाक दो तो उन्हें उनकी निर्धारित अवधि के बाद तलाक दो और प्रतीक्षा की अवधि का ध्यानपूर्वक हिसाब लगाओ। और अपने रब अल्लाह से डरो। उन्हें उनके घरों से न निकालो और न ही उन्हें बाहर जाने दो, सिवाय इसके कि वे खुलेआम कोई अश्लीलता करें। ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं। और जो कोई अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन करता है, तो वह अपने आप पर अत्याचार करता है। तुम नहीं जानते कि शायद अल्लाह इसके बाद कुछ नया कर दे।

(2) जब वे अपनी अवधि के अन्त को पहुँच जाएँ तो या तो उन्हें उचित रीति से वापस ले लो या उचित रीति से उनसे अलग हो जाओ। और अपने में से दो अच्छे लोगों को गवाह बनाओ और अल्लाह के लिए गवाही दो। यह नसीहत है उसके लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए। और जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह ने उसके लिए एक रास्ता बना दिया है।

(3) और वह उसे वहाँ से रोज़ी देता है जहाँ से वह उम्मीद नहीं करता। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे, उसके लिए वह काफ़ी है। निस्संदेह अल्लाह अपना आदेश पूरा करके ही रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक माप निर्धारित कर रखा है।

(4) और तुम्हारी उन स्त्रियों में से जो मासिक धर्म की आशा न रखती हों, यदि तुम्हें संदेह हो तो उनकी प्रतीक्षा की अवधि तीन महीने है। और जो अभी मासिक धर्म से नहीं गुज़री हों, उनकी प्रतीक्षा की अवधि भी तीन महीने है। और जो गर्भवती हों, उनकी प्रतीक्षा की अवधि तब है जब वे बच्चे को जन्म दें। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए उसका काम आसान कर देता है।

(5) यह अल्लाह का आदेश है, जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसका प्रतिफल बढ़ा देगा।

(6) तुम अपनी हैसियत के हिसाब से उन्हें अपने घर में रहने दो और उन्हें मजबूर करके तकलीफ़ न पहुँचाओ। और अगर वे गर्भवती हों तो जब तक वे बच्चा न दे दें तब तक उनकी देखभाल करो। और अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाती हों तो उन्हें उनकी मज़दूरी दो और आपस में न्यायपूर्वक सलाह-मशविरा करो। लेकिन अगर तुममें आपस में कोई परेशानी हो तो दूसरी औरत उसके लिए दूध पिलाएगी।

(7) जिसके पास साधन हो, वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिसके पास सीमित जीविका हो, वह अल्लाह ने जो दिया है, उसमें से खर्च करे। अल्लाह किसी पर उससे अधिक नहीं थोपता, जो उसने उसे दिया है। अल्लाह कठिनाई के बाद आसानी प्रदान करता है।

(8) और कितनी ही बस्तियों ने अपने रब और उसके रसूलों के आदेश की अवहेलना की, तो हमने उनसे कठोर हिसाब लिया और उन्हें भयंकर यातना दी।

(९) उन्होंने अपने कार्यों के परिणामों को चखा, और उनके कार्यों का अंतिम परिणाम कुल हानि थी।

(10) अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। अतः ऐ समझ वालो, जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह ने तुमपर नसीहत उतार दी है।

(11) एक रसूल जो तुम्हारे सामने अल्लाह की स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाता है, ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले आए। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उसे अल्लाह ऐसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे सदैव रहेंगे। और अल्लाह ने उसे अच्छी जीविका प्रदान की है।

(12) अल्लाह ही है जिसने सात आकाश और उतनी ही धरतीयाँ पैदा कीं। उसका आदेश उनके बीच अवतरित होता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है और अल्लाह हर चीज़ को अपने ज्ञान में घेरे हुए है।

# सूरा 66: **ٱلتَّحْرِيم‎ (अत-तारीम)** - अंतर्विरोध

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ नबी! तुम अपनी पत्नियों को खुश करने के लिए उस चीज़ को हराम क्यों करते हो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है? अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

(2) अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों से मुक्ति का मार्ग निर्धारित कर दिया है। अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है, वह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(3) जब नबी ने अपनी बीवी से कोई राज़ बताया और उसने उसे बता दिया तो अल्लाह ने उसे बता दिया। फिर कुछ राज़ उस पर ज़ाहिर किया और कुछ राज़ छुपाया। जब नबी ने उसे बताया तो वह बोली, "तुम्हें किसने बताया?" उसने कहा, "यह बात जाननेवाले, ख़बर रखनेवाले अल्लाह ने मुझे बताई है।"

(4) यदि तुम दोनों अल्लाह की ओर तौबा कर लो तो अच्छा है, क्योंकि तुम्हारे दिल भटक गए हैं। फिर यदि तुम उसके विरुद्ध एक हो जाओ तो जान लो कि अल्लाह उसका रक्षक है, और जिब्रील और ईमानवालों में से अच्छे लोग और फ़रिश्ते उसके सहायक हैं।

(5) शायद यदि वह तुम्हें तलाक दे दे तो उसका रब उसे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियाँ प्रदान कर दे - जो अल्लाह के आज्ञाकारी हों, ईमानवाले, डर रखनेवाले, तौबा करनेवाले, नमाज़ पढ़नेवाले, रोज़ा रखनेवाले, विवाहित या कुँवारी हों।

(6) ऐ ईमान लानेवालो! अपने आप को और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, और जिसकी रक्षा कठोर और शक्तिशाली फ़रिश्ते करते हैं, जो अल्लाह जो आदेश देता है, उसकी अवज्ञा नहीं करते, बल्कि जो आदेश अल्लाह उन्हें देता है, वही करते हैं।

(7) ऐ इनकार करनेवालो! आज बहाने न ढूँढ़ो, तुम्हें तो बस उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे हो।

(8) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के सामने सच्चे दिल से तौबा कर लो। शायद तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाहों को मिटा दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल कर दे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। जिस दिन अल्लाह नबी और उनके साथ ईमान लानेवालों को ज़लील न करेगा। उनका प्रकाश उनके आगे-आगे और उनके दाएँ भाग में चलेगा। और वे कहेंगे, "हमारे रब! हमारे लिए हमारा प्रकाश पूरा कर दे और हमें क्षमा कर दे। निस्संदेह तू हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।"

(9) ऐ नबी! इनकार करनेवालों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उनके साथ सख़्ती करो। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कितना बुरा ठिकाना है!

(10) अल्लाह ने इनकार करनेवालों के लिए नूह और लूत की पत्नियों की मिसाल बयान की है। उन्होंने हमारे दो नेक बन्दों से विवाह किया था, फिर भी उन्होंने उनके साथ विश्वासघात किया। वे किसी भी तरह से उन्हें अल्लाह से बचा न सकीं। उनसे कहा गया कि "तुम भी दूसरों के साथ आग में प्रवेश करो।"

(11) और अल्लाह ने ईमानवालों के लिए फ़िरऔन की पत्नी की मिसाल बयान की है, जबकि उसने कहा, "ऐ मेरे रब! अपने निकट जन्नत में मेरे लिए एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके कामों से बचा और ज़ालिम लोगों से बचा।"

(12) और इमरान की बेटी मरियम ने अपनी पवित्रता को सुरक्षित रखा, हमने उसमें अपनी रूह फूँकी, तो वह अपने रब की बातों और उसकी किताबों पर ईमान ले आयी और वह नेक लोगों में से थी।

# सूरा 67: **ٱلْمُلْك‎ (अल-मुल्क)** - संप्रभुता

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) बहुत बरकत वाला है वह जिसके हाथ में हुकूमत है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

(2) जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा किया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें कौन अधिक कर्मों में अच्छा है। और वह अत्यन्त क्षमाशील है।

(3) जिसने सात आसमान एक के ऊपर एक बनाए, क्या तुम रहमान की रचना में कोई अंतर नहीं देखते? फिर अपनी नज़र घुमाओ, क्या तुम्हें कोई कमी नज़र आती है?

(4) फिर एक बार देखो: तुम्हारी निगाहें अपमानित और थकी हुई तुम्हारी ओर लौट आएंगी।

(5) हमने निकटवर्ती आकाश को दीपों से सुसज्जित किया और उन्हें शैतानों पर प्रहार करने के लिए निशाना बनाया और उनके लिए भड़कती हुई ज्वाला की यातना तैयार कर रखी है।

(6) और जिन लोगों ने अपने रब को झुठलाया, उनके लिए जहन्नम की यातना है और वह कितना बुरा ठिकाना है!

(7) जब वे उसमें फेंक दिए जाएँगे, तो वे उसके उबलने की दहाड़ सुनेंगे,

(8) क्रोध से लगभग फट जाएगा। जब भी कोई समूह इसमें डाला जाता है, तो इसके रक्षक पूछते हैं: "क्या तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला नहीं आया?"

(9) वे कहेंगे, "हमारे पास एक सचेत करनेवाला आया, किन्तु हमने उसे झुठला दिया और कह दिया कि अल्लाह ने कोई चीज़ अवतरित नहीं की। तुम बड़ी भूल में पड़े हो।"

(10) और वे कहेंगे, "यदि हम सुनते या विचार करते तो हम ज्वाला में पड़नेवालों में न होते।"

(11) इस प्रकार वे अपने पाप स्वीकार कर लेंगे। और जो लोग आग में पड़नेवाले हैं, वे अल्लाह की दया से दूर हैं।

(12) निस्संदेह जो लोग अपने रब से डरते रहेंगे, उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

(13) चाहे तुम अपनी बातें छिपाओ या प्रकट करो, वह तो दिलों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है।

(14) क्या इसको वह नहीं जानता जिसने पैदा किया? और वह अत्यन्त अन्तर्यामी, सर्वज्ञ है।

(15) वही है जिसने धरती को तुम्हारे लिए सुगम बनाया। अतः तुम उसमें चलो-फिरो और उसकी रोज़ी खाओ। उसी की ओर पुनरुत्थान है।

(16) क्या तुम्हें यक़ीन है कि जो आसमान में है, वह धरती को तुम्हारे साथ डुबो नहीं देगा, क्योंकि वह काँप रही है?

(17) या क्या तुम इस बात पर यक़ीन रखते हो कि वह जो आसमान में है, तुमपर पत्थरों की बरसात नहीं करेगा? तब तुम जान लोगे कि मेरी चेतावनी क्या थी!

(18) निश्चय ही झुठलाया है उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे। फिर मुझे क्या ही अप्रिय था!

(19) क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर पंख फैलाते और सिकोड़ते हुए नहीं देखा? उनका कोई सहारा नहीं देता, परन्तु दयावान। वास्तव में वह सबका देखने वाला है।

(20) और कौन है जो तुम्हारा यजमान बनकर तुम्हारी सहायता करे, दयावान के सिवा? इनकार करनेवाले तो बस धोखे में पड़े हुए हैं।

(21) वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? निस्संदेह वे अभिमान और टालमटोल में लगे रहते हैं।

(22) क्या मार्ग पर वह अधिक है जो मुँह के बल नीचे की ओर चलता है, या वह जो सीधे मार्ग पर सीधा चलता है?

(23) कह दो, "वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हें सुनने, देखने और दिल दिए। तुम कितने कम कृतज्ञ हो!"

(24) कह दो, "वही है जिसने तुम्हें धरती में फैलाया है और उसी की ओर तुम एकत्र किये जाओगे।"

(25) और वे कहते हैं, "यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

(26) कह दो, "ज्ञान तो अल्लाह के पास है, मैं तो बस स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ।"

(27) जब वे उस यातना को निकट आते देखेंगे तो झुठलानेवालों के चेहरे उदास हो जायेंगे और कहा जाएगा, "यही है जो तुम माँगते थे।"

(28) कहो, "क्या तुमने विचार किया है? यदि अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को विनष्ट कर दे या हमपर दया करे, तो इनकार करनेवालों को दुखद यातना से कौन बचाएगा?

(29) कह दो, "वह अत्यन्त दयावान है। उसी पर हम ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया। शीघ्र ही तुम जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में पड़ा है।"

(30) कहो, "क्या तुमने सोचा है कि यदि तुम्हारा पानी डूब जाए तो तुम्हें कौन झरने से पानी पिलाएगा?"

# सूरा 68: ٱلْقَلَم‎ (अल-क़लम) - द पेन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) नून: क़लम की और जो कुछ वे लिखते हैं उसकी कसम।

(2) अपने रब की कृपा से, तुम पागल नहीं हो।

(3) निश्चय ही तुम्हारे लिए अनन्त प्रतिफल है।

(4) और निश्चय ही तुम बड़े उत्तम स्वभाववाले हो।

(5) जल्द ही तुम देखोगे, और वे भी देखेंगे,

(6) तुममें से कौन पागलपन से पीड़ित है।

(7) निश्चय ही तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटक गया और वह भली-भाँति जानता है कि कौन सीधे मार्ग पर है।

(८) इनकार करने वालों की बात मत सुनो.

(9) वे चाहते हैं कि आप उनके प्रति उदार रहें, ताकि वे भी आपके प्रति उदार हो सकें।

(10) और किसी भी घटिया कसम खाने वाले की बात न मानो,

(11) निंदक, बदनाम करने वाला जो गपशप फैलाता है,

(12) जो अच्छे काम में बाधा डालता है, अपराधी, पापी,

(13) असभ्य, इसके अलावा, नाजायज जन्म।

(14) चाहे उसके पास धन-संपत्ति और संतान हो,

(15) और जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है, "ये तो पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

(16) हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग लगा देंगे.

(17) हमने उनकी परीक्षा ली, जिस प्रकार हमने बाग़ के मालिकों की परीक्षा ली थी, जब उन्होंने क़समें खाईं कि वे प्रातःकाल उसके फल तोड़ेंगे।

(18) बिना यह कहे कि "यदि अल्लाह चाहेगा।"

(19) फिर तुम्हारे रब की ओर से उसपर एक दुःख आया, जबकि वे सो रहे थे।

(20) और सुबह होते-होते ऐसा हो गया मानो सब कुछ तबाह हो गया हो।

(21) भोर होते ही वे एक दूसरे को पुकारने लगे:

(22) "यदि तुम कटाई करना चाहते हो, तो जल्दी से अपनी फसलों के पास जाओ।"

(23) सो वे आपस में कानाफूसी करते हुए चल पड़े:

(24) "आज किसी गरीब को प्रवेश न करने दें।"

(25) और वे अपने इरादे पर दृढ़ होकर चल पड़े।

(26) किन्तु जब उन्होंने उसे देखा तो कहा, "हम अवश्य ही गलत रास्ते पर चले गये हैं!"

(27) "नहीं, इसके विपरीत, हमें हर चीज से वंचित कर दिया गया है!"

(28) उनमें से सबसे अधिक डर रखनेवाले ने कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम अल्लाह की प्रशंसा क्यों नहीं करते?"

(29) उन्होंने कहा, "पवित्र है हमारा रब! निश्चय ही हम अत्याचारी थे।"

(30) तब वे एक दूसरे की ओर फिरे और एक दूसरे को डाँटने लगे।

(31) उन्होंने कहा, "हाय हम पर! हम तो बड़े अत्याचारी थे।

(32) शायद हमारा रब हमें इसके बदले में कुछ बेहतर दे। निस्संदेह हम अपने रब से क्षमा चाहते हैं।

(33) और इसी प्रकार यातना है, और आख़िरत की यातना तो और भी बड़ी है, यदि वे जानें।

(34) निश्चय ही डर रखनेवालों के लिए उनके पालनहार के पास आनन्ददायी स्वर्ग हैं।

(३५) क्या हमें आज्ञाकारी लोगों को दुष्ट मानना चाहिए?

(36) तुम्हें क्या हो गया है? तुम क्या सोचते हो?

(37) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिससे तुम पढ़ते हो?

(38) जो आपको गारंटी देता है कि आप क्या चुनते हैं?

(39) क्या तुमने हम पर क़ियामत तक के लिए क़समें बाँध रखी हैं, जो तुम चाहते हो, तुम्हारे लिए वाजिब हैं?

(40) उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसकी गारंटी दे सकता है।

(41) या उनके कोई साझीदार हैं? यदि वे सच्चे हैं तो उन्हें चाहिए कि वे अपने साझीदार ले आएं।

(42) क़यामत के दिन जब स्थिति की गंभीरता पूरी तरह प्रकट हो जाएगी, तो लोगों से कहा जाएगा कि वे अल्लाह के सामने सजदा करें, किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, वे ऐसा न कर सकेंगे।

(43) वे अपनी निगाहें नीची करके अपमान से आच्छादित हो जायेंगे, जबकि उन्हें सजदा करने के लिए बुलाया गया था, जबकि वे स्वस्थ थे।

(44) मुझे छोड़ दो उन लोगों के साथ जिन्होंने इस बात को झुठलाया, हम उन्हें धीरे-धीरे वहाँ से ले चलेंगे जहाँ से उन्हें पता भी नहीं।

(45) मैं उन्हें अवश्य ही मोहलत दूँगा। निस्संदेह मेरी योजना दृढ़ है।

(46) उनसे पूछो, "क्या तुम इसलिए शुल्क मांगते हो कि उनपर कर्ज का बोझ बढ़ जाए?"

(47) क्या वे परोक्ष का ज्ञान रखते हैं, फिर लिख रहे हैं?

(48) अपने रब के फ़ैसले के लिए धैर्य रखो और मछलीवाले (युनाह) के समान न बनो, जब उसने दुःखी होकर हमें पुकारा।

(49) यदि उसके पालनहार की ओर से कोई वरदान न होता तो वह दोषी ठहरा हुआ, नंगे किनारे पर फेंक दिया जाता।

(50) किन्तु उसके रब ने उसे चुन लिया और उसे नेक लोगों में से बना दिया।

(51) निश्चय ही इनकार करनेवाले लोग जब अनुस्मृति सुनते हैं, तो वे अपनी निगाहों से तुम्हें छेद डालते हैं और कहते हैं, "वह तो पागल है।"

(52) किन्तु यह तो समस्त संसार के लिए एक चेतावनी के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

# सूरा 69: **ٱلْحَاقَّة‎ (अल-हक्काह)** - अपरिहार्य

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अपरिहार्य!

(2) अपरिहार्य क्या है?

(3) और तुम्हें क्या समझाएगा कि अपरिहार्य क्या है?

(4) समूद और आद ने अवश्य को झुठलाया।

(5) रहे समूद, वे तो भयंकर गरज से विनष्ट हो गये।

(6) जहाँ तक 'आद' का प्रश्न है, वे एक ठण्डी और प्रचण्ड हवा से नष्ट हो गये।

(7) जिसे अल्लाह ने उनपर लगातार सात रात और आठ दिन तक बरसाया, फिर तुम उन लोगों को खजूर के खोखले तनों की तरह गिरा हुआ देखते थे।

(८) क्या आपको कोई बचा हुआ दिख रहा है?

(9) फ़िरौन और उसके पहले रहने वालों और जिन शहरों को उसने तबाह किया, उन्होंने भी पाप किए।

(10) उन्होंने अपने रब के रसूल की अवज्ञा की, तो उसने उन्हें कठोर पकड़ लिया।

(11) जब पानी उमड़ पड़ा तो हमने तुम्हें नाव पर बिठाया।

(12) ताकि वह तुम्हारे लिए चेतावनी बन जाए, ताकि कान उसे याद रखें।

(13) जब एक बार भोंपू बजाया जाता है,

(14) और धरती और पहाड़ एक ही झटके से उठकर चूर-चूर हो जायेंगे।

(15) तो घटना घटित होगी.

(16) आकाश फट जायेगा, उस दिन वह बहुत कमज़ोर हो जायेगा।

(17) फ़रिश्ते उसके दोनों ओर होंगे और उनमें से आठ उस दिन तुम्हारे रब का सिंहासन अपने ऊपर उठाए होंगे।

(18) उस दिन तुम उजागर हो जाओगे और जो कुछ तुम करोगे उसमें से कुछ भी छिपा न रहेगा।

(19) और जो अपनी पुस्तक अपने दाहिने हाथ में लेगा, वह कहेगा, 'लो, मेरी पुस्तक पढ़ो!

(20) मुझे पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पूरा करूंगा।

(21) वह सुखद जीवन जीएगा,

(22) एक ऊँचे बाग़ में,

(23) जिनके फल पहुँच में हैं।

(24) "जो कुछ तूने बीते दिनों में भेजा है, उसके कारण आनन्द से खाओ और पियो।"

(25) और जो व्यक्ति अपनी पुस्तक बाएँ हाथ से ग्रहण करेगा, वह कहेगा कि काश! मेरी पुस्तक मुझे न दी जाती।

(26) और मुझे अपना हिसाब मालूम नहीं था!

(27) ओह, काश यह अंतिम अंत होता!

(28) मेरी सम्पत्ति से मुझे कोई लाभ नहीं हुआ,

(29) मेरी शक्ति मुझसे दूर हो गई है।

(30) “उसे पकड़ो और जंजीरों में जकड़ दो,

(31) फिर उसे भड़कती हुई आग में जला दो,

(३२) फिर उसे सत्तर हाथ लम्बी ज़ंजीर में डालो।

(33) निश्चय ही वह अल्लाह पर ईमान नहीं लाया, जो महान है।

(34) न ही उन्होंने गरीबों को भोजन कराने को प्रोत्साहित किया।

(३५) इसलिए आज यहाँ उसका कोई समर्पित मित्र नहीं है,

(36) न ही मवाद के अलावा कोई अन्य भोजन,

(37) जिसे पापियों के अलावा कोई नहीं खाएगा।

(38) लेकिन नहीं! मैं जो देख रहा हूँ उसकी कसम खाता हूँ

(39) और जो तुम नहीं देखते उसपर भी:

(40) निश्चय ही ये एक महान रसूल की वाणी है।

(४१) और यह किसी कवि का शब्द नहीं है; जो तुम मानते हो वह थोड़ा है।

(42) और न यह किसी भविष्यवक्ता का वचन है, इसमें तुम बहुत कम सोच-विचार करते हो।

(43) यह समस्त संसार के पालनहार की ओर से अवतरित हुई है।

(44) और यदि उसने हमपर कोई झूठी बात थोपी हो,

(45) हम उसे बलपूर्वक पकड़ लेते,

(46) तो हम उसकी महाधमनी काट देते,

(47) और तुममें से कोई भी इसे रोक नहीं सकता था।

(48) निस्संदेह, यह भक्तों के लिए एक चेतावनी है।

(49) और हम जानते हैं कि तुममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने झुठलाया।

(50) निश्चय ही यह इनकार करनेवालों के लिए खेद की बात है।

(51) और वास्तव में, यह पूर्ण सत्य है।

(52) अतः अपने सर्वोच्च पालनहार के नाम की महिमा का बखान करो।

# सूरा 70: **ٱلْمَعَارِج‎ (अल-मारिज)** - स्वर्गारोहण के तरीके

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) आवेदक ने अपरिहार्य दण्ड की मांग की

(2) उन इनकार करनेवालों के लिए, जिन्हें कोई पीछे नहीं हटा सकेगा,

(3) अल्लाह की ओर से, जो चढ़ने के मार्गों का रब है।

(4) फ़रिश्ते और रूह उसके पास चढ़ते हैं एक दिन में जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष है।

(5) इसलिए सुन्दर धैर्य के साथ धैर्य रखें।

(6) निश्चय ही वे उसे बहुत दूर से देख रहे हैं।

(7) किन्तु हम उसे निकट ही देखते हैं।

(8) जिस दिन आकाश पिघली हुई धातु के समान हो जायेगा,

(9) और पहाड़ फटे हुए ऊन के समान हो जायेंगे,

(10) और कोई घनिष्ठ मित्र दूसरे के विषय में नहीं पूछेगा,

(11) यदि वे एक दूसरे को देख भी लें, तो अपराधी चाहेगा कि काश, वह अपनी सन्तान सहित उस दिन की यातना से बच जाता।

(12) और उसका साथी और उसका भाई,

(13) और उसके कुल के लोगों ने भी उसे शरण दी,

(14) और पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों को, अपने आप को बचाने के लिए।

(15) नहीं, वास्तव में, यह एक जलती हुई ज्वाला है।

(16) जो सिर की त्वचा को नोच लेता है,

(17) जो पीठ फेरकर चले जानेवाले को पुकारता है,

(18) और उसने [धन] इकट्ठा किया और रखा।

(19) निःसंदेह मनुष्य को अधीर बनाया गया है।

(20) जब कोई विपत्ति उस पर पड़ती है, तो वह चिन्तित हो जाता है,

(21) और जब भलाई उसको छूती है तो वह लोभी हो जाता है,

(22) परन्तु नमाज़ पढ़ने वालों को छोड़कर,

(23) जो नमाज़ में नित्य लगे रहते हैं,

(24) और वे लोग जिनका उनके धन में हिस्सा निर्धारित है

(25) भिखारियों और जरूरतमंदों के लिए,

(26) और जो लोग क़ियामत के दिन पर ईमान लाए,

(27) और जो लोग अपने रब की यातना से डरते हैं,

(28) निस्संदेह उनके रब की यातना ऐसी नहीं जिससे वे सुरक्षित रह सकें।

(29) और जो लोग अपनी पवित्रता की रक्षा करते हैं,

(30) परन्तु अपनी स्त्रियों के विषय में, या अपने दाहिने हाथ की सम्पत्ति के विषय में, क्योंकि इसमें वे दोषी नहीं हैं।

(31) फिर जो लोग इससे आगे की इच्छा रखते हैं, वही लोग उल्लंघनकारी हैं।

(32) और जो लोग अपनी प्रतिबद्धताओं और वादों को निभाते हैं,

(33) और जो लोग सत्य की गवाही देते हैं,

(34) और जो नमाज़ का पाबंद हैं।

(35) वे स्वर्ग में सम्मान प्राप्त करेंगे।

(36) फिर इनकार करनेवालों को क्या हो गया कि वे तुम्हारे पास जल्दी करते हैं?

(37) दाएं और बाएं से, समूहों में?

(38) क्या उनमें से प्रत्येक प्रसन्नता के स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है?

(39) बल्कि हमने उन्हें उसी चीज़ से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।

(40) मैं पूर्व और पश्चिम के रब की क़सम खाता हूँ कि हम अवश्य ही इस पर सक्षम हैं।

(४१) हम उनके स्थान पर उनसे बेहतर लोगों को लाएंगे, और कोई भी हमें रोक नहीं सकेगा।

(42) अतः छोड़ दो उन्हें कि वे व्यर्थ की बातें करें और आनंद मनाएँ, यहाँ तक कि वे उस दिन से मिलें जिसका उनसे वादा किया गया है।

(43) जिस दिन वे अपनी क़ब्रों से जल्दी-जल्दी निकलेंगे, मानो किसी लक्ष्य की ओर दौड़ रहे हों,

(44) झुकी हुई आँखों से, अपमानित होकर। यही वह दिन है जिसका उनसे वादा किया गया था।

# सूरा 71: **نُوح‎ (Nūḥ)** – नूह

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा कि "अपनी क़ौम को डरा दो इससे पहले कि उनपर दुखद यातना आ जाए।"

(2) उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए स्पष्ट चेतावनी देनेवाला हूँ।

(3) अल्लाह की इबादत करो, उससे डरो और मेरी आज्ञा मानो।

(4) ताकि वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और तुम्हें एक निश्चित अवधि तक मुहलत दे। निश्चय ही जब अल्लाह की निर्धारित अवधि आ जाएगी तो उसे टाला नहीं जा सकता, यदि तुम जानते होते।

(5) उसने कहा, "ऐ मेरे रब! मैं अपनी क़ौम को रात-दिन पुकारता रहा हूँ।

(6) लेकिन मेरी अपील ने उन्हें और भी अधिक भागने पर मजबूर कर दिया।

(7) जब कभी मैं उनको क्षमा के लिए पुकारता तो वे अपनी उँगलियों से अपने कान ढक लेते, अपने वस्त्रों से अपने को ढक लेते, हठ करते और अत्यन्त अहंकारी हो जाते।

(8) तब मैंने उन्हें खुलेआम बुलाया,

(9) और मैंने उनसे सार्वजनिक और निजी दोनों मौकों पर बात की।

(10) और मैंने कहा, "अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह, वह अत्यन्त क्षमाशील है।"

(11) वह तुम्हारे ऊपर आकाश से प्रचुर वर्षा बरसाएगा।

(12) और वह तुम्हें माल और संतान देगा और वह तुम्हें बाग़ देगा और नहरें पिलाएगा।

(13) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह को उसकी महानता नहीं बताते?

(14) जबकि उसने तुम्हें क्रमशः पैदा किया है?

(15) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने सात आकाश बनाए हैं।

(16) और उन्हें प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा दिया और सूर्य को प्रकाश देनेवाला दीपक बनाया?

(17) और अल्लाह ने तुमको धरती से पौधों की तरह उगाया।

(18) फिर वह तुम्हें उसी ओर लौटाएगा और फिर बाहर भी ले आएगा।

(19) और अल्लाह ने धरती को तुम्हारे लिए कालीन की भाँति बिछाया है।

(20) ताकि तुम उस पर चौड़े रास्ते चल सको।”

(21) नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरी अवज्ञा की और उन लोगों का अनुसरण किया जिनके माल और संतान उनके लिए हानि ही बढ़ाते हैं।

(22) और उन्होंने एक बड़ी साजिश रची।

(23) और उन्होंने कहा: 'अपने देवताओं को मत छोड़ो; न वद्द को छोड़ो, न सुवा को, न यगूत को, न याकूब को, न नस्र को।' [**1**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-1)

(24) और उन्होंने बहुतों को गुमराह कर दिया है। और हे प्रभु, अत्याचारियों को उनके गुमराह होने के अलावा और कुछ न बढ़ा।

(25) वे अपने पापों के कारण डूबे और नरक में डाले गये, और उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक न पाया।

(26) और नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब! धरती पर किसी इनकार करनेवाले को न छोड़।

(27) क्योंकि यदि तू उन्हें छोड़ दे तो वे तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और कृतघ्न पापियों को जन्म देंगे।

(28) ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और जो कोई ईमानवाला होकर मेरे घर में आए और ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, उसे क्षमा कर दे। और ज़ालिमों को और अधिक न बढ़ा, परन्तु विनाश ही कर।

# सूरा 72: **ٱلْجِنّ‎ (अल-जिन्न)** - जिन्न

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कह दो, "मुझ पर वह्यी हुई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने यह क़ुरआन सुना तो कहने लगे, "हमने एक अद्भुत क़िराअत सुनी है।

(2) जो हमें सदाचार की ओर मार्ग दिखाता है और हम उसपर ईमान लाए हैं और हम अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराते।

(3) और (हमने समझ लिया है कि) हमारे रब ने न कोई पत्नी बनाई है और न कोई बेटा।

(4) और यह कि हममें से कुछ लोग मूर्ख थे और उन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला।

(5) और हमने समझ लिया था कि न तो कोई मनुष्य और न कोई जिन्न अल्लाह पर झूठ बोल सकता है।

(6) और यह कि कुछ लोगों ने कुछ जिन्नों से शरण ली, तो इससे उनका अहंकार और बढ़ गया।

(7) और उन्होंने भी, जैसा कि तुम समझते हो, यह समझा कि अल्लाह किसी को जीवित नहीं करेगा।

(8) और हमने आकाश तक पहुँचने का प्रयास किया, किन्तु हमने उसे शक्तिशाली रक्षकों और अग्निमय उल्काओं से भरा हुआ पाया।

(9) और पहले हम सुनने के लिए स्टेशनों पर बैठते थे; लेकिन अब जो कोई भी सुनने की कोशिश करता है, उसे एक उल्कापिंड छिपा हुआ मिलता है।

(10) और हम नहीं जानते कि जो लोग धरती में हैं उनके लिए बुराई नियत की गई है या उनका रब उनके लिए सीधी राह नियत करता है।

(11) हममें से कुछ लोग धर्मी हैं और कुछ लोग धर्मी नहीं हैं; हम अलग-अलग रास्तों पर थे।

(12) और हम जानते हैं कि हम धरती पर अल्लाह से कभी नहीं बच सकते और न भागकर उसकी पकड़ से बच सकते हैं।

(13) और जब हमने मार्गदर्शन सुना तो उसपर ईमान ले आये और जो कोई अपने रब पर ईमान लाया, वह न तो किसी कमी से डरता है और न किसी अन्याय से।

(14) और हम ही में से कुछ लोग आज्ञाकारी भी हैं और कुछ लोग अवज्ञाकारी भी हैं। और जो आज्ञाकारी हो गया, उसने सीधा मार्ग चुन लिया।

(15) किन्तु जो लोग पथभ्रष्ट हैं, वे नरक का ईंधन बनेंगे।

(16) और यदि वे सीधे मार्ग पर चलते तो हम उन्हें पीने के लिए पानी अवश्य प्रदान करते।

(17) ताकि इसके द्वारा उन्हें आज़माया जाए और जो व्यक्ति अपने रब की याद से मुँह मोड़ेगा, उसे वह कठोर यातना की ओर ले जाएगा।

(18) और मस्जिदें अल्लाह की हैं। अतः तुम अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।

(19) और जब अल्लाह का बन्दा उसको पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो वे उसपर झपटने ही वाले थे।

(20) कह दो, "मैं तो केवल अपने रब को पुकारता हूँ और उसका साझी नहीं बनाता।"

(21) कह दो, "मुझे तुमपर कोई अधिकार नहीं कि मैं तुम्हें कोई हानि पहुँचाऊँ और न तुम्हें सन्मार्ग की ओर मार्ग दिखाऊँ।"

(22) कह दो, "अल्लाह से मुझे बचानेवाला कोई नहीं और न मैं उसके सिवा कहीं शरण पा सकता हूँ।"

(23) मेरा काम तो बस अल्लाह का संदेश और उसका आदेश पहुँचाना है। और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा, उसके लिए जहन्नम की आग होगी, जिसमें वह सदैव रहेगा।

(24) जब वे देखेंगे कि उन्हें किस बात से सावधान किया गया है, तो वे जान लेंगे कि किसकी सहायता सबसे कमज़ोर है और किसकी संख्या कम है।

(25) कह दो, "मैं नहीं जानता कि जिस बात का तुमको डराया जा रहा है, वह निकट है या मेरे रब ने उसके लिए कोई लम्बी अवधि निर्धारित कर दी है।"

(26) वह परोक्ष का जाननेवाला है, वह अपनी गुप्त बातें किसी पर नहीं खोलता।

(27) परन्तु वह रसूल जिससे वह प्रसन्न हो जाए, तो उसके आगे और पीछे रक्षक फ़रिश्ते भेजता है।

(28) ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने रब का संदेश पहुँचा दिया है। और वह उन सब को घेरे हुए है जो उनके पास है और हर चीज़ का हिसाब रखता है।

# सूरा 73: **ٱلْمُزَّمِّل‎ (अल-मुजम्मिल)** - लबादे में लिपटा हुआ व्यक्ति

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ तुम जो [अपने वस्त्रों में] लिपटे हो,

(2) रात में उठो, सिवाय थोड़े से समय के,

(3) आधा कर दें, या थोड़ा कम कर दें,

(4) या कुछ और जोड़ो और शांति और सोच-समझकर कुरान पढ़ो।

(5) निश्चय ही हम तुम्हारे ऊपर एक भारी बात थोपने जा रहे हैं।

(6) वास्तव में, रात्रि जागरण आत्मा को वश में करने के लिए अधिक प्रभावी है तथा भजन के लिए अधिक अनुकूल है।

(7) दिन भर आप कई कामों में व्यस्त रहते हैं।

(8) अपने रब का नाम याद करो और पूरी तरह से उसी पर समर्पित हो जाओ।

(9) वह पूर्व और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अतः उसी को अपना संरक्षक बना लो।

(10) धैर्यपूर्वक उनके साथ रहो और उनसे धीरे से विदा लो।

(11) मैं उन इनकार करनेवालों से निपट लूँ जो भोग विलास में जीवन बिताते हैं, और उन्हें थोड़ी सी अवधि प्रदान कर दूँ।

(12) निश्चय ही हमारे पास भारी ज़ंजीरें और भड़कती हुई आग है।

(13) घुटन भरा भोजन और कष्टदायक दण्ड,

(14) जिस दिन धरती और पहाड़ हिल जायेंगे और पहाड़ बिखरी हुई रेत के ढेर बन जायेंगे।

(15) हमने तुम्हारे पास एक रसूल भेजा है जो तुम्हारा गवाह है, जिस प्रकार हमने फ़िरऔन के पास एक रसूल भेजा था।

(16) किन्तु फ़िरऔन ने रसूल की अवज्ञा की, तो हमने उसे कठोर यातना दी।

(17) यदि तुम इनकार ही करते रहे तो उस दिन से कैसे बचोगे, जब बच्चे बूढ़े हो जायेंगे?

(18) उसके कारण आकाश फट जायेगा; उसका वचन अवश्य पूरा होगा।

(19) निस्संदेह ये एक अनुस्मरण है। अतः जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग अपना ले।

(20) तुम्हारा रब जानता है कि तुम रात के लगभग दो-तिहाई भाग, या आधे भाग, या एक तिहाई भाग तक जागते रहते हो और तुम्हारे कुछ साथी भी ऐसा ही करते हैं। अल्लाह रात और दिन का निर्धारण करता है। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ नहीं पढ़ सकते, अतः उसने तुम्हें क्षमा कर दिया। अतः क़ुरआन से वह पढ़ो जो तुम्हारे लिए आसान हो। वह जानता है कि तुममें बीमार लोग भी हैं और वे लोग भी हैं जो अल्लाह की कृपा की खोज में धरती पर चलते-फिरते हैं और वे लोग भी हैं जो अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं। अतः उसमें से वह पढ़ो जो तुम्हारे लिए आसान हो। और नमाज़ अदा करो और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा ऋण दो। जो कुछ भी तुमने अपने लिए अच्छा किया है, उसे अल्लाह के यहाँ बेहतर और बड़ा प्रतिफल पाओगे। और अल्लाह से क्षमा मांगो। निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील, दयावान है।

# सूरा 74: ٱلْمُدَّثِّر‎ (अल-मुद्दथिर) - द कवर्ड

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) ऐ तुम जो लबादे में लिपटे हो,

(2) उठो और [दूसरों को] चेतावनी दो,

(3) और अपने रब की तसबीह बयान करो,

(4) और अपने वस्त्रों को शुद्ध करो,

(5) और अशुद्धता से दूर रहो,

(6) और अधिक पाने की आशा में मत दो,

(7) और अपने रब के लिए धैर्य से काम लो।

(८) जब तुरही बजाई जाती है,

(9) वह एक कठिन दिन होगा,

(10) और इनकार करनेवालों के लिए तो यह बिलकुल भी आसान नहीं है।

(११) जिसे मैंने स्वयं बनाया है, उसकी देखभाल मुझे करने दो,

(12) जिन्हें मैंने अपार धन-संपत्ति दी है,

(13) और बच्चे जो हमेशा उसके साथ रहते हैं,

(14) और जिसके लिये मैंने सब कुछ स्पष्ट कर दिया है,

(15) और अभी भी चाहता है कि मैं उसे और अधिक दूं.

(16) बल्कि उसने तो हमारी आयतों का विरोध किया।

(17) मैं उसे कठिन चढ़ाई के लिए मजबूर करूंगा.

(18) सचमुच, उसने विचार किया और एक योजना बनाई।

(19) वह नष्ट हो जाये, जैसी उसने योजना बनायी है!

(20) हाँ, वह नष्ट हो जाये जैसा उसने योजना बनाई है!

(21) फिर उसने देखा,

(22) वह भौंचक्का होकर मुंह बनाने लगा,

(23) फिर वह अहंकार से पीछे मुड़ा,

(24) और कहा: "यह कुछ भी नहीं है, बस एक जादू है।

(25) यह तो मनुष्य का वचन मात्र है।

(26) मैं उसे सक़र में दाखिल करूँगा [**1**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-1) .

(27) और तुम क्या समझोगे कि सक़र क्या है?

(28) वह कुछ नहीं छोड़ता और कुछ नहीं छोड़ता,

(29) त्वचा जल जाती है.

(30) उसपर उन्नीस संरक्षक हैं।

(31) हमने केवल फ़रिश्तों को आग का रक्षक बनाया है और हमने उनकी संख्या केवल इनकार करनेवालों के लिए एक प्रमाण के रूप में निर्धारित की है, ताकि जिन्हें किताब दी गई है वे निश्चिंत हो जाएँ और ताकि ईमानवालों का ईमान बढ़ जाए और ताकि जिन्हें किताब दी गई है और ईमानवाले संदेह न करें और ताकि बीमार लोगों के दिल, इनकार करनेवालों की तरह, कहें कि "इस उदाहरण से अल्लाह क्या चाहता है?" इस प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है। तुम्हारे रब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता। और यह तो बस लोगों के लिए एक नसीहत है।

(32) नहीं! चाँद की कसम!

(33) और उस रात के लिए जब वह सो जाए,

(34) और प्रातःकाल की, जब वह उदय हो,

(35) निस्संदेह ये बड़ी निशानियों में से है।

(36) मानवता के लिए एक चेतावनी,

(37) तुममें से जो कोई आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे।

(38) हर आत्मा अपने किये की ज़िम्मेदार है,

(39) दाईं ओर वालों को छोड़कर [**2**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-2) ,

(40) जो जन्नतों में होंगे और आश्चर्य चकित होंगे।

(41) दोषियों का:

(४२) "तुम्हें सक़र में क्या लाया?"

(43) वे कहेंगे, "हम नमाज़ पढ़नेवालों में से नहीं थे।

(44) और न हमने मुहताजों को खाना खिलाया,

(45) और हमने उनसे बातें करने वालों से व्यर्थ की बातें कीं।

(46) और हमने क़ियामत के दिन को झुठला दिया।

(47) यहाँ तक कि मृत्यु का निश्चय हमारे पास न आ गया।

(48) अतः सिफ़ारिश करनेवालों की सिफ़ारिश उन्हें कोई लाभ न पहुँचाएगी।

(49) फिर उन्हें क्या हो गया कि वे अनुस्मृति से मुँह मोड़ रहे हैं?

(५०) भयभीत गधों की तरह,

(51) शेर से भागना?

(52) उनमें से प्रत्येक यह चाहता है कि उसे (आकाश से) खुली हुई कागज़ें दी जाएँ।

(53) कदापि नहीं, वे आख़िरत से नहीं डरते।

(54) बल्कि ये तो एक नसीहत है।

(55) जो कोई चाहे, उसे सचेत हो जाना चाहिए।

(56) किन्तु वे ऐसा नहीं करेंगे, जब तक अल्लाह न चाहे। वह डरने योग्य, क्षमाशील है।

# सूरा 75: **ٱلْقِيَامَة‎ (अल-कियामह)** - पुनरुत्थान

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ,

(2) और मैं उस आत्मा की शपथ लेता हूं जो स्वयं को धिक्कारती है।

(३) क्या मनुष्य यह सोचता है कि हम उसकी हड्डियाँ एकत्र नहीं करेंगे?

(4) बिलकुल, हाँ! हम इसके फालंजेस को फिर से बनाने में भी सक्षम हैं।

(५) परन्तु मनुष्य पाप करते रहना पसंद करता है।

(6) वह पूछता है: "यह पुनरुत्थान का दिन कब होगा?"

(7) किन्तु जब आँखे चौंधिया जाती हैं,

(8) और चाँद अंधकारमय हो जाएगा,

(9) और सूर्य और चंद्रमा फिर से एक हो जायेंगे,

(10) उस दिन मनुष्य कहेगा: "मैं कहाँ भाग जाऊँ?"

(11) नहीं! कोई शरण नहीं मिलेगी।

(12) उस दिन लौटना तो तुम्हारे रब की ओर ही होगा।

(13) मनुष्य को यह जानकारी दी जाएगी कि उसने क्या पूर्वानुमान लगाया है और क्या स्थगित किया है।

(14) निश्चय ही मनुष्य अपने विरुद्ध स्वयं ही साक्षी होगा।

(15) भले ही वह माफ़ी मांग ले.

(16) तुम इस [क़ुरआन] को पढ़ने में जल्दी न करो।

(17) निश्चय ही उसे एकत्र करना और पढ़ना हमारा ही काम है।

(18) अतः जब हम इसे पढ़ें तो ध्यानपूर्वक इसका अनुसरण करें।

(19) फिर, अब हमें ही इसकी व्याख्या करनी है।

(20) नहीं! लेकिन जो तुरन्त मिलता है, उससे प्रेम करो,

(21) और आख़िरत को नज़रअंदाज़ करो।

(22) उस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे,

(23) वे अपने रब की ओर देख रहे हैं।

(24) और उस दिन दूसरे चेहरे स्याह हो जायेंगे,

(25) अपने ऊपर आने वाली विपत्ति को पहले से ही देखकर।

(26) नहीं! जब आत्मा गले तक पहुँचती है,

(27) और कहा गया है कि "कौन शिफ़ा दे सकता है?"

(28) और समझता है कि अब अलग होने का समय आ गया है,

(29) और पैर दूसरे पैर के साथ उलझा हुआ है,

(30) उस दिन तो लौटना ही है तुम्हारे रब की ओर।

(31) क्योंकि उसने न तो विश्वास किया और न प्रार्थना की,

(32) बल्कि इनकार कर दिया और दूर कर दिया.

(33) फिर वह अपनी क़ौम के पास घमण्ड से गया।

(34) हाय तुझ पर, हाय तुझ पर!

(35) और फिर, हाय तुम पर, हाय तुम पर!

(36) क्या मनुष्य यह सोचता है कि वह उद्देश्यहीन रह गया है?

(३७) क्या वह स्खलित वीर्य की एक बूँद नहीं थी?

(38) फिर वह ख़ून का थक्का बन गया, फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसका रूप बनाया।

(39) और उन्हें एक जोड़ा बनाया, नर और मादा।

(40) क्या वह मरे हुओं को जिलाने में समर्थ नहीं है?

# सूरा 76: ٱلْإِنْسَان‎ (अल-इन्सान) - द मैन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क्या मनुष्य के लिए ऐसा समय नहीं बीता जब वह उल्लेख करने लायक भी नहीं था?

(2) हमने मनुष्य को उसकी परीक्षा लेने के लिए मिश्रित द्रव की बूंद से पैदा किया और उसे सुनने और देखने की शक्ति प्रदान की।

(3) हमने उसे मार्ग दिखा दिया है, चाहे वह कृतज्ञ हो या कृतघ्न।

(4) निश्चय ही हमने इनकार करनेवालों के लिए ज़ंजीरें और बेड़ियाँ और भड़कती हुई ज्वाला तैयार कर रखी है।

(5) निश्चय ही धर्मी लोग उस प्याले से पीएंगे जिसमें कपूर मिला हुआ होगा,

(6) एक स्रोत जिससे अल्लाह के बन्दे पीयेंगे और वह भरपूर बहेगा।

(7) वे अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जब बुराई सर्वत्र फैल जायेगी।

(8) और वे अल्लाह के लिए मिस्कीनों, अनाथों और बन्दियों को खाना खिलाते हैं।

(9) हम तुम्हें केवल अल्लाह के लिए खिलाते हैं, हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं और न कोई कृतज्ञता।

(10) हम अपने रब की ओर से एक अंधकारपूर्ण और कष्टदायक दिन का भय रखते हैं।

(11) अतः अल्लाह उन्हें उस दिन की बुराई से बचाएगा और उन्हें वैभव और आनन्द प्रदान करेगा।

(12) और वह उन्हें उनके धैर्य के बदले जन्नत और रेशमी वस्त्र प्रदान करेगा।

(13) वहाँ ऊँचे बिस्तरों पर लेटे हुए वे न तो तपती धूप देखेंगे और न ही कड़ाके की ठण्ड।

(14) और उसकी छायाएँ उनपर निकट होंगी और उसके गुच्छे इतने नीचे होंगे कि उन्हें आसानी से तोड़ा जा सकेगा।

(15) और उन्हें चाँदी के बर्तन और क्रिस्टल के कटोरे दिए जाएँगे,

(16) चांदी के क्रिस्टल कप, जिन्हें उन्होंने सटीक रूप से मापा होगा।

(17) और उन्हें एक प्याले में से पानी दिया जाएगा जिसमें अदरक मिला होगा,

(18) साल्साबिल नामक झरने से.

(19) और उनके चारों ओर सदा जवान सेवक होंगे; जब तुम उन्हें देखोगे, तो उन्हें बिखरे हुए मोतियों के समान समझोगे।

(20) और जब तुम देखोगे तो वहाँ धन्यता और विशाल राज्य देखोगे।

(21) उन्हें हरे रेशमी वस्त्र और जरी पहनाई जाएगी और चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें शुद्ध पेय पिलाएगा।

(22) "और उनसे कहा जाएगा," यही तुम्हारा प्रतिफल है और तुम्हारा परिश्रम प्रशंसनीय है।"

(23) हमने यह क़ुरआन तुम्हारी ओर क्रमशः अवतरित किया है।

(24) अतः अपने रब के आदेश पर धैर्य से काम लो और उनमें से किसी पापी या अविश्वासी की बात न मानो।

(25) और प्रातःकाल तथा सूर्यास्त के समय अपने रब का नाम लिया करो।

(26) और रात में उसी के सामने सजदा करो और रात के लम्बे समय तक उसकी तसबीह करते रहो।

(27) निश्चय ही वे क्षणभंगुर जीवन को पसन्द करते हैं और उस दुःखदायी दिन की उपेक्षा करते हैं जो उनके सामने आनेवाला है।

(28) हमने उनको पैदा किया और उनकी संरचना को सुदृढ़ बनाया और जब चाहते हैं तो उनकी जगह उनके जैसे दूसरे लोगों को रख देते हैं।

(29) निस्संदेह ये एक चेतावनी है, अतः जो चाहे अपने रब की ओर मार्ग अपना ले।

(30) किन्तु तुम कुछ नहीं चाहोगे, परन्तु अल्लाह ही चाहेगा। निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

(31) वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में प्रवेश देता है, किन्तु अत्याचारियों के लिए उसने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

# सूरा 77: ٱلْمُرْسَلَات‎ (अल-मुर्सलात) - दूत

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो लोग उत्तराधिकार में भेजे जाते हैं,

(2) और जो जोर से फूँकते हैं,

(3) और जिन्होंने सत्य को व्यापक रूप से फैलाया,

(4) और जो स्पष्ट रूप से [सत्य को असत्य से] अलग करते हैं,

(5) और जो अल्लाह का ज़िक्र करते हैं,

(6) बरी करना या चेतावनी देना,

(7) निश्चय ही वह घटित होगा जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है।

(८) जब तारे निकल आते हैं,

(9) और जब आकाश खुल जायेगा,

(10) और जब पहाड़ बिखर जायेंगे,

(11) और जब रसूलों का समय निश्चित हो जायेगा,

(12) इन्हें किस दिन के लिए स्थगित किया गया?

(13) फ़ैसले के दिन के लिए.

(14) और तुम क्या समझोगे कि निर्णय का दिन कौन-सा है?

(15) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने झुठलाया!

(16) क्या हमने प्राचीन लोगों को नष्ट नहीं कर दिया?

(17) फिर हम दूसरों को उनके पीछे ले चलेंगे।

(18) हम दोषियों के साथ इसी प्रकार व्यवहार करते हैं।

(19) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने झुठलाया!

(20) क्या हमने तुम्हें गंदे पानी से पैदा नहीं किया?

(21) और हमने उसे सुरक्षित स्थान में रखा है।

(22) निर्धारित समय सीमा तक।

(23) इसी प्रकार हमने फ़ैसला किया, और हमारे फ़ैसले कितने अच्छे हैं! (24) अफ़सोस है उस दिन झुठलानेवालों के लिए!

(25) हमने धरती को सभा-स्थल नहीं बनाया,

(26) जीवितों और मरे हुओं के लिये?

(27) क्या हमने वहाँ ऊँचे पहाड़ नहीं रखे और न ही तुम्हें पीने को ताज़ा पानी दिया?

(28) विनाश है उस दिन झुठलानेवालों के लिए!

(29) "जाओ उसी की ओर जिसे झुठलाया था!"

(30) उस छाया की ओर जाओ जो तीन भागों में विभाजित हो जाती है,

(31) जो कोई छाया या ज्वाला से सुरक्षा प्रदान नहीं करता,

(32) और जो महलों जितनी बड़ी चिंगारियाँ फेंकता है,

(३३) मानो वे पीले ऊँट हों।

(34) विनाश है उस दिन झुठलानेवालों के लिए!

(35) आज वह दिन है जब वे बोल न सकेंगे।

(36) न ही उन्हें माफ़ी मांगने की इजाज़त दी जाएगी.

(37) विनाश है उस दिन झुठलानेवालों के लिए!

(38) यह निर्णय का दिन है, हमने तुम्हें पुराने लोगों के साथ एकत्र किया है।

(३९) यदि तुम्हारे पास कोई योजना है, तो अब मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचो।

(40) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने झुठलाया!

(41) निश्चय ही धर्मी लोग छाया और झरनों में होंगे।

(42) और उन्हें मनचाहा फल मिलेगा।

(43) "तुमने जो कुछ किया है उसके बदले में शांति से खाओ और पियो।"

(44) इसी प्रकार हम अच्छे कर्म करनेवालों को बदला देते हैं।

(45) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने झुठलाया!

(46) खाओ और थोड़े समय तक आनन्द मनाओ, निश्चय ही तुम अत्याचारी हो।

(47) विनाश है उस दिन झुठलानेवालों के लिए!

(48) और जब उनसे कहा जाता है कि सजदा करो तो वे सजदा नहीं करते।

(49) विनाश है उस दिन उन लोगों के लिए जिन्होंने झुठलाया!

(50) इसके पश्चात वे किस बात पर ईमान लाएँगे?

# सूरा 78: **ٱلنَّبَأ‎ (अन-नबा')** - बड़ी खबर

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) वे एक दूसरे से क्या पूछते हैं?

(2) महान समाचार,

(3) जिससे मैं असहमत हूं.

(4) नहीं, उन्हें जल्द ही पता चल जाएगा.

(5) फिर से, नहीं! उन्हें जल्द ही पता चल जाएगा।

(6) क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया है?

(7) और पहाड़ पिकेट के रूप में?

(8) और हमने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किया?

(9) और क्या हमने तुम्हारी नींद को विश्राम बना दिया है?

(10) और क्या हमने रात को अपना आवरण बना लिया है?

(11) और क्या हमने दिन को तुम्हारे लिए जीविका कमाने का समय बनाया है?

(12) और हमने तुम्हारे ऊपर सात बड़े आकाश बनाये।

(13) और क्या हमने कोई जलता हुआ दीपक रखा है?

(14) और हमने बादलों से भरपूर जल बरसाया।

(15) अनाज और वनस्पतियों को अंकुरित करने के लिए,

(16) और हरे-भरे बगीचे?

(17) निश्चय ही निर्णय का दिन निश्चित हो चुका है।

(18) जिस दिन सूर फूँका जाएगा और तुम पाँति बान्धकर आओगे।

(19) और आकाश खुल जाएगा और द्वारों के समान हो जाएगा,

(20) और पहाड़ हट जायेंगे और मृगतृष्णा के समान हो जायेंगे।

(21) निश्चय ही जहन्नम घात लगाए बैठी है।

(22) अपराधियों के लिए शरणस्थान,

(23) जहां वे लंबे समय तक रहेंगे.

(24) वे न तो ठण्डक का स्वाद चखेंगे और न उसमें से पीएँगे,

(25) यदि उबलता पानी और सड़ा हुआ तरल पदार्थ न हो,

(26) उचित मजदूरी.

(27) सच तो यह है कि उन्हें किसी मुक़ाबले की उम्मीद नहीं थी,

(28) और उन्होंने हमारी आयतों को खुलेआम झुठलाया।

(29) और हमने प्रत्येक चीज़ को एक रजिस्टर में गिन रखा है।

(30) "चख लो, हम तुम्हें और अधिक यातना ही देंगे।"

(31) निश्चय ही डर रखनेवालों को सफलता मिलेगी।

(32) बाग और अंगूर के बाग,

(33) और पूर्ण रूप वाले साथी, समान आयु के,

(34) और पूर्ण कप.

(35) वहाँ वे व्यर्थ की बातें या झूठ नहीं सुनेंगे,

(36) यह तुम्हारे रब की ओर से एक पर्याप्त बदला है।

(37) वह आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब है, अत्यन्त दयावान है, कोई उससे उपदेश नहीं कर सकता।

(38) जिस दिन रूह और फ़रिश्ते खड़े होंगे, फिर कोई नहीं बोलेगा सिवाय उस व्यक्ति के जिसे रहमान ने इजाज़त दे दी हो और वह ठीक बात कहेगा।

(39) वह दिन सत्य है, अतः जो चाहे वह अपने पालनहार की ओर जाने वाला मार्ग अपना ले।

(40) हमने तुम्हें उस यातना से सावधान कर दिया है जो निकट है। जिस दिन मनुष्य देखेगा कि उसके हाथों ने क्या तैयार किया है। और इनकार करनेवाला कहेगा, "काश! मैं मिट्टी होता!"

# सूरा 79: **ٱلنَّازِعَات‎ (अन-नाज़ीअत)** - फाड़ने वाली ताकतें

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जो लोग हिंसा से [आत्माओं] को फाड़ डालते हैं,

(2) और जो लोग मधुरता से प्राणों को मुक्ति प्रदान करते हैं,

(3) और जो लोग फुर्ती से तैरते हैं,

(4) फिर वे तेजी से आगे बढ़ते हैं,

(5) फिर वे मामलों का संचालन करते हैं,

(6) जिस दिन धरती ज़ोर से हिलेगी,

(7) और उसके बाद एक और झटका लगेगा,

(8) उस दिन दिल काँप उठेंगे,

(9) उनकी आँखें नीची हो जाएँगी.

(10) वे कहते हैं, "हम अपनी मूल अवस्था में लौट जाएँगे।

(11) जब हम सड़ी हुई हड्डियाँ बन जाएँ?

(12) वे कहते हैं, "तब तो यह तो घाटे का सौदा होगा!"

(13) यह बस एक ही चीख होगी,

(14) और देखो, वे जाग उठेंगे।

(15) क्या मूसा की कहानी आप तक पहुँची है?

(16) जब उसके रब ने उसे पवित्र घाटी तुवा की ओर बुलाया,

(17) "फ़िरौन के पास जाओ, क्योंकि उसने सारी हदें पार कर दी हैं,

(18) और उससे कहो, 'क्या तुम अपने आपको पवित्र करना चाहते हो?

(19) और यह कि मैं तुम्हें तुम्हारे रब की ओर मार्ग दिखाऊँ, ताकि तुम उसका डर रखो।

(20) तब उसने उसे सबसे बड़ा चिन्ह दिखाया,

(21) परन्तु उसने इन्कार किया और अवज्ञा की।

(22) फिर वह जल्दी से पीछे मुड़ा,

(23) उसने [लोगों को] इकट्ठा किया और घोषणा की:

(२४) "मैं तुम्हारा सर्वोच्च स्वामी हूँ।"

(25) अतः अल्लाह ने उसे आख़िरत और इस जीवन की यातना दी।

(26) निश्चय ही इसमें डर रखनेवालों के लिए बड़ी शिक्षा है।

(27) क्या तुम्हें पैदा करना अधिक कठिन है या आकाश को, जिसे उसने बनाया है?

(28) उसने अपनी तिजोरी खड़ी की और उसे परिपूर्ण बनाया,

(२९) उसने उसकी रात को अँधेरा कर दिया और उसके दिन को उजाला कर दिया।

(30) और उसके बाद उसने पृथ्वी को फैलाया,

(31) उसने उसमें से जल और चारागाह बहाये,

(32) और उसने पहाड़ स्थापित किये,

(33) ताकि तुम और तुम्हारे पशु तुम्हारे लिए भोजन बन सकें।

(34) परन्तु जब बड़ी विपत्ति आएगी,

(35) जिस दिन मनुष्य याद करेगा कि उसने क्या-क्या किया है।

(36) और जहन्नम देखनेवालों के लिए स्पष्ट कर दी जायेगी।

(37) फिर जो कोई अपराध करेगा

(38) और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी होगी,

(39) नरक ही निवास स्थान है।

(40) किन्तु जो व्यक्ति अपने पालनहार के स्थान से डरे और अपने मन को कामनाओं से रोके रखे,

(41) स्वर्ग ही निवास स्थान है।

(42) वे तुमसे क़ियामत के विषय में पूछते हैं कि वह कब घटित होगी?

(४३) आप इसका उल्लेख कैसे कर सकते हैं?

(44) इसका अन्तिम ज्ञान तो तुम्हारे रब के पास ही है।

(45) तू तो बस उन लोगों को सचेत करनेवाला है जो उससे डरते हों।

(46) जिस दिन वे उसे देखेंगे, तो ऐसा होगा मानो वे केवल एक संध्या या एक प्रातः ही धरती पर रहे हों।

# सूरा 80: **ٱعَبَسَ (ʿअबासा)** - उसने भौंहें चढ़ा लीं

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) वह भौंचक्का होकर चला गया,

(2) क्योंकि एक अन्धा मनुष्य उसके पास आया था।

(3) और तुम क्या जानते हो? शायद वह खुद को शुद्ध कर सके,

(4) या उसे कोई चेतावनी मिल सकती है जो उसके लिए मददगार होगी।

(5) जो व्यक्ति अपने आपको आत्मनिर्भर समझता है,

(6) तुम उस पर ध्यान दो,

(7) यद्यपि यदि वह अपने आपको शुद्ध न करे, तो तुम पर कोई दोष नहीं।

(8) किन्तु जो तुम्हारे पास उत्साहपूर्वक आये,

(9) और डरनेवाला है।

(१०) आप इसकी उपेक्षा करते हैं.

(11) बल्कि ये तो एक नसीहत है,

(12) और जो कोई चाहेगा वह उसे सहेज कर रखेगा।

(13) [यह] सम्माननीय पत्रों में निहित है,

(14) ऊंचा और शुद्ध,

(15) शास्त्रियों के हाथों में

(16) महान और समर्पित.

(17) शापित है वह मनुष्य! वह कितना कृतघ्न है!

(18) अल्लाह ने उसको किस चीज़ से पैदा किया?

(19) उसने वीर्य की एक बूँद से उसे बनाया और उसका आकार बनाया,

(20) तब उसने उसके लिये मार्ग साफ़ किया,

(21) फिर वह उसे मार डालता है और कब्र में रख देता है,

(22) फिर जब चाहता है, उसे जिला देता है।

(23) कदापि नहीं, मनुष्य ने अभी तक वह नहीं किया जो उसे आदेश दिया है।

(२४) मनुष्य को अपना भोजन समझो:

(25) हम भरपूर पानी डालते हैं,

(26) फिर हमने धरती को चीर डाला,

(27) और हम वहाँ अनाज उगाते हैं,

(28) और अंगूर और सब्जियाँ,

(29) और जैतून और खजूर के वृक्ष,

(30) और हरे-भरे बगीचे,

(31) और फल और चारागाह,

(32) ताकि तुम और तुम्हारे पशु जीविका के पात्र बन सकें।

(३३) परन्तु जब गगनभेदी गर्जना आती है,

(34) जिस दिन मनुष्य अपने भाई से भागेगा,

(35) अपनी माँ और पिता से,

(36) अपने साथी और अपने बच्चों से,

(37) उस दिन उनमें से प्रत्येक को ऐसी चिंताएँ होंगी जो उसे पूरी तरह से जकड़ लेंगी।

(38) उस दिन चमकते हुए चेहरे होंगे,

(३९) मुस्कुराते और आनंदित.

(40) और उस दिन बहुत से चेहरे धूल से ढँके हुए होंगे।

(४१) अंधकार में डूबा हुआ.

(42) वही लोग इनकार करनेवाले, कुटिल लोग हैं।

# सूरा 81: ٱلتَّكْوِير‎ (अत-तकवीर) - अंधकार

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) जब सूर्य अंधकार में लिपटा हो,

(2) जब तारे गिरते हैं,

(3) जब पहाड़ गतिमान हो जाते हैं,

(4) जब गर्भवती ऊँटों की उपेक्षा की जाती है,

(5) जब जंगली जानवर इकट्ठे होते हैं,

(6) जब समुद्र में आग लग जायेगी,

(7) जब आत्माएं जोड़ी जाएंगी,

(8) जब जिंदा दफना दी गई लड़की से पूछा जाएगा

(९) किस अपराध के लिए उसकी हत्या की गई,

(10) जब पन्ने खुलेंगे,

(11) जब आकाश हटा लिया जाता है,

(12) जब जहन्नम जलेगा,

(13) जब जन्नत निकट आ जायेगी,

(14) तब हर एक प्राणी जान लेगा कि उसने क्या तैयार किया है।

(15) मैं उन सितारों की कसम खाता हूँ जो पीछे हटते हैं,

(16) जो भागते और छिपते हैं,

(17) क्योंकि जब रात आएगी,

(18) क्योंकि जब भोर होगी,

(19) निश्चय ही ये एक महान रसूल का वचन है।

(20) सिंहासन के स्वामी के साथ शक्तिशाली, सम्मानित,

(21) आज्ञा का पालन किया और भरोसा किया।

(22) और तुम्हारा साथी तो किसी भूत-प्रेत से ग्रस्त नहीं है।

(23) सच में, उसने इसे स्पष्ट क्षितिज पर देखा।

(२४) और वह अदृश्य को संप्रेषित करने में कंजूसी नहीं करता।

(25) और यह किसी श्रापित शैतान का वचन नहीं है।

(२६) तो फिर तुम कहाँ जा रहे हो?

(27) यह तो बस सारे संसार के लिए एक चेतावनी है।

(28) तुममें से जो कोई सीधा मार्ग अपनाना चाहे।

(29) परन्तु तुम चाह नहीं सकते, परन्तु अल्लाह जो सारे संसार का रब है, चाह न सके।

# सूरा 82: ٱلْإِنْفِطَار‎ (अल-इन्फीतार) - द रिफ्ट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) जब आकाश खुलेगा,

(2) और जब तारे बिखर जाते हैं,

(3) और जब समुद्र उफनकर बरसेंगे,

(4) और जब क़ब्रें उलट-पुलट हो जाएँगी,

(5) तब हर आत्मा जान जाएगी कि उसने क्या अनुमान लगाया था और क्या टाल दिया था।

(6) ऐ मनुष्य! तुझे अपने पालनहार के विषय में क्या धोखा हुआ है?

(7) वह जिसने तुम्हें पैदा किया, तुम्हें आकार दिया और तुम्हें सामंजस्यपूर्ण बनाया?

(8) उसने तुम्हें जिस रूप में चाहा, रचा।

(9) नहीं, बल्कि तुम तो न्याय को झुठलाते हो।

(10) और तुम्हारे ऊपर रक्षक मौजूद हैं।

(11) महान लेखक,

(12) जो जानते हैं कि आप क्या करते हैं.

(13) निश्चय ही धर्मी लोग आनन्द में रहेंगे।

(14) और दुष्ट लोग नरक में जायेंगे,

(15) जहाँ वे क़यामत के दिन जलेंगे,

(16) और वे उससे बच नहीं सकेंगे।

(17) और तुम क्या समझोगे कि प्रलय का दिन क्या है?

(18) फिर, तुम क्या समझोगे कि न्याय का दिन क्या है?

(19) वह दिन है जब कोई प्राणी किसी दूसरे प्राणी के लिए कुछ न कर सकेगा, और उस दिन आदेश अल्लाह के पास होगा।

# सूरा 83: ٱلْمُطَفِّفِين‎ (अल-मुअफ्फिफ़िन) - धोखाधड़ी करने वाला

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हाय उन पर जो धोखा देते हैं,

(2) जो दूसरों से प्राप्त करते समय पूरा-पूरा हिस्सा मांगते हैं,

(3) लेकिन जब उन्हें दूसरों को देना होता है, तो वे माप या वजन कम कर देते हैं!

(4) क्या वे यह नहीं समझते कि वे पुनः जीवित किये जायेंगे?

(५) एक भयानक दिन पर,

(6) जिस दिन लोग सारे संसार के पालनहार के सामने खड़े होंगे?

(7) बल्कि दुष्टों का लेखा-जोखा सिज्जीन में रखा जाता [**है**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-1) ।

(8) और तुमको क्या समझायेगा कि सिज्जीन क्या है?

(९) लिखित पुस्तक.

(10) उस दिन इनकार करनेवालों के लिए अफ़सोस होगा।

(11) जो क़यामत के दिन को झुठलाते हैं।

(12) कोई भी इसका इन्कार नहीं करता सिवाय हर अपराधी, पापी,

(13) जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है, "ये तो पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।"

(14) नहीं, बल्कि उनके हृदयों में ज़ंग लग गया है, उनके कामों के कारण।

(15) बल्कि उस दिन तो वे अपने पालनहार द्वारा परदे में डाल दिए जाएँगे।

(16) फिर वे अवश्य जहन्नम में जायेंगे।

(17) जहाँ उनसे कहा जाएगा, "यही है वह बात जिसे तुमने झुठलाया था।"

(18) नहीं, वास्तव में, भक्तों का रजिस्टर इल्लियुन [**2 में रखा जाता है**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-2) ।

(19) और तुम क्या समझोगे कि इल्लिय्यून क्या है?

(20) लिखित पुस्तक,

(21) और जो लोग [ईश्वर के] निकट हैं, वे इसकी गवाही देते हैं।

(22) निश्चय ही भक्तजन आनन्द में होंगे,

(23) वे सोफ़े पर बैठकर देखेंगे,

(२४) तुम उनके चेहरों पर आनन्द की चमक पहचानोगे।

(25) वे मुहरबंद अमृत से बुझ जाएंगे,

(26) जिसकी मुहर काई की है। इसलिए, प्रतियोगियों को जल्दी करनी चाहिए।

[**तस्नीम**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\71--85.docx#user-content-fn-3) का पानी मिला दिया जाएगा ।

(28) वह सोता है जिससे वे लोग पीते हैं जो [अल्लाह के] निकट पहुँचे हुए हैं।

(29) निश्चय ही अत्याचारी उन लोगों पर हँस रहे थे जो ईमान लाए।

(30) और जब वे उनके पास से गुज़रे, तो एक दूसरे को सिर हिलाकर नमस्कार किया,

(31) और जब वे अपने घरवालों के पास लौटे तो ठट्ठा करते हुए लौटे।

(32) जब उन्होंने उनको देखा तो कहा, "ये तो सचमुच खो गये हैं।"

(33) किन्तु वे उनपर संरक्षक बनाकर नहीं भेजे गये।

(34) किन्तु आज ईमान वाले ही काफ़िरों पर हँसते हैं।

(35) वे सोफे पर देखते हैं.

(36) क्या इनकार करनेवालों को उनके कर्मों का बदला नहीं मिल गया?

# सूरा 84: ٱلْإِنْشِقَاق‎ (अल-इंशिक़ाक) - द रिफ्ट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) जब आसमान फटेगा,

(2) और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगा जैसा उस पर अनिवार्य है,

(3) और जब पृथ्वी फैल जाएगी,

(4) और उसमें जो कुछ है उसे बाहर फेंक देंगे और खाली हो जायेंगे,

(5) और अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करेगी जैसा कि उस पर अनिवार्य है,

(6) हे मनुष्य! तुम जो अपने रब के लिए परिश्रम करते हो, तुम उससे अवश्य मिलोगे।

(7) और जो कोई अपनी पुस्तक अपने दाहिने हाथ में लेगा,

(8) आसान लेखा-जोखा के अधीन होगा,

(9) और ख़ुशी-ख़ुशी अपने परिवार के पास लौट जाएगा।

(10) किन्तु जो कोई अपनी पीठ पीछे अपनी पुस्तक ग्रहण करे,

(11) अपने ऊपर विनाश बुलाएगा,

(12) और भड़कती हुई आग में जलेंगे।

(13) वह अपने लोगों के बीच सुखपूर्वक रहता था।

(14) यह समझकर कि वह कभी [अल्लाह की ओर] लौटकर नहीं आयेगा।

(15) निश्चय ही उसका रब उसकी निगरानी कर रहा था।

(16) नहीं! मैं गोधूलि की कसम खाता हूँ,

(17) रात और उसके आस-पास की चीज़ों के लिए,

(18) पूर्ण चन्द्रमा के लिए:

(19) तुम निश्चय ही एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाओगे।

(20) फिर उनके पास क्या है कि वे ईमान नहीं लाते?

(21) और जब उनको क़ुरआन पढ़कर सुनाया जाता है तो क्या वे सजदा नहीं करते?

(22) निश्चय ही इनकार करनेवाले लोग उसे झुठलाते हैं।

(23) जो कुछ वे अपने दिलों में छिपाते हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

(24) अतः उसके लिए दुखद यातना की सूचना दे दो।

(25) परन्तु जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनके लिए सदैव रहने वाला प्रतिफल है।

# सूरा 85: **ٱلْبُرُوج‎ (अल-बुरूज)** - तारामंडल

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) नक्षत्रों से आकाश के लिए,

(2) और वादा किये हुए दिन की ओर,

(3) और साक्षी के लिए और जो साक्षी है उसके लिए!

(4) शापित हो खाई के साथी,

(5) ईंधन से उत्पन्न अग्नि का,

(6) जब वे उसके चारों ओर बैठे,

(7) और देखा कि उन्होंने ईमानवालों के साथ क्या किया।

(8) और उन्होंने उनसे केवल इसलिए घृणा की कि वे अल्लाह पर ईमान लाए, जो प्रभुत्वशाली, प्रशंसनीय है।

(9) आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, और अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है।

(10) जिन लोगों ने ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को सताया और तौबा नहीं की, उनके लिए जहन्नम की यातना और भड़कती आग की यातना है।

(11) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। यही बड़ी सफलता है।

(12) निश्चय ही तुम्हारे रब की पकड़ बहुत कड़ी है।

(13) वास्तव में वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है तथा उसे दोहराता है।

(14) और वह अत्यन्त क्षमाशील, प्रेमी है।

(15) हे महिमामय सिंहासन के स्वामी,

(१६) जो जो चाहता है वही करता है।

(17) सेनाओं का इतिहास तुम्हारे पास पहुँच गया है,

(18) फ़िरऔन और समूद का?

(19) किन्तु जिन लोगों ने इनकार किया, वे इनकार पर अड़े रहे।

(20) और अल्लाह ने उन्हें चारों ओर से घेर रखा है।

(21) निस्संदेह यह पवित्र क़ुरआन है।

(22) [संरक्षित] एक सुरक्षित पट्टिका में.

# सूरा 86: **ٱلطَّارِق‎ (अ-सारिक)** - द नाइट स्टार

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) आकाश और रात्रि तारे की शपथ!

(2) और तुम्हें क्या समझाएगा कि रात्रि का तारा क्या है?

(3) यह भेदक तारा है।

(4) ऐसी कोई आत्मा नहीं जिसका कोई संरक्षक न हो।

(5) अतः मनुष्य को विचार करना चाहिए कि वह किससे उत्पन्न हुआ है।

(6) यह एक बहते तरल पदार्थ द्वारा बनाया गया था,

(7) जो रीढ़ और पसलियों के बीच से निकलती है।

(8) निस्संदेह अल्लाह उसे जिलाने पर समर्थ है।

(9) जिस दिन रहस्य प्रकट हो जायेंगे,

(10) और उसके पास न तो ताकत होगी और न ही मदद।

(11) उस आकाश के लिए जो [वर्षा] लौटाता है,

(12) और जो धरती खुलती है,

(13) सच में, यह एक निर्णायक भाषण है,

(14) और यह कोई मज़ाक नहीं है.

(15) वे लोग कोई चाल चल रहे हैं।

(16) और मैं एक योजना भी आदेश देता हूं.

(17) अतः इनकार करनेवालों को थोड़ा समय दे दो और उन्हें थोड़ी मोहलत प्रदान करो।

# सूरा 87: **ٱلْأَعْلَى‎ (अल-अला)** - सबसे ऊँचा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अपने रब, परमप्रधान के नाम की स्तुति करो,

(2) जिसने उत्तम रीति से सृष्टि की और उसे आकार दिया,

(3) जिसने भाग्य का निर्णय किया और मार्ग दिखाया,

(4) जिसने चरागाह को उगाया,

(5) और फिर इसे काले ठूंठ बना दिया.

(6) हम तुम्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाएँगे, फिर तुम भूलोगे नहीं।

(7) जब तक अल्लाह न चाहे, वह प्रत्यक्ष और गुप्त दोनों को जानता है।

(8) हम आपकी यात्रा को आसान बना देंगे.

(9) अतः यदि नसीहत से लाभ हो तो नसीहत करो,

(10) जो व्यक्ति [अल्लाह] से डरेगा, वही इससे लाभ उठाएगा।

(11) जबकि सबसे दुखी लोग चले जायेंगे,

(12) जो सबसे बड़ी आग में जलेगा,

(13) जिसमें वह न तो मरेगा और न ही जीवित रहेगा।

(14) जो अपने आप को शुद्ध करता है, वह अवश्य सफल होगा,

(15) जो अपने रब का नाम लेता है और नमाज़ पढ़ता है।

(16) परन्तु तुम वर्तमान जीवन को अधिक पसंद करते हो।

(17) और आख़िरत उत्तम और अधिक स्थायी है।

(18) सच में, यह प्राचीन पत्रकों में है,

(19) अब्राहम और मूसा की पत्तियाँ.

# सूरा 88: ٱلْغَاشِيَة‎ (अल-ग़ाशिया) - आवरण

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) क्या आपने लिफाफा वाले के बारे में सुना है?

(2) उस दिन कुछ चेहरे अपमानित किये जायेंगे,

(3) थका हुआ और थका हुआ,

(4) वे दहकती हुई आग में प्रवेश करेंगे,

(5) उन्हें उबलते हुए सोते से पानी पिलाया जाएगा।

[**दारी**](file:///C:\Users\Utente%20Locale\Downloads\Sure%20Eng%2086--114.docx#user-content-fn-1) के अलावा कोई भोजन नहीं होगा ।

(7) जो न तो पोषण देता है और न ही भूख को संतुष्ट करता है.

(8) उस दिन दूसरे चेहरे भी चमक रहे होंगे,

(९) अपने प्रयासों से संतुष्ट,

(10) एक ऊँचे बाग़ में,

(11) जहाँ वे व्यर्थ की बातें नहीं सुनेंगे,

(12) वहाँ एक बहता हुआ झरना है,

(13) ऊंचे बिस्तर हैं,

(14) और कप आसान पहुंच के भीतर रखे जाएं,

(15) और पंक्तियों में व्यवस्थित कुशन,

(16) और कालीन बिछाए गए.

(17) वे ऊँटों पर विचार नहीं करते कि वे किस प्रकार पैदा किये गये,

(18) और स्वर्ग पर, जैसा कि वह ऊंचा था,

(19) और पहाड़ों पर, जैसे वे खड़े किए गए थे,

(20) और पृथ्वी पर यह किस प्रकार फैला?

(21) अतः सावधान करो, क्योंकि तुम तो बस सावधान करने वाले हो।

(22) उन पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं,

(23) परन्तु जो मनुष्य सत्य से फिर जाए और इनकार करे,

(24) अल्लाह उसे कठोरतम दण्ड देगा।

(25) निश्चय ही वे हमारी ओर ही लौटकर आएंगे।

(26) फिर हमसे हिसाब मांगना हमारे ऊपर होगा।

# सूरा 89: ٱلْفَجْر‎ (अल-फज्र) - द डॉन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) भोर के लिए,

(2) दस रातों के लिए,

(3) सम और विषम के लिए,

(4) और रात के लिए जब वह लुप्त हो जाती है!

(5) क्या यह समझ रखने वाले के लिए शपथ नहीं है?

(6) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने आद के साथ कैसा व्यवहार किया?

(7) ईराम के लोग, अपने शक्तिशाली स्तंभों के साथ,

(८) जिसकी समानता किसी अन्य देश में नहीं बनाई गई,

(9) और समूद के साथ, जिसने घाटी में चट्टान खोदी,

(10) और डण्डों के स्वामी फिरौन के साथ,

(11) वे सभी लोग जिन्होंने अपने क्षेत्रों में विद्रोह किया,

(12) और उनके बीच बहुत भ्रष्टाचार बोया?

(13) अतः तुम्हारे रब ने उनपर यातना बरसा दी।

(14) निश्चय ही तुम्हारा रब घात लगाए बैठा है।

(15) और जब मनुष्य का पालनहार उसे सम्मान देकर और उसपर उपकार करके परीक्षा लेता है, तो वह कहता है, "मेरे पालनहार ने मुझे सम्मान दिया है।"

(16) फिर जब वह उसकी परीक्षा लेता है कि उसकी जीविका सीमित कर दे, तो कहता है, "मेरे रब ने मुझे नम्र बना दिया।"

(17) कदापि नहीं, तुम अनाथ का आदर नहीं करते।

(18) और न ही जरूरतमंदों को भोजन खिलाने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित करें,

(19) और अपनी सम्पत्ति को लालच से खा जाओ,

(20) और तुम धन से बहुत प्रेम करते हो।

(21) नहीं! जब धरती धूल में मिल जाएगी,

(22) और तुम्हारा रब फ़रिश्तों के साथ आएगा, एक के बाद एक गिरोह।

(23) और उस दिन जहन्नम सामने ला दी जाएगी, उस समय मनुष्य स्मरण करेगा, किन्तु उसे स्मरण करने से क्या लाभ होगा?

(24) वह कहेगा: "काश! मैंने अपने भविष्य के लिए कुछ तैयार कर लिया होता!"

(25) उस दिन कोई यातना न होगी, जैसी वह चाहता है।

(26) और कोई भी उस तरह नहीं बाँधेगा जैसे वह बाँधेगा।

(27) परन्तु हे शान्त आत्मा,

(28) अपने रब की ओर प्रसन्न होकर लौट आओ।

(29) मेरे बन्दों के बीच आ जाओ।

(30) और मेरी जन्नत में प्रवेश करो।

# सूरा 90: ٱلْبَلَد‎ (अल-बलाद) - शहर

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) मैं इस शहर की कसम खाता हूँ,

(2) और तुम इस शहर में स्वतंत्र हो,

(3) और माता-पिता के लिए और उसने जो उत्पन्न किया है!

(4) निश्चय ही हमने मनुष्य को दुःख की स्थिति में पैदा किया।

(5) क्या वह शायद यह सोचता है कि उस पर किसी का कोई अधिकार नहीं है?

(6) वह कहता है: "मैंने बहुत सारा धन खर्च किया है।"

(7) क्या आपको लगता है कि इसे किसी ने नहीं देखा?

(8) क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं,

(९) एक जीभ और दो होंठ,

(10) और हमने उसे दो रास्ते दिखाए?

(11) लेकिन उसने खड़ी चढ़ाई वाला रास्ता नहीं अपनाया.

(12) और तुम क्या समझोगे कि खड़ी राह क्या है?

(13) यह एक गुलाम को आज़ाद करना है,

(14) या अकाल के दिन भोजन कराओ,

(15) पास में रहने वाला एक अनाथ,

(16) या धूल में एक गरीब आदमी.

(17) अतः तुम भी उन लोगों में से हो जाओ जो ईमान लाए हैं, एक दूसरे को धैर्य की सलाह दो और एक दूसरे को दया की सलाह दो।

(18) यही लोग न्यायप्रिय हैं।

(19) किन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग पीछे हट जानेवालों में से हैं।

(20) उनपर कठोर आग पड़ेगी।

# सूरा 91: ٱلشَّمْس‎ (ऐश-शम्स) - द सन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) सूर्य और उसकी चमक के लिए,

(2) और चाँद के लिए जब वह उसके पीछे आता है,

(3) और जिस दिन वह उसे अवतरित करेगा,

(4) और रात के लिए जब वह उसे ढक ले,

(5) आकाश के लिए और उसके बनानेवाले के लिए,

(6) धरती के लिए और उसको फैलानेवाले के लिए,

(7) आत्मा और उसके लिए जिसने उसे सामंजस्यपूर्ण ढंग से बनाया,

(8) और उसे अच्छे और बुरे में अंतर करने की प्रेरणा दी,

(९) जो इसे शुद्ध करेगा, वह अवश्य सफल होगा,

(10) और जो कोई इसे भ्रष्ट करेगा वह निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा।

(11) समूद ने अपने अहंकार के कारण झुठलाया।

(12) जब उनमें से सबसे दुष्ट उठ खड़े हुए,

(13) और अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा, "अल्लाह की ऊँटनी को छोड़ दो और उसे पानी पीने दो।"

(14) किन्तु उन्होंने झुठला दिया और उसे मार डाला। अतः उनके रब ने उनके पापों के कारण उन्हें विनष्ट कर दिया और धरती को उनके ऊपर समतल कर दिया।

(15) और वह परिणाम से नहीं डरता।

# सूरा 92: **ٱلَّيْل‎ (अल-लैल)** - रात

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) रात जब लिपट जाती है,

(2) और उस दिन के लिए जब वह चमकेगा,

(3) और उसी के लिए जिसने नर और नारी को पैदा किया,

(4) सच में, आपके प्रयास अलग हैं.

(5) जो व्यक्ति दान करे और डरता रहे,

(6) और अच्छाई में विश्वास रखता है,

(7) हम उसके लिए सुख का मार्ग सुगम बना देंगे।

(8) किन्तु जो व्यक्ति लोभी हो और अपने आपको आत्म-संतुष्ट समझता हो,

(9) और भलाई से इनकार करता है,

(10) हम उसके लिए कठिनाई की ओर जाने वाला रास्ता आसान बना देंगे।

(11) और जब वह गिरेगा तो उसका धन उसके कुछ काम न आएगा।

(12) निश्चय ही मार्ग दिखाना हमारा ही काम है।

(13) और आख़िरत और यह जीवन भी हमारा ही है।

(14) मैंने तुम्हें धधकती आग से सावधान किया था,

(15) जिसमें केवल सबसे दुखी व्यक्ति ही प्रवेश करेगा,

(16) जिसने इनकार किया और मुँह फेर लिया।

(17) और उससे तो बहुत डरनेवाले भी दूर कर दिये जायेंगे।

(18) जो अपनी संपत्ति अपने आप को शुद्ध करने के लिये दे देता है,

(19) और वह किसी उपकार का बदला चुकाने के लिए ऐसा न करे,

(20) बल्कि वह तो केवल अपने रब, सर्वोच्च का दर्शन पाने के लिए है।

(21) और वह अवश्य संतुष्ट होगा।

# सूरा 93: **सुबह (अज़-ज़ुहा)** - सुबह

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) उज्ज्वल सुबह के लिए,

(2) और रात के लिए जब वह [सब कुछ अंधकार में] ढक लेगी,

(3) तुम्हारे रब ने न तो तुम्हें त्यागा है और न तुमसे घृणा की है।

(4) निश्चय ही आख़िरत तुम्हारे लिए संसार से उत्तम है।

(5) और शीघ्र ही तुम्हारा रब तुम्हें इतना प्रदान करेगा कि तुम संतुष्ट हो जाओगे।

(6) क्या उसने तुम्हें अनाथ नहीं पाया और तुम्हें शरण नहीं दी?

(7) क्या उसने तुम्हें भटका हुआ न पाया और मार्ग न दिखाया?

(8) क्या उसने तुम्हें मोहताज नहीं पाया और तुम्हें आत्मनिर्भर नहीं बनाया?

(9) इसलिये अनाथ पर अन्धेर न करना;

(10) जो कोई मांगे, उसे मना न करो;

(11) और अपने रब के उपकारों का वर्णन करो।

# सूरा 94: **ٱلشَّرْح‎ (अश-शारः)** - उद्घाटन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क्या हमने तुम्हारा सीना नहीं खोला?

(2) और तुम्हारा बोझ तुमसे हल्का हो गया,

(३) आपकी पीठ पर क्या बोझ था?

(4) और क्या तुम्हारी प्रतिष्ठा तुम्हारे लिए बढ़ाई गई है?

(5) वास्तव में, कठिनाई के साथ आसानी आती है।

(6) वास्तव में, कठिनाई के साथ आसानी आती है।

(7) जब तुम समाप्त कर लो, तो अपने आप को [पूजा के लिए] समर्पित करो,

(8) और अपने रब की ओर तरस खाते हुए ध्यान करो।

# सूरा 95: **ٱلتِّين‎ (अट-टीन)** - अंजीर का पेड़

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अंजीर के पेड़ और जैतून के पेड़ के लिए,

(2) माउंट सिनाई के लिए,

(3) और इस सुरक्षित शहर के लिए,

(4) निस्सन्देह हमने मनुष्य को सर्वोत्तम रूप में पैदा किया है।

(5) फिर हम इसे सबसे निचले बास स्तर पर वापस लाए,

(6) परन्तु जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनके लिए अथाह प्रतिफल है।

(7) तो फिर, तुम अंतिम न्याय को अस्वीकार क्यों करते हो?

(8) क्या अल्लाह सबसे बड़ा न्यायकर्ता नहीं है?

# सूरा 96: ٱلْعَلَق‎ (अल-अलाक़) - पालन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने सबको पैदा किया,

(2) उसने मनुष्य को चिपकाव से पैदा किया।

(3) पढ़ो, तुम्हारा रब बड़ा दानी है।

(4) जिसने कलम से सिखाया,

(५) उसने मनुष्य को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था।

(6) नहीं, सच तो यह है कि मनुष्य सीमाओं से परे चला जाता है,

(7) क्योंकि वह स्वयं को आत्मनिर्भर मानता है.

(8) निश्चय ही लौटना तुम्हारे रब ही की ओर है।

(9) तुमने उसको देखा है जो रोकता है

(10) सेवक को प्रार्थना करने के लिए?

(11) क्या आपने देखा है कि वह सही रास्ते पर है या नहीं?

(१२) या भक्ति को प्रोत्साहित करें?

(13) क्या तुमने देखा कि क्या वह सत्य से इन्कार करता है और पीठ फेर लेता है?

(14) क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देखता है?

(15) नहीं, अगर वह बाज़ नहीं आया तो हम उसे माथे से पकड़ लेंगे,

(16) झूठ और पाप का गुच्छा.

(17) फिर वह अपने समर्थकों को बुलाए;

(18) हम जहन्नम के रक्षकों को बुलायेंगे।

(19) बल्कि उसकी बात न मानो, सजदा करो और अल्लाह के समीप हो जाओ।

# सूरा 97: ٱلْقَدْر‎ (अल-क़द्र) - नियति

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) निश्चय ही हमने उसे क़यामत की रात में उतारा।

(2) और तुम्हें क्या समझाएगा कि भाग्य की रात क्या है?

(3) क़यामत की रात हज़ार महीनों से बेहतर है।

(4) उसी में फ़रिश्ते और रूह अपने रब की अनुमति से हर फ़ैसला लेकर उतरते हैं।

(5) भोर होने तक शांति है।

# सूरा 98: ٱلْبَيِّنَة‎ (अल-बैयिना) - स्पष्ट प्रमाण

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) किताबवालों में से काफ़िर और मुश्रिक उस समय तक बाज़ नहीं आएंगे जब तक उनके पास कोई खुला प्रमाण न आ जाए।

(2) अल्लाह का एक रसूल जो पवित्र आयतें पढ़ता है,

(3) जहाँ सही शास्त्र हैं।

(4) और जिन लोगों को किताब दी गई थी, उन्होंने तब तक किसी तरह से अलग न हुआ जब तक कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण न आ गया।

(5) किन्तु उन्हें केवल यही आदेश दिया गया कि वे अल्लाह की इबादत करें, उसकी सच्ची सेवा करें, नमाज़ अदा करें और ज़कात दें; यही नेकी का धर्म है।

(6) निश्चय ही किताबवालों और मुश्रिकों में से जो लोग इनकार करनेवाले हैं, वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, जिसमें वे सदैव रहेंगे। वे सबसे बुरे प्राणी हैं।

(7) किन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वही लोग सर्वोत्तम प्राणी हैं।

(8) उनके लिए उनके रब के पास हमेशा के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए। यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे।

# सूरा 99: ٱلزَّلْزَلَة‎ (अज़-ज़लज़लाह) - भूकंप

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) जब धरती भूकम्प से हिलती है,

(2) और पृथ्वी अपना बोझ उतार फेंकेगी,

(3) और आदमी कहेगा: "उसे क्या हो रहा है?",

(4) उस दिन वह अपनी ख़बरें सुनाएगी,

(5) क्योंकि तुम्हारे रब ने तुम्हें इसी की प्रेरणा दी है।

(6) उस दिन लोग समूह बनाकर निकलेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म दिखाये जायें।

(7) जिसने कण भर भी अच्छा काम किया है, वह इसे देखेगा,

(8) और जिसने कण भर भी बुराई की होगी, वह उसे देखेगा।

# सूरा 100: ٱلْعَادِيَات‎ (अल-अदियात) - जंगली दौड़

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हाँफते हुए दौड़ने वाले घोड़ों के लिए,

(2) जो अपने खुरों से चिंगारी छोड़ते हैं,

(3) जो भोर में अचानक हमला करते हैं,

(4) धूल के बादल उठना,

(5) शत्रु की पंक्तियों के बीच में घुसकर,

(6) निश्चय ही मनुष्य अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न है।

(7) और वह स्वयं भी इसका साक्षी है,

(८) और सचमुच, वह धन के प्रति प्रेम में भावुक है।

(9) क्या वह नहीं जानता कि जब कब्रों में जो कुछ है वह प्रकाश में लाया जाएगा,

(10) और जो कुछ दिलों में है, वह प्रकट हो जायेगा।

(11) निश्चय ही उस दिन उनका रब उन्हें भली-भाँति अवगत कर लेगा।

# सूरा 10 1: ٱلْقَارِعَة‎ (अल-क़ारिआह) - प्रलय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) दहाड़!

(2) फ्रैगोर क्या है?

(3) और आपको क्या समझाएगा कि फ्रैगोर क्या है?

(4) जिस दिन मनुष्य बिखरे हुए पतंगों के समान हो जायेंगे,

(5) और पहाड़ ऊन के समान हो जायेंगे।

(6) फिर जिसका पलड़ा भारी हो,

(7) एक संपूर्ण जीवन होगा.

(८) किन्तु जिसका पलड़ा हल्का है,

(९) रसातल को अपना घर बनाएगा।

(10) और तुमको क्या समझायेगा कि वह क्या है?

(११) यह जलती हुई आग है.

# सूरा 102: **ٱلتَّكَاثُر‎ (अट-ताकाथुर)** - और अधिक की लालसा

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) [माल] इकट्ठा करने की जल्दी ने आपको विचलित कर दिया है,

(2) जब तक आप कब्रों तक नहीं पहुंच जाते.

(3) नहीं! आपको जल्द ही पता चल जाएगा!

(4) एक बार फिर, नहीं! आपको जल्द ही पता चल जाएगा!

(5) नहीं! यदि आप पूर्ण निश्चयता से जानते,

(6) तुम अवश्य नरक को देखोगे।

(7) फिर तुम उसे निश्चय की आँख से देखोगे।

(8) फिर उस दिन तुमसे उन सुखों के विषय में पूछा जाएगा जो तुम्हें प्रदान किये गये थे।

# सूरा 103: ٱلْعَصْر‎ (अल-असर) - समय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) समय के लिए,

(2) सच में, मनुष्य घाटे में है,

(3) परन्तु जो ईमान लाए, अच्छे कर्म किए, एक दूसरे को सत्य की शिक्षा दी और एक दूसरे को धैर्य की शिक्षा दी।

# सूरा 104: **ٱلْهُمَزَة‎ (अल-हुमाज़ा)** - निंदा करनेवाला

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(१) हाय हर निंदक निंदक पर,

(2) जो धन संचय करता है और निरंतर उसका हिसाब रखता है,

(३) यह सोचकर कि उसका धन उसे अमर बना देगा!

(4) नहीं! उसे अवश्य ही हुतमा में फेंक दिया जाएगा।

(5) और तुमको क्या समझ में आएगा कि हुतमा क्या है?

(6) वह अल्लाह की प्रज्वलित अग्नि है,

(7) जो दिलों तक उठता है.

(8) निश्चय ही वह उनपर बन्द कर दिया जायेगा।

(9) विस्तारित कॉलम में.

# सूरा 105: **ٱلْفِيل‎ (अल-फ़िल)** - हाथी

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ कैसा व्यवहार किया?

(2) क्या उसने उनकी युक्तियों को व्यर्थ नहीं कर दिया?

(3) और उसने उनके विरुद्ध पक्षियों के झुंड भेजे,

(4) जिन्होंने उन पर कठोर मिट्टी के पत्थर फेंके,

(5) उन्हें खाए हुए भूसे के समान बना देना।

# सूरा 106: **قَرَيْش‎ (कुरैश)** - कुरैश

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कुरैश को दी गई सुरक्षा के लिए,

(2) सर्दियों और गर्मियों की यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा,

(3) इसलिए वे इस सदन के प्रभु की आराधना करें,

(4) जिन्होंने उन्हें भूख से बचाया और भय से सुरक्षित रखा।

# सूरा 107: **ٱلْمَاعُون‎ (अल-माउन)** - सामान्य उपयोग की वस्तुएं

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) क्या तुमने उसको देखा है जो न्याय को झुठलाता है?

(2) वह व्यक्ति है जो अनाथ को अस्वीकार करता है

(3) और गरीबों को भोजन कराने को प्रोत्साहित नहीं करता है।

(4) इसलिए, अफसोस उन पर जो प्रार्थना करते हैं,

(5) किन्तु वे अपनी प्रार्थनाओं से लापरवाही करते हैं।

(6) जो दिखावे के लिए काम करते हैं,

(7) और दयालुता के कार्यों से इनकार करते हैं.

# सूरा 108: ٱلْكَوْثَر‎ (अल-कौथर) - प्रचुरता

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) निश्चय ही हमने तुम्हें बहुत कृपा प्रदान की है।

(2) अतः अपने रब से प्रार्थना करो और क़ुर्बानी करो।

(3) निश्चय ही जो कोई तुमसे घृणा करेगा, वह निःसंतान रहेगा।

सूरा 109: **ٱلْكَافِرَون‎ (अल-काफिरून)** - अविश्वासी

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कह दो, ऐ इनकार करनेवालो!

(2) मैं तुम्हारी पूजा नहीं करता,

(3) और न तुम मेरी उपासना करो।

(4) और मैं उसकी पूजा नहीं करूँगा जिसकी तुमने पूजा की है,

(5) और न तुम मेरी उपासना करोगे।

(6) तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए है और मेरा दीन मेरे लिए है।

# सूरा 110: **ٱلنَّصْر‎ (अन-नौर)** - मदद

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) जब अल्लाह की सहायता और विजय आ जाये,

(2) और तुम देखोगे कि लोग एक समूह के रूप में अल्लाह के धर्म में प्रवेश कर रहे हैं।

(3) अपने रब की तसबीह करते हुए उसकी तसबीह करो और उससे क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह वह तौबा क़बूल करनेवाला है।

# सूरा 111: **ٱلْمَسَد‎ (अल-मसाद)** - द पाम फाइबर्स

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) अबू लहब का हाथ टूट जाये, और वह स्वयं भी नष्ट हो जाये!

(2) न तो उसका धन और न ही उसने जो कुछ अर्जित किया है, उससे उसे कोई लाभ होगा।

(3) उसे शीघ्र ही धधकती आग में फेंक दिया जाएगा,

(4) और उसकी पत्नी, लकड़हारा,

(5) उसके गले में खजूर के रेशों से बनी रस्सी होगी।

# सूरा 112: **ٱلْإِخْلَاص‎ (अल-इखलास)** - आस्था की पवित्रता

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कह दो, "वह अल्लाह अकेला है,

(2) अल्लाह, पूर्ण.

(३) न उसने उत्पन्न किया, न ही वह उत्पन्न किया गया,

(4) और कोई भी उसके बराबर नहीं है।

# सूरा 113: ٱلْفَلَق‎ (अल-फ़लाक़) - द डॉन

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कह दो, "मैं उदय होने वाले रब की शरण में आता हूँ।

(2) जो कुछ उसने पैदा किया है उसकी बुराई के विरुद्ध,

(3) अंधकार की बुराई के विरुद्ध जब वह गहरी हो जाती है,

(4) गांठों पर फूंक मारने वालों की बुराई के विरुद्ध,

(5) और ईर्ष्यालु व्यक्ति की बुराई के विरुद्ध, जब वह ईर्ष्या करता है।"

# सूरा 114: ٱلنَّاس‎ (अन-नास) - पुरुष

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपालु, दयावान है।

(1) कह दो, "मैं मनुष्यों के रब की शरण चाहता हूँ।

(2) मनुष्यों का राजा,

(३) मनुष्यों का परमेश्वर,

(4) छिपकर कानाफूसी करने वाले की बुराई के विरुद्ध,

(5) जो मनुष्यों की छाती में फुसफुसाता है,

(6) जिन्न और मनुष्य के बीच।